THE

Ambādās Chaware
Digambara Jain Granthamālā

OR

KARAṆJA JAIN SERIES

EDITED

With the Co-operation of Various Scholars

BY

HIRALAL JAIN, M. A., LL. B.
King Edward College, Amraoti

Volume I

PUBLISHED BY

Karanja Jain Publication Society
Karanja, Berar, India

JASAHARACARIU

OF

PUṢPADANTA

an Apabhraṃśa work of the 10th Century

CRITICALLY EDITED
With an Introduction, Glossary and Notes

BY

Paraśurāma Lakṣmaṇa Vaidya
M. A. (Cal), D LITT (Paris)
Professor of Sanskrit and allied languages
Fergusson College, Poona

1931

A copy of this volume, postage paid, may be obtained directly by sending a Postal Order of Rupees Six and annas Eight or Ten Shillings and six pence from the Secretary, Karanja Jain Publication Society, Karanja, Berar, India.



We have great pleasure in announcing that the following Apabhramsa works are under preparation and we hope to issue them soon in the forthcoming Volumes of this Series Orders for Copies may be registered now with the Secretary

1 *Karakaṇḍucariu of Kanakāmara*
2. *Sudaṃsanacariu of Nayanandi*
3 *Mahāpurāṇa of Puspadanta.*
4 *Apabhraṃsa-kathā-saṃgraha.*



Printed from type at the
Shri Ganesh Printing Works, 495-496, Shanwar Peth, Poona
and Published by
Seth Gopal Ambadas Chaware, Karanja, Berar.



श्री १०८ भट्टारक वीरसेनजी स्वामी,
सेनगण, कारंजा (वरार)

समर्पण-पत्रिका



प्रात स्मरणीय, अध्यात्मविद्याविशारद, सद्गुरु, श्री १०८ भट्टारक

श्री वीरसेनजी स्वामी—

आपकी श्रेष्ठ अध्यात्मविद्यापर मुग्ध होकर तथा आपके उपदेशामृत का आकंठ पान करके मैं जिस प्रकार आपका अतिशय ऋणी व धन्य हुआ हूं उसी प्रकार अनेक विद्वान् पंडित व मुमुक्षु लोकों के अंतःकरण में भी आपने चिरस्थायी स्थान प्राप्त किया है। हमारे अहोभाग्य से हमें आप जैसी अद्वितीय विभूति प्राप्त हुई है।

अपने धर्मोपदेश से आपने जो मेरी आत्मा का कल्याण किया है उसके लिये मैं आपका चिर ऋणी हो चुका हूं। उसी अनन्त ऋणराशि के अल्पांश परिशोधनार्थ आपके ही सदुपदेश के फल-स्वरूप मेरे पूज्य पिताजी की स्मृति में स्थापित ग्रंथमाला का यह प्रथम पुष्प 'यशोधर चरित' आपके अर्पण करता हूं।

आपका विनम्र शिष्य

गोपाल अम्बादास चवरे



प्राथमिक वक्तव्य

जैन धर्म भारतवर्षके सबसे प्राचीन धर्मोंमें से है। इस धर्म ने देशकी सभ्यता व आचार, कलाकौशल्य और विज्ञान पर चिरस्थायी छाप लगा दी है। इस धर्म का प्राचीन साहित्य बहुत विस्तीर्ण तथा सर्वांगपरिपुष्ट है। किन्तु खेद है कि यह साहित्य अभीतक पूर्णरूप से प्रकाशित नही हुआ। बम्बई की माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रंथमाला इस ओर प्रशसनीय कार्य कर रही है, किन्तु सम्पूर्ण प्राचीन साहित्य को शीघ्र प्रकाश में लाने के लिये एक नही अनेक ग्रंथमालाओं की आवश्यकता है।

हमें यह प्रकट करते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि कारजा के उदार तथा धर्मिष्ठ श्रीमान् सेठ गोपाल साहुजी चवरे ने अपने पूज्य पिता अम्बादास साहुजी चवरे की पुण्यस्मृति में उनके नाम से एक 'जैन धर्मोन्नति फड' खोला है, जिसमें उन्होंने वीस हजार रुप्या प्रदान किया है। धर्म की उन्नति के लिये प्राचीन जैन ग्रंथोंका सुचारु रूप से प्रकाशन व प्रसार आवश्यक जान सेठजीने इस द्रव्य के व्याज से 'अम्बादास चवरे दिगम्बर जैन ग्रंथमाला' प्रकाशित करने का निश्चय किया है व इस हेतु एक समिति भी बना दी है। इस ग्रंथमाला में मूल प्राचीन संस्कृत व प्राकृत ग्रथ उच्च कोटि के विद्वानों द्वारा वैज्ञानिक शैली से सम्पादित कराकर प्रकाशित किये जायगे जिससे उन ग्रंथो का देश व विदेश में आदर हो सके, वे विश्वविद्यालयों की उच्च कक्षाओं में पाठ्य पुस्तकें नियुक्त की जा सकें तथा उनके द्वारा विद्वान लोग पुरातत्त्व की खोज कर सकें। कारजा तथा अन्यस्थानों के शास्त्रभंडारों में जो बहुसख्यक ग्रंथरत्न छिपे हुए है उनकी जगमगाती हुई ज्योति को इस ग्रंथमाला द्वारा संसार के सन्मुख प्रस्तुत करनेका उक्त समिति प्रयत्न करेगी।

इस ग्रंथमाला का प्रथम पुष्प 'यशोधर चरित' प्रस्तुत है। इसके कर्ता विक्रमकी ग्यारहवीं शताब्दि के महाकवि पुष्पदन्ताचार्य हैं। ग्रथ की कथा वही यशोधर महाराज का पवित्र चरित्र है जिसका वर्णन सोमदेवादि अनेक आचार्यों ने सस्कृत में किया है। भाषा की दृष्टि से यह ग्रंथ बडा महत्वपूर्ण हैं। उसकी भाषा वह अपभ्रश प्राकृत है जो आज की प्रचलित हिन्दी, गुजराथी, मराठी आदि भाषाओं की जननी हैं तथा जिसके ग्रथों के लिये विद्वत्समाज लालायित हो रहा है।

इस ग्रथ का सम्पादन फर्ग्युसन विद्यामदिर के सस्कृत व अर्धमागधी आदि प्राकृत भाषाओं के अध्यापक तथा अनेक प्राकृत संस्कृत जैन ग्रंथो के सम्पादक डॉ. परशुराम लक्ष्मण वैद्य, एम्. ए.; डी. लिट्. द्वारा हुआ है। आपने अनेक हस्तलिखित प्रतियों परसे संशोधन करके ग्रथ को प्रचुर पांडित्यपूर्ण तथा विद्वानों द्वारा सग्राह्य बनाया है।

जिनकी अनुमतिसे गोपाल साहुजीने उक्त उदार कार्य किया है तथा जिनके सदुपदेशके फलस्वरूप आज कारंजा में श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम, चवरे दि जैन बोर्डिंग, जे. डी. चवरे, ए व्ही. स्कूल, तथा जे. जी चवरे, हायस्कूल नामक धार्मिक तथा सामाजिक संस्थायें दृष्टि पडती हैं उन्ही अध्यात्मप्रेमी श्री १०८ वीरसेन स्वामी भट्टारकको यह ग्रंथ समर्पित किया गया है। उक्त कार्योंके लिये जैन समाज स्वामीजीका चिर ऋणी रहेगा।

हमे यह प्रकट करते हुए असह्य दुःख होता है कि गोपाल साहुजीके बन्धु, वरार दि. जैन समाजके आधार ओर आभूषण तथा हमारी समितिके एक मान्य सदस्य व इस ग्रंथमालाको जन्म देनेमें भारी प्रयत्न करनेवाले श्रीयुक्त जयकुमार देवीदासजी चवरे वकीलका ग्रंथमालाका यह प्रथम पुष्प प्रस्फुटित होनेके पूर्वही हमसे वियोग हो गया। आपके वियोगसे हमारी समिति तथा जैन समाजको जो क्षति पहुंची है उसकी पूर्ति होना कठिन है।

विद्वत्समाज से प्रार्थना है कि आगे संस्कृत, प्राकृत व अपभ्रंश भाषाके चुने हुए ग्रंथोंको सर्वांगसुंदर और पूर्ण बनाकर प्रकाशित करने में हमे सहयोग प्रदान करें।

हीरालाल जैन



स्वर्गवासी श्रीमान् अंबादास गंगासावजी चवरे
कारंजा (अकोला)

जन्म २३-८-१८५६ — स्वर्गवास २४-९-१९२३



श्रीमान् गोपाल अंबादासजी चवरे
कारंजा (अकोला)

जन्म २७-२-१८८९

A NOTE

BY THE GENERAL EDITOR

JAINISM is one of the most ancient religions of India It has played a great part in the cultural development of the Indian people "Ahimsā paramo dharmah" or 'Non-violence is duty par excellence' is the sine-qua-non of this faith which has always stood for universal peace and brotherhood It has sought to accommodate the different view-points in the domain of thought as well as of action by its philosophy of Anekānta It has attempted to afford equal opportunities of material and spiritual advancement to all irrespective of the incident of birth and it has tried to avoid clashes of worldly interests by placing spiritual well-being above material gain

It may appear from this that a faith so pre-eminently spiritual would be unsuited for the development of art and science But the contributions of Jainism to these departments are also by no means small Building temples and setting up images for worship forms an important item of the faith amongst the Jain laity and this brought about the introduction of some special features in the architecture and sculpture both in Northern and Southern India where their numerous temples and statues still excite the devotion and admiration of the worshippers and the scholars alike Books have also been produced on these as well as on the other fine arts such as painting and music With still greater attention and success have the Jains cultivated the highest of the fine arts-poetry, which is fully represented in their literature in all its branches Hand in hand with poetry they have produced numerous important works on such technical subjects as grammar, lexicography, poetics, law and polity as well as on sciences such as astronomy, mathematics and medicine, and treatises are not wanting in their literature even on subjects like war-carriages, bows and arrows elephants and horses, erotics, astrology and magic

Thus important as the Jain literature is for the study of Indian philosophy and religion, art and science, it is of a still greater importance for the study of the development of Indian languages It may even be said that the importance of Jain literature is, in this respect, unique, The sacred language of the Brahmins was Sanskrit and they did not, at first, take any important part in the development of the languages of the people-the Prakrits Lord Buddha gave his preachings in the language of the people but the Buddhist literature confined itself to one language only-Pali, and at a later date it adopted Sanskrit But Lord Mahāvīra gave a permanent impetus to the development of the popular languages and his followers adopted these both for preaching and writing in their religious propaganda They gave literary shape to many languages even for the first time and took a prominent part in the early development of

even the Dravidian vernaculars of South India The ancient Prakrits, Māgadhī, Ardha-Māgadhī, Śauraseni and Māhārastrī are extensively preserved in the Jain books whose study is very essential for their adequate knowledge

Of a very special interest are the Jain works written in what is called the Western Apabhramsa This language is the immediate forrunner of at least three important vernaculars, Hindi, Gujarati and Marathi All the works in this language that have so far come to light are the productions of the Jains Till very recently, not a single complete work of this language was available in print, on account of which the study of history and philology of the modern vernaculars could not make any appreciable progress It was only in the year 1918 that the first complete and systematically edited work of this language appeared This was the Jain work Bhavisayatta-kahā of Dhanapāla edited by Professor Hermann Jacobi of the University of Bonn This same work was again published in the Gaekwad Oriental Series in 1923 This was all and nothing definite or much was known about the other works of this language till I had the occasion in 1924 of examining the Jain manuscript stores at Kāranjā in the Akolā district of Berar, being deputed to that task by my learned patron and benefactor Rai Bahadur Hiralal, B A., M R A S, Deputy Commissioner who, in his retirement, was entrusted by the Government with the work of compiling a Catalogue of Sanskrit MSS in the Ceneral Provinces and Berar Here I discovered a dozen works in Apabhramsa, including three Purānas of more than one hundred chapters each, the other works being of a more modest size Information about these works will be found embodied in the Catalogue mentioned above which was published in 1926

It is a great pity that a very large part of the Jain literature of which I have spoken so far, remains yet unpublished A few Granthamālās have recently been started with the chief object of making these works available to the scholarly world in the original, and the Manikchand Digambara Jain Granthamālā of Bombay deserves special mention in this connection. It has so far issued thirty volumes containing about fifty ancient Sanskrit and Prakrit works The work is however, too vast to be adequately handled in a single series and hence the need of fresh efforts to speed up the work of publication

Two years ago, Seth Gopal Ambadas Chaware of Kāranjā sought my advice in the matter of utilising certain funds which he had set apart for some religious or charitable purpose in the memory of his late father. I suggested to him that the best and most lasting memorial that he could raise to his father and at the same time do a great service to the cause of Jainism was the institution of a book-series for the publication of Jain works that remain yet unpublished, particularly those from MSS deposited at his own place, Kāranjā This suggestion of mine was discussed at a meeting of the leading Jains of Berar and was ultimately adopted in preference to other suggestions put forward for the utilisation of the funds. A committee was formed for starting the work of the series to be known at the Ambādās Chaware Digambara Jain Granthamālā or the KARANJA JAIN SERIES of which I was elected General Editor

BY THE GENERAL EDITOR

We had decided to open the Series with one of the Apabhraṁśa work recovered from the Kāranjā MSS when Dr P L Vaidya, M A., D Litt, sought my help in obtaining facilities for consulting some of those MSS I learnt from him that he had already secured some MSS of the Jasaharacariu of Puspadanta and was engaged in preparing the text for the Press I told him about our Series and offered to open the Series with that work if he would edit it for us To this Dr Vaidya readily agreed and he has spared no pains in presenting the text as accurately and critically as was possible with the apparatus that he had before him

We are very thankful to Dr Vaidya for his valuable contribution to the Series as well as for the help he gave in making arrangements for the printing of the book, all this work being undertaken by him merely as a labour of love

It is our great sorrow that one of the members of our committee who was also a cousin of Seth Gopal Ambādās Chaware and a leading Jain citizen of Berar, Mr J. D. Chaware, B A, LL B, to whose efforts the inaguration of this Series owes a good deal, did not live to see even the publication of its first volume By his death our committee has suffered an irreparable loss

I can hardly adequately thank Seth Gopal Ambadasji to whose munificence this Series owes its inception I pay my humble respects to Svāmī Vīrasenji Bhattāraka who is the custodian of the manuscript-store of the Sena Gana temple at Kāṛanjā and who encouraged Seth Gopal Ambadasji in his laudable munifiicence I also thank the members of my committee for their co-operation in the work

I take this opportunity to invite the co-operation of all scholars interested in the study of Jain literature in making the future volumes of this Series as suitable for study and research as possible With their co-operation we hope to publish soon the remaining Apabhraṁśa works at Kāranjā.

King Edward College
Amraoti
20th March 1931

HIRALAL JAIN

TABLE OF CONTENTS

INTRODUCTION

1. GENESIS OF THE UNDERTAKING

WHILE working as Springer Research scholar of the Bombay University during 1926-28 I occupied myself with the surveying work of the Prakrit literature in general and of the Apabhramsa works in particular In the course of my labours in that direction I commenced examining the Bhandarkar Institute MS of Puspadanta's Tisatthimahāpurisagunālamkāra, of which the late Dr P D Gune included a short notice in his introduction to the Bhavisayattakahā, published in the Gaekwar Oriental Series at Baroda It came to my knowledge that the Bhandarkar Institute Library of MSS contained a few more MSS of this work and also a MS of another work, JASAHARACARIU, by the same author Just at this juncture Rai Bahadur Hiralal published his Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts in the Central Provinces and Berar and, on going through it, I discovered, to my delight, that the Kāranjā Jain Bhandars contained several MSS of the two works mentioned above, and in addition, one more work, Nāgakumāracariu, by the same author

While I was studying the Tisatthimahāpurisagunālamkāra and the Jasaharacariu at the Bhandarkar Institute, which works were composed at Mānyakheta, the modern Malkhed in the Nizam's territory, another idea struck me, how far would these works of Puspadanta, written in the Apabhramsa language and composed in the province of Mahārāstra proper, throw light on the origin and growth of the Marathi language For, it is a well known fact that a very large number of works in the old Marathi were composed or revised within a radius of about a hundred miles from Mānyakheta, the capital of later Rāstrakūtas The discovery of Puspadanta's works at Kāranjā in Berar, therefore, particularly delighted me, as I thought, I would find therein pre-Marathi Apabhramsa records composed, and also preserved, in Mahārāstra which would be of great value to the history of the Marathi language. Consequently I made up my mind to visit the Kāranjā Jain Bhandars for this purpose during the Christmas holidays of 1927 It was on that occasion that I made acquaintance of Prof Hiralal Jain, M A, LL B, of the King Edward College, Amraoti, who, within a few days of my visit, made a proposal to me that I should edit the Jasaharacariu of Puspadanta before undertaking the bigger work, Tisatthimahāpurisagunālamkāra, and that I should allow it to be included in the Kāranjā Jain Series as its first volume, which proposal I readily accepted

2 THE CRITICAL APPARATUS

The critical apparatus on which this edition of the Jasaharacariu is based consists of four manuscripts collated in full and three more MSS partially collated in cases of doubt I also used pretty frequently the printed edition of the Hindi translation, which here and there gives the ghattā lines in the original Apabhramsa The details of this apparatus are given below —

S This is a paper manuscript deposited in the Sena Gana Bhāndāra of Kāranjā in Berar The MS is written in good hand, consists of 78 leaves with 11 lines to a page and about 37 letters to a line, has voluminous notes in the margin in mixed Hindi and Sanskrit It is dated Wednesday the auspicious 13th of the dark half of Āsvina of 1656 of the Saka era, or 1790 of the Vikrama era, i e, 1734 A D, as can be seen from the following colophon —

शके १६५६ मिति आसो वदि मंगलात्रयोदश्यां बुधवारे श्रीमूलसंघे पुस्करगणे पुस्करगच्छे ऋषभसेन-गणधरान्वये पारंपर्यागते भट्टारकश्री १०८ सोमसेन तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनसेन तत्पट्टे भट्टारकसमतभद्र तत्पट्टे भट्टारकश्री १०८ छत्रसेन तत्पट्टोदयाद्रिवर्तमान भ० नरेंद्रसेनैर्लिखितोय जसोधरचरित्रं संपूर्ण स्वपठनार्थं वा अन्येषा ज्ञानावर्णिकर्मक्षयार्थं श्रीसूरतबंदरे श्रीआदिनाथचैत्यालये स० १७९०.

It will be seen from the colophon that the copy was made at Surat and then it travelled to the Kāranjā temple of the Sena Gana There is another MS of this work in the same temple, but it was so old and its condition so delapidated that it could not be safely used I however consulted it occasionally and found that it generally agrees with the above as regards omission of certain passages for which see below As the MS is prepared at Surat, there is no consistency as regards the use of initial n

T This is another MS of the Sena Gana group now deposited in the Terāpanthi Jain Mandir of Bombay It was secured for my use by the kindness of Pandit Nāthū-rām Premi of Bombay It seems to be the oldest MS of the work now extant, as it is dated 1390 of the Vikrama era, i e, 1333 A D It is a paper MS consisting of 98 leaves with 8 lines to a page and about 30 letters to a line The colophon runs as follows—

मंगलमस्तु। संवत् १३९० वर्षे आषाढशुद्धत्रयोदशी भानौ अद्येह श्रीमहाराजाधिराजश्रीसुरत्राण-महंमदराज्ये दुर्गामंडपडिगनामागे (?) पगडीनामनि प्राग्वाटवंशीयसाभावडसंतान मह्लौ पुत्र रामा......

This MS seems to have been copied from another older MS The copyist seemed to be unable to read some lines and letters of his original and put dots and dashes where he was not able to decipher them As T is now nearly 600 years old, its latter part has become considerably worn out and indistinct to read It is however striking that the readings of T agree with those of S oftener than with those in A and P. I have used T throughout my work

P This MS belongs to the Deccan College Library, now deposited in the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No 1192 of 1891-95. It consists

of 84 leaves with 11 lines to a page and about 29 letters to a line It has the following colophon :—

संवत् १६१५ वर्षे भादव सुदि ५ वसिवारे पुष्यनक्षत्रे तोडागढमहादुर्गे महाराजाधिराजराउश्रीकल्याणराज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसंघे नद्याम्नये बलत्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्येन्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीश्रुतचद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्र... .. .

It will be seen that this MS is dated Thursday, the 5th of the bright half of Bhādrapada of 1615 of the Vikrama era, i e, 1558 A D It is a carefully prepared paper MS belonging to the Balātkāra Gana group, and, what is striking is the consistency with which it uses the initial n except in one or two places only See also under H below

A, This is another MS of the Balātkāra Gana group It was secured for me, when the printing of the text had already considerably advanced, by my friend, Professor Hiralal Jain of King Edward College, Amraoti, from Pandit Jugal Kishore Mukthar of Sarasawa and now of Samantabhadrāsrama, Delhi It consists of 73 leaves of which the first leaf is missing, with 11 lines to a page and about 38 letters to a line It is also a carefully written paper MS but is slightly inferior to P Its colophon runs as follows :—

अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये सवत् १६२१ वर्षे श्रावणवदि २ सोमवासरे श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचद्रदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचंद्रदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीसिंहकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीधर्मकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीशीलभूषणदेवा तदाम्नाये आर्याश्रीचारित्रश्रीतत्सिष्यणीव्रतगुणसुदरी एकादशप्रतिपालिका तपगुणराजीमती शीलतोयप्रक्षालितपापपटला: । बाई हीरा तथा चंदा पठनार्थं इदं यशोधरचरित्र लिखापितं कर्मक्षयनिमित्तं ॥ छ ॥ लिखितं पडितवीणासुतगरीवा अलवरवासिनः ॥ छ ॥ शुभ वो भूयात् ॥

It will be seen that this MS. is dated Monday, the 2nd of the dark half of Śrāvana of 1621 of the Vikrama era, i e, 1564 A. D, i e, about six years after P As P was prepared in Todā gadh or Todā fort and A in Alwar, and as the genealogies of teachers mentioned therein agree so far as they are available, it can well be presumed that they belong to the same group The text and the readings in them agree closely except in one detail, viz., P omits the portion IV 29 9—IV. 30 13 which is given only in B and A. A is also almost consistent in the use of initial n

In addition to these four fully collated MSS described above, I have used the following meterial at times'—

(a) B This is a MS deposited in the Balātkāra Gana Jain Bhāndāra at Kāranjā I personally examined this MS on the spot, but had no time at my disposal to fully collate it A copy of this MS was recently prepared for the Ailak Pannalal Jain Bhandar of Bombay. Through the kindness of Professor H D Velankar of the Wilson College, Bombay, I was able to collate a portion of it, i e, to the end of the first pariccheda, when I thought that the text there agreed with P, a bet er and more reliable

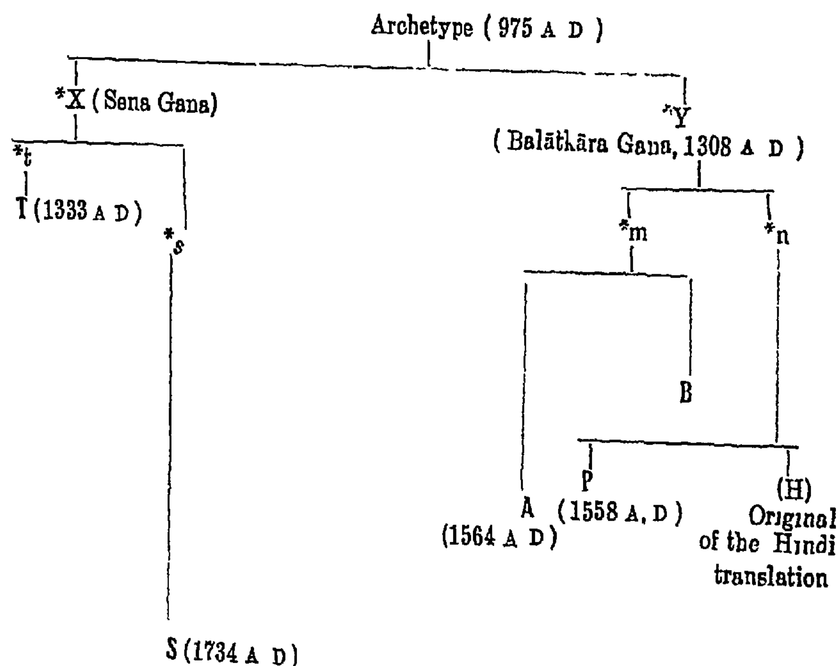
MS, in all essential points, and that it was no use further to collate a secondary MS like this On the discovery, however, of the additional passage in A, viz, IV 29 9—IV 30 13, I wanted to ascertain whether the original MS B also contained the same Professor Hiralal Jain got it examined for me again and sent me collation of which I made full use

(*b*) H This is a printed Hindi translation of our text which I purchased in a Bombay bookseller's shop This printed translation usually gives in the original Apabhramsa the ghattā portion with its Sanskrit rendering, and translates the rest in Hindi calling the translation as Tikārtha I was not able to discover the name of the translator nor the year of its publication On the last page I find the following—

लाला गिरिनारीलाल ने जैनी भाईयों के हितार्थ लाला जैनीलाल के "जैनीलाल प्रिंटिंगप्रेस" देववन्द जिला सहारनपुरमें छपाकर प्रकाशित किया।

I consulted this translation throughout for what it was worth, and have come to the conclusion that the translator used a MS of the text identical with the one in P and not with the same in A or B, as the absence of translation of IV 29 9—IV 30 13 clearly shows

The relationship of all the material described above will be clear from the following diagram —



* The asteric indicates conjectural MSS

It will be clearly seen from above that there are two recensions‡ of the text of Jasaharacariu, of which the older one belongs exclusively to the Sena Gana and is represented in my material by S and T This group of MSS, in my opinion, presents almost the original text as composed by the author himself. The original of my T, i e, t of the diagram, is irrecoverable, being already worn out in 1333 A D, and so it may have been two or three centuries older, which is approximately the age of Puspadanta Copies of this recension, however, were being made from time to time in the Sena Gana tradition, and I saw s, a copy of which, S, I have fully collated This Sena Gana recension omits the following passages from the printed text —

(a) Verses in Sanskrit in praise of the poet's patron, Nanna, at the beginning of the 2nd, 3rd and 4th pariccheda; and,

(b) (i) A Passage from I 5 3 to I 8 17 (Bhairava's visit),
(ii) A Passage from I 24 9 to I 27 23 (Jasahara's marriage, and
(iii) A Passage from IV 22 17 b to IV 30 15 (The various subsequent births of several persous in the story)

Of these additions to the Sena Gana recension, I think, those mentioned under (a) may have been made by the author himself during his life-time in *some* of the copies of his work For, in the poet's other work, e g, in his Tisatthimahāpurisagunālamkāra, there are similar verses in Sanskrit in parise of Bharata, Nanna's father, which verses also are found only in *some* of the MSS of that work

As regards additions under (b) all of which (except IV 29 9 IV 30 13 which passage is found in A and B only), appear in the second recension of the Balātkāra Gana, there is only one conclusion to be drawn, viz, that these additions were made by Gandhavva (Sk Gandharva), son of Kanhada (or Krsna), in the Samvat year 1365, on Sunday, the 2nd tithi of the bright half of Vaisākha, i e, in 1308 A D, at the request of Visalasāhu, the son or pupil of Khelāsāhu and grandson or grand pupil of Changesāhu of Pattana Now, as the passage IV 29 13-IV 30 15 tells us, this Visala once asked the poet Gandharva to fill up the deficiency in Puspadanta's work by adding passages relating to (i) the visit of Bhairava to the royal household, (ii) the marriage of Jasahara, and (iii) the wanderings of the various persons through several subsequent births Accordingly the poet Gandharva composed these passages, inserted them at appro-

‡ When my work on the text and on the introduction was completed I had the good luck of securing another MS from Kolhapur through my pupil and friend Prof A N Upadhye of the Rajaram College This MS belongs to Mr Tatyasaheb Patil of Nandni near Kolhapur It is of the Balātkāra Gana group and presents the text as in P and (H) I am glad to see that my classification of MSS as given above and my remarks on the additions to the original text by Gandharva are fully borne out and confirmed by the discovery of this additional MS, which consists of 100 leaves of which the second and third are missing The MS was completed in Todā (Todāgad?)on the 11th day of the bright half of Āsvina of the Samvat year 1699 and Saka year 1564, i, e, 1642 A. D.

priate places and read them on the above mentioned date to Visala, who was then staying at Yoginipura or Delhi The poet says that he borrowed the material of the above mentioned passages from an older poet on the subject, Vatsarāja by name, and the material for the description of Jasahara's marriage from Vāsavasena's work for which see below It is a noteworthy thing here that Gandharva makes mention of his own name at the end of all the three passages Thus we have —

(१) गंधव्वु भणइ मइ कियउ एउ णिवजोईसहो सजोयभेउ।
घत्ता—अग्गइ कइराउ पुप्फयतु सरसइणिलउ॥
देवियहि सरूउ वण्णइ कइयणकुलतिलउ॥
I 8 15-17

(२) ज वासवसेणिं पुव्वि रइउ त पेक्खिवि गंधव्वेण कइउ।
I 27 23

(३) गंधव्वे कण्हडणदणेण आयह भवाइ किय थिरमणेण।
महु दोसु ण दिज्जइ पुव्वि कइउ कइवच्छराइ त सुत्तु लइउ।
IV 30 14-15

Now it may be asked How is it that the passage IV 29. 9–IV 30-13 came to be omitted in P and in the original of (H)? My explanation is that the clever and learned copyists of P and the original Apabhramsa of H did not like that the passage in question, giving the history of these additions to Puspadanta's work, should continue to remain, as they thought the deficiency would do little credit to the poet, and hence they suppressed it The retention of IV, 30 14–15 in all the recensions of the Balātkāra Gana has, however, misled several scholars like Pandit Nāthūrām Premi in the *Jain Sāhitya Samsodhaka*, Vol II i page 67, and Pandit Jugalkishore Mukhtar in the *Jain Jagat* of October of 1926 They interpreted that गंधव्वें कण्हडणदणेण meant Puspadanta, as Kanhada, they said, was only another name of Kesava, the real name of Puspadanta's father (See IV 31 2)

It will be seen from the above discussion that the text in the present edition represents the secondary and amplified version of MSS A, B and P If the origin of the additions had been discovered in earlier stages of my labours on the printing of this edition, it would not have been difficult for me to give the smaller, and, should I say, the original, version of the text I must confess that the externals of P impressed me so much that I thought I had discovered the best version, though the roughness of language, expressions and versification of the additional passages made me frequently pause It is, however, quite easy from the critical apparatus of the present text, to ascertain what the original version of S and T must have been

There is only one more point to which I should like to draw the attention of the reader The date of these additions is 1308 A D, while the date of my oldest MS T is 1333 A D The additions, thus, did not influence the copies that were made in the

quarter of the century that followed their composition Besides, my MS T is, as pointed out above, a faithful copy of a still older and worn out MS prepared at least two centuries before which in the diagram I have called *t*

---

3 THE POET AND HIS DATE

The author of this small work in Apabhramsa is Pupphayamta, Sk. Puspadanta. Besides Jasaharacariu he wrote two other works, both in Apabhramsa, viz, (i) Tisatthimahāpurisagunālamkāra, better known by its shorter title Mahāpurāna, divided into two parts, Ādipurāna in 37 chapters and Uttarapurāna in 65 chapters, (ii) Nāgakumāracariu in 9 chapters, both of which are contemplated to be included in the Kāranjā Series In all these works the poet gives some account of himself I give below a tentative sketch based upon the available material in the crude form, reserving a fuller and more accurate information to a future volume of the Series when I hope to have the material cirtically edited

Puspadanta was a Brahmin by caste and belonged to Kāsyapa gotra His father's name was Kesavabhatta and mother's name was Mugdhādevi. He was at first follower of Saivism but later was converted to Digambara Jainism He seems to have secured several titles and birudas for his poetic genius, such as Ahimānameru, Kavvarayanāyara Kavvapisalla, Kavvarakkhasa, Kaikulatilaa, Sarasaiinilaya, Vāesarighara and others. He had a lean body and dark complexion, but a smiling face, and seems to have no wife nor children We do not know what his native land was, where he studied and who patronised him before he migrated to Mānyakheta It is however clear that he had some bitter experience in life, was probably insulted at the court of his patron, whose name, according to Prabhācandra's notes to the Mahāpurāna, seems to be Virarāja Kāsipati or Kāncipati (?) *alias* Sūdraka After this humiliation at the court of his patron he left his native land, came to a garden in the outskirts of Mānyakheta, where two persons persuaded him to see their patron Bharata, the minister of king Subhatungarāya, Tudiga or Krsnarāja III of Mānyakheta, and assured him that he would be well received by the Minister Puspadanta thereupon saw him and was at once offered patronage After a few day's stay Bharata requested the poet to write on the theme of the Mahāpurāna, a theme already made popular in Sanskrit by the work of the same name of Jinasena and Gunabhadra a century before—, as a prāyascitta for the sin that the poet committed in writing poems in praise of his former patron Virarāja

पइं मण्णिउ वण्णिउ वीरराउ उप्पण्णउ जो मिच्छत्तभाउ ।
पच्छित्तु तासु जइ करहि अज्जु ता घडइ तुज्झ परलोयकज्जु ।

The poet was at first reluctant to take up the proposal as he was very much depressed at that time and thought that the age of poetry was gone, but after a good deal of persuasion he agreed to commence the work Even in the middle of his undertaking

the poet was once more in depressed mood when the goddess in a dream asked him to wake up and finish his labours In the introduction to his Tisatthimahāpurisaguṇālamkāra Puspadanta mentions a long list of well-known literary figures which were his predecessors I give below the passage in full —

अकलक-कविल-कणयर-मयाइं दिय-सुगय-पुरंदर णयसयाइं ।
दतिलविसाहिलुद्धारियाइं णउ णायइं भरहवियारियाइं ।
णउ पीयइं पायंजलजलाइं इइहासपुराणइ णिम्मलाइं ।
भावाहिउ भारहभासि वासु कोहलु कोमलगिरु कालिदासु ।
चउमुहु सयभु सिरिहरिसु दोणु णालोइउ कइ ईसाणु वाणु ।
णउ धाउ ण लिंगु ण गण समासु णउ कम्मु करणु किरियाविसेसु ।
णउ सधि ण कारउ पयसमत्ति णउ जाणिय मइ एक्क वि विहत्ति ।
णउ वुज्झिउ आयमु सद्दधासु सिद्धतु धवल जयधवल णासु ।
पडु रुद्दडु जडणिण्णासयारु परियच्छिउ णालंकारसारु ।
पिंगलपत्थारु समुद्दि पडिउ ण कयाइ महारइ चित्ति चडिउ ।
जसइधु सिंधु कल्लोलसित्तु ण कलाकोसल हियवइ णिहित्तु ।

In addition to those mentioned in the passage above he mentions a few more persons prominent amongst them being Pravarasena, the author of Setubandha

It appears that Puspadanta completed his Mahāpurāna during the life-time of Bharata After Bharata's death the poet continued to enjoy the favour of Nanna, Bharata's son, under whose patronoge he composed his two other works known to us. It appears that besides these three he composed a few more works prior to his arrival at Mānyakheṭa, at any rate one such work in praise of Virarāja seems to have been alluded to in the lines already quoted above, but is probably lost

As regards the date of Puspadanta we have the following evidence in his works. (i) The mention of his predecessors, particularly of Rudrata whose date is fixed by Mr P V Kane of Bombay and Dr S K De of Dacca to lie between 800 and 850 A D., (ii) the reference to the death of the Cola king in the war waged by Subhatunga or Tudiga or Krsnarāja III, which event, in my opinion, took place at about 940 A D, (iii) the mention of the name of the year Siddhārtha (of the Saka era) in which he commenced his Mahāpurāna, and of Krodhana of the same era in which he completed it, which, in my opinion, are 959 A D and 965 A D, for I think Puspadanta commenced his work in the same Siddhārtha year in which Somadeva completed his Yasastilaka which year is 881 of the Saka era, i e 959 A D, (iv) mention by the poet in a verse of the plunder of Mānyakheta by Harsadeva of Dhārā which event took place about the year 1029 of the Vikrama era, i e, 972 A D in the reign of Khottigadeva, the successor of Krsnarāja III The *terminus a quo* therefore would be the date of Rudrata, say 850 A. D, and the *terminus ad quem*, the plunder of Mānyakheta in the

year 972 A D Now within these limits the Siddhārtha Samvatsara of the Śaka era would occur in 899 A D and 959 A D, but of these two years we cannot accept the first as the defeat of the Cola king by a Rāstrakūta king could not have been effected before 940 A D, the probable year of the accession of Krsnarāja III In fact the event took place, according to V Smith, in the year 949 A. D. We therefore have to accept 959 A D as the year in which Puspadanta commenced his Mahāpurāna Puspadanta's patron Bharata lived to see the completion of this work, but may have perhaps lost his life in defence of the city in the year 972 A D Puspadanta mentions or refers to, I think, this event in the last line of following verse at the opening of the 50th chapter of his Uttarapurāna MS of Kāranjā —

*दीनानाथधनं सदाबहुजनं प्रोत्फुल्लवल्लीवनं
मान्याखेटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम् ।
धारानाथनरेन्द्रकोपशिखिना दग्धं विदग्धप्रियं
क्वेदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्तः कविः ॥

As I have already remarked above, the Sanskrit verses in praise of the poet's patron are found only in some of the MSS of his works, which shows that they were inserted by the poet at his leisure after some of the copies of his work had already gone out It is not necessary to argue therefore that the plunder of Mānyakheta must have taken place before the Mahāpurāna was completed in 966 A D Shortly after this event, in 972 A. D, Puspadanta once more secured the patronage of Bharata's son Nanna, and resumed his poetic activity which gave to the world two more works, the Jasaharacariu and the Nāgakumāracariu

In order to make clear the above arguments as to the date of Puspadanta, I quote below a long extract from Rai Bahadur Hiralal's Introduction to his Catalogue, page xliv ff

" As for the date of the author, we have the following verses towards the end of the Uttarapurāna —

पुप्फयंतकइणा धुयपंकें जइ अहिमाणमेरुणामंकें ।
कयउ कव्वु भत्तिइ परमत्थें †जिणपयपंकयमउलियहत्थें ।
कोहणसंवच्छर आसाढइ दहमइ दियहे चंदरुइरूढइ ।

These verses convey that Puspadanta completed the Purāna on the 10th of the bright fortnight of Āsādha in Krodhana samvatsara. Apparently there is no mention of the year in the verses, and hence we have to look for other data in the work to determine the year. Puspadanta tells us that he was the protege of Bharata, the minister of king Śubhatungarāya of Mānyakheta. The same king at other places in the work has been

* The Kolhapur MS of the Uttarapurāna does not give this verse at all

† The Kolhapur MS of the Uttarapurāna confirms this reading in the text as against another reading given below from the Poona MS

referred to as Vallabharāya On both these names we have in the manuscripts a marginal explanatory note "Krsnarāja," which proves that the note-maker thought Subhatungarāya and Vallabharāya to be only different names of "Krsnarāja". History tells us that there have been three kings bearing the name of Krsnarāja in the Rāstrakūta dynasty of the South In the time of Krsnarāja I, the Rāstrakūta capital was not at Mānyakheta but near Nasik Amoghavarsa I whose reign began in 815 A D, established Mānyakheta as a capital town and Krsnarāja II and III sat on the throne there Krsna II reigned from about 722 to 788 and for Krsna III we have epigraphical and literary records of years ranging from Śaka 861 to 881 (A D 939 to 959) In order to decide as to which of these two kings has been referred to by Puspadanta, we should examine some other data deducible from his Epic Quite at the beginning of the great work we have a line in which we are told that the king of Mānyakheta who is here called "Tudiga" killed the king of the Colas

उवबद्धजूडु भूभंगभीसु तोडेप्पिणु चोडहो तणउ सीसु ।

We read in Dr Smith's Early history of India (pp 424-430) that "The war with the Colas in the reign of Krsna III, the Rāstrakūta king, was remarkable for the death of Rājāditya, the Cola king, on the field of battle in 949 A D" Again in the Imperial Gazeteer, Vol II, page 332, we read, "The Rāstrakūta Krsna III (940—971) had great success in the Cola country and inscriptions in that tract show that he exercised sovereign rights over parts of it An inscription at Atkūr, also in Mysore, of the year 949—50 relates that at a time when the Rāstrakūta king Krsna III was warring against the Cola king Rājāditya, son of Pārantaka I, the former's ally Būtuga II of the Western Ganges of Talkād (who had married Krsna's sister), murdered the the Cola sovereign at a place called Tatkola, not far west of modern Madras. . . " Somadeva also in the colophon to his Yasastilaka refers to the conquests of Cola by Krsna III Thus it is probable that the line quoted from Puspadanta refers to this very event

Continuing our search we find at the beginning of the 50th chapter of Uttarapurāna a verse of some importance for our inquiry This verse is—

दीनानाथधन सदाबहुजन प्रोत्फुल्लवल्लीवन
मान्याखेटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहर सुन्दरम् ।
धारानाथनरेंद्रकोपशिखिना दग्ध विदग्धप्रिय
केदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्तः कविः ॥

In this verse Puspadanta refers to the raid of Mānyakheta by some king of Dhārā that took place in his time Dhanapāla in his Pāiyalacchīnāmamālā (verse 276) says that he composed the work ' when one thousand years of the Vikrama era and twenty nine besides had passed, when Mānyakheta had been plundered in consequence of an attack made by the lord of Mālava " A reference to this plunder occurs in the Udaipur Prasasti as well (Ep Ind, Vol I, p 226), the 12th verse of which runs as follows —

तस्मात् [वैरिसिंहात्] अभूदरिनरेश्वरसंवसेवा-
गर्जद्गजेन्द्ररवसुन्दरतूर्यनादः ।
श्रीहर्षदेव इति खोट्टिगदेवलक्ष्मीं
जग्राह यो युधि नगादसमप्रतापः ॥ १२ ॥

Khottigadeva was the successor of Krsna III, and we have a stone inscription of his date in the Śaka year 893 , while Harsadeva was a Paramāra King of Dhārā contemporaneous with Krsna III and Khottigadeva It is quite possible that Puspadanta in the above quoted verse refers to this plunder of Mānyakheta by Harsadeva The identifications irresistibly lead us to the conclusion that Puspadanta wrote in the time of Krsna III. It has been said above that Puspadanta refers to the king contemoraneous with him by the names of Vallabharāya and Śubhatunga As for the first of these terms, it is known to have been the general title of the Rāstrakūta princes Dr V. Smith tells us " All these writers (Arab) agree in stating that they regarded the Balhara as the greatest sovereign in India. They called the Rāstrakūta kings Balhara, because those princes were in the habit of assuming the title of Vallabha (Beloved, *Bien aime'*) which in combination with the word Rai (prince) was easily corrupted into the form Balhara"

Jinasena in his Harivamśa-Purāna-Praśasti calls the Rāstrakūta king Indra (son of Krsna I,) as Śrī Vallabha.—

पातीन्द्रायुधनाम्नि कृष्णनृपतौ श्रीवल्लभे दक्षिणाम् ।

As for the second name Śubhatunga it is well known that it was an alternative name of Krsna I, but probably that was also a general title of the Rāstrakūta kings Tunga was certainly their common name(cf Deoli plates) These proofs are, I think strong enough to justify the conclusion that Puspadanta wrote in the time of Krsna III. But we have still to determine the year in which Puspadanta completed his Mahāpurāna We have quoted above six lines from the work, expressing the date without any mention of the year Mr. Nāthūrām Premī, on the strength of many manuscripts of this work seen by him reads the third and fourth lines of these as follows:—

कयउ कव्वु भत्तिइ परमत्थें छसय छडुत्तर कयसामत्थें ।

This gives the year 606 for the completion of the work. Referred however to the Vikrama, Śaka, Kalacūri or Gupta era, the year does not agree with the facts disclosed above, nor does it prove to be a Krodhana Samvatsara as required Therefore this reading must be held to be erroneous, unless and until it is shown to have reference to an era other than the four mentioned above

At the beginning of the work Puspadanta tell us that he began writing it in Siddhārtha Samvatsara —

तं कहमि पुराणु पसिद्धणामु सिद्धत्थवरिसे भुवणाहिरामु ।

Somadeva, in the colophon to his Yaśastilaka, tells us that he completed the work in the Śaka year 881 (Siddhārtha Samvatsara) when Krsna III was reigning (of Peterson's III Report, 156) Astronomical calculations also confirm the statement that the Śaka year 881 was Siddhārtha. Krodhana follows Siddhārtha after six years and thus the Saka year 887 was Krodhana Hence the Mahāpurāna may be taken to have been begun in the Śaka year 881 and completed on the 10th of the bright fortnight of Āśādha of Śaka year 887 This according to Swami Kannu Pillai's Indian Ephemeris is equivalent to Sunday the 11th June, 965 A D This date, however, raises a question of some historical importance If we accept that this Mahāpurāna was completed in A D 965=V S. 1022, and also that the raid of Mānyakheta mentioned in it refers to the plunder of the city by Harsa of Dhārā, it *prima facie* follows that the latter event took place at least not later than V S 1022 But as we have seen, the author of Pāiyalacchīnāmamālā refers to the same event in a way as to make us understand that it occurred in V S 1029 This would make a difference of seven years I take it that the event in fact took place about the year 1022 V S The mention of Dhanapāla may be explained by the probability that King Harsadeva returned to his capital Ujjain seven years after the plunder of Mānyakheta, spending the interval in conquering other parts of the country. In V S 1029 the memorable plunder of Mānyakheta must have been still fresh and hence Dhanapāla referred to it in that manner

Though it is difficult to say how long after the completion of Mahāpurāna, the Yasodhara-carita and Nāgakumāra carita written written, this much is certain that they were written after the Mahāpurāna, because during the composition of the latter, Bharata was the minister of the King, but when the other two works were composed, his son Nanna is said to have occupied that office. The king has been referred to by the name of Vallabharāya in these two works also, and on their manuscripts we find the marginal note "Krsnarāja" This is a mistake As we have seen Khottigadeva had already succeeded Krsnarāja even before the completion of Mahāpurāna."

4 POPULARITY OF JASAHARA WITH THE JAIN WRITERS

Jasahara or Yaśodhara, the hero of the present work, seems to be highly popular with both the sects of the Jains Well-known literary figures like Haribhadra handled the theme, and works bearing the title Yaśodharacarita are found in Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa, old Gujarati, old Hindi, old Tamil and old Kannada I have been so far able to collect over twentyfive authors on the theme, and I do not feel confident that my list is exhaustive

1. Somadeva composed his Yaśastilakacampū, a huge work in Sanskrit prose and verse He completed the work in 881 of the Saka era, i e, in 959 A. D. It is printed and published by the Nirnayasāgara Press, Bombay, together with the commentary of Śrutasāgara

2 Vāsavasena composed in Sanskrit a Yaśodharacarita in eight cantos It is in verse and the predominent metre is anustubh. It is this poet who is mentionod in the

passages added to Puspadanta's work and therefore must be earlier than 1308 A. D. There are two MSS of this work, No 550 of 1884-86 and No 307 of 1883-84 at the Bhandarkar Institute At the opening of his work Vāsavasena mentions Prabhañjana and Harisena as his predecessors in writing on Yasodaracarita.

सर्वशास्त्रविदा मान्यैः सर्वशास्त्रार्थपारगैः ।
प्रभञ्जनादिभिः पूर्वं हरिषेणसमन्वितैः ॥ ३ ॥
यदुक्तं तत्कथं शक्यं मया बालेन भाषितुम् ।
तथापि तत्क्रमाम्भोजप्रणामार्जितपुण्यतः ॥ ४ ॥
प्रोच्यमान समासेन संसारासारसातनम् ।
पठता शृण्वता यत्तत्सन्तस्तच्छृणुतादरात् ॥ ५ ॥

The description of the marriage of Yasodhara which Gandharva added to Puspadanta's work and which, he says, is based upon Vāsavasena's work is found in the second canto of the work

3 Sakalakirti composed a Yasodharacarita in Sanskrit, probably after the model of Vāsavasena's work It is also written in anustubh metre and in eight cantos There are two MSS of this work, No 1469 of 1886-92 and No 1051 of 1887-91 at the Bhandarkar Institute One of these MSS is dated Samvat 1806 but is itself copied from an other old MSS dated Samvat 1776, i e 1719 A D Sakalakirti, however, must have lived about 1450 A D, as his grand-pupil Jñānabhūsana wrote his Tattva Jñānatarangini in Samvat 1560, i e, in 1503 A D See Rai Bahadur Hiralal's Catalogue, Introduction, page xxxviii.

4 Vādirāja, otherwise known as Kanakasena Vādirāja composed a Yaśodharacarita in Sanskrit in four cantos There is published an edition of this work in Tanjore in 1912 According to that editor, the poet Vādirāja lived in the second half of the 10th century A D This work therefore must be regarded as almost contemporaneous with our work Vādirāja calls himself to be the author of the Ekībhāvastrotra and Pārsvanāthacarita which are published, and of Kākutsthacarita.—

श्रीपार्श्वनाथकाकुत्स्थचरित येन कीर्तितम् ।
तेन श्रीवादिराजेनारब्धा याशोधरी कथा ॥ ६ ॥

5 Somakirti composed a Yosodharacarita in Sanskrit The work is divided into eight cantos as in Sakalakirti's. There are two MSS of this work, No 549 of 1884-86 and No 167 of 1872-73 at the Bhandarkar Institute The author gives the date of the composition as samvat (?) 1536, i e, 1479 A. D in the colophon which runs as follows:—

नन्दीतटाख्यगच्छे वंशे श्रीरामदेवसेनस्य ।
जातो गुणार्णवोकः (काः) श्रीमाश्च श्रीभीमसेनेति ॥ १३ ॥
निर्मितं तस्य शिष्येण श्रीयशोधरसंज्ञिकम् ।
श्रीसोमकीर्तिमुनिना विशोध्याधीयता बुधाः ॥ १४ ॥

वर्षे षट्त्रिंशसंख्ये तिथिपरिगणिना युक्तसंवत्सरे वै
पञ्चम्या पौषकृष्णे दिनकरदिवसे चोत्तराभे हि चन्द्रे ।
गौढिल्या मेदपाटे जिनवरभवने शीतलेन्द्रस्य रम्ये
सोमादीकीर्तिनेदं नृपवरचरितं निर्मितं शुद्धभक्त्या ॥ ९५ ॥

6 Mānikyasūri or Mānikyadevasūri composed a Yasodharacarita in Sanskrit verse It is divided into fourteen cantos and the Granthasamkhyā is 1350 There are two MSS of this work, No. 1308 of 1884-87 and No 1332 of 1887-91 at the Bhandarkar Institute There is no mention of the date of the work or of MSS Mānikyasūri, however, mentions Haribhadra as his predecessor on the theme

7. Padmanābha composed a Yaśodharacarita in Sanskrit in nine cantos There is one MS. of this work, No 1161 of 1891-95 at the Bhandarkar Institute which does not give any indication as to the date of the composition or of the MS Is he the same as Padmanātha, author of MS No 7805 in Rai Bahadur Hiralal's Catalogue ? He must however be older than Pandit Lakhmidāsa who composed his Yaśodharacarita in old Hindi in Samvat 1781, i e, in 1724 A D, after the model of Padmanābha

8 Pūrnadeva composed a small work in 311 Sanskrit stanzas on Yaśodhara, of which there is a MS No 548 of 1884-86 at the Bhandarkar Institute I could not get any clue to fix the date of the author

9 Ksamākalyāna composed a Yaśodharacarita in Sanskrit prose and in eight chapters. There is one copy of the MS, No 394 of 1880-81, of this work at the Bhandarkar Institute In the introduction to his work, Ksamākalyāna mentions Haribhadra as a writer of a Prakrit Yaśodharacarita:—

श्रीहरिभद्रमुनीन्द्रैर्विहितं प्राकृतमयं तथान्यकृतम् ।
सस्कृतपद्यमयं तत्समस्ति यद्यपि चरित्रमिह ॥ ८ ॥
तदपि तयोर्विषमत्वादर्थावगमो हि तादृशो न भवेत् ।
तदहं गद्यमयं तत्कुर्वे सर्वावबोधकृते ॥ ९ ॥

Ksamākalyāna wrote his work in Samvat 1839, i. e, in 1782 A D, as is clear from the following colophon to his work —

वर्षे नन्दकृशानुसिद्धिवसुधासंख्ये नभस्ये सिते
पक्षे पावनपञ्चमीसुदिवसे श्रीजेसलाद्रौ पुरे ।

10 There is, at the Bhandarkar Institute one more MS of the Yośdharacarita' No 804 of 1892-95 A few pages at the beginning are missing and the colophon also does not mention the name of the author The work, however, is divided into four cantos, and the MS is dated Samvat 1581, i e, 1524 A D

Besides these writers in Sanskrit on Yasodharacarita whose works I could examine at the Bhandarkar Institute, the following are mentioned in Rai Bahadur Hiralal's Catalogue —

11. Mallibhūsana, No 7788.

12. Brahmanemidatta, No 7800

13. Srutasāgara, No 7804. Is he the same as the commentator on Somadeva's Yaśastilaka?

14 Padmanātha, No 7805, probably the same as Padmanābha above

The Jain Granthāvali adds one more name to the list:—

15 Hemakuñjara, whose work consists of 370 ślokas only.

The following writers, presumably in Sanskrit, on the theme are referred to in works already examined:—

16 Prabhañjana, mentioned by Vāsavasena

17 Harisena, mentioned by Vāsavasena

18. Vatsarāja, referred to by Gandharva in passages added to Puspadanta's work

The following writers wrote on the theme in Prakrit and Apabhramśa respectively.—

19 Haribhadra, on the authority of Ksamākalyāna and Mānikyasūri

20. Puspadanta, the author of the present work.

Besides these I have discovered the names of the following writers in vernaculars on the theme:—

21 Janna composed his Yasodharacarita in Kannada in 1209 A. D, in the reign of Vira Ballāl (1173-1220 A D). His work is in prose and verse and is divided into four avatāras In the introductory portion of his work he says that the story was already narrated in Sanskrit, Prakrit and kannada by former poets (See karnātaka-kavi-carite, Vol I, by R B R Narasimhācārya)

22 Lakhmidāsa or Pandit Lakhmidāsa wrote a Yaśodharacarita in Hindi, of which there is a copy at the Bhandarkar Institute and bears No. 681 of 1895-98. The Pandit says that he wrote the work after the model of Padmanābha in the year 1781 of the Vikrama era, i e, in 1724 A D

23 Jinacandrasūri of Kharatara Gaccha wrote a Yaśodharacarita in old Gujarati, a MS of which, No 1489 of 1887-91, is deposited at the Bhandarkar Institute I think he belongs to 16th century.

24. Devendra composed in old Gujarati a Yaśodhararāsa, a MS. of which, No. 1468 of 1886-92, is deposited at the Bhandarkar Institute. Both Jinacandra and Devendra have not been mentioned by Mr M. D Desai in his Jain Gurjara Kavio vol I He however mentions four more poets of old Gujarati on the theme:—

25. Lāvanyaratna composed a Yaśodharacarita in Gujarati which is dated Saṃvat 1573, i e., 1516 A. D

26. Manoharadāsa composed a similar work in Gujarati dated Saṃvat 1676, i. e, 1619 A. D

27. Brahmajinadāsa composed a Yaśodhararāsa in Samvat 1520, i e, 1463 A.D

28 Jñānadāsa composed a Yaśodhararāsa in Samvat 1670, i e 1613 A. D

29. An unknown author, perhaps Vādirāja composed in Tamil a Yaśodhara-carita in the 10th century (See Introduction to Vādirajā's Sanskrit work, page 6)

It will be clear from the above list of writers to what extent Jasahara was popular with the Jains from the time of Haribhadra down practically to the close of the 18th century Of this vast literature on the hero, only two works, Somadeva's Yasastilaka and Vādirāja's Yaśodharacarita are made known to the world and the present work is the third. Its special interest is not thus the narrative, but the language, the Apa bhramśa larguage of Mahārāstra of the 10th century I am reserving for my introduction to Puspadanta's Tisatthimahāpurisagunālamkāra, a detailed examination of all his works from the linguistic point of view, their vocabulary and metre, as the present work is only one-twentieth of his extensive literary activity I have however added to the present text an Apabhramśa-Sanskrit Glossary and a few notes to help the reader.

---

5 THE STORY OF JASAHARA

There was on this earth a prosperous and beautiful country named Yaudheya, the capital of which was Rājapura King Māridatta ruled over this country and spent most of his time in the full enjoyment of princely pleasures One day there came on a visit to the capital, a Kāpātikācārya, named Bhairavānanda He used to wander in the city for begging alms and also for the purpose of initiating people in the faith of the Kāpālika school He himself proclaimed that he possessed supernatural powers of visualising things of all times, that he had the power of remaining young for ever and that he could even check the movements of heavenly bodies like the sun and the moon The news of the visit of Bhairavānanda reached the king's ears, and he sent one of his elderly minister for him On his arrival at the court the king respectfully bowed down to him and begged of him the favour of the power of moving into the air Upon this Bhairavānanda said that he would certainly secure for him that power if goddess Candamārī is worshipped with the offering of pairs of all living beings including a human pair The king immediately ordered his officers to secure such pairs The officers accordingly brough these pairs except a human pair The king again ordered one of the officers to secure one and he began to search various places for it

At this junctures there came on a visit to the town a Jain monk called Sudatta, accompanied by his two pupils in the stage of ksullaka, named Abhayaruci (boy) and Abhayamati (girl) He at first halted at a garden adjoining the town, but finding that place unsuitable, he went to the cemetery The two ksullakas under training with him asked their teacher's permission to go for begging into the town, when they were moving into the town, the king's officers caught them and brought them to the temple of goddess Candamārī. The pair of ksullakas blessed the king in grave tone which attracted his attention. The king was greatly impressed by their figure and

asked them whether they came from a royal family and how it was that they took the vow of ascetic life in so tender an age The boy ksullaka thereupon said to the king that a pious narrative like his own would be wasted on an assembly of impious men, but the king stopped all the noise of drums and other musical instruments and pressed him to give the narrative Thereupon the ksullaka said —

There is a country in this Bhārata Varsa called Avanti with Ujjayini as its capital There ruled at this place a king, Yasobandhura by name His son Yasorha succeeded him to the throne He married princess Candramati, daughter of king Ajitānga. I was the son of this couple and was named Yasodhara I was trained in all the princely arts and crafts of the age, and, when in youth, was married to the princess of Krathkaisika and to a few more princesses. In due course of time king Yasorha saw his hair turning grey and immediately decided to place his son Yasodhara on the throne and lead the life of an ascetic The young king Yaśodhara firmly established his rule on the earth in a short time

II

King Yasodhara was so much addicted to pleasures of youth that he felt even the responsibility of his kingship an obstacle to the full enjoyment of life. Now one day in full moon-light, the king Yasodhara went to the palace of his queen Amrtamati At about midnight, when the king was in bed and apparently asleep, the queen gently got herself free from the king's arms and quietly went out to meet her paramour who was an ugly figure of a hump-back The king was astonished at this conduct of the queen and followed her sword in hand The queen, on approaching the hump-back, pressed his feet to win him, but he got angry as she was late, and even kicked her. The queen however declared her helplessness and said that she would indeed be glad and worship the goddess if her husband was dead. The king on watching this behaviour of the queen was at one moment about to strike them both with his sword but he thought that he could not with propriety kill a woman and a mean fellow like her paramour So he returned home in disgust The queen also returned to her bed before dawn

Disgusted with what he saw the previous night the king at first thought of leaving the worldly life and becoming an ascetic Accordingly he declared in the court the next morning to his mother that he saw a bad dream the previous night to the effect that he must at once be a monk or he would die The mother however proposed that she would rather offer an animal victim to the goddess to counteract the effects of the evil dream. The king proposed that, instead of an animal, a cock made of flour be offered which was done accordingly The flour was eaten by all as flesh of a cock But the king, returning home, placed his son on the throne and made preparations to go to the forest On hearing this the queen came to him and told him that she had arranged a feast after which she also would accompany him to the forest. The king was tempted to wait and partake of the feast, at which the queen poisoned both the king and his mother The king fell on the ground under the effect, of the poison when the queen, apparently wailing, threw her body on him and strangled him in the neck to death.

***

His mother also died as a result of the poison His son Jasavai came to the scene and in grief performed all the funeral rites with due pomp so that his father and grand mother might have good life in the future But on account of the offering as a victim of the artificial cock, king Yaśodhara was born a peacock and Candramati a dog in a forest The peacock was brought to Ujjayini and presented to king Jasavai by a forester Yasodhara in his birth as peacock saw his queen still leading a vicious life with her paramour and in anger attacked them both The queen struck the peacock with her girdle and thus broke one of its legs Her maids persued the peacock, when the dog, queen mother Candramati of the previous life, came there and killed it. King Jasavai came there and with the stroke of a sped killed the dog In their next birth Yaśodhara and Candramati respectively became a mangoose and a snake Both these met their death in the forest, the snake being devoured by the mangoose and the mangoose by a boar

III

Resuming the narrative, Abhayaruci said Jasahara was born a fish in his next birth in the river Śiprā, and his mother's soul a crocodile. While this crocodile attempted to catch the fish, one of the maids of the palace fell on them in the course of their water-sport, and the crocodile caught her The fish thus escaped from the clutches of the crocodile who was caught by the royal order and so also the fish The crocodile died on being placed on the ground, while the fish was taken to the royal kitchen, was cut and fried and served to Brahmins by Jasavai in the name of his father Jasahara In their next life Candramati was born a she-goat and Jasahara a he-goat to her While in youth the he-goat the son was enjoying sexual pleasures with the she-goat, the he-goat was killed. Jasahara's soul passed into the womb of the she-goat again One day king Jasavai caught the she-goat and cut her when he saw the child in the womb still alive The young one was brought up in the palace, but one day Amrtamati ordered it to be killed Next Candramati and Jasahara passed through successive births of buffalo, cock and hen While in this last birth they were placed in a cage under the charge of an officer of Jasavai This officer met a monk who delivered to him a long discourse on Jainism. The officer was, as a result of the conversation, converted to Jainism and the cocks recollected their previous births But at this very juncture the cocks in the cage were killed by an arrow of king Jasavai who wanted to show his skill in archery to his queen, Kusumāvali, and the souls of Jasahara and Candramati then passed into the womb of the queen as twins, the boy Abhayaruci and the girl Abhayamati In course of time the twins attained youth King Jasavai went to the forest to hunt with five hundred dogs He met there a Jain monk named Sudatta, and thinking his presence to be a bad omen, he discharged all his dogs against the monk But by the prowess of the monk they all stood before him with bent heads. The king thereupon thought of killing the monk with his sword, when the merchant-friend of the king intervened and asked him to prostrate before the monk who, as the merchant said, renounced his kingdom of the Kalinga country because he punished an innocent person by mistake King Jasavai was moved by this narrative, bowed down to the monk, and thought in his mind to cut off his head in order to expiate his

sins. The monk knew the king's thoughts and asked him not to do such a rash act. The king was again surprised to see that the monk possessed the power of knowing the thoughts of others and asked him further to tell him where his father, mother and grand-mother were born The monk thereupon narrated to him their various births, saying in conclusion that his father and grand-mother were born to him as his son Abhayaruci and daughter Abhayamati, while his mother was born in the fifth hell

IV

On hearing this narrative king Jasavai was moved, and decided, despite the gentle persuasions of his harem, to live the life of a monk Abhayaruci and Abhayamati also recollected their previous births and fainted When they were brought round they at first thought of becoming monks, but being too young and being advised on the principles of Jainism by Sudatta, postponed the project for some time, and became ksullakas, novices Abhayaruci concluded his narrative by saying to king Māridatta that they were, while wandering as ksullakas, caught by his men and brought to the temple of Candamārī

On hearing this account both the goddess Candamari and king Māridatta repented and requested the ksullaka to initiate them into the fold of Jainism The ksullaka however replied that he could not do that, but his teacher alone could admit them into Jainism At this juncture Sudatta came there, narrated the past lives of king Māridatta and others Bhairavānanda also became disgusted with his mode of life and all the three were converted to Jain faith. At this stage Abhayaruci became a monk and Abhayamati a nun, and after having lived a pious life, were born as gods in the Īsāna heaven

---

6. ACKNOWLEDGMENT OF OBLIGATIONS

It now remains for me to perform the pleasant duty of thanking all those who, one way or the other, assisted me in the production of the present work I must thank in the first place Rai Bahadur Hiralal, who, through the kindness of my friend Mr. V K Deshpande B A, LL B, Additional District and Sessions Judge in the C P and Berar, put me in communication with the late Mr. Jaykumar Devidas Chaware, Pleader of Akola. It was late Mr Chawre who made all the necessary arrangements for my inspection of the two Bhandars at Kāranjā

The lovers of Indian scholarship owe a special debt of gratitude to the generosity and munificence of Shet Gopal Ambadas Chaware, Banker and Merchant of Kāranjā in Berar, who has set apart a large sum of money for the purpose of starting the Series Ambadas Chaware Digambar Jain Granthamālā, to perpetuate the momory of his late father It is through this Series that the valuable treasures of the Kāranjā Jain Bhandars will be made known to the world of scholars I am particularly indebted to him for the courtesy he showed me during my stay at Kāranjā and for the honour he did me in entrusting the edition of the present work.

INTRODUCTION

To Professor Hiralal Jain, M A, LL B, of King Edward College, Amraoti, and the General Editor of the Series, I owe a special debt of gratitude It was Professor Jain who did me the honour of entrusting the editorship of this first volume, and bore through patiently with me in my protracted labours of editing and printing It was he, as Rai Bahadur Hiralal had already said in his introduction to the Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts in C P and Berar, who first inspected the Kāranjā Jain Bhandars and made their precious treasures known to the world Professor Jain helped me in other ways also He procured for my use a valuable MS from Pandit Jugal Kishore Mukhtar of Samantabhandrāsrama, Delhi, and sent me from time to time any piece of information that he might have come across His articles on the Apabhramsa literature in the Allahabad University Journal, Vol I and on Puspadanta in the Jain Sāhitya Samśodhak, Vol II iii and others, have been of great use to me

To Pandit Nāthūrām Premi and to Professor H D Velankar of the Wilson College, Bombay, I convey my thanks for respectively procuring for my use the MSS from the Bhandars at the Terapanthi Jain Mandir and the Ailak Pannalal Sarasvati Bhuvan in Bombay

Nor should I forget to mention the deep obligations on me of my friend Mr G K. Gokhale, Secretary, Shri Ganesh Printing works, Poona, who, as Printer, did his best to produce the work with utmost care and promptitude, and never minded the troubles and inconveniences of the rather exacting editor. His staff, I am glad to note, cheerfully co-operated with him and with me in looking even to the minute details of printer's technicalities.

Fergusson College, Poona
January 1931

P L VAIDYA

जसहरचरिउ

1

तिहुवणसिरिकंतहो अइसयवंतहो अरहंतहो हयवम्महहो ॥
पणविवि परमेट्ठिहि पविमलदिट्ठिहि चरणजुयल णयसयमहहो ॥ ध्रुवकं ॥
कोंडिल्लगोत्तणहदिणयरासु वल्लहणरिंदघरमहयरासु ।
णण्णहो मंदिरि णिवसंतु संतु अहिमाणमेरु कइ पुप्फयंतु ।
चिंतइ यै हो धणणारीकहाए पज्जत्तउ कयदुक्कियपहाए ।
कह धम्मणिबद्धी का वि कहमि कहियाइ जाइ सिवँ सोक्खु लहमि ।
पंचसु पंचसु पंचसु महीसु उप्पज्जइ धम्मु दयासहीसु ।
धुउं पंचसु दससु विणासु जाइ कप्पंघिवखइ पुणु पुणु वि होइ ।
कालावेक्खइ पढमिल्लु देउ इह धम्मवाइ सियवसहकेउ ।
पुरुएउ सामि रायाहिराउ आणंदिउ चउसुरवरणिकाउ ।

घत्ता—वत्ताणुट्ठाणें जणु घणदाणें पइं पोसिउ तुहुं खत्तधरु ॥
तवचरणविहाणें केवलणाणें तुहुं परमप्पउ परमपरु ॥ १ ॥

2

जय रिसह रिसीसरणवियपाय जय अजिय जियंगयरोसराय ।
जय संभव संभवकयविओय जय अहिणंदण णंदियपओय ।
जय सुमइ सुमइसम्मयपयास जय पउमप्पह पउमाणिवास ।
जय जयहि सुपास सुपासगत्त जय चंदप्पह चंदाहवत्त ।
जय पुप्फयंत दंततरंग जय सीयल सीयलियवयणभंग ।
जय सेय सेयकिरणोहसुज्ज जय वासुपुज्ज पुज्जाणुपुज्ज ।
जय विमल विमलगुणसेढिठाण जय जयहि अणंताणंतणाण ।
जय धम्म धम्मतित्थयर संत जय संति संतिविहियायवत्त ।
जय कुंथु कुंथुपहुअंगि सदय जय अर अरमाहर विहियसमय ।
जय मल्लि मल्लियादामगंध जय मुणिसुव्वय सुव्वयणिबंध ।

---

1. १ STB read तिहुयण. २. SB चलण ३. T अइसयमहहो ४. S कोंडिण्ण ५ STB चिंतइ हो ६. ST लहु मोक्खु. ७. T धुवु ८. STB पुरुदेवसामि. ९. T चउविहसुरणिकाउ.

2. १. STB णमिय. २. STB सीयल. ३. S अणंत अणतणाण. ४ S सुदय.

जय णमि णमियामरणियरसामि जय णेमि धम्मरहचक्कणेमि ।
जय पास पासछिंदणकिवाण जय वड्ढमाण जसवड्ढमाण ।

घत्ता—इय जाणियणामहि दुरियविरामहि परिहिवि णवियसुरावलिहिं ॥
अणिहणहि अणाइहि समियकुवाइहि पणविवि अरहंतावलिहिं ॥ २ ॥

3

पुणु पभणमि जसहरणिवचरित्तु वइयरविचित्तु जं जेम वित्तु ।
बहुदीवमहण्णवमंडलिल्लि इह तिरियलोइ मयसंकडिल्लि ।
वित्थिण्णए जंबुदीवि भरहे खरकिरणकरावलिभूरिभरहे ।
जोहेयउ णामिं अत्थि देसु णं धरणिए धरियउ दिव्ववेसु ।
जहिं चलइं जलाइं सविब्भमाइं णं कामिणिकुलइं सविब्भमाइं ।
भंगालइं णं कुकइत्तणाइं जहिं णीलणेत्तणिद्धइं तणाइं ।
कुसुमियफलियइं जहिं उववणाइं णं महिकामिणिणवजोव्वणाइं ।
गोवालमुहालुंखियफलाइं जहिं महुरइं णं सुकयहो फलाइं ।
मंथररोमंथणचलियगंड जहिं सुहि णिसण्ण गोमहिसिसंड ।
जहिं उच्छुवणइं रसदंसिराइं णं पवणवसेण पणच्चिराइं ।
जहिं कणभरपणविय पिक्क सालि जहिं दीसइ सयदलु सदलु सालि ।
जहिं कणिसु कीररिंछोलि चुणइ गहवइसुयाहि पडिवयणु भणइ ।
छोक्करणरावरंजियमणेण पहि पउ ण दिण्णु पंथियजणेण ।
जहिं दिण्णु कण्णु वणि मयउलेण गोवालगेयरंजियमणेण ।
जहिं जणधणकणपरिपुण्ण गाम पुर णयर सुसीमाराम साम ।

घत्ता—रायउरु मणोहरु रयणंचियघरु तहिं पुरवरु पवणुद्धयहिं ॥
चलचिंधहि मिलियहिं णहयलि घुलियहिं छिवइ व सग्गु सयंभुअहिं ॥ ३ ॥

---

५ S जयवड्ढमाण ६ B परहवि·

3. १. ST इय २ ST जबुदीवभरहे ३ P भगालय ४ T णिद्धतणाइ ५ T सुकय ६ SB सुहु-णिसण्ण, T सुहणिसण्ण ७ SB पणमिय, T विणमिय. ८. P पक. ९ T कणधणभर १० SB सणीलाराम. ११· PB पवणुध्दुएहि १२ P सयभुएहिं·

4

जं छण्णउं सरसहिं उववणेहिं णं विद्धउं वम्महमग्गणेहिं ।
कयसद्दहिं कण्णसुहावएहिं कणइ व सुरहरपारावएहिं ।
गयवरदाणोल्लिय वाहियालि जहिं सोहइ चिरु पवसियपियालि ।
सरहंसइं जहिं णेउररवेण मउ चि कमंति जुवईपहेण ।
जं णिवभुयासिवरणिम्मलेण अण्णु वि दुग्गउ परिहाजलेण ।
पडिखलियबइरितोमरझसेण पंडुरपायारें णं जसेण ।
णं वेढिउ बहुसोहग्गभारु णं पुंजीकय संसारसारु ।
जहिं विलुलिय मरगयतोरणाइं चउदारइं णं पउराणणाइं ।
जहिं धवल मंगलुच्छवसराइं दुतिपंचसत्तभोमइं घराइं ।
णवकुंकुमरसछडयारुणाइं विक्खित्तदित्तमोत्तियकणाइं ।
गुरुदेवपायपंकयवसाइं जहिं सव्वइं दिव्वइं माणुसाइं ।
सिरिमंतइं संतइं सुत्थियाइं जहिं कहिमि ण दीसहि दुत्थियाइं ।
जहिं णिच्च विजयदुंदुहिणिणाउ तहिं मारिदत्तु णामेण राउ ।

घत्ता—कोवग्गि जलियहिं परमंडलियहिं जो खंडइ अहिमाणसिह ॥
जसु णिहियघडधारिणि आणाकारिणि वियरइ सिरि घरदासि जिह ॥ ४ ॥

5

चाएण कण्णु विहवेण इंदु रूवेण कामु कंतीए चंदु ।
दंडें जमु दिण्णपयंडघाउ परदुमदलण बलेण वाउ ।
सुरकरिकरथोरपयंडवाहु पच्चंतणिवइमणि दिण्णदाहु ।
भसलउलणीलधम्मिल्लसोहु सुसमत्थभडह गोहाण गोहु ।
गोउरकवाडअइविउलवच्छु सत्तित्तयपालणु दीहरच्छु ।

4 १ T सुहावणेहिं. २ ST णं. ३. S चिक्कमंति, T विक्कवंति. ४. ST पवराणणाइं. ५ S भउमइं; T भूमी ६. S दिट्ठइं ७ T णिच्चु ८. S घरि दासि.

5 १. STB परवलदलणबलेण वाउ. २. Portion beginning with this line and ending with कडवक 8, is, curiously enough, omitted in S as well as in T.

लक्खणलक्खंकिउ गुणसमुहु[3] सुपसण्णमुत्ति घणगहिरसद्दु[4]।
विण्णाणणाणतेएण तरणि परणिवइ ण वुज्झइ धम्मसरणि।
तहो वुड्ढहूवजससेस सव्व संठिय जे तरुणसरंतगव्व।
हिंडइ समवयसभडेहि जुत्तु परिपक्कवुद्धि पक्कु वि ण पत्तु।
जोव्वणमउ सिरिमउ जेत्थु फार वट्टंति तेत्थु वहलंधयार।
कहिं दीसइ तहिं सुहमग्गु सारु वुहरवियरेहिं विणु विहिय चारु।
कइया वि तुरइ आरुहिवि भमइ धर खुंदिवि खरखुरखण्णु कमइ[5]।
कइया वि हत्थि चडिर मइरंगि अंकुसेण भमाडइ विविहभंगि।
वणि भमइ कीलउच्छल्लचित्तु रमणीहि पउहर णियइ चित्तु।
वल्लीमंडवि कामिणिसमाणु रइसुहु[6] भुंजइ रइवद्धठाणु।
पुणु कक्खि जाइ सुणहाहिं समग्गु अवलोयइ मयसूयरह मग्गु।
कइया वि पुरउ गिज्जं व गीउ अप्पुणु[7] गायइ रहसि अभीउ।
णच्चावइ घरिणिं[8] धरेवि तालु वज्जउ वज्जावइ पुणु णिवालु।
छंदें विरज्जइउ करइ कम्मु विणु वुहयणेहिं कहिं लहइ धम्मु।

घत्ता--तहो रज्जु करंतहो जणु पालंतहो मंतिमहल्लिहिं परियरिउ[9] ॥
एत्तहिं रायउरहो घणकणपउरहो संपत्तउ कउलायरिउ ॥ ५ ॥

6

तहिं जगड्डु[1] भयाउलु अलियरासि भइरउ अहिहाणिं[2] सव्वगासि।
तहि भमइ भिक्खयरु देइ सिक्ख अणुगयहं जणहं कुलमग्गदिक्ख।
बहुसिक्ख हिंसाहियउ डंभधारि घरि घरि हिंडइ हुंकार[3]कारि।
सिरि[4] टोप्पी दिण्णरवण्णवण्ण सा झंपवि संठिय दोण्णि कण्ण।
अंगुलदुतीसपरिमाणु दंडु हत्थें उप्फालिवि[5] गहइ चंडु।
गलि जोगवट्टु सज्जिउ विचित्तु पाउडिय[6]जम्मु पइ दिण्णु दित्तु।
तडतडतडतडताडियसिंगु[7] सिंगग्गु छेवि किउ तेण चंगु।

३. B समूहु ४. B सोहु ५ B करइ ६. B रइसुह. ७ B अप्पणु ८ B घराणिहिं. ९ B परिवारिउ.
6 १ PA जगडइ राउलु २ PA अहिणामि ३ B हुकारिकारि ४ B सिरटोप्पी. ५ B अप्फालिवि.
६ B पावाढिय ७ AB add before this line बहुवियपासियउवएसदुट्ठु चलघुम्ममाणु परलोयभट्ठु

अप्पि अप्पहो माहप्पु दप्पु   अणउंछिउ जंपइं थुणइ अप्पु ।
महु पुरउ पसंप्पिय जुयचयारि   हउं जरइं ण घिप्पामि कप्पधारि ।
णल णहुस वेणु मंधाय जेवि   महि भुंजिवि अवरइं गयइं तेवि ।
मइं दिट्ठ रामरावण भिडंत   संगामरंगि णिसियर पडंत ।
मइं दिट्ठु जुहिट्ठिलु बंधुसहिउ   दुज्जोहणु ण करइ विण्हुकहिउ ।
हउं चिरं[10]जीविउ मा करहु भंति   हउं सयं[11]लह लोयहं करमि संति ।
हउं थंभामि [12]रविहि विमाणु जंतु   चंदस्स जोण्ह छायमि तुरंतु ।
सव्वउ विज्जउ महु विप्फुरंति   बहु तंत मंत अग्गइ सरंति ।
इय जपंतहो तहो जाय वत्त   सा मारिदत्तकं[13]ण्णंतु पत्त ।
जायउ कोऊहलु रहसजुत्तु   दीसइ झडत्ति परिसउ पत्तु ।
पेसियउ महल्लउ गुणवरिट्ठु   गउ तेण भइरवाणंदु दिट्ठु ।
आएसु करेविणु भणइ मंति   तुह दंसणि रायहो होइ संति ।
सिग्घउ गउ जहिं ठिउ णरवरिंदु   सहमज्झि परिट्ठिउ णं उविंदु ।
दिट्ठउ जोईसरु णरवरेण   सीहासणु मेल्लिउ रहसिरेण ।
संमुहु जाएविणु धरणि पडिउ   दंडु व्व दंडपणिवाइ णाडिउ ।
आसीसिउ णरवइ भइरवेण   हउं भइरउ तुट्ठउ णियमणेण ।
उच्चासणि वइसाविवि तुरंतु   सलहणहं लग्गु तहो पं[14]इ पडंतु ।
तुहुं देव सिद्धिसंहारकारि   तुहुं जोईसरु कुलमग्गचारि ।
तुहुं चिरं[15]जीविउ जं हुवउ किं पि   पयडहि जं होसइ कज्जु तं पि ।
तुहुं महु उप्परि साणंदभाउ   वियरं[16]हि हो सामि महापसाउ ।

घत्ता—जोईसरु मणि तुट्ठउ चिंतइ दुट्ठउ इंदियसुहु महु पुज्जइ ॥
जं जं उद्देसमि तं भुंजेसमि आएसहु संपज्जइ ॥ ६ ॥

7

ता चवइ जोइ महु सयल रिद्धि   विप्फुरइ खणंतरि विज्जासिद्धि ।
हउं हरणकरणकारणसमत्थु   हउं पयडु धरायलि गुणपसत्थु ।

---

८. B जं सइ. ९ B समप्पिय. १०. P चिरु. ११ B सव्वह. १२ B रविह. १३. B. कण्णंति. १४. B पय. १५ PB चिरु १६. B विरयहि.
7. १. PA राय.

जं जं तुहुं मग्गहि[2] किं पि वत्थु तं तं हउं देमि महापयत्थु ।
पप्फुल्लवयणु ता चवइ राउ मह्नु खेयरत्तु करि विहियछाउ ।
तुह खेयरत्तु हउं करमि बप्प परमोवएसु जइ णिव्वियप्प ।
भो भो णिवकुलकुवलयमयंक दुव्वारवइरिवारण असंक ।
माँ[3] णिसुणहि णियपरिवारवयणु णिस्संकिं[4] लब्भइ गयणगमणु ।
जइ देवि पुज्ज आगमिण उत्त जइ जुयलजुयल[5] जीवेहि जुत्त ।
णहयर थलयर जलयर अणेय पसुपक्खिमिहुण बहु[6]वण्णभेय ।
जइ णरमिहुणुल्लउ अवयँ[7]पुण्णु देवीमंडउ तुहुं कराहि पुण्णु ।
तुह एम करंतहो वलिविहाणु हउं तूस मित्त हुँ[8] चंडियसमाणु ।
ता तुज्झ होइ खेयरियसत्ति विज्जाहर सेवहिं अतुलसत्ति ।
तुह खग्गि वसइ जयसिरि सछाय अमरत्तु होइ तह अजर काय ।

घत्ता—इउं[9] सयलु सुणेवि कउलायरिएं जं भणिउं ॥
खगविज्जालाहु अवँसिं[10] होसइ मइं मुणिउं ॥ ७ ॥

8

ताँ[1] रायहो चित्ति चमक्कु जाउ दिढु होएप्पिणु[2] कज्जाणुराउ ।
णिच्छउ अणेण जं कहिउ मज्झु तं करमि जइ वि करणहं असज्झु ।
आढत्तु तलारहं किंकराहं वलियहं जमदूअ[3]भयंकराहं ।
पसुपक्खिमिहुण आणेहु सज्ज देवीमंडउ पुरेहु अज्ज ।
अहियारियाहं कहियउ विसेसु पयहो जोईसहो घणु असेसु ।
सुपयच्छहु भत्तिभरेण णवहु उप्परि आयहो सियछत्तु तडहु ।
जं किं पि चवइ तं करहु आसु जिह होइ मज्झु पुण्णाहिलासु ।
रहसिल्लु राउ हिंसाहिणंदु उवएसिं कउलहो[4] हुवउ णंदु ।
अइकूरदुरग्गहगाहिउ जेण कज्जु व अकज्जु वावरइ तेण ।
जो होइ मिच्छमयगहिउ सहिउ ण वि मण्णइ[5] सो बुहयणाहिं कहिउ ।

२ B मगाहि ३. B omits मा. ४. B णिस्संकें. ५ B जुवलजुयल ६ B वहुवण्णि ७. B अवइपुण्णु. ८. B हं ९. B इय. १० B अवसें.

8 १. AB तो. २. B होएविणु ३ B. जम इव ४ B. कवलहो. ५. B. जाणइ.

जइ अंधु ण णियइ कुमग्गमग्गु   जइँ जलु घोरणिकिउ तहिँ विलग्गु ।
जइ करिहि सुंडँ चउदिसिहि वलइ   तइ णरवइमणु पेरियउ चलइ ।
इम मारिदत्तु परिहरिवि सव्वु   जोईसहो वयणि विलग्गु भव्वु ।
हिंसाजीवहं संसारसरणि   जीवहं अहिंस सुहकम्मधरणि ।
गंधव्वु भणइ मइं कियउ पउ   णिवजोईसहो संजोयभेउ ।

घत्ता–अग्गइ कइराउ पुप्फयंतु सरसइणिलउ ॥
देवियहि सरूउ वण्णइ कइयणकुलतिलउ ॥ ८ ॥

9

वेयालकालमग्गियमिसाहि   तंणयरदाहिणुल्लियदिसाहि ।
तहो रायहो केरी वइरिमारि   कुलदेवय णामें चंडमारि ।
उरयलि विलुलिय णररुंडमाल   सिसुससिसममुद्दाढाकराल ।
फणिवद्धदीहलंविरथणाल   तइयच्छिविणिग्गयजलणजाल ।
ललललियजीह रुहिरोलवोल   वसकद्दमचँच्चिकियकवोल ।
घोणसकडिसुत्तयलिहियपाय   पिउवणधूलीधूसरियकाय ।
णिम्मंस भीम चम्मट्ठिसेस   सिहिसिहसंणिहफरुसुद्धकेस ।
पेयंतावलिभूसियभुअंग्ग   तासियपासियवहुजीववग्ग ।
णिरासिय दूसिय जइ णिंदमग्ग   णग्गी दुच्चार वियारभग्ग ।
गुंजारुणदारुणचवलणयण   पलकवलगिलणपायडियवयण ।
कंकालकवालतिसूलधारि   किं वण्णमि जा पच्चक्खमारि ।
अण्णाणि कुलिंगकुदेवभत्तु   मारणसीलउ सो मारिदत्तु ।

घत्ता—पिच्छिवि कंचाइणि रुहिरंचाइणि चक्कसूलअहिखग्गधरि ॥
जयकारियभाविं विमलसहाविं महु परमेसरि दुरिउ हरि ॥ ९ ॥

---

६. B. कुमग्गु मग्गु. ७. B जिह जालि. ८. B तहिमि लग्गु. ९. P. सुंडु

9. १. T त नयरह २. T दाहिणिछिय. ३ T वेरिमारि ४ AB उरयल. ५. ST मुंढ ६ T ललुलिय ७. A चच्चकिय. ८. T फुरिसुद्धकेस, S फलरुद्धकेस. ९ A भुवग्ग, PT भुयग १० T अण्णाण ११. S कुदेवकुलिंगि.

10

छेलमिहुणसूयरा रोझहरिणकुंजरा ।
वालवसहरासहा मेसमहिसरोसहा ।
घोडकरहभल्लुया सीहसरहगंडया ।
वग्घससयचित्तया [1]एवं बहु चउप्पया ।
कंककुररमोरया हंसवलयचउरया ।
घूयसर[2]ढकाउ[3]ला कोडिपूस[4]कोइला ।
कुम्ममयरगो या गाह[5]झस[6]यरोहया ।
जीव सयल जाणिया तीए पुरउ आणिया ।

घत्ता—णियजीविउ वंछइ संति समिच्छइ परु मारेप्पिणु मूढमइ ॥
णाणाविहमिहुणइं रोझइं हरिणइं मारइ तहि अग्गइ णिवइ ॥१०॥

11

विसभोयणेण किं णर जियंति गोसिंगइं किं दुद्धइं सवंति ।
घण्णाइं सिला[1]यलि किं हवंति णीरसं[2]भोज्जि कहिं कायकंति ।
उवसमविहीणि कहिं होइ खंति परु मारंतहं कहि होइ संति ।
करकमलुग्गिण्णकिवाणएण अवियाणएण तें राणएण[3] ।
मेल्लाविय[4] बहु मिहुणुल्लयाइं अवलोइवि चिण्णतणुल्लयाइं ।
रत्तत्तणेत्तजुयलें पउत्तु भो चंडयम्म तलवर तुरंतु ।
आणहि णरमिहुणुल्लउ पसत्थु तं मइं मारेव्वउ पढमु एत्थु ।
आएसु लेहिवि[5] मउलियकरेण पेसिय णियकिंकर किंकरेण ।
जोयंति णयरि वहावयासि ते तं सरितरुवेल्लीणिवासि ।

घत्ता—तहिं तेहइ अवसरि हिंसावासरि पत्तु सुदत्तु ससंघु[6] मुणि ॥
पत्थिवणंदणवणि दुमसाहाघणि कीरमोरकुररउलझुणि ॥ ११ ॥

---

10 १ ABS एव बहु २ B सरह 3 PTS कोइला ४ AB पुंसकोइला, PS पूसकाउला. ५. ST गोह. ६. S ढसय ७ ST णाणामय, B णाणाविहु. ८ S सव्वइं सउणइं.

11 १ B सिलाइलि २ T भोयणिं ३ T रायएण. ४ S मेसाइयाइं मिहुणुल्लयाइं, T मेसाइय बहु. ५. A लइवि. ६ PBT सुसंघ

12

जत्थ चूयकुसुममंजरिया सुयचंचूचुंवणजज्जरिया ।
हा सा मुहरत्तेण व खद्धा कहिमि विडेण व वेसा लुद्धा ।
छप्पयछित्ता कोमलललिया वियसइ मालइ मउलियकलिया ।
दंसणफंसणहिं रसयारी मउउ को अ ण बहुमणहारी ।
वायंदोयणलीलासारो तरुसाहाए हल्लइ मोरो ।
सोहइ घोलिरपिंछसहासो णं वणलच्छीचमरविलासो ।
जत्थ सरे पोसियकारंडं सरसं णवभिसकिसलयखंडं ।
दिण्णं हंसेणं हंसीए चंचू चंचू चुंबंतीए ।
फुल्लामोयवसेणं भग्गो केयइकामिणियाए लग्गो ।
सरकंटयणहणिब्भिण्णंगो ण चलइ जत्थ खणं पि भुयंगो ।
जत्थासण्णवयम्मि णिसण्णो णारीवीणारवहियकण्णो ।
ण चरइ हरिणो दूवाखंडं ण गणइ पारद्धियकरकंडं ।
जत्थ गंधविसएणं खविओ जक्खीतणुपरिमलवेहविओ ।
हत्थी परिअंचइ णग्गोहं फंसइ हत्थेणं पारोहं ।
संकेयत्थो जत्थ सुहद्दं सोऊणं मंजीरयसद्दं ।
अहमं तीए तीए सामी एवं भणिउं णच्चइ कामी ।
घत्ता—तं वणु जोयंति मयणकयंति भणिउं पत्तफलु भिज्जइ ॥
समदमजमवंतहं संतहं दंतहं एत्थु णिवासु ण जुज्जइ ॥ १२ ॥

13

उग्गदित्ततवतावभासुरो ता गओ मसाणं मुणीसरो ।
तं च केरिसं कालगोयरं सिवसियालदारियमओयरं ।
करयरंतकायउलसंकुलं ढंखरुक्खसुक्खेहिं णिप्फलं ।
रक्खसीमुहामुक्कणीसणं सूलभिण्णचोरउलभीसणं ।
पक्खिपक्खलक्खेहि छाइयं किलिकिलंतणिसियराणिणाइयं ।

---

12. १. S जत्थ य. २. S छप्पइ ३. ST विहसइ ४. AS मउलियमालइ ५ ST मउयउ को ण ६. T णिब्भिण्णंगो. ७. ST दूवाकंदं. ८. T एत्थ. ९. ST सोऊण य १०. AB एउं. ११. SBT पत्तु फलु.

13 १. S मसाणे. २. P तत्थ. ३. S सुक्करुक्खेहि ४. ST पक्खिलक्खपक्खेहि

भीयरं चियाचिच्चिजालयं घित्तवालपूलोलिणीलयं ।
धूमगंधधावंतसाणयं सव्वदेहिदेहावसाणयं ।
पवणपेल्लणुल्ललियभप्परं भग्गभाणविक्खित्तखप्परं ।
इंदचंदणाइंदसंथुओ चउविहेण संघेण संजुओ ।
फासुए विसाले धरायले उज्जले पवित्ते सिलायले ।
सुद्धसुक्कलेसो अदुम्मई तम्मि संणिसण्णो महाजई[५] ।

घत्ता—पालियजिणदिक्खहिं गच्छहु भिक्खहिं भणिवि णवेवि णियच्छियउ ॥
तहिं[६] गुरु परमेसरु हयवम्मीसरु खुल्लयजुयलिं पुच्छियउ ॥१३॥

14

णाणालक्खणचच्चियगत्तं[1] पहसियवत्तं कयकरपत्तं ।
पंकयणेत्तं पालियवित्तं जिणपयभत्तं विसयविरत्तं ।
कलिमलचत्तं सुयणविरत्तं दयसंजुत्तं उत्तमपत्तं ।
धम्मासत्तं गुरुणामुक्कं सगुणगुरुक्कं जियमयचक्कं ।
अहिमाणिक्कं रुइराहियक्कं पुरवाहिट्ठुक्कं कम्मविमुक्कं ।
बालयजुयलं दट्ठुं विमलं धुणियं कमलं लवियंसमलं ।
णरणियरेणं खग्गकरेणं पावपरेणं कडुयसरेणं ।
पयं मिहुणं परमं गहणं सुहसंगहणं दुहणिम्महणं ।
चारुकरग्गं रूवसमग्गं[२] विहिवसभग्गं मारणजोग्गं ।
मयउलविलए णच्चियविलए[३] महियलतिलए देवीणिलए ।

घत्ता—इय तेहिं भणेप्पिणु भिउडि करेप्पिणु सयणु किरणमालाफुरिउ ॥
तं सिसुजुयलुल्लउ तिहुवणि भल्लउ रूसिवि करपल्लवि धरिउ ॥ १४ ॥

---

५ T महामई ६. T ता

14 1 This line and the two following ones are arranged in Mss in various ways, the wording being the same २. T मावसमग्गं. ३. T णिच्छियणिलए

15

तं जणभयजणणं सिरणिल्लणणं णाऊणं।
कयजीवविमद्दं मारणसद्दं सोऊणं॥
अभयरुइकुमारो णिज्जियमारो थिरु चवइ।
सुकियहलवेल्ली णियबहिणुल्ली संठवइ॥
मा बीहसु कण्णे अज्जु पचण्णे मरणदिणे।
हियरं अविवंकं गयखयसंकं ठवसु जिणे॥
छिंदउ तणुचम्मं भिंदउ वम्मं रसवसउ।
भक्खउ जंगलयं चंपउ गलयं रक्खसउ॥
घुट्टउ कीलालं खंडउ सीलं जइ ण मुणी।
ता होइ पसिद्धो देवो सिद्धो अट्ठगुणी॥
किं कुणइ रउद्दो रामो खुद्दो असुहरणं।
अम्हाण अछम्मो जिणवरधम्मो सहि सरणं॥
ता भणियं तीए चंदमुहीए कयपुलयं।
एइं उत्तं जुत्तं जं जिणसुत्तं णिम्मलयं॥
अवरोप्परु खंतइं संतइं दंतइं दमियाइं।
दुहमि भवकद्दमि जं चिरु णिरसमि भमियाइं॥
मइं हियए धरियं ण हु वीसरियं तं खणु वि।
एवहिं अवगण्णमि जीविउ मण्णमि ण उ तणु वि॥

घत्ता—इय वे वि चवंतइं जिणु सुमरंतइं कउलकुडुंबाणंदिरहो॥
पक्कलपाइक्कहिं जमलल्लक्कहिं णियइं तिसूलिणिमंदिरहो॥१५॥

16

जाहिं रसियसिंगाइं उद्धरियकंडाइं भुअदंडदक्खवियकोअंडदंडाइं।
लंबंतमाऊरपिंछोहणिवसणइं मसिधातुमंडियइं पित्तलविहूसणइं।

---

15. १. AB सिरु. २. T. सुकय. ३ STB अज्ज. ४. AS चप्पउ ५. T तइ. ६. ST दइवें होतइं. ७. AB णिस्सिम, S णिसमे. ८. B हियइ पधरियं ९. ST तिसूलणि

16. १. ST कोअंडचंडाइं. २. T माल्लूर.

कडिबद्धचलचीरियाचिंधजालाइं करधरियविप्फुरियकत्तियकवालाइं ।
पायडियणियगुरुकमारूढलिंगाइं कुलधोसमयचम्मपच्छाइयंगाइं ।
मुद्दाविसेसेण दूरं णमंताइं पयघग्घरोलीहिं घवघवघवंताइं ।
कहकहकहंताइं सँवियारवेसाइं मुक्कट्टहासाइं झंपडियकेसाइं ।
जहिं विविहभेयाइं कउलाइं मिलियाइं कीलंति ढड्डरइं अट्ठंगवलियाइं ।
जहिं करडपडहाइं वज्जंति वज्जाइं इट्ठाइं मिट्ठाइं पिज्जंति मज्जाइं ।
छिज्जंति सीसाइं णिवडंति भीसाइं रसवसविमीसाइं खज्जंति मासाइं ।
गिज्जंति गेयाइं चामुंडचंडाइं गहिऊण तुंडेण रुंडस्स खंडाइं ।
दुप्पेच्छरत्तच्छविच्छोहदाइणिउ णच्चंति जोइणिउ साइणिउ डाइणिउ ।
पसुरुहिरजलसित्तपंगणपएसम्मि पसुदीहजीहादलच्चणविसेसम्मि ।
पसुअट्ठिकयपिट्ठरंगावलिल्लम्मि पसुतेल्लपज्जलियदीवयजुइल्लम्मि ।
पसुकित्तिउल्लोचवंचियणहंतम्मि मारीए देवीए देवालए तम्मि ।

घत्ता—सीहु व कारितासणु दाढाभीसणु मेहु व विज्जुविराइयउ ॥
दंति व दंतग्गि उग्गयखग्गि सहुं णरणाहु पलोइयउ ॥ १६ ॥

17

ता भासियं तेहिं भाविं प्फुरंतेहि ।
भो सुद्धवरवंस सिरिपोमिणीहंस भो रायराएस संगहियजससेस ।
गुणसेढिठाणेण जोइ व्व णाणेण णेहु व्व दाणेण पाणि व्व पाणेण ।
गिरि विव सिलोहेण तरु विव फलोहेण ससि विव कलोहेण जलहि व जलोहेण ।
हयखुरकमेण तं वह घम्मेण इय महुरघोसेण पसमंतरोसेण ।
दट्ठूण डिंभाइ भयभयाणिसुंभाइं संचिंतियं तेण पहुमारिदत्तेण ।
लच्छीपियल्लेहिं सरलंगुलिल्लेहिं पायाहिं रत्तेहिं णक्खेहिं दित्तेहिं ।
गूढेहिं गुंफेहि णं मंतगुंफेहिं सोहामहग्घाहिं मसिणाहिं जंघाहिं ।

३ T omits सवियार मिलियाइं ४ B दड्डढ ५ T तुंडाइ ६ AP पट्ठि ७ S विसेसम्मि ८ ST कित्ति॰ ९, ST उल्लोयअंचिय १०. ST उक्खय

17 १ S भाविच्छुरंतेहि २. ASTB पोमिणी ३ ST गुप्फेहिं

णिविडेहिं जाणूहिं करिकरसमोरूहिं सुविउलकडिल्लेहिं तुच्छोअरिल्लेहिं ।
गंभीरणाहीहिं वट्टियसमाहीहिं दयवेल्लिरोहाहिं ललियाहिं बाहाहिं ।
अविलासवंकेहिं रेहातियंकेहिं गलकंदलुल्लेहिं तिलोकमोल्लेहिं ।
छणयंदवयणेहिं आयंबणयणेहिं संगयपलंबेहिं कण्णेहिं दिव्वेहिं ।
विंबीहलाहेहिं अहरेहिं तंबेहिं उज्जुयाहिं णासाहिं कुडिलाहिं भउहाहिं ।
उहुंवइपभालेहिं पत्तलकवोलेहिं णिवपट्टभालेहि अलिणीलवालेहिं ।

घत्ता—काहिं आयहिं वालइं णिरु सोमालइं हा खल विहि हयसुयणसुह ॥
एए सामुहिं समउ समुद्दे एयहिं किं ण भुत्त वसुह ॥ १७ ॥

18

अणिंदो खगिंदो दिणिंदो फणिंदो सुरिंदो उविंदो महारुंदचंदो ।
सिसूरूवधारी मुरारी पुरारी अणंगो असंगो अभंगो अलिंगो ।
इमो को वि देवो सुअव्वत्तभावो दिही कंति कित्ती सिरी संति सत्ती ।
मही बुद्धि सिद्धी सुहाणं व लद्धी जसाणं व सेणी गुणाणं व खाणी ।
सुहाणं व जोणी तवाणं व खोणी दुहाणं व हाणी कवीणं व वाणी ।
पसण्णा कुमारी इमा चंडमारी समाया समाया धरादिण्णपाया ।
णिएउं गहीरं महं भत्तिभारं किमं भायणेयं महं कहिमि एयं ।
जिणं दिक्खपत्तं भवाणंतपत्तं पमोत्तूण चोज्जं पपुच्छामि कज्जं ।
मणे मंतिऊणं इमं चिंतिऊणं तिणाणं पउत्तं अहो हो णिरुत्तं ।
सचित्तोपउत्तं पसाहेह वत्तं मुसावायचत्तं अयं इत्थ पत्तं ।
सरज्जाय भट्ठो पुराओ पणट्ठो रिऊणं भयाओ पमोत्तुं पयाओ ।
तुमं रायउत्तो ण किं को वि धुत्तो पुरं मज्झ पत्तो सढो गूढगत्तो ।
इमी कस्स धूया कुलाणंदभूया अमाणं णवाणं जुवं माणवाणं ।
घराओ पउत्थं किमत्थं वउत्थं सिसूणं पि सिक्खा सिसूणं पि भिक्खा ।
सिसूणं पि दिक्खा गुणेसुं परिक्खा महाअब्भुयं भो महाअब्भुयं भो ।

४. AB जण्णूहि; ST जण्हूहि. ५ AS समूरुहि. ६ ST सुपिहुल. ७ AB दयवेल्लिसाराहि. ८ AP अवलास ९. STB छणइंदु. १०. ST omit उडुवइ पट्टभालेहि. ११ ASTB एयहि भुत्त कि ण वसुह.

18 १. S पहारुंद, T महारुद्द २. AP सुआवत्तभावो ३. S सुयाण. ४. T omits this and the following line ५ ST जिणे. ६. T पवाहेह. ७. ST omit अय इत्थ पत्तं.

घत्ता—अम्हारउ पुरवरु छुहपंकियघरु किं आयउ कुमरीए सहुं ॥
भणु दुरियखयंकरु सवणसुहंकरु सकहंतरु भो कुमर महुं ॥ १८ ॥

19

ता णरवइणो हरिसं जणियं उत्तमसावयचइणा भणियं ।
अंधे णट्टं बहिरे गीयं ऊसरछेत्ते ववियं बीयं ।
संढे लग्गं तरुणिकडक्खं लवणविहीणं विविहं भक्खं ।
अण्णाणे तिव्वं तवचरणं बलसामत्थविहीणे सरणं ।
असमाहिल्ले सल्लेहणयं णिद्धणमणुए णवजोव्वणयं ।
णिब्भोइल्ले संचियदविणं णिण्णेहे वरमाणिणिरमणं ।
अवि य अपत्ते दिण्णं दाणं मोहरयंधे धम्मक्खाणं ।
पिसुणे भसणे गुणपडिवण्णं रण्णे रुण्णं वियलइ सुण्णं ।
घत्ता—जो जिणपडिकूलहो मत्थइ सूलहो गुरु परमागमु भासइ ॥
सो वयणइं सुद्धइं णं पयदुद्धइं सप्पहो ढोइवि णासइ ॥ १९ ॥

20

मुच्छं गइ दिज्जइ सलिलु पवणु उवसंतहो किज्जइ धम्मसवणु ।
किं सुक्के रुक्खें सिंचिएण अविणीयं किं संबोहिएण ।
कइ राय महारी धम्मविज्ज उत्तमपुरिसहं सवणिज्ज पुज्ज ।
तं णिसुणिवि मणि उवसंतु राउ वारिउ भंभाभेरीणिणाउ ।
चामुंडचंड डिंडिमु रसंतु वारिउ किलिकिलिकलयलु महंतु
णिम्मुक्कु भीमु हिंसाविणोउ थिउ णिच्चलु णिहुयउ सयलु लोउ ।
ण चलइ ण वलइ णं लेप्पि विहिउ णं भित्तिहिं चित्तयरेण लिहिउ ।
ता पभणइ अभयरुइ सुवाय देवाणं पिय भो णिसुणि राय ।
दिट्ठउ णिसुणउ अणुहूउ जं पि आयण्णहि णरवइ कहमि तं पि ।
एत्थत्थि अवंती णाम विसउ महिवहु भुंजाविय जेण विसउ ।

---

८ AB कुमरीहिं

19 १. S महिवइणो २ BT चइयं. ३ S अवत्ते, B अविते ४ T वियलियसुन्नं. ५ S ढोयवि.

20. १. ABST सव्वु २. S चवइ. ३. P ण लेवविहिउ ४. S कि पि.

घत्ता—णंदंतहिं गामहिं विउलारामहिं सरवरकमलहिं लच्छिसहि ॥
गलकलकेक्कारहिं हंसहिं मोरहिं मंडिय जेत्थु सुहाइ महि ॥ २० ॥

21

जहिं चुमुचुमंति केयारकीर वरकलमसालिसुरहियसमीर ।
जहिं गोउलाइं पउ विकिरंति पुंडुच्छुदंडखंडइं चरंति ।
जहिं वसहमुक्क ढेक्कार धीर जीहाविलिहियणंदिणिसरीर ।
जहिं मंथरगमणइं माहिसाइं दहरमणुड्डावियसारसाइं ।
काहलियवंसरवरत्तियाउ वहुअउ घरकम्मि गुत्तियाउ ।
संकेयकुडुंगणपत्तियाउ जहिं झीणउ विरहिं तत्तियाउ ।
जहिं हालिणिरूवणिबद्धचक्खु सीमावडु ण मुअइ को वि जक्खु ।
जिम्मइ जहिं पवहि पवासिएहिं दहि कूरु खीरु घिउ देसिएहिं ।
पवपालियाइ जहिं वालियाइ पाणिउ भिंगारपणालियाइ ।
दिंतिए मोहिउ णिरु पहियविंदु चंगउ दक्खालिवि वयणचंदु ।
जहिं चउपयाइं तोसियमणाइं घण्णइं चरंति ण हु पुणु तिणाइं ।
उज्जेणि णाम तहिं णयरि अत्थि जहिं पाणि पसारइ मत्त हत्थि ।

घत्ता—मरगयकरकलियहिं माहियलि घुलियहि फुरियहिं हरियहिं मूढमइ ॥
विणडिउ वायसइं रसविण्णासइं णीणिउ भिंहि मंदगइ ॥ २१ ॥

22

जहिं चंदकंति माणिक्कदित्ति उल्ललइ गयणि णं धवलकित्ति ।
जहिं पोमरायराएण लित्त णउ लायइ कुंकुमु हरिणणेत्त ।
जहिं इंदणीलघरि कसणकंति वहु णज्जइ सियदंतहिं हसंति ।
सुपहायकालि जोयंतियाहिं मणिभित्तिहि चिरु पवसियपियाहिं ।
अमलियमंडणु मुहु दिट्ठु जेत्थु हा पिय विणु मंडणु हुउ णिरत्थु ।
अप्पाणउं जूरिउ तियहिं जेत्थु डिंभपडिबिंबहो देइ हत्थु ।
जहिं छडयघित्तकुसुमावलीउ मोत्तियरइयउ रंगावलीउ ।

21 १. S कम्मिण. २ SP पिउ. ३ T ढुक्कार ४ T कुडंगण, AS कुडगुण ५. T विभाविंयाइ ६. T दक्खालिउ. ७. ST दुव्वामणं.

22. १. T कासिण २ ST गउ. ३ AS डिंभउ. ४ S omits this line

जहिं णंदइ जणु जणजणियसोक्खु णिच्चोरमारि णिल्लुत्तदुक्खु ।
जहिं गयमयसित्तउ रायमग्गु हयलालाजलपंकेण दुग्गु ।
सुहच्चुअतंबोलरसेण रत्तु णिवडियभूसणमणियरविचित्तु ।
कप्पूरधूलिधूसरियचमरु मयणाहिपरिमलुब्भमियभमरु[6] ।
घत्ता—जहिं णरवइ णाएं मंति उवाएं ववहारु वि सच्चें वहइ ॥
कुलु कुलवहुसत्थें पुरिसु वि अत्थें अत्थु वि जहिं दाणें सहइ ॥ २२ ॥

23

तहिं उज्जेणिहिं महिवइ[1] पसिद्धु[2] जसवंधुरु णामिं जससमिद्धु ।
तहु कुलमंडणु णंदणु जसोहु णं खत्तधम्मु थिउ होवि गोहु ।
णं गुणमेलउ णं तवपहाउ णं पुण्णपुंजु णं कलकलाउ ।
णं कुलभूसणु णं जसणिहाणु णं णायमग्गु णं भुवणभाणु ।
पाँवग्गह[3]गहविज्जामणि व्व दीणाणाहहं[4] चिंतामणि व्व ।
रिउसेल्लसिहर[5]सोदामणि व्व मंडलियमउलचूडामणि व्व ।
णं कामजुत्ति णं कामदित्ति णं कामकित्ति णं कामसत्ति ।
णं कामहो केरी वाणपंति णं कामहत्थिवीणाय तंति ।
अजियंगजाय णवणलिणणयण चंदमइदेवितहु चंदवयण ।
हउं जणियउं ताइ महासईए तणुरुहु कव्वत्थु व कइमईए ।
घत्ता—वहु वण्णिउ[6] सयणहिं भूसिउ[7] रयणहिं हउं जायउ जणणीइ किह ॥
णवमयणरसिल्लि जायउ फुल्लि जोव्वणदुमफलगुंछु[8] जिह ॥ २३ ॥

24

सिसुलीलइं कीलइं सुहु रमंतु[1] गुणि पेरिउ वारिउ दोसि थंतु[2] ।
उज्झाएं ताएं पढमि[3] खविउ सुवसिलइ भल्लइ विणइ ठविउ ।
मइं लिहियइं गहियइं अक्खराइं गेयइं सरिगमपधणीसराइं ।

---

५ S हरचलिय ६ B भसलु.

23 १ AB भूवइ, T णरवइ. २ ST omit पसिद्धु णंदणु ३ T reads णं पावग्गहविज्जामणि व्व. ४, S omits दीणाणाहह - सोदामणि व्व ५ ABT सिहरि ६ S मण्णिउ ७ T मंडिउ ८ AB गोच्छु, T गुच्छु.

24 १ ST घरि भमंतु २ T दोसदित्तु ३ A पढण

फलफुल्लपत्तछिज्जंतराइं सिललेपकट्ठकम्मंतराइं ।
वोयरणइं णट्टइं णवरसाइं छंदालंकारइं जोइसाइं ।
मायंगतुरंगारोहणाइं मइं मुणियइं गुणियइं पहरणाइं ।
दिव्वइं कव्वइं उवलक्खियाइं सव्वइं विण्णाणइं सिक्खियाइं ।
तारुण्णउं लायण्णउं णिबद्धु णउ जाणउं विहिणा किह णिबद्धु ।
पोढत्तणि पुट्ठिपलोट्टियंगु अंगें सहुं हउं णावइ अणंगु ।

घत्ता—सयलकलासंपुण्णउ विणिहयदुण्णउ जसहरु कुमरु विसालइं ॥
समवयसहिं जुत्तउ णिम्मलचित्तउ कीलइ णयरि सुसालइं ॥ २४ ॥

25

ता पत्थउ कथकोसाउ णित्तु देसाउ मंति वाहिवि स पत्तु ।
कइवयदिणेहिं गउ रयणधाम तोरणमंडिय उज्जेणि णाम ।
पडिहारहो सच्छिकरेवि चारु सहमंडवि पत्तउ विहियचारु ।
जयकारिउ राउ जसोहु तेण विणएण विणयभूसियमणेण ।
तंबोलजुत्तु संमाणु विहिउ कुसलत्तु कुसलु ता तेण कहिउ ।
पुच्छिउ राएं भो मंति एत्थु पयडेहि कज्जु तुहुं आउ जेत्थु ।
ता भणइ मंति महियलि पसिद्धु वइराडणयरु जणधणसमिद्धु ।
तहिं णरवइ णियकुलकमलभाणु णामेण विमलवाहणु पहाणु ।
तहो भज्जा देवी णाम साम लक्खणलक्खंकिय मज्झखाम ।
सुअ अभयमहापवी सउण्ण णं अच्छर णावइ णायकण्ण ।
सा जोव्वणरूढ णिएवि ताउ धूवहि परिणावमि हुवउ भाउ ।
मेलाविय सुयण विसिट्ठ इट्ठ जे वुड्ढ वियक्खण सुइ वरिट्ठ ।
भो पुच्छिहिं कारणि वरु णिएहु को वि रायउत्तु गुणमहियदेहु ।
मंतेप्पिणु कहियउ सज्जणेहिं उज्जेणि णयरि णिम्मलमणेहिं ।
जसहरु तहिं रायजसोहपुत्तु कण्णाकारणे वरु एहु जुत्तु ।

४. ST omit this line ५ P omits this line ६ A तुरगम ७. T सव्वइ ८. B पलिढियंगु ९ ST अभोल्टु १० Portion beginning with this line and ending with कडवक 27, line 23, is omitted in S and T ११. A विसालमइ १२. A वइसहि.

25 १ B कयवय. २ AB मारु ३. B मज्जि साम

रापण मज्झु आएसु दिण्णु चालेवि पत्तु हउं इह पवण्णु ।
पडिहारु लेवि तुह सह प[5]ु जणसंकुलु रायट्ठाणु दिट्ठु ।
सीहा[4]सणत्थु पेक्खेवि राय सीसेण णमंसिय तुज्झ पाय ।
संभासणु करि पुच्छियउ क मइं तुम्हहं कहियउ सामि सज्जु ।
संभालिवि किज्जइ कज्जु एहु परसप्पर वट्टइ जेम णेहु ।
राएं संतुट्ठिं कहिउ सव्वु जं कहिउ पइंमि तं भव्वु भव्वु ।
को णेच्छइ धय पयमज्झि सारु सक्करपएसु वण्णेण चारु ।
रायहो जं पिउ णिसुणेइ जाम हरिसं गउ मंती हुवउ ताम ।
सुपयच्छियकण्णावरहो सज्जु इह आणिवि कण्ण विवाह कज्जु ।
किज्जइ सुहदिणि सुहजोइ[6] लग्गि आएसहं एत्थु वहेवि मग्गि ।
ता राएं मणिमुद्दी अणग्घ कण्णाकारणें तहो दिण्ण सिग्घ ।
घत्ता—जणवयकयसति ता सो मंति हरिहि चडेविणु णिग्गउ ॥
राएं सम्माणिउ सज्जणु जाणिउ वइराडइ संपत्तउ ॥ २५ ॥

26

तहिं दिट्ठु विमलवाहणु णरिंदु [1]सहमज्झि परिट्ठिउ णाइ इंदु ।
पयकमलु णविउं मंतीवरेण इल लाइवि सिरु भत्तीभरेण ।
अमयमइ कण्ण जसहरहो देव दिण्णी जसोहतणयहो सुसेव ।
उज्जेणिहि जाइवि पुण्णलाहु लिज्जइ किज्जइ कण्[2]णहे विवाहु ।
किउ मंतु सयलसज्जणहं जुत्तु उज्जेणिहिं जाइज्जइ णिरुत्तु ।
बंधव सुअ णियपरि[3]वारु लोउ अंतेउरु भुंजियदिव्वभोउ ।
चल्लिय हय गय रह सुहड जेत्थु जगि पयड णयरि उज्जेणि तेत्थु ।
तहिं णंदणवणि णिवसेइ जाम वणवालिं रायहो कहिउ ताम ।
उच्छाहु जाउ णयरीहि मज्झि वणि उच्छउ [4]हुउ वइरियदुसज्झि ।
मंडउ विचित्तु विरइउ तुरंतु वरपंचवण्णधयवडफुरंतु ।
बहुथंभहिं बहुतोरणहिं घडिउ बहुकलसहि मंडिउ रयणजडिउ ।
बहुणरणारिहि सेविउ विचित्तु वणि मंडउ दीसइ हरियचित्तु ।

४ AB सिहासणत्थु ५ AB पवेसु ६ B जोगि

26, १ B नहमज्झि २ B कण्णाविवाहु ३ A परिवारलोउ ४ B किउ

तहिं वज्जहिं मंदल पडह ताल णच्चंति विलासिणि लडह बाल।
सुललियउ गीउ गायंति के वि मंगलु पढंति थुइवयणु के वि।
कलघोसु पवट्टिउ तहिं वणम्मि णयरीजणु तुट्ठउ णियमणम्मि।
णयरिहिं वज्जहिं वर संख पडह बहुभेय विलासिणिणडहिं लडह।
मंगलु गाइज्जइ रायगेहि उच्छवरसु वट्टिउ देहि देहि।
दोहिमि कुलेहिं उच्छाहु जाउ दोहिमि कुलेहिं आणंदभाउ।
दोहिमि कुलेहिं वरपत्तदाणु धणु धण्णु सुवण्णउं अप्पमाणु।
आयउ विवाहदिणु उच्छवेण हरिसिउ जसोहु णिउणियमणेण।
चंदमइमायहि तोसु जाउ रहसिं पूरिउ थीयणहं काउ।
कंचणमयपट्टि णिवेसियंगु कलसेहिं ण्हाविउ उत्तमंगु।
आहरणहिं भूसिउ कुमरु[६] तत्थ परिहाविय सियणिम्मलसुवत्थ।
चंदणि चच्चंकिउ सुद्धभाउ सिरि सेहरु किउ जणदिण्णराउ।
कप्पूररेणुमयणाहिगंधु फुल्लोहहिं हुउ भमरोहु अंधु।
घत्ता—ता कंकणहत्थु रहसपसत्थु अस्सरयणि आरूढउ॥
भरभेरीसद्दहिं तूरणिणद्दहिं जणु जायउ मणमूढउ॥ २६॥

27

समवयस कुमर सहुं चलिउ जाम पारंभिय थुइ णंगुडिहिं ताम।
णच्चंति विलासिणि गीउ रम्मु गायण गायंतिहिं सुकियकम्मु।
गय णंदणवणि मंडवदुवारु वरतोरणमंडिउ रयणफारु।
तहिं किउ जं जोग्गु पुरोहिएण आयारु कुमग्गणिरोहिएण।
सुपइट्ठउ मंडवमज्झि जाम वरु दिट्ठउ सज्जणजणिहिं ताम।
चउरिइ णिविट्ठु कंदप्पमुत्ति पासेहि णिवेसिय ता सुपत्ति।
अग्गइ पयक्खु किउ धूमकेउ किउ होमु हुणेप्पिणु तिव्वतेउ।
अभयमइ पाणि कुमरेण गहिउ सीयारु पमेल्लिउ ताइ अहिउ।
तहो दिण्ण कण्ण विरइउ विवाहु सव्वेहिं उच्चारिय साहु साहु।
णवयारि वि मायरि कण्णसहिउ णिग्गउ वरु एहु विवाहु कहिउ।

५ B ण्हवियउ तहु. ६. B कुवरु ७. B फुल्लेहि हिंडइ.
27 १ B णागुडिहि. २ B omits this line ३. A णिवट्ठु. ४. P अमयमइकुमरि पाणेण गहिउ

अण्णहिं वासरि संतुट्ठु राउ विणयहो पणयहो भरणावियकाउ ।
तंबोलवत्थआहारदाणु सव्वहं विरइउ संमाणदाणु ।
जं जासु जोग्गु तं तासु दिण्णु सियजसिण दिसामुहु जाइ भिण्णु ।
परसप्पर णेहु करेवि दोण्णि दिंतहं धणु धण्णु सुवण्णु दोण्णि ।
ण खलेइ चित्तु दोण्णि वि णरिंद णं गिल्लगंड दोण्णि वि गइंद ।
वरु गयउ ताम वइरियदुगेज्झि उज्जेणिणामणयरीहि मज्झि ।
णयरीतवंगि थिउ हरिसजुत्तु णारीयणु पेक्खइ एयचित्तु ।
सलहइ किं रइ किं मयणु एहु जसहरु संपत्तउ मायँगेहु ।
सीसेण णविय पुत्तेण माय अमयमइ देवि तहिं णवइ पाय ।
सुण्हा पेक्खेप्पिणु रूवजुत्त चंदमइ तुट्ठ इहँ चंदवत्त ।
जसहरु परिणेविणु दिव्वभोउ भुंजइ भज्जइ सहुं जाणियमोउ ।
चिंतइ जसोहु हउं रायकण्ण परिणावेसमि सयपंच अण्ण ।
जं वासवसेणिं पुव्वि रइउ तं पेक्खिवि गंधव्वेण कईउ ।
परिणाविउ सुललियतणुभुआउ राएण पंच पत्थिवसुआउ ।
गयकाले पइहरि ताहिं णिवेण दप्पणयलि मुंहु जोवंतिएण ।
घत्ता—ससहरकिरणुजलु पिक्खिवि कुंतलु चिंतिउ रइसवत्तिमहणु ॥
दोहग्गहं रासिए महु जरदासिए हा किं किउ केसग्गहणु ॥ २७ ॥

28

तारुण्णें रण्णि दट्टि खलेण उग्गि लग्गि कालाणलेण ।
सियकेसभारु णं छारु घुलइ थेरहो वल सत्ति व लाल गलइ ।
थेरहो पाविं णं पुण्णसिद्धि चयणाउ पयट्टइ रयणविद्धि ।
जिह कामिणिगइ तिह मंद दिट्ठि थेरहो लट्ठी वि ण होइ लट्ठी ।
हत्थहो होंती परिगलिवि जाइ किं अण्णविलासिणि पासि ठाइ ।
थेरहो पयाइं ण हु वि कमंति जिह कुकइहिं तिह विहडेवि जंति ।
थेरहो करपसरु ण दिट्ठु केम कुत्थियपहु विणिहयगासु जेम ।
थेरहो जरसरिहि तरंगएहिं धोइउ तणुलोणु अहंगएहिं ।

---

५ PB रायगेहु. ६ AB तहो. ७ AB मणि ८ A कहिउ ९ PBT अणुहुंजियसिवेण
28 १ ST अण्णाणियंविणि.

घत्ता—सत्त वि रज्जंगइं तणुअहुंगइं कासु वि भुवणि ण सासयइं ॥
तउ करिवि असंगइं दह धम्मंगइं पालमि पंचमहव्वयइं ॥ २८ ॥

29

इय भणिवि मज्झु किउ पट्टबंधु णं बंधुसहासे णेहबंधु ।
णं दीणहं चामीयरणिबंधु णं परणरणाहहं बाहुबंधु ।
कंदप्पसप्पदप्पावहारि हुउ जणणु परमजिणमग्गचारि ।
मइं मुणिउं करणविल्लुलियाइं अप्पउ विज्जाइ पहिल्लियाइं ।
चउवण्णु चारु तइयाइ सिट्टु दोंडिं दंडिउ उद्दंडु दुट्टु ।
मइं वत्तइं वित्तइं संचियाइं सत्त वि वसणइं आउंचियाइं ।
मइं कोहु लोहु मइं माणु चत्तु कामु वि सेवियउ विणोयमित्तु ।
हरिसंगइं णिरु दूरुज्झियाइं मंति परकज्जइं बुज्झियाइं ।
विग्गहु संधाणु सजाणु ठाणु संसउ मणदोहीयरणणाणु ।
सव्वइं पच्चक्खइं महु फुरंति भिच्चउलइं भइयइं थरहरंति ।
जे महु णमंति ते सुहि जियंति जे णट्ठा ते काणणि वसंति ।
खल णाडिय भिंडिय जे महिच्छियाइं ते सरल तरल तडिसंणिहाइं ।
घत्ता—आहवि दुव्वारए असिवरधारए परमंडलवइ तज्जिय ॥
तेवंण फुरंतिं दिसि पसरंतिं पुप्फयंत मइं णिज्जिय ॥ २९ ॥

इय जसहरमहारायचरिए महामाहल्लणण्णकण्णाहरणे महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे
जसहररायपट्टबंधो णाम पढमो संधी परिच्छेउ समत्तो ॥ १ ॥

२. S चरमि, A चरिवि

29. १ ST विजहल्लियाइं. २. S मोट्टु. ३. BT चेगुण ४ ASB omit संधी

II

नि[*]त्यं यो हि पदारविन्दयुगलं भक्त्या नमत्यर्हता-
मर्थं चिन्तयति त्रिवर्गकुशलो जैनश्रुतानां भृशम् ।
साधुभ्यश्च चतुर्विधं चतुरधीर्दानं ददाति त्रिधा
स श्रीमानिह भूतले सह सुतैर्नन्नाभिधो नन्दतात् ॥ १ ॥

1

कामालसु रइलालसु पेम्मपरव्वसु मत्तउ ॥
हउं ध[1]रिणिहि वणकरिणिहि वणकरिंदु जिह[2] रत्तउ ॥ ध्रुवकम् ॥

अमयमईए सच्छमईए   हंसगईए सुद्धसईए ।
पियपत्तीए मज्झं तीए ।
सिढिल[3]विलासो गरुयपवासो   णयण[4]णिमेसो विरहकिलेसो ।
करउं सयज्झं महिवइपुज्जं   उज्झउ रज्जं णिवडउ वज्जं ।
अवि य हिरीए रायसिरीए   परए पुत्तं गुणगणजुत्तं ।
जयजसधामं जसवइणामं   णिवसासणए सीहासणए ।
जय भणिऊणं इह[5] ठविऊणं   [6]भूमी दाउं इट्ठं काउं ।
संपिच्छामो तं गच्छामो   वड्ढियणेहं कंतागेहं ।
सह णिवसामो सह विल[7]सामो   सह भुंजामो सह कीलामो ।
उज्जलियाए पत्तलियाए   सामलियाए कोमलियाए ।
सुह[8]ललियाए पियमहिलाए ।
सह वणवासो वणयरभीसो   मह संतोसो लच्छिविलासो ।
तीए रहिओ ण मए महिओ ।
जणभारेणं वावारेणं   दुक्खजुएणं सुक्खचुएणं ।
हो पज्जत्तं रमणासत्तं   अमलिय[9]वत्तं तरुणीवत्तं ।
जत्थ ण दिट्ठं णियणयणिट्ठं ।

[*]This verse is omitted in S and T

1 १ S वरवरणिहि २ T जिम ३ ST सिढिलासेसो ४ T णयणणिवासो. ५ T इय ६ ST भूमि
७ T विहसामो; P वियसामो ८ ST सुह ९ ST अमलिण

घत्ता—ता दिणयरु पसारियकरु अत्थहो उप्परि रत्तउ ॥
थिउ दीसइ किं सीसइ अत्थु केण परिचत्तउ ॥ १ ॥

2

अत्थासिउ रत्तउ मित्तु जहिं   दिसिणारि वि रज्जइ वप्प तहिं ।
रणवीरु वि सूरु वि किं तवइ   बहुपहरिहिं णिहणु जि संभवइ
रवि उग्गु अहोगइणं गमउ   णं रत्तउ कंदउ णिक्खियउ ।
तहिं संझावेल्लि वणीसरिय   जगमंडवि सा णिरु वित्थरिय ।
तारावलिकुसुमिहिं परियरिय   संपुण्णचंदफलभरणविय ।
णं रत्तणेवि छाइय हरिणा   सा वद्धी वहलतिमिरकरिणा ।
णं चक्कु तमोहविहंडणउ   णं सुरकरिसियमुहमंडणउं ।
णं किंचिए दाविउ णिययमुहु   णं अमयभवणु जणदिण्णसुहु ।
णं जसु पुंजिउ परमेसरहो   णं पंडुर छत्तु सुरेसरहो ।
णं रयणीवहुहि णिलाडतिलउ   उग्गउ ससि णं सइरिणिविलउ ।
घत्ता—णहयलथले उहुकणवले वारहु रासिउ पेच्छइ ॥
ससिलग्गउ अच्छइ मउ तेणं ण अत्थें गच्छइ ॥ २ ॥

3

ससिघडगालिएं जोण्हाणीरें   भुवणं ण्हायं पिव गंभीरें ।
दीसइ धवलं रुप्पयरइयं   णं तुसारहारावलिछइयं ।
ताम विसज्जियपरिवारेणं   कंठविलंबियमणिहारेणं ।
कणयलयाजुइपिंगकरेणं   अहयं णवियउ पडिहारेणं ।
विण्णवियउ सुरहरसंकासं   गच्छसु महएवीए णिवासं ।
णरकरदीवयघिणिहयतिमिरो   ता हं चलिओ णिवडियचमरो ।
कलरवगायणगाइज्जंतो   कइवयसेवयसेविज्जंतो ।
जंतो जंतो पत्तो रम्मं   मणिमयसिहरं रमणीहम्मं ।

---

2. १ ST रणधीर २. T अहोगयण ३. ST णामिय ४. ST वहुल ५ A मुहसिय ६ ST जणु ७ ST णिडाल, A णिलाडि ८ A चले. ९ T तेणत्थवणु ण गच्छइ.

3. १. ST विसज्जिय २ T जुय. ३. AST वच्चसु. ४ ST कयवय.

भित्तिविचित्तरेहारमणिज्जं वज्जमाणणाणाविहवज्जं ।
पंगणवावीसारससारे कामिणिवीणारवझंकारे ।
लंबियमोत्तियमालासोहे कुसुमदामरंजियभमरोहे ।
घत्ता—तहिं पेच्छमि किर गच्छमि सुद्धफलिहआविद्धी ॥
पढमुज्जल रयणुज्जल महि णं गयणविसुद्धी ॥ ३ ॥

4

बीयभूमि मोत्तियहिं सुखंचिय णं मालइकुसुमोहिं अंचिय ।
वारि रायसोवाणविसेसिय पउमरायमणि तइय विहूसिय ।
मरगयचारुरयणसंसिद्धी भूमि चउत्थी तेयाविद्धी ।
णीलरयणजालेहिं पसाहिय पंचम महि बहुसोहासोहिय ।
विद्दुमजालसिलायलि घट्ठी णं विसयम्मे कय महि छट्ठी ।
जंबूणयकयकीरविसेसि जहिं ठिय हंस मोर सविसेसि ।
पउमरायमणिणियरें बद्धी सत्तम महि कय कम्मविसुद्धी ।
चंदकंतिसिलरयणिहिं धामें अट्ठम महि गहचक्का णामें ।
घत्ता—तहिं मंदिरे अइसुंदरे सत्त वि भूमिउ दिट्ठउ ॥
महु कंपइ मइ एवहिं मई णं णरएसु पइट्ठउ ॥ ४ ॥

5

संपत्तउ अट्ठमु घरणियलु महु तो वि ण णट्ठउ कम्ममलु ।
हउं पावयम्मु मयणिं णडिउ सव्वंगु घरिणिणेहिं घडिउ ।
सव्वंगु मज्झु रोमंचियउ सव्वंगु सेयसंसिंचियउ ।
सव्वंगु वप्प वेवइ वलइ णं सविससप्पदट्ठउं चलइ ।
पेच्छिवि तहिं पियघरपंगणउं णं लद्धउ मई आलिंगणउं ।
अद्धद्धुवारविणिग्गयए भासाकुसलइ सविणयणयए ।
चामीयरदंडयधारियए जयकारिउ हउं पडिहारियए ।
णं फेणिं पिहियउ णवकमलु सियचीरिं ढंकिउ पाणियलु ।

५ AST करवीणा

4 १ T दुविध २ ST संसुद्धी. ३ ST वसुसोहें ४ ST विद्धी ५ AP धामा. ६. AP णामा ७. T एवहु जपइ तणु कपइ ण णरएसु पइट्ठउ.

5 १ P सविसु सप्पु. २ T णवकमलदलु

हउं तहिं अवलंबमाणु गयउ   णउ[3] जाणमि हयदइविं हयउ ।
मुहसासवासवासिउ सुरहि   आलाउ घाणु सुइसुक्खणिहि ।
अच्छिउडहिं पीयउ रूवरसु   मुहरसु लद्धउ जीहइ सरसु ।
तणुफंसि[5] देहहो जाय दिहि   पिययम पंचिंदियसुक्खणिहि ।
दिट्ठी सुंदरि सवडंमुहिय   छणवासररयणीयरमुहिय ।
घत्ता—आलोयणु[6] संभासणु दाणु संगु वीसासु वि ॥
पियमेलणु रइकीलणु जं महु तं णउ कासु वि ॥ ५ ॥

6

तं मम्मणु संणिउं[1] सणिउं भणिउं   तं गहिरु[2] महुरु मणहरु मणिउं ।
तं हावभावविब्भमफुरिउं   तं हसिउं रमिउं रइरसभरिउं ।
सो मज्झु[3] खीणु ते तुंग थण   ते दीह णयण हयमणुयमण ।
सो सामवण्णु तं मुद्धमुहुं   सुमरंतहो णावइ णिइं[4] महुं ।
मउलियणयणुल्लउ विंभियउ[5]   जामच्छमि कामग्गहिं लियउ ।
ता महु भुयपंजरणिग्गमणु   किउ पारद्धउ कत्थइ गमणु ।
भज्जइ[6] मइं भरिउं सकुंतलिय   पयइ वेलइ कहिं संचलिय ।
एंवि[7] चिंतिवि हुं[8] करवालकरु   संजायउ तहि अणुमग्गयरु ।
सुपसत्थि[8] णरत्थि अणज्जयहो   गय हुंट्ठ[9] पासि सा खुज्जयहो ।
जं पेच्छिवि णिंदइ सव्वु जणु   दवदड्ढथाणुसंकासतणु ।
जो दीहदंतदंतुरवयणु   कइमवुव्वुअसंणिहणयणु ।
अइअट्ठवियट्टहड्डविसमु   णिरु फुट्टपाय कयणयविरसु ।
कुप्परसमाणणिम्मंसकडि   जो कट्ठु पियामणधरणहडि ।
उरे[10] संकडु कढिणट्टियहियउ[11]   पल्हत्थियपिट्ठु[12] व जसु हियउ ।
जो विरलकविलकेसुब्भडउ   जो परउच्छिट्ठयलंपडउ ।
जो परदिण्णउ घाउ वि सहइ   जो परपयउच्चोलिउ[13] वहइ ।
घत्ता–सो देविए सियसेविए चलण मलिवि उट्ठावियउ ॥
धवलच्छिए णं लच्छिए वेयालेंउ[14] गउरवियउ ॥ ६ ॥

३. S कि ४ A सलिउ ५, T तणुफासें ६ ST अवलोयणु.

6 १ T मणिय मणिय २. A महुरु गहिरु ३ S मज्झु सामु ४ AP णिद ५ ST विंभइउ. ६ ST इय; A हुउ ७ AST एउं. ८ T सुपसत्थु णरत्थु ९. AST पासिंदुट्ठ. १० S उरि ११. S पयड १२ ST पिढरु १३ ST उच्चोलिय. १४. T वेयालउ जिह गउरविउ

7

सो रूसिवि भासइ दिण्णदुहु भूभंगुरभीसणु करिवि मुहुं ।
तुहु हलि हलि खलि सब्भावचुए किं णागय तुहुं लहु दासिसुए ।
इय गरहिवि सालंकारवह पिसुणेण व ताडिय सुकइकह ।
अच्छोडिय चिहुरभारे धरिवि इय पायपहारें हुंकरिवि ।
ता भणइ देवि पणवेवि पय हउं घरवासेण जि सेयहो गय ।
तुहुं देउ भडारउ कुसुमसरु तुहुं सामि महारउ हियहरु ।
पइं विणु महु छत्तइं चामरइं हे णाह सत्तभोमइं घरइं ।
हरि करि रहवरइं विविहासणइं देवंगइं भूसणणिवसणइं ।
पयइं अवरइमि णिवेण सहुं पइं विणु सव्वइं पजलंति महुं ।
जं विहिणा दुट्ठें तुह ण कय कुलउत्ती तं हउं किं ण मुय ।
जं जिज्जइ पइं विणु दइय दिणु तं दिज्जइ संचियदुरियरिणु ।

घत्ता—जइ जसहरु जमपुरघरु पावइ तो हउं णच्चमि ॥
वरुणासि महुमासि सइं कंचाइणि अच्चमि ॥ ७ ॥

8

इय जारहो माणु विहंडियउ पुणु[1] गाढु गाढु अवरुंडियउ ।
पुणु पियवयणेहिं संमाणियउं अण्णोण्णु तेहिं पुणु माणियउं ।
ता मइं रूसेवि णं विज्जुलिय रणरुहिरपवाहिं विच्छुलिय ।
अरिकरिसिरमोत्तियदंतुरिय करि असिवरलट्ठि समुद्धरिय ।
पहरंतें णियमणि चिंतियउ मइं आसि जेण परबलु खविउ ।
खग्गेण तेण पुणु परिगणमि तिय मइं काउरिसु वि किह हणमि ।
इय चिंतिवि खमसलिलिं दमिउं णियरोसहुयासणु उवसमिउं ।
गउ वारुचित्तकुट्टोअरए अप्पउ घल्लिउ सयणोअरए ।
सुमरामि तं पणइणिवावरिउ हा एक्कु वि णउ हियवइ धरिउ ।
णउ कुलु णउ सिरि णउ हउं ण सुउ हा देविहि किह मइभंसु हुउ ।

7 १ ST रूसवि २. A खयहुगय, T खवह णय ३ T भराडउ ४ ST सत्तभउमइं ५ ST भडढ. ६ T पिय जलंति, S वि जलंति ७ S मय ८ ST णिज्जइ ९. A वरु १० ST तो ११. AST अचमि.

8 १ T अइगाढु २ A हुवासणु ३. T वागरिय

घत्ता–साहारहो [4]तरुसाहारहो उवरि चडेविणु लंवइ ॥
कंटयतरु अवरु वि खरु वेल्लिणिहीणु वि चुंवइ ॥ ८ ॥

9

चंदु वि चंडालु व्व मणहरिहे दीसइ पडिविंविउ सुरसरिहे ।
जिह वालु मरालु सलीलगइ तिहं दुमसाहहो कंकु वि रमइ ।
जिह पउमिणि पावं हय रविण तिह [1]सालूरेण वि णिच्छविण ।
संझाइ व मेल्लइ रंगु लहुं घणुलट्ठि व कुडिल गुणेण सहुं ।
विससत्ति व मारणसीलणिय सिहिधूमोलि व घरमइलणिय ।
जिह णइ तिह तियमइ णीयरय णारीरूवइ किर के ण हय ।

[3]तथा चोक्तम् ।

गोवइयइ पडिवहुसिरु लुणिवि घित्तउ पइपत्ति खाहि भणिवि ।
णासंतु सो वि छुरियइ हणिवि दारिउ मारिउ वम्मइं लुणिवि ।
वीरवइए गाढालिंगणउं दिण्णउं चोरहो [4]मुहे चुंवणउं ।
णिव्वूढपोढसिंगारयहो सूलारूढहो अंगारयहो ।
अहरुल्लउ खंडिउ तिं मरिवि गय गेहि मुहुल्लउ संवरिवि ।
घरु आइवि कूआरउ करिवि खंडिउ विंवाहरु वज्जरिवि ।
मारावइ किर वरइत्तु सइं [5]णामेण दत्तु वरवीरवइ ।
ता केण वि पहिएं रक्खियउ णिसिचारु जेण उवलक्खियउ ।
राणउ पुरयणु संवोहियउ पुण्णालिहि साहसु [6]साहियउं ।
णीसेसु वि साक्खिणाणु कियउ णियमिंत्तहो सगुणु पयासियउ ।

घत्ता–रुहिरावलिछिण्णंगुलि तरुतालि असिपहरुल्लउ ॥
तक्करमुहिं णं जममुहि दिट्ठु असइअहरुल्लउ ॥ ९ ॥

10

णइसंगमि दुट्ठइ वइरिणिए उवयारविमुक्कइ सइरिणिए ।
उज्झाहिउ देवरइ त्ति मूढु पंगुलणिमित्तु रत्ताइ छूढु ।

---

४ AST फलग्गाहारहो

9 १. T साहारेण २ T कय ३. AST omit तथा चोक्तम् ४ AT मुहुचुंवणउ ५ ST णामि सुदत्तु ६. ST add after this line जं दिट्ठउं सयलु वि तहिचरिउ. ७ ST कहिउ ८ ST omit this line.

हा तियमइ साहसु जं करइ कइवइ वि ण वण्णहुं तं तरइ।
आवेप्पिणु सुपुसियसेयवह णं मुक्खि माणिय विउसवह।
परपुरिसु रमेप्पिणु पाणपिय महु भुयपंजरि पइसरिवि ठिय।
सा दुट्ठ सविस णं णाइणिय महु मडयहु सा णं साइणिय।
जह कंडूकंडूयणेण सुहु तिह रइरमणि पुणु जणइ दुहु।
तणुसंघट्टणु समु सव्वु जहिं सोक्खहो अवसरु किर कवणु तहिं।
आहरणभारु देहहो दमणु णच्चणु आहारहो जीरवणु।
लावण्णु सरीरहो असुइरसु बहुदुक्खहं कारणु णेहवसु।
गेयहो[1] छलेण विरहिउ रडइ पियसंभासणु वम्मइं[2] खुडइ।
पेच्छंतहं वड्ढइ कामजरु अवरुंडणु पिंडहं पीडकरु।
अणुबंधि तिव्वु पेम्सु तवेइ[3] पेम्मि ईसासिहि संभवइ।
तिं कामुउ डज्झइ कलयलइ[4] उब्भुब्भउ णं जालहि जलइ।
तिय मारइ पुणु अप्पुणु मरइ घोरइं संसारइं संसरइ।

घत्ता–जीवहु परु दुक्कियघरु विच्छिण्णउ वाहायरु[5] ॥
इंदियसुहु गरुयउ दुहु किह सवइ पंडियणरु ॥ १० ॥

11

माणुससरीरु दुहपोट्टलउ[1] धोयउ धोयउ अइविट्टलउ[2]।
वासिउ वासिउ णउ सुरहि मलु पोसिउ पोसिउ णउ धरइ वलु।
तोसिउ तोसिउ णउ अप्पणउ मोसिउ[3] मोसिउ घरभायणउ।
भूसिउ भूसिउ ण सुहावणउ मंडिउ मंडिउ भीसावणउं।
वोल्लिउ वोल्लिउ दुक्खावणउं चंच्चिउ[4] चच्चिउ चिलिसावणउं।
मंतिउ मंतिउ मरणहो तसइ दिक्खिउ दिक्खिउ साहुहुं भसइ।
सिक्खिउ सिक्खिउ वि ण गुणि रमइ दुक्खिउ दुक्खिउ वि ण उवसमइ।
वारिउ वारिउ वि पाउ करइ पेरिउ पेरिउ वि ण धम्मि चरइ।
अब्भंगिउ अब्भंगिउ फरिसु रुक्खिउ रुक्खिउ आमईसरिसु[5]।
मलियउं मलियउं वाएं घुलइ सिंचिउ सिंचिउ पित्ति जलइ।

10 १ S गेयच्छलेण २ T मम्मइ ३ S हवइ, T वहइ ४ S कलमलइ ५ T वाहाकरु
11 १ ST रुय २. S गिरु ३ ST omit this line ४ ST omit this line ५. S आमयसरसु

सोसिउ सोसिउ सिंभि गलइ पच्छिउ पच्छिउ कुट्टहं मिलइ ।
चम्मे बद्धु वि कालि सडइ रक्खिउ रक्खिउ जमसुहि पडइ ।

घत्ता–इय माणुसु कयतामसु जाइ मरिवि तंवारहो ॥
तरुणीवसु अम्हारिसु जडु लग्गउ घरँदारहो ॥ ११ ॥

12

पुरु परियणु मिल्लिवि रायसिरि कल्लइं आसंघमि गहण गिरि ।
पय पाडिय णरफणिसुरवरइं तउ करमि धरमि मुणिवरवयइं ।
इय महु चिंतंतहो अरुणयरु णवपल्लव णं कंकेल्लितरु ।
उग्गमिउ दुमणि जणु रंजियउ सिंदूरपुंजु णं पुंजियउ ।
अरुणायवत्तु णं णहसिरिहि णं चूडारयणु उदयगिरिहि ।
लोहियलुद्धं जगु फाडियउ णं कालि चक्कु भमाडियउ ।
कुंकुमपिंडु व दिसिकामिणिहिं रत्तुप्पलु संझापोमिणिहिं ।
ता जयमंगलतूरहं रवेहिं पडिबुद्धउ फंफावयसरेहिं ।
कयकायसुद्धि मइं तक्खणेण ढोइयउ पसाहणु परियणेण ।
ताहिं अवसरि मइं चिंतिउ मणेण किं रज्जें किं महु भूसणेण ।
जो अंगराउ सो मयणमूलु तहो फलु मइं रयणिहिं दिट्ठु सयलु ।
अहवा जइ मइं आहरण चत्त ता जणइं मज्झि वित्थरइ वत्त ।
किं अंतेउरु अमणोज्जु जाउ अइदुम्मणु दीसइ जेण राउ ।
जे महु सण्णा विउस के वि परचित्तुवलक्खहिं सयलु ते वि ।
पउ मण्णिवि मइं किउ अंगराउ णं अंगि विलग्गउ दुहणिहाउ ।
जइ कह व देवि इह वत्त सुणइ सइं मरइ मइं वि तक्खणि हणइ ।
जाणियइ सुहासुहु सयलु राय जीविय मरणु वि अरिदिण्णघाय ।
लाहालाहु वि जं मुट्ठिगहिउ णट्ठउ पवसिउ विसुहिउ दुहिउ ।
जाणंति जोइ जे विउलबुद्धि जहं हत्थगिज्झ ठिय सयल सिद्धि ।
इय पच्छिउ णारिं मुणंति जे वि तियचित्तइं णउ जाणंति ते वि ।

६ S कोट्टहो. ७. S घरवारहो.

12. १. S पुरपरियणु २ T उग्गउ उड्डमणि. ३. A संझापोमणिहि.

घत्ता—करि वज्झइ हरि रुज्झइ संगरि परबलु जिप्पइ ॥
कुकलत्तहि अण्णासत्तहि चित्तु ण केण वि घिप्पइ ॥ १२ ॥

13

अत्थाणभूमिगउ मणि विसण्णु कणयमयरयणविट्ठरि णिसण्णु ।
दोवासइं चमरइं महु पडंति वहुदुक्खसहासइं णं घडंति ।
सहमंडवि खुज्जयवावणाइं णच्चंतइं णिरु कोड्डावणाइं ।
वीणावंसइं गेयइं झुणंति वेयालिय फं[2]फावय थुणंति ।
एयाइं जइ वि णिरु[3] सुहयराइं महु पुणु सुविरत्तहो दुहयराइं ।
पोत्थयवायणु आढत्तु सरसु भणसवणहं जं जणि जणइ हरिसु ।
तहिं अवसरिं पडिहारिं वरेण क[4]णयमयदंडमंडियकरेण ।
पइसारिय भड सामंत मंति अणवरय भमइ जगि जाहं कित्ति ।
पयजुयलु णविउ महु[5] णरवरेहिं मउडग्गकोडिचुंवियधरेहिं ।
अवलोइय णरवइ मइं णवंत पडियावयाइं णावइ कुमित्त ।
गोविट्ठिणिविट्ठ णरिंद सव्व णिविडत्थवंत णं सुक[6]इकव्व ।
ता[7] जणणि महारी ढुक्क तहिं सीहासणि हउं आसीणु जहिं ।
तवचरणउवाउ चित्ति धरिउ मइं मिच्छासिविणउ वज्जरिउ ।
सीसेण चिहुरणीलिं णविय मइं मा[8]ई महारी विण्णविय ।
हउं अज्जु माइ णिसि पीणभुउ सिविणइं सउहयलहो झत्ति चुउ ।
ता दिट्ठु जोह दाढाकरालु दंडयकरु णं पच्चक्खकालु ।
दुद्दरिसणु भीसणु दुण्णिरिक्खु रत्तुप्पलदलसारिच्छचक्खु ।
सो भणइ अम्मि लहु लेहि दिक्ख जिणणाहहो केरी परमसिक्ख ।
णं तो सपरिग्गहु सामि अज्जु कहो तणिय पुहवि कहो तणउं रज्जु ।
मइं तुंड वि मुंड वि मुंडियउ दूसहु इंदियवलु दंडियउ ।

घत्ता—सुउ जसमइ णिच्चलमइ ठविवि रज्जि तं किज्जइ ॥
णिसि दिट्ठउ णिकिट्ठउ सउणु माइ मं[10]णिज्जइ ॥ १३ ॥

13. १ ST संहि २ ST पप्फावय ३ ST णिवसुहयराइं ४ S मणिकणय ५ T वहु ६ S सुणइ कव्व T सुक्यकव्व. ७ S ता अम्माएवी पढुक्क तहिं ८ A माय ९ T सिविणु १० ST माणिज्जइ.

14

तं णिसुणिवि भासिउ[1] जणणियए अण्णाणइ[2] मुणिगुणहणणियए ।
कुलदेविहि आसाऊरियहे चिंतवियमणोरहऊरियहे[3] ।
वहुभेय जीव दिज्जंति वालि पसमिज्जइ दुक्ख किलेस कलि ।
तुह संति होउ महु णंदणहो सज्जणमणणयणाणंदणहो ।
हियउल्लउ करुणिं कंपियउ तं णिसुणिवि मइं पडिजंपियउं ।
पाणिवहु भडारिए अप्पवहु किं किज्जइ सो दुक्कियणिवहु ।
काहिं[4] चुक्कइ माणउ पसु हणिवि पावेण पाउ खज्जइ खणिवि ।
जं चिंतिज्जइ विप्पिउ परहो तं एइ खणद्धि णियघरहो ।
मारउ परु मारिउ[5] पुणु मरइ कहिं विग्घमहाणइ उत्तरइ ।

घत्ता—इहलोयहो परलोयहो जीवहिंस भयगारी ॥
दुणिरिक्खए आउक्खए किं किर करइ भडारी ॥ १४ ॥

15

किं णत्थि चरुउ किं मेसउलु किं णत्थि देउ किं देवउलु ।
किं णत्थि मज्जु भक्खु वि सरसु[1] किं जणु ण जाउ सिवसत्थवसु ।
किं चिरणर सयल वि खयहो गय किं तेहिं ण जोइणिपुज्ज कय ।
किं होइ हिंस जगि संतियरि सिलणावइ मूढ तरंति सरि ।
जं मुणिगणणाहहिं[2] पिसुणियउ तं कहमि माइ पइं ण[3] सुणियउ ।
परमत्थु अहिंसाधम्मु जए मारिज्जइ जीउ ण जीवकए ।
तं णिसुणिवि अम्मइ वोल्लियउ जिणवयणु णिसुंभिवि घल्लियउ ।
जगि वेउ[4] मूलु धम्मंधिवहो वेएण मग्गु भासिउ णिवहो ।
तं किज्जइ वेएं महिउ पसुमारणु परमधम्मु[5] कहिउ ।

घत्ता—पसु हम्मइ पलु जिम्मइ सग्गहो मोक्खहो गम्मइ ॥
जिह दियगुरु तिह कुलगुरु चवइ एम पविउलमइ[6] ॥ १५ ॥

16

इय मुणिवि पसु हणिवि कारि संति तुह कंति ।
तुह तुट्ठि तुह पुट्ठि जयलच्छि धवलच्छि ।

---

14. १. AST जपिउ. २ ST णिण्णाणइ. ३. ST पूरियहे ४ T किं. ५. T मारइ, A मारिवि
15. १ T सरिसु २ ST णाहहिं. ३ T णिसुणियउ ४ A वेय ५ ST परमपुण्णु ६. T पविमलमइ.

उरि वसउ रिउ तसउ कम णमउ जसु भमउ।
महिवलइ पविउलइ।
तं सुणिवि सिरु धुणिवि मणि मुणिउं मइं भणिउं।
अहो जणणि घरिसमणि पइं उत्तउं ण वि जुत्तउं।
हिंसाहिवत्तार कत्तार णेयार मायार सोयार सूणार ते घोर।
मलहेउ जो वेउ सो मग्गु णिसियग्गु जे धिट्ठ णिक्किट्ठ दप्पिट्ठ पाविट्ठ।
वंधंति रुंधंति हिंसंति धंसंति भयउलइं मयउलइं भक्खंति चक्खंति।
जंगलइं महुअलइं
घुम्मंति णच्चंति वायंति गायंति सरयम्मि णरयम्मि ते होंति दीसंति।

घत्ता—रयणप्पहि सक्करपहि वालुयपहि पंकप्पहि॥
धूमप्पहि पुणु तमपहि होंति पुणु वि तमतमपहि॥ १६॥

17

वाहिल्ल ते भिल्ल ते मूअ ते लल्ल ते पंगु ते कुंट वहिरंध ते मंट।
ते काण काणीण धणहीण ते दीण दुहरीण वलखीण।
णिक्काम णिद्धाम णिच्छाम णिण्णाम णित्तेय णिप्पाण चंडाल ते पाण।
ते डोंब कल्लाल मच्छंधिणीवाल दाढाल ते कोल ते सीहसद्दूल।
ते सिंगि वियराल ते णहरपहराल ते पक्खि पिंछाल।
ते सप्प रत्तच्छ संसासिणो मच्छ छिंदणइं रुंधणइं वंधणइं वंचणइं।
लुंचणइं खंचणइं कुंचणइं लुट्टणइं कुट्टणइं घट्टणइं वट्टणइं।
पउलणइं पीलणइं हूलणइं चालणइं तलणाइं दणलाइं मलणाइं गिलणाइं।
तिरिएसु णरएसु मणुएसु रुक्खेसु दुक्खाइं भुजंति सग्गं कहं जंति।

घत्ता—पसुणासइ जहिं हिंसइ परमधम्मु उप्पजइ॥
ता बहुगुणि मेल्लिवि मुणि पारद्धिउ पणविज्जइ॥ १७॥

16 1 PST omit this line

17. 1 ST arrange the wording of this line and the following in a different way
2 ST जइ

18

मंति हुणउं खग्गि लुणउं दिसिबलि कुणउं हुअवहि हुणउं ।
पियरहं ठवउं देवहं थिवउं कासायपडु लइ धरउ जडु ।
रत्तउ अंबरु चीवरु पवरु पक्खालियउ उद्धूलियउ ।
दप्पुब्भडउ चप्पेउ जडउ अप्पउ दमउ णग्गउ भमउ ।
मुंडउ ससिरु आमिसगसिरु लोहियगसिरु गुरुयणभसिरु ।
सेवउ घणइं आयावणइं चंदायणइं सुद्धोयणइं फलभोयणइं अत्तावणइं ।
उद्धरउ थउ चिरु चरउ तउ दयमरणभय जो जीवदय ।
ण करइ कुमणु सो देउ धणु मणि आहरणु गोउल भवणु ।
दुम्मयि भमइ तहु णत्थि गइ ।

घत्ता—इय संति भयवंति अरहंति णउ ईरिउ ॥
ण करंति भयवंति जेण जीउ संथारिउ ॥ १८ ॥

19

सो जम्मि जम्मि बहुरोयहरु सो जम्मि जम्मि भूभारु णरु ।
सो जम्मि जम्मि अणुहवइ दुहु सो जम्मि जम्मि कहिं लहइ सुहु ।
महु जीवियव्वु धुउ अस्थि जइ मारिज्जइ जीउ णं जीव तइ ।
ता मइं असि कड्ढिवि णिययसिरि लाइउ वरकुंडलमउडधरि ।
महु जणणिए हाहाकारु किउ पासत्थिर्हि णरवरेहि धरिउ ।
ता थेरिए पयवडियइ लविउ मइं पुत्त असच्चउ सच्चविउ ।
जइ जीउ ण देहि सचेयणउ ता दिज्जउ अवरु अचेयणउ ।
जो पहरिउ ण मुणइ वेयणउं तो हउं ठिउ मउलियलोयणउ ।
अम्माएविए गंगिरगिरए जं भासिउ दिट्ठपरंपरए ।
तं जइ वि अहम्मु तो वि करमि पडिसिविणमिसिं पुणु वउ धरमि ।

घत्ता—अमहारउ लिप्पारउ विहसिवि अम्मइं भाणिउ ॥
तिं कुक्कुडु घणुज्जडु पिट्ठिं णिम्मिवि आणिउ ॥ १९ ॥

---

18 १. ST हणउ २ T चंपउ. ३ ST omit this line ४ T मइमत्तें
19 १ T ण जीवकणु; ण अण्णु तए २ S हाहारउ ३. S सो ४ ST पयगयासिरए ५ A वउ उद्धरिमि.

20

सो सरइ व फुरइ व उड्डइ व सो वलइ व चलइ वहइ व ।
सो सज्जीउ व दइवें घडिउ महु तणियहिं दिट्ठिहिं आवडिउ ।
सो पडहहिं संखहिं मद्दलिहिं वज्जंतिहिं टिविलिहि काहलिहिं ।
णाणातरुकुसुमसमच्चियउ दहिवंदणचंदणचच्चियउ ।
सो परिवारेइ विणिवेइयउ कुलदेविहि अग्गइ घाइयउ ।
मायइ कुंकुमजलु घत्तियउ तं रत्तु गलंतु विचिंतियउ ।
पिट्ठु वि जंगलु भणिवि गसिउ संपुण्णु अपुण्णु समब्भसिउ ।
जिह बंभणव्वउ महु वज्जरिवि ढिहिसु गिलंति पलु संभरिवि ।
पवियप्पिउ किं ण होइ सहलु तिह अम्हह जायउ पावमलु ।

घत्ता—पुणु जोइणि भयदाइणि मइं पणविय सब्भावें ॥
पइं दिट्ठइं संतुट्ठइं जणु मुच्चइ संतावें ॥ २० ॥

21

जंघावलु दढयरु बाहुबलु महु देहि देवि जीविउ अचलु ।
दुत्तरि कंतारि विहुरि घरहि परिरक्ख सुरेसरि महु करहि ।
इय देविहि हउं पइट्ठु सरणु णउ जाणमि आसण्णउं मरणु ।
घरु जाइवि सिरिकलसेहिं ण्हविउ णियणंदणु रज्जि परिट्ठविउ ।
अप्पुणु किर वणवासहु चलिउ तउ करहुं णवर दइवें खलिउ ।
पियतणयहो रज्जु समप्पियउ कंतइ णियकज्जु वियाप्पियउ ।
जं मइं जारिं सहुं कीलियउ तं रयणिहि पण णिहालियउ ।
इयरह कह कंखइ तवयरणु सामंतमंतिमहिपरिहरणु ।
णिच्छउ मइं पउ परिक्खियउ तणुलिंगिं मणु उवलक्खियउ ।

घत्ता—सुदलिल्लिं जिह फुल्लिं फलु होही जाणिज्जइ ॥
अविहंगिं तणुलिंगिं तिह परहियउं मुणिज्जइ ॥ २१ ॥

---

20 १ T तिविलहि २ S अच्चियउ ३ S reads दोहि वि भावें परिवारियउ ४ T पिच्छियउ ५ S वभणाविउ, T वभणघिय, A वंभणघउ

21 १ T ढियवलु २ T सवलु ३ S णवि ४ T घरि ५ T हउं कलसिहि ६ S चरहुं, T करिमि. ७ T कम्मु . ८ AST परि हियउ

22

जइ पुण रिसित्तु ण परिग्गहइ तो वसुहाहिउ महं णिग्गहइ।
इय चिंतिवि हउं पिंम्मि तविउ पयवडियइ देविए विण्णविउ।
महं तुज्झु सुमंगलु चिंतियउ अंतेउरु पुरु आमंतियउ।
भो अज्जु भोज्जु देवायरिउ भुंजिवि जोइणिभुत्तुव्वरिउ।
सुविहाणइं धम्मे लइयाइं होसहिं विण्णि वि पव्वइयाइं।
पइं विणु हउं जीविउ णेउ धरमि परमेसर पइं सहुं तउ चरमि।
जिम कामहो रइ सुरवरहो सइ जिह परममुणिंदहो सुद्धमइ।
सिरि हरिहि सीय रहुवइहि जिह हउं अणुगामिणि पिय तुज्झु तिह।

घत्ता—तवचरणु वि जमकरणु वि पइं सहुं मरणु वि भावइ।
पियँ पइं विणु महु जोव्वणु जणु अंगुलियइ दावइ॥ २२॥

23

परंपुरिसु रमिवि रइविमलए जं रयणिहि दुक्किउ किउ खलए।
तं महं सिविणयसमाणु गणिउं मोहंधि तं कलत्तु भणिउं।
उट्ठु देवि अइंरुद्दरहिउ किं पणयभंगु महं तुह विहिउ।
ता उट्ठिय सुंदरि चंदमुहि कित्तिमु हसंति रंजंति सुहि।
सोयंारवयणविहि णंदियउ ता हउं वंदियणहिं वंदियउ।
णियकयकम्मेण व पेल्लियउ जणणिइ समउं तहिं चल्लियउ।
जहिं पंचवण्ण मरुहयधयउ महएविणिकेयहु तहिं गयउ।
उवविट्ठउ पढपिट्टियासणइ मणिकिरणजालभाभूसणइ।
परियलु वित्थारिउ कणयमउ णं उग्गमिउ णवदिणयरउ।
कच्चोल थाल सोहंति किह गयणयलवडिय णक्खत्त जिह।
जेवणंवेलइ महमहइ सइ बहुरसरसोइ णं सुकइकइ।

घत्ता—अइकोमलु सरलामलु धवलु कूरु किह सीसइ॥
तं भोयणु गुणमोयणु पिसुणसमाणउं दीसइ॥ २३॥

---

22 १. T पइवाडियइ; A पयवडिइ २ S किम. ३ ST पइं सहु परमेसर ४. S प्रिय

23. १ S परपुरिसरइपरइ, T परपुरिसरायरइ २ ST अइरद्दरहिउ ३ S सूयार ४. S णउ ५ T जेमण.

24

दोफोलियाइ हउं फालियउ णं वट्टमि जमपुरचालियउ ।
दालिद्द णवकंचणवण्णियइ ताडिउ णं विरइयकण्णियइ ।
डहेउ चोप्पडु पुणु मई डहइ णं दुट्ठघरिणिसंगमु वहइ ।
पुणु मंडय ढोइय मंडलिय मारंति वँ मई परमंडलिय ।
पुणु दिण्णइं तिक्खइं तिम्मणइं णावइ मुक्कइं रिउपहरणइं ।
पुणु लड्डुय सॅविस विइण्ण किह महु णिहणणसीलउ भिच्च जिह ।
पडिसवणु ण कासु वि दिंतियए वोल्लिउ देविइ विहसंतियए ।
मोयय महु मायइ पट्ठविय मई तुम्हहं णिरु विणॅए ठविय ।
णउ कंतहि वयणु अइक्कमिउं अम्हइं मायासुएहिं समिउं ।
तं सविसु भोज्जु दोहिं मि जिमिउं अंगउं विसवेएं परिभमिउं ।
णिवडंतहिं विज्जु विज्जु चविउ भज्जए हा णाह णाह लविउ ।

घत्ता—घरँपडियए उँरि चडियए केसभारु वित्थारिउ ॥
हउं कोमले गलकंदले दंतिहिं पीलिँवि मारिउ ॥ २४ ॥

25

जो लहरिणिवयणहिं पत्तियइ सो माणउ मई जिह किह जियइ ।
सुय झत्ति वत्त महु णंदणिण सज्जणमणणयणाणंदणिण ।
णिवडिउ महिमंडलि थरहरंतु णं वज्जणिहाएं गिरि महंतु ।
उम्मुच्छिउ धाहावंतु राउ हा पइं विणु जंगु अंधारु जाउ ।
सोयँणइं लग्गु हा ताय ताय पइं विणु महुँ भग्गी छत्तछाय ।
पइं विणु सुण्णउं घरँवीढु जाउ एवहिं को सामि अवंतिराउ ।
विणु ताएं रज्जहो पडउ वज्जु विणु ताएं महु ण सुहाइ रज्जु ।
वालि किउ महु रज्जु दुहोहखाणि जं झत्ति परत्तहो करइ हाणि ।

---

24 १ ST read this line after the next २ AS दड्डउ ३. T वन्मइं ४ AS सविस य दिण्ण ५ AST पणए ६. S वरि, T परि ७ S उप्परिचडियए, T उप्परिपडियए ८ S पीडिवि, T चपिवि

25 १ ST जगि २ T विलवणह ३ A भग्गी महुं ४ T वप्प छाय. ५ ST घरवट्ट, A घरपीढु

मंतिहिं पडिवोहिउ धरणिणाहु   मेल्लंतु सदुक्खउ अंसुवाहु ।
संसारि असारइ जेत्तियाइं   बोलीणइं अक्खमि केत्तियाइं ।
णल णहुस वेणु[6] मंधायँ होंत   ते वि माहियले कालवसि समत्त ।
इह णरवइ होंतउ जगि पसिद्धु   अइबलु वि महाबलु कालि खद्धु ।
आलेहिवि जो मारंतु वेणु   कालाणलि दड्ढउ जेम वेणु ।
हरि हलहर कुलयर चक्कणाह   ते कालिं कवलिय वलसणाह ।
इय जाणिवि किज्जइ सोउ केव   संसारहो पहावत्थ देव ।
तं णिसुणिवि उच्छाइयइं वे वि   पहुपडहसंखकाहलइं देवि ।
उग्गमियचंदो वा केलिदंड   विच्छाय जाय धयवइ तुंड ।
घत्ता—विवणम्मणु पहु दुम्मणु वारवार मुंच्छिज्जइ ॥
मणि तप्पइ पुणु जंपइ ताएं विणु किंहिं[11] जिज्जइ ॥ २५ ॥

26

उद्दंतपढंतइं णिग्गयाइं   अंतेउराइं दुहवसगयाइं ।
रायहो पच्छइ गच्छंति केम   छणयंदहो[1] ताराणियरु जेम ।
रत्तंबर[2]धारिणि जुवइ काइ   णं सूरहो पच्छइ संझ जाइ ।
वहुयाउ मुयउ सहुं राणएण   पयपालणधम्मवियाणएण ।
काहिं मि लइयउ तवचरणु घोरु   परिसेसिवि कंकणु हारु डोरु ।
अमयमइ ण णिग्गय कलुसभाव   खुज्जय आसत्ती दुट्ठ पाव ।
कयउद्धहत्थणारीणरेहिं   धाहाविउ वहुदुक्खाउरेहिं ।
अण्णत्तहिं वेलपडिच्छियाहिं   छिण्णइं सीसइं कयणिच्छयाहिं ।
केण वि णवखंडइं कियउ देहु   सुमरेप्पिणु सामिहि[3] तणउं णेहु ।
कु वि विचिंधि[4] विलग्गउ गुणमहंतु   असिधेणुयाइ उयरइं[5] हणंतु ।
कि वि कुंतहिं हिंदोलंति वीर   कि वि अप्पउ हुयवहि हुणंहिं[6] धीर ।
महयालहो दाहिण मुत्ति णेवि   संकारावियइं सुपण वे वि ।

६ ST सयर. ७ A जेवि महि भुंजिवि अवरइं गयइं तेवि. ८. ST पयापालु ९, S विमणम्मणु. १० ST मोहिज्जइ ११ ST कि किज्जइ

26 १. ST वीयंदहो, A छणइंद २ ST read this line before रायहो जेम. ३ T सामियतणउं ४. ST १चिंधि (note. चितायां) ५ A उरयलु. ६ A कुणइ धार

कयसंसयारसेसाइं लेवि खित्तइं[7] सुरसरि अट्ठियइं णेवि।
महु णामि दिण्णइं गोहणाइं महुं तणयं अइणिहसोहणाइं।
दिण्णइं अंगहारइं[9] कंचणाइं वरचेलइं लण्हइं अइघणाइं।
दिण्णइं[10] घयछत्तइं[11] भूसणाइं दियवरहं लिहाडवि सासणाइं।
रोरत्तणु रोरहं हरहिं जाइं महु णामिं दिण्ण सुवण्ण[12] ताइं।
जच्चंधहं अंधहं भुक्खियाहं घणघण्णइं दिण्णइं दुक्खियाहं।
गोसुयहं विवाहइं कयइं तेण णरवइ महु णामिं महु सुएण।
तो वि लद्धु ण उत्तमु मणुयजम्मु वलवंतउं जीवहं राय कम्मु।
घत्ता—संसारए अइघोरए हिंडहिं विसयासत्तइं॥
जीवइं णउ पावहिं जाम ण भावहिं दंसणणाणचरित्तइं॥ २६॥

27

सीयल[1]वेल्लितरुवरगहणि हिमवंतहो दाहिणगिरिगहणि।
जहिं वग्घसीहगयगंडयाइं मयंदु[2]ग्गहकरिभल्लुसयाइं।
संवरवेउल्लइं रोहियाइं एणइं जहिं पुल्लिहिं छोहियाइं।
जहिं संचरंति बहुमुग्गसाइं गत्ताइं[3] जाइं णिरु घुग्घुसाइं।
जहिं परद्धा[4] कोकंता भमंति झिल्लिरि खच्चेल्लइं गुमुगुमंति।
जहिं भिल्लपुलिंदइं णाहलाइं वीणंतइं तरुवेल्लीहलाइं।
जहिं कुक्करंति[5] साहामयाइं झुल्लंतइं तरुसाहागयाइं।
उड्डण[6]सीला तंबोललग्ग जहिं हरि खज्जंता कहिं मि भग्ग।
जहिं घुरुहुरंत दाढाकराल सूलच्छहिं सहुं जुज्झंति कोल।
कंदुल्ल[7]गहर गइन्भु जेत्थु हरिहुल्लिहिं जहिं दूसियउ[8] पंथु।

७ ST खित्तइं ८ S हे णरवइ ९ S अंगहारइ T अंगहारइं १० P adds before this line in second hand सीयलवल्लीतरुवरघणाइं दिण्णइ विउलइं णंदणवणाइं ११ S छत्तइं हरिभूसणाइं. १२ S कणघणाइं.

27 ST read this line as हिमवतहो दाहिणि गिरिगहणे (T दाहिणगिरिसिहरे गहणे) अवइण्णु मऊरिहि गब्भि खणे. २ S omits मयदुग्गह रोहियाइ ३, S छेप्पाइं, T छित्ताइं ४ S मुग्गससरढा परिभमंति, T सहिसा सरढा ५ T फुक्करति ६ S adds before this line जहिं आरइं घोरइं वुक्करंति घोरप्पड दीवड सचरति । उड्डणमयदुंगइं णिरु भल्लयसयाइ संवरवेउल्लइं रोहियाइं ७ S कुंदुल्लगहिरु, A कंदुल्लगुहिर. ८. T नासियउ

पंचासहिं थूणइं दारियाइं जहिं भिल्लिं हरिणइं मारियाइं ।
जहिं गहिरइं घारइं परिभमंति णिरु वायडउल चुमुचुमंति ।
जहिं वेल्लिहिं वेढिय तरुवराइं णं कीलहिं अवरुंडणपराइं ।

घत्ता—तहिं काणणि तरुवरघणि असुहकम्मपरियम्मि ॥
वरिहिणकुलि दुहसंकुलि आणिवि घित्तु कुकम्मि ॥ २७ ॥

28

अइदारुणभीसणवणगहणि अवइण्णु मऊरिहि गब्भि खणि ।
उयरग्गि दड्ढउ बप्प किह खलवयणिहिं सज्जणु पुरिसु जिह ।
तहिं दुक्खहिं पत्तउ कहमि केम तत्तइ कडाहि णारइउ जेम ।
छुडु उयरहो हुंतउ णीसरिउ छुडु पक्खिणिपक्खवाउ धरिउ ।
कंटयतरुखरसक्करखरहे छुडु पाउ ण देमि देमि घरहे ।
काणणि विसदंसहं हउं डरमि छुडु मायइ परिरक्खिउ चरमि ।
छुडु किमिउलु चंचुइ चूरियउ पोट्टुल्लउ छुडु मइं पूरियउ ।
कीलंती विणिहय वणममिणि ता वाहिं मारिय मज्झु जणणि ।
सा लइय णिवंधिवि वेल्लियहिं हउं पुणु घल्लियउ उच्चोलियहिं ।
लइ रडइ मोरु पारद्धियहो किं पूसइ मासालुद्धियहो ।

घत्ता—तहिं गिम्हइ देहुण्हइं हउं संताविउ जेहउ ॥
वाप्सरि परमेसरि वणहुं तरइ ण तेहउ ॥ २८ ॥

29

आणिय गामहो छुडु णिट्ठविय मायरि तलवरहो परिट्ठविय ।
विणिवारियमंदिरमंजरए हउं आणिवि घित्तउ पंजरए ।
हियउल्लउ दुक्खें सल्लियउ ता वणयरघरिणिए बोल्लियउ ।

---

१. A बरहिणकुलि.

28. १ S इय. २. S वणगहणि. ३. T omits this line. ४ S जढरहं. ५ A कक्कर. ६ S पेट्टलउ, T पेट्टुल्लउ; A पुट्टल्लउ ७. ST विणिहय, A वरहिणि. ८. T वेल्लियए. ९ ST उच्चेलियहे. १० ST देहुम्हइ. ११. S केहउ. १२. S जेहउ.

29. १. S अवहाविय; T पट्टविय.

मई छुहइ कलेवरु थरहरइ सिसुमोरिं कवलु वि णउ भरइ ।
डिंभाइं काइं खाहिंति तणु तुहुं किं खायसहि भिल्ल भणु ।
पइं गरुय मोरि दिण्णी परहो हो जाहि समर मावहि घरहो ।
णिसुणिवि णियकंतहि वयणगइ सहसत्ति चिलायहो जाय मइ ।
णिउ हउं वग्गुरियइ विक्किणिउं सत्तु व पत्थें तेण जि किणिउं ।
आरंक्खिएण णउ भक्खियउ घोरहं मज्जारहं रक्खियउ ।

घत्ता--तलवरघरि हंसु व सरि हउं सुच्छायउ जायउ ॥
कणु भुंजमि जणु रंजमि सुमहुरसुक्कणिणायउ ॥ २९ ॥

30

जीवाहारें परिवड्ढियउ पावें सहुं देहु वि वड्ढियउ ।
महु जायउ पिंछकलाउ किह वरपंचवण्ण मणिमाल जिह ।
अवलोइवि मेरी रूवसिरि तलवरु पभणइ उज्जेणिपुरि ।
जायवि ईहु ढोयमि जसवइहि जसहरतणयहो कीलारइहि ।
ता पत्तहिं महु पियपत्तियहे महुमहपयपंकयभत्तियहे ।
दियसद्दसेसमासासणिहे मुक्कग्गहारदियसासणहे ।
अणवरयइं पुज्जियदेवयहे बलिदिण्णछिण्णमिढयसयहे ।
गंगासरिसलिलपवित्तियहि सीसेंण णवियगहसोत्तियहि ।
अयहरिणधवियपियरुल्लियहिं णिंदियमुणिवरचरणुल्लियहि ।

घत्ता—उज्जोणिहिं सुहजोणिहिं विसरसमुच्छियकायहि ॥
मंदमइहे चंदमइहे गयउ जीउ महु मायहि ॥ ३० ॥

31

बलवंतहि पवणजउद्धरिहि सा केण वि कम्में कुक्करिहि ।
चलकुडिलकुलिसकक्कसणहरु हरिणयणुग्गामियकरपसरु ।

२ ST सवर ३ T आरण्णिएण ४ T हंसच्छायउ (हं सच्छायउ,) S हउं सच्छायउ
30 १ ST इह २ AST कीलणरइहि ३ A एत्तहु. ४ S omits मुक्कग्गहार . देवयहे. ५ A छेल-
६ ST समुहे ७ T omits सीसेण णविय पियरुल्लियहे
31 १ ST पहरु

सिर वलइ य चलवालहि चवलु दीहररोमावलिजडिलगलु ।
उरि गरुयउ पच्छइ वित्थरिउ णं विहिणा मंज्झि[2] मुट्ठि धरिउ ।
पिंगलविलोलभासुरणयणु बहुसूअरकुलघंघलवयणु ।
जमपुरकरवत्तदंतडसणु हूई करहाडणयरि भसणु ।
राणी वि पवण्णी सुणहं भउ पर किं पि ण मण्णइ लच्छिलउ ।
सो आणिउ पाहुडु जसवइहे जिह[3] तिह हउं मि पावमइहे ।
बिण्णि वि एक्कहि दिणि दरिसियइं महु सुयहु सुअंगइं हरिसियइं ।
इत्थें परमत्थें[4] जोइयइं पुणु दो वि तेण पोमाइयइं ।

घत्ता—णिउणउ विहि एहउ सिहि किह विरइउ भणरावउ ॥
कमलच्छिहि वणलच्छिहि णावइ केसकलावउ ॥ ३१ ॥

32

भल्लु वि भेल्लउ[1] महु आवडइ कंचाइणिलीहहु अब्भिडइ ।
एहु वांउवेउ[2] हरिणु वि छिवइ वेएं धावेप्पिणु मुहुं घिवइ ।
एयहो हरिकिडि वि ण उव्वरइ किं अण्णु को वि अग्गइ सरइ ।
हउं घरमंडणु पवियप्पियउ सोणइयहो सो वि समप्पियउ ।
तिं सो अक्कदमचुं गलए बद्धउ चामीयरसंखलए ।
हउं पुणु हिंडंमि घरपंगणइ[3] खेल्लमि उड्डमि गयणंगणइ ।
ता एक्कहि दिणि उड्डं गयण सउंहयलसिंगि[4] रंगंतएण ।
दिट्ठउ जलहरु गज्जंतु किह गिंभारिहि कट्ठउ सुहडु जिह ।
दिट्ठउ सुरचाउ पीउं[5] हरिउ णं णहमंदिरि तोरणु धरिउ[6] ।

घत्ता—विज्जुलियए कंचुलियए भूसियदेहए सुरघणु ॥
घणमालए णं वालए किउ विचित्तु उप्परियणु ॥ ३२ ॥

२. S मुट्ठिमज्झि; T मज्झु मुट्ठिधरिउ ३. ST जिह तिह णिव हउं वि, A जिह सो तिह हउं मि. ४ ST परिमहइ.

32. १. ST महु भल्लव २ ST वाउदेव. ३ ST घरसिहरइ पंगणइ ४ S सियसउहसिंगि, T सियसउ. हयलसिरि; A सउहयलसिहरि. ५ T पीयहरिउ ६. S भरिउ.

33

पाउसु णिएवि रोमंचियउ हउं परमाणंदिं णच्चियउ ।
पुणु रुण्णउं मइं थोरंसुयहिं णं जम्मासुहसुमरणचुयहिं ।
पुणु दिट्ठउ खुज्जउ खोणियहि आसत्तउ पिययमराणियहि ।
ईसावसेण विलमिं णडिउ रूसिवि दोहि मि उप्परि पडिउ ।
चलपक्खणक्खचंचूहयइं पेहुंणयखंडप्पणमहिगयइं ।
णीसारइ जारइ हासरइं विण्णि वि णिहयइं उड्डियकरइं ।
रुहिरुल्लउ धारहि परियलिउ मिहुणुल्लउ विहलंघलु घुलिउ ।
मणिरसणादामिं ताडियउ कंताइ चरणु मह मोडियउ ।

घत्ता—जइयहुं पहु तइयहुं सहु असमाणउ णउ घायमि ॥
पवहिं ढहु मोरउ लहु तेण तीइ करु लायमि ॥ ३३ ॥

34

उद्दंतु पडंतु पधाइयउ पच्छइ परिवारु पराइयउ ।
तहिं एक्कइ कोवाऊरियए पाउंय महुं मुक्की दारियए ।
अण्णेक्कइ चामरदंडएण आहउ कप्पूरकरंडएण ।
अण्णेक्कइ तट्ठउ पंतियए चडुयफलेण पहरंतियए ।
अण्णेक्कइ हउ हारावलिए अण्णेक्कएक्ककुसुमंजलिए ।
अवरइ वीणादंडेण हउ हउं कह व कह व रंगंतु गउ ।
घे घे पभणंतिउ खुज्जियउ पच्छइ लग्गउ घरलंजियउ ।

घत्ता—सुरउइहो तहु सइहो आपं जणणीसारिं ॥
गलि धरियउ थरहरियउ हउं णिम्मुक्कउ पाणिं ॥ ३४ ॥

35

जसवइराएं पीडिय गलउ आबद्धदीहदढसंखलउ ।
मेल्लविउ ण मेल्लइ णिट्ठुरउ पासयफलहें हउ कुक्कुरउ ।

33. १ ST पियरायाणियहि २ ST रोसें ३. AT मेहुणय
34 १. A पाढव. २ ST णट्ठउ ३ S चडुयफणेण ४ S धाविवि.
35 १ A दिढ

सिरु दोहाविउ गउ सो वि मुउ   विहिकम्मवियाइ[2] विचित्तु कउ ।
मइं सोंभइ[3] पहु चिरजम्मसुउ   हा सिहि घरसिरि भूसणउं चुउ ।
हा मोर मज्झु घरपुत्तलिय   पइं चाढियइ होइ सकुंतलिय ।
तुहुं जाम सिहरि थिउ पायडउ   घरि ताम ण सोहइ धयवडउ ।
हा पइं विणु को हियवउ हरइ   घरवावीहंसि सहुं चरइ ।
पइं विणु पवाहिं रंगावलिय   छज्जइ विचित्तकुसुमावलिय ।
कामिणिपयणेउररसरु सुणिवि   पइं विणु को णच्चइ तणु धुणिवि ।
हा जसहरु राणउ अज्जु मुउ   हा दइव काइं मइं सुणहु हउ ।
हा सूअर अज्जु कसेरदलु   भक्खंतु पिअंतु सुसच्छ जलु ।
करवंदजालवणि वसियमए   सुहु अणुहवंतु सरकद्दमए ।

घत्ता—कयदुग्गइं सारंगइं रण्णि भमंतु सइच्छइं ॥
को सारउ मिगमारउ पयहो कविलहो पच्छइ ॥ ३५ ॥

36

इय सोइवि दिण्णउ तेण सिहि   किउ विहिमि मरणसंकारविहि ।
जिह पिउपिउजणणिए चिरु णिहिउ   तिह पाणिउं पिंडदाणु विहिउ ।
जणुं पियरहं जलु भोयणु ठवइ   पियकलुउं[1] किं पि ण अणुहवइ ।
णिक्खज्जरुक्खपत्थरपउरे   उग्गयसामरि वंबुल[2]खयरे ।
णिज्जले मरुहयगयधूलिरए   काणणि सुवेलगिरिपच्छिमए ।
काणिहिं पसविहिं दइवें वणिउ   हउं कुंढिं पसविएण जणिउ ।
मिगि भुक्खिय दुक्खिय सुक्खथणि   थणु जीहइ लिहमि ण लहमि धणि ।
दुद्धिं विणु जढराणलु जलिउ   मइं एक्क सप्पु कत्थइ गिलिउ ।
लेंहि[3] साउ अणेयणायसयइं   णं धम्महो मूलइं उक्खयइं ।
खद्धइं विवरहो कड्ढेवि किह   अइभुक्खिएण गरुडेण जिह ।
सो सुणहु मरिवि तहिं हुउ उरउ   दुद्धरसर दुंदुर[4]भक्खिरउ ।

२. A विवाउ. ३ S सोइय; A सोवइ. ४. ST सिरु. ५ ST चरतु
36. १. ST पुणु किउ. २ AST वब्बुल. ३. ST साउ लहिवि. ४. S दुंदुर; T डिंदुर

घत्ता—वणि विलसइ बिलि पविसइ जाम ताम मइं लद्धउ ॥
मुहलग्गए पुच्छग्गए धरिवि खाहुं पारद्धउ ॥ ३६ ॥

37

पल्लट्टेवि मुह विलसिहि सुयइ दढवियडफडोप्फडु फुप्फुवइ ।
सो हउं भक्खमि सो मइं डसइ महु पलु तरच्छु पच्छइ गसइ ।
तोडइ तडत्ति तणुवंधणइं मोडइ कडत्ति हड्डइं घणइं ।
फाडइ चडत्ति चम्मइं चलइं घुट्टइ घडत्ति सोणियजलइं ।
हउं एम तरच्छि खयहो णिउ मइं मायाविसहरु कवलु किउ ।
को लंघइ महियलि कम्मवसु अण्णोण्णाहार मरंति पसु ।
बहु थावर जंगम जीवउलु णर तिरिय गिलंति णिच्चु सयलु ।
वियलिंदिय बहु पंचिंदिय वि अवरोप्परु खंति ण भंति क वि ।
हउं कूरतरच्छें मारियउ मइं कालसप्पु संघारियउ ।
ओ मारिदत्त णिव दिट्ठु सइं दूसहु अणुहवियउ दुक्खु मइं ।

घत्ता— इय पिसुणिउ पइं णिसुणिउ जइ तो हिंस विवज्जहि ॥
हयदप्पउ परमप्पउ पुप्फयंतु पडिवज्जहि ॥ ३७ ॥

इय जसहरमहारायचरिए महामहल्लगुणण्णकण्णाहरणे महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे
जसहरचंदमइभवंतरवण्णणो णाम बीओ संधी परिच्छेओ समत्तो ॥ २ ॥

---

37. १ T फणप्फडु. २ ST पच्छइ तरच्छु.

III

*नक्षत्राधीशरोचि प्रचयशुचितरोद्दामकीर्त्या निकेतो
निर्णीताशेपशास्त्रस्त्रिदशपतिनुताशेपवित्पादभक्त ।
भ्राता भव्यप्रजानां सततमिह भवाम्भोधिसंसारभीरु-
र्नीतिज्ञो निर्जिताक्ष प्रणयविनयवाञ्नन्दतां नन्ननामा ॥ १ ॥

1

पुणु रायहो भासइ अभयरुइ णियभवभवणकिलेसकह ॥
उज्जेणिहि सिप्पा णाम णई अत्थि सच्छ गंभीरदह ॥ ध्रुवकम् ॥
दुवई—तडंतरुपडियकुसुमपुंजुज्जल पवणवसा चलंतिया ।
दीसइ पंचवण्ण णं साडी महिमहिलहि घुलंतिया ॥
जलकीलंततरुणिघणथणजुयवियलियघुसिणपिंजरा ।
वायाहयविसालकल्लोलगलच्छियमत्तकुंजरा ॥
कच्छवमच्छपुच्छसंघट्टविहट्टियसिप्पिसंपुडा ।
कूलपडंतधवलमुत्ताहलजललवसित्तफणिफडा ॥
ण्हंतणरिंदणारितणुभूसणकिरणारुणियपाणिया ।
सारसचासभासकारंडविहंडिरहंसमाणिया ॥
परिघोलिरतरंगरंगंतरमंततरंतणरवरा ।
पविमलकमलपरिमलासायणरंजियभमिरमहुयरा ॥
मंडुवयंडपसतवसंठियतावसवासमणहरा ।
सीयलजलसमीरणासासियणियरकुरंगवणयरा ॥
जुज्झिरमयरकरिकरुप्फालणतासियतडत्थवाणरा ।
पंडियफुलिंगवारिपुण्णाणणचायणियरदिट्ठियरा ॥
खयचिक्खिल्लखोल्लखणिखोलिरलोलिरकोलसंकुला ।
असरइसत्थणिच्चसंसेवियवहलतमालमहुयला ॥

---

* This verse is omitted in S and T

1, १, T तडितरु २ T कुसुम ३ S पवणाहय. ४. T विसट्टिय ५ S भासचास ६. T गुंजिय. ७. S सीय-लवायवीयणासासियणियडकुडंगवणयरा. ८. T तडियपुडिंग; S पडियपुडिंग ९ ST खोलिर. १० A लोलिय. ११ AT महुयरा; S महुलया.

घत्ता—हउं तासु तरच्छहु णिट्ठुरहो दाढाघायहिँ णिट्ठियउ ॥
आवेप्पिणु ताहुं तरंगिणिहि मीणिहि गब्भि परिट्ठियउ ॥ १ ॥

2

दुवई—हउं संजाउ पोढपाढीणसरीरवियारणक्खमो ॥
गयणुल्ललणवलणपरियत्तणलंघियवारिविब्भमो ॥ १ ॥

उज्जलम्मि कोमलम्मि तत्थ सच्छविच्छुलम्मि संचरंतु हं तरंतु मीणमंडलं गिलंतु ।
ताउं माउपण्णएण दंतपंतिभिण्णएण पुव्वयालि मे हएण तम्मि रण्णए मएण ।
बद्धघोरकम्मएण लद्धवारिजम्मएण सुंसुवारहूयएण सुंसुवारियासुएण ।
दंतएहिं पीलिऊण णक्खएहिं फालिऊण जाँव हं णियच्छिओ मि खाइउं समिच्छिओ मि ।
ता णईसमागयाइं सोमउज्जुअंगयाइं घग्घरावलीरवाइं णीरकीलणुच्छवाइं ।
चारुचीरसोहियाइं संपयाविलोहियाइं दिव्वगंधवासियाइं हारदोरभूसियाइं ।
साविणोयभूसियाइं खुज्जयाइं वावणाइं तोयमज्झए तरंति णिब्बुडेवि उच्छलंति ।
जा रमंति ण्हंति थंति एंति जंति संभवंति एक्कमेक्क सिंचयंति पंजलीहिं कं धिवंति ।

घत्ता—ता तेत्थु तरंतु तरंतु जले एक्कें एक्कु णिसुंभियउ ॥
खुज्जुल्लिय अम्ह उवरि पडिय दिट्ठउ दइयवियंभियउ ॥ २ ॥

3

दुवई—सा धरिया गलेण जलवंइणा हउं मुक्कउ पणट्ठउ ॥
जमसुहरकुहरणित्तुं भयवेविरु सरिविवरं पइट्ठउ ॥ २ ॥
गोमिणीसामिणीमाणिणीमाणउ धाविया किंकरा बोल्लिओ राणउ ।
मज्जमाणा समाणा तए पुज्जिया देवकीलाविलासुज्जिया खुज्जिया ।
घित्त गाहेण गाहेण णिव्वट्टिया आमिसालुद्धएणं मुहावट्टिया ।
ता रुसा कंपियं राइणा जंपियं एरिसं विप्पियं कस्स होही पियं ।

१२. ST ताहि

2 १ ST ताव २ A सुंसुमारओ हुएण, ST संसुआरहूयएण ३. T सिसुमारिया ४. A जाम हं णिय· च्छिऊण समिच्छिऊण ५ ST भाइणाइं ६ PST omit तोय उच्छलंति. ७ PST omit एकमेक सिंचयंति ८ T खुज्जल्लिय

3 १ AST थलेण. २. S जलवालिणा with note जले बलं यस्य. ४ T णियंत्तु. ४. AT विलासुजया,

सूअरा संवरा मुक्कदोसा वणे मेसया मारिया भूयँ भीसावेण ।
रुद्धसिप्पासरो खद्धणारीणरो पल दोसायरो णेमि वारीयरो ।
दंडिणो मंदिर लोयणासुंदरं अग्गिजाँलाघरं भासुरं भीयरं ।
वुत्तमेयं सकोहो सजोहो सरिं झत्ति पत्तो णिवो वाहिऊणं हरिं ।
तेण केयट्टविंदं समाणत्तयं तस्स सद्देण फुट्टं व लोयत्तयं ।
तं दहंतं महंतं पि संखोहियं वाहुदंडेहिं चंडेहि कंडोहियं ।
देहसंदोहसंमद्दणुप्पेल्लियं तेण जंतेण रूहत्थलं रेल्लियं ।
उट्ठिए रुद्दमच्छंधिकोलाहले भंगुरेणं गलेणं विभिण्णो गले ।
उच्छलंतो वलंतो चलंतो गले कढ्ढिओ सुंसुवारो णिहित्तो थले ।
राइणो दाविओ चिच्चिणा ताविओ चंडदंडेण सो णिग्गहं पाविओ ।

घत्ता—हउं चिवरहो होंतउ णीसरिउ जावच्छमि माणंतु सरु ॥
ता कयमारणकलयलचवलु आयउ पुरधीवरणियरु ॥ ३ ॥

4

दुवई—जालं तत्थ तेहिं मज्झोवरि घित्तु महाघणसुत्तसंकडं ॥
हत्थपहत्थएहिं धरिऊण णिओ महाणईतडं ॥ ६ ॥

णं रणि सुहडु रहयरिउवूहिं णं कोसियकिमि तंतुसमूहिं ।
णं घरत्थु दुग्घरवावारिं पुत्तकलत्तमोहवित्थारिं ।
जेम जीउ मोहेण चिसालिं तेम राय हउं वेढिउँ जालिं ।
पायपहारहिं हउं अवियड्ढहिं जा समरट्ठयोट्टकेवट्टहिं ।
ता कंचुए मच्छंधिउ घोसइ मह णोहं मुए दुग्गंधु पहोसइ ।
पुंजियबहुसिप्पिउद्धकवाडइं कच्छवझसकुलीरहड्डालइं ।
ता हउं तेहिं धम्म णिद्धाडइ णेवाँविउ मच्छंधियवाडइ ।
जलयरु होइवि थलयरदुक्खइं संपत्तउ विणिवारियसोक्खइं ।

५ A भूरि. ६ S खद्धणारीणरो रुद्धसिप्पासरो ७ S अग्गिजालाहरं, A अग्गिजालाउलं ८ S सुट्ठु. ९. ST कलयलु चवलु

4 १. ST तेहि तत्थ २. ST घित्तमहो ३ ST णिउम्मि, A णिऊवि. ४ ST वेढिय. ५ S णहोमुउ, T णहोयलहु; A णहमुए ६ ST कवालइ ७ ST णेवि ठविउ.

गय महुं तहिं कइ कइ व विहावरि उग्गउ सूरु तिमिरकरिकेसरि।
दाविउ मीणधरेहिं णरिंदहु चिरभवतणयहु कुवलयचंदहु।
ता भट्टें[8] महु लक्खणु उत्तउ जं विप्पागमि कहिउ णिरुत्तउ।

घत्ता—एहु मच्छउ पंडुरु रोहियउ णइवाहहो संमुहु तरइ॥
बहुहव्वकव्वजोग्गउ भणिवि वेउ भडारउ[9] वज्जरइ॥४॥

5

दुवई—कहिय सायराउ मुररिउणा रोहियमच्छरूविणा॥
चत्तारि वि सडंगवर[1]वेय जगुब्भवभावभाविणा॥१॥

तो हउं तेहिं पवित्तु विहाविउ अमयमईहि भवणि णेवाविउ।
सा विण्णविय कयंजलिहत्थें माइ माइ णिसुणहि परमत्थें।
रोहियमच्छु[2] एहु जाणिज्जइ एएं पियरवग्गु पीणिज्जइ।
बप्पहो[3] णामिं विप्पहं दिज्जइ एयहो पुंछु लुणेवि पइज्जइ।
ता कंतइ महु पुंछु लुणाविउ सिहिणा संभारेण पयाविउ।
भट्टभडारएहिं तं खद्धउ मइं तहिं देहदुक्खु आलद्धउ।
अण्णु खाइ अण्णहु किं पावइ वेयमूढु जणु किं पि ण भावइ।
पुणु हउं जलणजालसंतत्तइ उक्कालियहिं वलियहिं परियत्तइ।
तेल्लकडाहि कढंति णिहित्तउ तियडुयपत्तोयहलक्कि सित्तउ।
णियघरु[4] पुरु परियणु परियाणिउ माणसदुक्खु भीमु मइं माणिउ[5]।
देहदुक्खु पुणु केहउ सीसइ जो वण्णहुं सक्कइ ण सरासइ[6]।

घत्ता—सिज्जंतहो महु वउ सिमिसिमइ चाडुय चट्टुय चूरियउ॥
बहुजीरमरियलवणहो[7] जलिण णिब्भाइउ मुहुं पूरियउ॥५॥

6

दुवई—तं गिलिऊण[1] झत्ति गलणालिवहेण[2] डहेइ[3] अंगयं॥
तमतमणारयस्स सारिच्छमहो मइ दुह[4] पसंगयं॥१॥

८. S णरचदहो ९ T भराडउ

5 १ S जुय २ S रोहिउ एहु मच्छु ३ S reads एयहो पुंछु लुणेवि पइज्जइ बप्पहो णामें तिणहे दिज्जइ, T reads बप्पहो कारणि विप्पह विज्जइ ४ ST णियपुरु घरु ५ T जाणिउं ६ T सरस्सइ ७ ST लवणजलेण, A लवणसहिउ

6 १ A गलिऊण २ A गलणालिवहेइ, T गलणालीवहेण ३. S डहेय. ४ T दुक्ख संगयं.

उच्छालिवि उच्छालिवि तलियउ   पम वप्प दुक्खें णिद्दलियउ ।
लुणिवि लुणिवि तणुकंदय वीणिवि   भक्खिउ बंभणेहिं पुत्तेण वि ।
भक्खिउ पणइणीइ जारेण वि   भक्खिउ सयलि परिवारेण वि ।
महु णामेण हउं जि संपासिउ   पम लोउ अण्णाणिं दूसिउ ।
हिंसाकम्मु धम्मु पडिवज्जइ   णिग्घिणु सोत्तियवायं भिज्जइ ।
जा चंदमइ सुणहं फणिभवचुअ   सुंसुयारु होइवि पुणरवि मुअ ।
माय महारी विहंचविहूई   छाली पासँगामि सा हूई ।
मरिवि मीणु संजायउ छेलउ   ताहि गब्भि लंविरकण्णालउ ।
बोक्कडपण जूहपरिपालिं   हउं जुवाणु हूवउ गयकालिं ।

घत्ता—णियजणणिहि मेहुणसण्णलुहुं अणुहवंतु सिंगि हयउ ॥
जूहेसिं ताएं अइयेपण वम्मूलरिउ हउं मुअउ ॥ ६ ॥

7

दुवई—सत्तमधाउ जीउ विण्णि वि सह थक्कइं माउपोट्टए ॥
अप्पउं अप्पएण मइं जणियउं दुविहभवे पयट्टए ॥ १ ॥

णउ तहिं लज्ज ण णिवसणेचली   पसुयहं जणणि वि होइ महेली ।
तइयहं हउं काइं मि ण बुज्झमि   एवहिं अंतो अंतो डज्झमि ।
गब्भि णिसण्णउं हउं संपुण्णउ   अच्छमि जाम कुजम्मि पवण्णउ ।
आसि जेण जायउ जा मायरि   जा मइं रमिय अपण मणोहरि ।
जाहि वि पुणु हउं गब्भि णिलीणउ   अच्छमि णिग्गमकंखिरु रीणउ ।
कामाउरु मायापियरुल्लउ   तं कीलंतउ अयमिहुणुल्लउ ।
पारद्धिउं जाइवि मलु सांचेवि   काणणु णिरवसेसु परियंचिवि ।
मिगु ण लहंतिं पडिआवंतिं   तं जोइवि कुसुमावलिकंतिं ।
तिक्खखुरुप्पिं आणि दोहाविउ   छावउ जीवमाणु अवलोइउ ।

घत्ता—दोण्णिवि दोखंडी हूयाइं ताइं मयाइं रुवंताइं ॥
गब्भासइ महुं अवलोइयहं अट्ठंगइं कंपंताइं ॥ ७ ॥

५ AST विहयविहूइं. ६ T छालिय. ७. A पासिगामि. ८. T संभूई ९. A अयवइणा.

7. १. A मायपोट्टए २ A पारद्धिहिं. ३ S मउ; T मृगु. ४. AST पुणु णियडीहूएं.

8

दुवई—उअरं फालिऊण विंभइयं हउं राएण काढिउ ॥
अप्पिउ अयवइस्स सुणु ससिमुह कालेण वड्ढिउ ॥ १ ॥

तहिं सेवमि अण्णाणपवित्तिउ मायाससुआउ णियणत्तिउ ।
पइ झडवि हडाविय जूहाहिउ हउं जावच्छमि ता वसुहाहिउ ।
देविहि अग्गइ भणइ भडारिए महिसासुरवरदेहवियारिए ।
करि पारद्धिलाहु महु भयवइ तुह वालि महिस देमि हरिवरगइ ।
ता तहु वणि संपण्णउ भयवहु घरि आयउ पुणु पुण्णमणोरहु ।
तहिं थिर थोर महिस मारेप्पिणु पुज्जिय मासरसोइ करेप्पिणु ।
ता हउं आणाविउ सूआरिं मासखंडु जं सुणहिं घोरिं ।
उच्चिट्ठउं जं तं मइं सुंघिउ सुज्झइ णासापवणिं लंघिउ ।
अच्छमि बद्धउ दीहें डोरें णं भवभयकयकम्में घोरें ।
कंभण भुंजाविय महिणाहिं मासरसयघयखीरपवाहिं ।

घत्ता—परमेसरि सूलकवालधरि माहिसामिसवसरुहिरपिय ॥
कंचाइणि पीणिज्जउ भणिवि राएं परिवारें वंदिय ॥ ८ ॥

9

दुवई—अण्णेक्कहिं हयारिपलकवलपथिप्पिरतुप्पधारयं ॥
दाउं भोज्ज मज्ज सुअ वहुरस विणिहयछुहवियारयं ॥ १ ॥

कंकणाइं णाणापरिहाणइं दिण्णइं गोदाणइं भूदाणइं ।
पुणु भासिउ राएण पसत्थहु पावउ महु वप्पहो सग्गत्थहु ।
दढरज्जुअपरिवेढियगत्तिं भुक्खातण्हासिहिपेरितात्तिं ।
मइं संचितिउ णिरलंकारिं विहवत्तणवज्जियसिंगारिं ।
अंतेउरणारियणें सव्वें दिण्णु पिंडु पुत्तेण विगव्वें ।
पासत्थहु जं किं पि वि णावइ सग्गत्थहु तं किरे काहिं पावइ ।

8 १ A विसइयं, T चिंतइय २ T पुणु, S मुणि ३ T omits this line, P gives this line and the following in second hand ४ S भवभवकयकम्में ५ T परिवारें वदिय

9. १ S संतत्तें २ S कहिं किर

सहुं माउच्छियाहिं तहिं भुंजइ पुत्तु महारउ सयणइं रंजइ ।
हउं अंतेउरु सयलु णियच्छमि अमयमइ पियघरिणि ण पेच्छमि ।
णियणासउडि करग्गु णिउत्तउ ता पक्कइ लंजियइ पउत्तउ ।
अज्जु जि मारिय माहिसयजंगलु वाइ दुगंधउ सुट्ठु अमंगलु ।
भणइ अवर मसभोज्जि णट्ठउ अंगुवाइ देविहि णिक्किट्ठउ ।
अण्णेक्क जि भासइ णउ पहउ हउं आहासमि दिट्ठउ जेहउ ।
मायइ सहुं गरलुल्लउ चारिउ खुज्जयकारणि णियपइ मारिउ ।
पावें तेण सडियणासोट्ठइं पूइवाइ राणी हय कुट्ठइं ।
घत्ता—हउं जाणामि आमिस पुंजियउ भोयणवेलइ ढोइयउ ॥
आयण्णिवि कामिणिजंपियउ देविहिं वयणु पलोइयउ ॥ ९ ॥

10

दुवई—सव्वावयवरूवफुडवत्तिविवज्जियअइअलक्खणं ॥
सुइरु वि पिच्छमाणु णउ लक्खमि तिमइमहु पडिक्खणं ॥ १ ॥
विहि परयारहो अवसिं रूसइ कोढिं लुणियउ णक्कु ण दीसइ ।
जो जारहो दिट्ठिइ आवडियउ विंवाहरु सो सडियउ पडियउ ।
आइं जारवच्छयलि पइट्ठइं णक्खइं ताइं पहट्ठइं णट्ठइं ।
तारइं तरलइं जारासत्तइं वणसंकासइं जायइं णेत्तइं ।
जे थण जारकरग्गें भूसिय गंडसरिस ते पूएं दूसिय ।
जो जारिं करेण अच्छोडिउ केसभारु सो विहिणा तोडिउ ।
पाणिहिं जेहिं जारु परिमट्ठउ ठाउ वि ताहं ण केण वि दिट्ठउ ।
जारणिवेसियाइं संवायइं सयलंगुलियउ सडियउ पायइं ।
इय तणुणिग्गहु दुण्णयगारी पाविं पाविय भज्ज महारी ।
मइं सकलत्तु दुचित्तु वियप्पिउ तहिं अवसरि ता तेण जि जंपिउ ।
घत्ता—लइ अच्छउ देवहं वंभणहं परिवाइउ धरि पुंजियउ ॥
ण सुहाइ मज्झु चिलिसायणउं महिसयमासु णिउंजियउ ॥ १० ॥

---

३ T माहिसाउलियाइ, A मइं माउच्छगुहिं ४ S अण्ण का वि ५ A सरिय ६ A कामिणिवयणगइ ७. S रूवु

10. १ A पडिवत्ति, S फुडवित्ति. २. A अइअइअलक्खणं, ST विलक्खणं ३. ST पघिट्ठइ ४. T णिवेसियाइं ५. ST अंगुलि गुण वि दिट्ठ ण पायहं. ६. S वियाविउ ७ S परिपुंजियउ ८ T मंसु·

11

दुवई—हरिणं सूयरं पि सूयारय सज्जो मारिअल्लयं ॥
आणहि गंपि कहिं मि अवलोइवि जीहिंदियरसिल्लयं ॥ १ ॥

तं णिसुणिवि जसवइणरणाहिं   भणिउं होउ हरिणेण वराहिं ।
मिट्ठु पवित्तु वि भक्खहिं गिज्जइ   थोक्कउ अंस्मि वियारिवि खज्जइ ।
अच्छइ वड्ढउ मेरुमायंतउ   महिसयमासु समुग्घायंतउ ।
पयहो पच्छिमु पाउ लुणेविणु   अम्महिं ताम देहि पउ लेप्पिणु ।
ता तं णिसुणिवि तेण दइच्चि   आणालंघणभीएं भिच्चि ।
लहु महुं पच्छिउ सत्थि छिण्णउ   करिवि भडित्तउ कंतहि दिण्णउ ।
कोढिणितणु वणपूएं लित्ती   तो वि ण मासहो उवरि विरत्ती ।
वेयंधम्मवेहावियमाणसु   तमतमपहमहि जाइ सतामसु ।
तिव्वइ वेयणाइ हउं कंपमि   जाणंतु वि पसु काइं पयंपमि ।
तिहिं पायहिं उब्भुब्भउ अच्छमि   मेकरंतु दस दिसउ णियच्छमि ।
को आलंघमि किह किर गच्छमि   सरणु ण को वि वप्प तहिं पेच्छमि ।
एत्थंतरि अण्णेक्कु कहाणउं   आयउ णिसुणहुं दुक्खणिहाणउं ।

घत्ता—जा छाली होइवि तत्थु मुय भुंजिवि मायरि पावफलु ॥
सा सिंधुविसइ महिसिहि उअरि हूई महिसउ भीमबलु ॥ ११ ॥

12

दुवई—सो वणि भंडभारु पवहंतु पुरं पुणरवि समागउ ॥
सिप्पासरिसरम्मि जा मज्जइ दीहरपहसमाहउ ॥ १ ॥

असिधररायपुरिसपरिरक्खिउ   सीयलु सलिलु पियंतु णिरिक्खिउ ।
खुरिहिं हणंतु वारि परिओसिं   जाइसहावसमुब्भवरोसिं ।
उट्ठिवि सिंगग्गेण वियारिउ   रायतुरंगु तेण तहिं मारिउ ।

---

11 १ S हिरणं २ AP अवि ३ S मेमावंतउ ४ A पच्छिमु ५ ST वेयधम्मवेहाविउ माणुसु ६ ST वेकरतु ७. ST पुणु वि मुय ८. ST महिसउ हूयउ

12 १ T समागउ २. ST read असिधर रक्खिउ after सीयलु णिरिक्खिउ

सो किंकरेहिं धरिवि णिउ तेत्तहिं   अच्छइ [३]णरवइ जसवइ जेत्तहिं ।
सविसाणेहिं देव णिद्दारिउ   पण तुहारउ हरि [४]संघारिउ ।
[५]पहु सदोसउ पहु मारिज्जइ   राएं भणिउं सणिउं मारिज्जइ ।
जेम ण जाइ जीउ लहु पयहु   तुरयं[६]णिहणयारिहि कुविवेयहु ।
तेम जियंतु जियंतु अमित्तउ   पयसु पयसु सूवारु पउत्तउ ।
तं णिसुणेवि सूवारिं घोरिं   णासारंधि विणि[७]ग्गयदोरिं ।
पुर[८]हुंतउ यद्धउ मुहुं [९]कहिवि   पच्छाहोंतउ पुंछु समोडिवि ।
संखलाहिं चउपासहिं तालिउ   पेट्टहु [१०]हेट्ठि हुआसणु जालिउ ।
चलसिहिजालावलिहिं जलंतहु   णीणियजीहहु विरसु रसंतहु ।
खारउं तिक्खउं कडुयउं आणिउं   अग्गइ ठवियंउ तियडुयपाणिउं ।

घत्ता—तं पीयउं तण्हासोसिएण वि[११]रसंतहं वम्मइं हयइं ॥
तेणंतइं वहुमलपूरियइं पच्छिमद्दारिं णिग्गयइं ॥ १२ ॥

13

दुवई—जहिं जहिं सिज्जमाणु सोसिज्जइ तहिं तहिं वप्प छिज्जए ॥
णामेणज्जियाहि सपउत्तें वरसोत्तियहं दिज्जए ॥ १ ॥

फंदंतु चेयणइ णिम्मुक्कताणाइ   दासेण गहिऊण भूमीसराणाइ ।
अहमवि णिहित्तो वि पाणे हरंतम्मि   इंगालपुंजम्मि धगधगधगंतम्मि ।
[१]दव्भंकहत्थेण घित्तूण घित्तूण   तिक्खेण सत्थेण छित्तूण छित्तूण ।
भत्तेण पुत्तेण सिहिणा विसण्णो मि   भो मज्झ णामेण हं चेव दिण्णो मि ।
अम्हे हया पीणिया वंभणा जाम   धुत्तेहि लोएहि जड वंचिया ताम ।
अण्णम्मि जिमियम्मि अण्णो कहं धाइ   अण्णस्स णामेण विप्पो पलं खाइ ।
अण्णम्मि खलियम्मि अण्णस्स णक्खाइं   भज्जंति किं मइ [२]दिण्णंगदुक्खाइं ।
माहिंदतिरियस्स मज्झम्मि अहयस्स   लग्गग्गिजालाकलावेण लइयस्स ।
दोण्हं पि सह चेव जीवो गओ ताम   उज्जेणिमायंगणरवाडओ जाम ।
गोमुंडवहुहड्डविच्छिड्डवंतम्मि   पसुपेयपरि[३]यंलियकिमिसिमिसिमंतम्मि ।

---

२ S जसवइ णरवइ. ४. ST संहारिउ ५ AST भणु किं किज्जइ. ६ A तुरयारिहि एयहि. ७ T विणिग्गयदोरिं ८. A उरुहुंतउ ९. ST मुमट्टिवि १० ST ढोइउ ११. ST विरसंतहो.

13. १. A दव्भंगहत्थेण २ ST दिण्णुग्गदुक्खाइं ३. S परिगलिय, T परिघलिय

सिप्पंतपवहंतलोहियरसिल्लम्मि विच्छिण्णघणचम्मछाइयकुडिल्लम्मि[4] ।
मयमहिसखिंगावलीसंकडिल्लम्मि फरुसुद्धकेसम्मि धूसरकडिल्लम्मि ।
कियवाउपयपहयधूलीरयालम्मि विक्खित्तकंकालमालाकवालम्मि ।
सिहिसिण्हमंडलरसासायकायम्मि आमिसवसामीसउड्डंतधूमम्मि ।
घत्ता—कुक्कुडियहि[5] जायइं गब्भि तहिं अम्हइं विण्णि वि पिल्लाइं ॥
छुड्डु छुड्डु तत्तियहि विणिग्गयइं उक्कुरुडम्मि[6] णवल्लाइं ॥ १३ ॥

14

दुवई—ता गहिया गलम्मि मज्जारिं जणणि कंपमाणिया ॥
खद्धा कसमसत्ति सुडियट्ठिरवेण जमाणणं णिया ॥ १ ॥
ता चंडालिइ रइयउ भल्लउ घित्तउ[1] घरकयारपिडउल्लउ[2] ।
णाणाहडुखंडतुडियउं णं दुक्किउ अम्हइं सिरि पडियउं ।
दोहिं मि कुक्कत्तिए आरडियउ ताहिं मि तहिं हियउल्लउ घुलियउ ।
मं छुडु अट्ठियहिं संवलियउ तंवचूलसिसुजुयलउ घल्लिउ ।
णं[3] णियसत्तिसमूहिं पेल्लिउ समउं कयारें इह मइं घल्लिउं ।
अम्हइं सहु ताइ अवहारिउ पुणु कयाह चरणि ओसारिउ ।
लग्गइं पायग्गइं महु[4] अंगइं हत्थें लेवि णियाइं विहंगइं ।
कुहियकलेवरि ठवियइं णियघरि विलसियकम्मविवायसुदुद्धरि ।
हउं जो णिवें णिववंदिउ[5] होंतउ सो चंडालिइ पायपं छित्तउ ।
घत्ता—सीउण्हें[6] वाएं पीडियइं छुहतण्हासंतत्ताइं ॥
चंडालणिलइ णिवसंताइं दुक्खपरंपर पत्ताइं ॥ १४ ॥

15

दुवई—दूसहविहुरवडणसुढियंगइं घरणियले पलोट्टइं ॥
तहिं पाणहरि खद्धपरपाणइं पाणिवहे पयट्टइं ॥ १ ॥

४ T कुडिलम्मि ५ AT कुक्कुडियहि ६ ST उक्करडम्मि

14 १. S घल्लिउ २ S adds after this पुव्वजम्मि (T जम्म) किउं णावइ घडियउं ३ S omits णं णियसत्तिसमूहि पेल्लिउ ४ S मउयंगइ ५ S णिउ णिववंदिउ, T जो णिवपइवंदिउ ६ P छुहतण्हासिहि-संतत्ताइं.

चित्तपिच्छचित्तलाइं चंचुचारुचंचलाइं भूरिपावभारयाइं उक्खयावणीरयाइं ।
जीवरासिखंडिराइं एत्थ तत्थ हिंडिराइं चोरमारए रएण राइणो तलारएण ।
दूरमुक्कसंभमेण दो वि चंडयम्मएण दिट्ठयाइं आणियाइं हत्थफंसमाणियाइं ।
ढोइयाइं पत्थिवस्स पुव्वजम्मणंदणस्स रूवरिद्धिभायणेहिं णेहणिद्धलोयणेहिं ।
वारवार जोइयाइं तेण तं णिरूवियाइं उत्तिमाइं लक्खियाइं मेमणे परिक्खियाइं ।
तंबचूलडिंभयाइं पीयपंगणंभयाइं ताम तुज्झ मंदिरम्मि संवसंतु सुंदरम्मि ।
पयपएहिं जायएहिं दिण्णणक्खघायएहिं रोसिरेहिं पत्तिएहिं पुत्तएहिं णत्तिएहिं ।
घाहियावियारएहिं भूघुलंतगत्तएहिं उद्धकंठकेसरेहिं रत्तणेत्तभासुरेहिं ।
उड्डिरेहिं रंगिरेहिं विब्भमं पयासिरेहिं जुज्झिरेहि कीलिहीमि जुज्झयाइं पिच्छिहीमि ।

घत्ता—ता णिसुणिवि णरवइणियमंतिहिं भिच्चिं ठवियइं णियभवणे ॥
गय रयणि तित्थु पंजरि ठियइं सुप्पहाइ जहिं राउ वणे ॥ १५ ॥

16

दुवई—तत्थ णियाइं दो वि दाहिणमंदाणिलचालियदुमदलं ॥
दिट्ठं वणमणेयखयरावलिकलरवजणियकलयलं ॥ १ ॥

झरंतसच्छविच्छुलंभणिज्झरं भरंतरुंदकुंडकूवकंदरं ।
ललंतवेल्लिपल्लवोहकोमलं मिलंतपक्खिपक्खलक्खचित्तलं ।
सिणिद्धरत्तपुप्फरेणुपिंजरं फलोवरुंतघुक्करंतवालवाणरं ।
दिसाचरंतजक्खकिंकिणीसरं लयाहरत्थकीलमाणकिंणरं ।
वहूपलित्तगेयमोहियणयं णहोयरंतदेवयाविमाणयं ।
सिलायलासणत्थसिद्धखेयरं गहीरपंकलोलमाणसूमरं ।
णरिंददंतिदंतभिण्णचंदणं पुरंधिचित्तहारछित्तवंदणं ।
पढंतकीररिच्छसद्दपेसलं मरालियाणुगामिबालपाडलं ।
तुसारफारफेणरासिसंयओ वणम्मि तम्मि राइणो णिकेयओ ।

घत्ता—तहो पंगणि मंडउ पडरइउ पंचवण्णु किंकिणिमुहलु ॥
तहिं अम्हइं पंजरएण सहुं ठवियइं णं जमसुहकवलु ॥ १६ ॥

15. १ T म्मण्णण २ मम्मणे. ३ AT पीइणं गणं भयाइं ४. AP एययाण. ५ AST add णित्त (T णेत्त) रत्तधारएहिं (A adds after it णिट्ठुरापहारएहि) चंचुघायघुम्मिरेहि सेयतोयतिम्मिरेहि, but P erased this by means of हरिताल. ६ T णिच्च.

16. १. ST दोहि वि. २ ST लक्खपक्ख. ३. ST जममुहि कवलु

17

दुवई—तण्णियडम्मि रत्तपत्तंचिउ हयपरतावदुक्खउ ॥
सीयलु सोमु रम्मु णं णरवइ सहइ असोयरुक्खउ ॥ १ ॥

दारियघोरचोरपरयारिं हिंसायारिं तेण तलारिं ।
तहो तलि पविमलसिलहिं णिविट्ठउ झाणारूढउ मुणिवरु दिट्ठउ ।
दोआसाबंधणपरिचुक्कउ रायदोस दोदोसहिं मुक्कउ ।
धरियतिमुंड तिदंडविहंडणु छिण्णतिसल्लु तिलोयहु मंडणु ।
हयगारवतिउ तिरयणभूसणु चउकसायसिप्पीरहुआसणु ।
चउसण्णाविसेसणिण्णासणु पंचसमिदिसब्भावपयासणु ।
पंचासवदारहं कयसंवरु पंचमहव्वयभारधुरंधरु ।
पंचमीसु पंचमगइसामिउ पंचाचारमहापहगामिउ ।
थिरु छज्जीवणिकायदयावरु सत्तभेयभयतिमिरदिवायरु ।
अट्ठदुट्ठमयणिट्ठवणायरु अट्ठमपुहविवासजाणायरु ।
अट्ठसिद्धगुणसंजोइयमणु णवविहबंभचेरें जो बंभणु ।
दहविहु धम्मलाहु जिं लद्धउ दहपाणक्खउ जेण णिसिद्धउ ।
घत्ता—एयारहपडिमउ सावयहं जेण वियारिवि उत्तियउ ॥
उद्धरिय जेण बारह वि तव तेरह चरिय विहत्तियउ ॥ १७ ॥

18

दुवई—जो मयमोहलोहकोहाइरिऊण रणम्मि दुम्महो ॥
जो तवचरणकरणजालावलिदड्ढधगत्तिवम्महो ॥ १ ॥

तं पिच्छिवि सो तलवरु रुट्ठउ चिंतइ दुट्ठु धिट्ठु पाविट्ठउ ।
विट्टलु णग्गउ दुक्खें छित्तउ थत्ति महारी दूसिवि थक्कउ ।
दीसइ ताम जाम अवसउणउं णिववणाइ णिद्धाडमि सवणउं ।
किंत्तिउ णियमाणि दूमिउ अच्छमि कवडिं किं पि अपुच्छिउ पुच्छमि ।
जं जिह भासइ तं तिह दूसमि करिवि णिरुत्तरु पच्छइ रूसमि ।

17 S वारिय २ ST णिच्चल ३ ST परिचुक्कउ ४ ST चुक्कउ. ५ P कय ६ A समिइ ७ ST जायण परु ८ S वभचेरि ९ T पाडिमा

18 १ ST दप्पिट्ठउ २ AP अवसवणउ ३ A खवणउ ४ ST करामि

किं पि अजुत्तु[5] दुरुत्तु पवोल्लमि अवसवणउ[6] णीसारिवि घल्लमि ।
इय सुमरंति मायावंति वंदिउ साहु णिरिक्कयंति ।
तहिं अवसरि तहु जोउ समत्तउ जाणंतेण वि पिसुणु अमत्तउ ।
आसीवाउ दिण्णु भयवंति धम्मबुद्धि तुह होउ भणंति ।
णियगुणु[7] मोक्खु पयइ संपज्जउ सुहु संभवउ भंति तुह भज्जउ ।

घत्ता—णउ णिंदइ मच्छरु विच्छरइ ण पसंसइ वहइ हरिसु ॥
समतणकंचणहं महारिसिहिं सत्तु वि मित्तु वि समसरिसु ॥ १८ ॥

19

दुवई—भणियं तलवरेण घणु धम्मु भणिज्जइ जोइसासणे ॥
गुणु तहो कोडिलग्ग मोक्खु वि रणे वाणहो रिउविणासणे ॥ १ ॥

अण्णु धम्मु गुणु मोक्खु ण याणमि हउं पंचिंदियसोक्खइं माणमि ।
तुहुं पुणु काइं मि दीसहि दुब्बलु णत्थि चीरु पंगुरुणु ण कंबलु ।
अट्ठ वि अंगइं रीणइं झीणइं णयणइं गंपि कवोलि[1] णिलीणइं ।
गत्तु मलावलित्तु किं ण धोवहि रत्तिदिवसु णिमिसु वि किं ण सोवहि ।
मउलियणेत्तवत्तु किं झायहि अम्हारिसहं भंति उप्पायहि ।
ता मुणि भणइ सज्झाणु णिउंजिवि जीउ वि कम्मु वि दो वि विहंजिवि ।
जाहु समीहमि[2] सासयठाणहो अजरामरहो परमणिव्वाणहो ।
पुरिसु महेली संढु वि हूवउ सोमु चंडु पुणु णं जमदूअउ ।
राउ पुणु वि पाइक्कु सुदीणउ रूववंतु पुणु रूवविहीणउ ।
मइलगोत्तु पुणु गोत्तसमुज्जलु वलविहीणु पुणु अतुलमहावलु ।

घत्ता—हुउ अज्जु मेच्छु णरभवभवणे दालिद्दिउ पुणु दविणवइ ॥
सोत्तिउ होइवि चंडालु हुउ विसमी भव[3]संसारगइ ॥ १९ ॥

---

५ ST दुरुत्तु अजुत्तु ६ ST अवसणु णीसारेप्पिणु ७. ST omit this line and P gives it in second hand.

19. १. S कवालि. २ ST समीहपि. ३. A भड

20

दुवई—मासाहारु कूरु मिगु काणणि पुणु तणयरु वि जायउ ॥
पुणु रयणप्पहाइ णरएसु वि विसहियगरुयघायउ ॥ १ ॥

णारउ पुणु हुउ जलयरु थलयरु णहयरु पुणु तिरिक्खु बहुअहयरु ।
पुणु कुच्छिय सुरजम्मावत्तइ णिवडिउ परिवत्तइ रयणत्तइ ।
अण्णण्णइं अंगाइं धरंतहो अण्णण्णाइं ताइं मेल्लंतहो ।
एम बप्प जीवंतमरंतहो गयउ कालु दुक्खाइं सहंतहो ।
दुक्खु पावफलु हउं मणि मण्णमि तेणिंदियसुहाइं अवगण्णमि ।
भिक्ख चरमि अप्पउ आयासमि थोवउं भुंजमि णिज्जणि णिवसमि ।
धम्मु पयंपमि मोणिं अच्छमि मोहु ण इच्छमि णिंदं ण गच्छमि ।
कोहु ण संचमि कवडु विलुंचमि माणु वि खंचमि लोहु विवंचमि ।
जायइ देहदुक्खि उव्वेवउ कहिं मि करमि णउ मयणुम्मायउ ।
ण भयाउरु णउ सोएं भिज्जमि हिंसारंभु डंभु णावज्जमि ।

घत्ता—हउं अंधउ णारिणिहालणए बहिरउ गेयावण्णणइ ॥
पंगुलउ कुतित्थपंथगमणि मूअउ विकहावण्णणइ ॥ २० ॥

21

दुवई—जो आहार देहु सो अण्णु जि मइं गहिओ अचेयणो ॥
सो सच्चेयणु व्व परिधावइ धवलणियहिओ अणो ॥ १ ॥

विणु धवलेण सयडु किं हल्लइ विणु जीवेण देहु किं चल्लइ ।
अण्णु जीउ महु अण्णु कलेवरु तेण भइ हउं हुवउ दियंबरु ।
परु ण दुगुंछमि मोक्खु समिच्छमि झाणालीणु णिरुत्तरु अच्छमि ।
अट्ट रउद्द झाण णउ इच्छमि धम्मसुक्कझाणिं परु पेच्छमि ।
आहाकम्मुद्देसहिं चत्तउ पिंडु लेमि जिह केवलिवुत्तउ ।
पंचासवदारइं परिवज्जमि एम बप्प इंदियबलु णिज्जमि ।
भणइ सुहडु गोसिंगु ण दुब्भइ विणु छत्तेणं छाहि किं लब्भइ ।

---

20 १ ST मूगु २ ST णिह ण गच्छमि ३ ST read this line कोहु ण संचमि माणु विवंचमि कवडु विलुंचमि (T विलंघमि) लोहु वि खंचमि ४ ST ण हससि ण रमामि णउ उव्वेयउ ५ A विकहाकण्णणइ

21. १ T हल्लइ २. ST झाणारूढु ३ S पावासवदारइ ४ ST चवइ.

विणु जीवेण मोक्खु को पावइ तुम्हारिसु किं अप्पउ तावइ ।
छंडहि तउ करि मेरउं वुत्तउ जीउ वि देहु वि एक्कु णिरुत्तउ ।
जिह तरुकुसुमहो गंधु ण भिण्णउ तिह जीउ वि देहाउ ण छिण्णउ ।
फुल्लविणासिं गंधु जिह णासइ तिह तणुणासिं जीउ वि णासइ ।
तं णिसुणेवि मुणिवरु आघोसइ परमप्पयहो वयणु परिपोसइ ।
चंपयवासु वि लग्गउ तेल्लहो एम गंधु जिह छिण्णउ फुल्लहो ।
तिह देहहो जीवहो भिण्णत्तणु दिट्ठउ किंकर चवहि जडत्तणु ।
भणइ वीरु दिण्णइं पचुत्तरि इंतु ण दीसइ जीउ पइंतरि ।
घत्ता—पर दीसइ सोणियसुक्कधरु गब्भब्भंतरि वुड्ढिगउ ॥
तं णिसुणिवि संजमणियमणिहि कहइ भडारउ समियमउ ॥ २१ ॥

22

दुवई—दूरा एंतु सद्दु णउ दीसइ परकण्णम्मि लग्गओ ॥
णज्जइ जेम तेम जगि जीउ वि बहुजोणीकुलं गओ ॥ १ ॥
णाकिं को वि ण रूवइं पेक्खइ कण्णिं को वि ण भक्खइं चक्खइ ।
अण्णगेज्झु अण्णें ण लइज्जइ रूवें रूववत्थु जाणिज्जइ ।
तं पि सविसयवग्गपडिवद्धउ अण्णु होइ अण्णुमाणिं सिद्धउ ।
सुहुमु णं थूलिं णाणिं छिप्पइ करिकरेण किं राई घिप्पइ ।
सुहुमु जीउ सुहुमेण जि णाणिं दीसइ जगि केवलअहिणाणिं ।
ता सुंडीरु भणइ किं णिज्जइ जोणिहिं केण जीउ आणिज्जइ ।
तं आयण्णिवि णवजलहरझुणि संसयहरु आहासइ तहो मुणि ।
अयसिरु छिंदिवि एक्कु मइव्वइ जायउ अवरु वि तवभट्टउ जइ ।
संभु वि वंभु वि कम्मायत्तउ कम्मविवाउ लोइ वलवंतउ ।
लोहु व कट्टएण कड्डिज्जइ जीउ सकम्मिं चउगइ णिज्जइ ।
घत्ता—वित्थारु वि संघारु वि करइ अट्ठकम्मपयडिहिं गहिउ ॥
जगि कुंथु हवेप्पिणु करि हवइ जीउ सरीरमाणु कहिउ ॥ २२ ॥

५. T फुल्लविणासें गंधु ण पावइ ६. T परिघोसइ ७. ST भिण्णउ ८. A णियमविहि
22. १. ST थूलणाणेण ण. २ ST संहारु.

23

दुवई—जइ धुउ लोयमाणु णिह णिच्चलु किरियागुणविवज्जिओ ॥
तो तहो कम्मबंधु कह होसइ भीसणभवसमज्जिओ ॥ १ ॥

वंधि विणु काहिं गुरुसीसत्तणु चडइ वप्प अवरु वि तवसित्तणु ।
सुद्धहो रइ तसु अंगि ण लग्गइ सग्गु मोक्खु किं कारणु मग्गइ ।
विणु जीवेण फासु किं सयणइं परियाणइ उक्कोइयमयणइं ।
विणु जीवेण जीह किं लक्खइ रसविसेस णाणाविह चक्खइ ।
विणु जीविं पेच्छंति ण णेत्तइं अग्गइ थक्कइं वइरइं मित्तइं ।
विणु जीविं घुसिणाइं ण माणिउ घाणिं कत्थ वि गंधु ण याणिउं ।
विणु जीवेण कण्णु णायण्णइ सद्दु सुहासुहु किं पि ण मण्णइ ।
विणु जीवेण सुट्ठु णिच्चिट्ठइं पच्च ताइं कुलगुरुणा सिट्ठइं ।
अयहरिहरईसरसिवणामइं फासाइयइं गुणगँहधामइं ।

घत्ता—णउ फासु ण रसु णउ रूउ तहो गंधु ण सद्दु वि वज्जियउं ॥
पर करणहिं पंचहिं पंचगुण जाणइ मइं आयण्णियउं ॥ २३ ॥

24

दुवई—सुरगुरु लोयणेहिं जं पिच्छइ इच्छइ तं समक्खयं ॥
जो ण णियइ घरम्मि चिरपुरिसणिहाणघडं पि णिक्खयं ॥ १ ॥

वायाकुंठु वंठु दप्पुब्भडु विसयकसायरायरसलंपडु ।
सो किं जाणइ दव्वइं फुरियइं वायरसुहुमइं दूरंतरियइं ।
गायइ वायइ णच्चइ खेल्लइ कामिणिघणथण हत्थि घेल्लइ ।
अरिवल हूलइ सूलइ फालइ खेत्तइं गामइं णयरइं आलइ ।
पावकम्मु किं सच्चउ पेक्खइ किं कारणिण कासु वि अक्खइ ।
जइ सिद्धंतु अदेहिं कहियउ लइ तो मइं एउ जि सद्दहियउ ।
कुम्मरोमकंबलपंगुत्ति णहकुसुमंचिउ वंझहि पुत्ति ।

घत्ता—णिक्कलुणइ जायइ णउ मरइ ण करइ ण धरइ णउ हरइ ॥
णिक्कलु अरूउ परमेट्ठि पहु भवसंसारि ण संसरइ ॥ २४ ॥

---

23 १ ST सिद्धहो २. A भक्खइ ३ ST गुणगणधामइं.

24. १ T णिक्खिय २ S वायइ गायइ ३. T लायइ ४ T सूलइ ५ T पावधम्मु ६ T वंझापुत्ति

25

दुवई—इंदपंडिंदचंदविसहरणरखेयरविरइयच्चणो ॥
अट्ठोत्तरसहासलक्खणधरु केवलणाणलोयणो ॥ १ ॥
अट्ठपाडिहेरामललंछणु　　णं उदयायलि थिउ मयलंछणु ।
धम्मचक्किकयमणमलणिग्गमु　　वीयराउ मुणि मुणिवरपुंगमु ।
एहउ होइ सयल परमप्पउ　　तिं भासिउ हउं जाणमि अप्पउ ।
सो ण णिच्चु पज्जाएं वुच्चइ　　दव्वत्थें पुणु णिच्चु जि सुव्वइ ।
णिच्चु भणंतहं ण मरइ ण हवइ　　णिच्चु भणंतहं णं रमइ ण चवइ ।
णिच्चु भणंतहं गयणसमाणउ　　ठाइ जीउ गयकिरियाठाणउ ।
णाणाभेयं जीव जिणु भासइ　　एक्कु जि जीउ भट्टु किं विरसइ ।
एक्कु हसइ अणेक्कु वि रोअइ　　एक्कु चेइ अणेक्कु वि सोअइ ।
एक्कु जाइ अणेक्कु वि थक्कइ　　भिडइ एक्कु अणेक्कु वि संकइ ।
एक्कु सीसु अणेक्कु वि गुरु णरु　　एक्कु राउ अणेक्कु जि किंकरु ।
मणिजालवणहेउ किं दिज्जइ　　रूविं किं अरूवि परु दिज्जइ ।
असिवरेण गयणयलु ण छिज्जइ　　एण णाइं महु हासउ दिज्जइ ।
णिम्मलु किं रंमइ पररापं　　भयवं भयवहो होउ विवाएं ।
घत्ता—जगि णत्थि अणुट्ठइ तवचरणु पत्तवडियपलरसरसिउ ॥
विण्णाणखंधु पुरिसु वि भणइ बुद्धु भडारउ साहसिउ ॥ २५ ॥

26

दुवई—जइ तिल्लोकखंभु विण्णाणु वि ता सुगयंतरंगए ॥
भंतिए भंति केम जाणिज्जइ साहिज्जइ जणग्गए ॥ १ ॥
खणि खणि अण्ण होइ जइ चेयण　　ता को मुणइ छमासीवेयण ।
वासणाइ जइ णाणु पयासइ　　तो वासण खणि किं णउ णासइ ।
किं सा पंचहं खंघहं भिण्णी　　जीवसिद्धि एमइं पडिवण्णी ।

25. १. T फणिंद २. ST ण धरइ ण करइ, A णरवइ ण चवइ. ३ A णाणाजीवभेय ४ ST भिज्जइ ५. ST रप्पइ.

26 १. S तयलोक्कु मंतु; T तेल्लोक्कभति २. T मुयइ ३ ST लइ मइं.

तो सिरसिहरि चडावियहत्थें मुणि वंदिउ भडेण परमत्थें ।
विसरिसकुसुमबाणविणिवारा भणु किं पेसणु करमि भडारा ।
भणइ भडारउ धम्मु लइज्जइ धम्मिं सग्गु मोक्खु पाविज्जइ ।
धम्मिं होंति मणुय हरि हलहर चारणचक्कवट्टि विज्जाहर ।
पायपोमपरिघुलिय पुरंदर ण्हाणसलिलपक्खालियमंदर ।
धम्मिं होंति जिणिंद णरिंद वि धम्में होंति सुरिंद फणिंद वि ।
ससहरवयणउ कुवलयणयणउ माणियमयणउ उज्जलरयणउ ।
सुहमुहपवणउ भूसियभवणउ लीलागमणउ मुणिमणदमणउ ।
मम्मणभणियउ कोड्डावणियउ घणघणथणियउ णं सुरगणियउ ।
धम्में महिलउ होंति घरत्थहं परिहियविविहविहूसणवत्थहं ।

घत्ता—धम्मिं रयणंसुजालंधरइं जालगवक्खमणोहरइं ॥
सुविचित्तवित्तभाभासुरइं सत्तपंचभोमइं घरइं ॥ २६ ॥

27

दुवई—धम्मिं होंति जाणजंपाणइं धयधवलायवत्तयं ॥
चामर रह तुरंग मायंग महाभड वलाइं भत्तयं ॥ १ ॥

पावेण महिलाउ जायंति मइलाउ जाराणुकूलाउ धणहरणलोलाउ ।
पिंगुद्धवालाउ लंबिरकवोलाउ दट्ठोट्ठरुट्ठाउ दूहवउ दुट्ठाउ ।
कुलमग्गभट्ठाउ कट्ठाउ धिट्ठाउ सुहणिट्ठणट्ठाउ णोलग्गकंठाउ ।
णिम्मुक्कणेहाउ दुग्गंधदेहाउ खयकाललीलाउ कलहेक्कसीलाउ ।
सोहाविहीणाउ दारिद्दरीणाउ खरफरुसभासिणिउ गेहम्मि गेहिणिउ ।
णिवसंति दुरिएण चिरजम्मचरिएण तिलपिंडखंडेसु तुसविरसपिंडेसु ।
डिंभाइं लग्गंति रोअंति मग्गंति सीएण कंपंति उण्हेण तप्पंति ।
वाएण भिज्जंति भुक्खाइ छिज्जंति फट्टाइं णिवसणइं फुट्टाइं भायणइं ।

४ A रइज्जइ ५ T पायपोम्म ६ ST पाडिद ७ ST सत्तपंचभउमइं

27 १ T दुट्ठोट्ठ २ P omits सुहणिट्ठणट्ठाउ णोलग्गकंठाउ, ST read पावेक्कणिट्ठाउ for सुहणिट्ठणट्ठाउ. ३ ST तुसरइय ४. AST adds afrer this दुग्गय (A दोहग्ग) कुडुवियइ णियकयाविडवियइं (A मयमह. विडंवियइं), but A adds this in second hand

णीरसइं भोयणइं णिव्वंधुपरियणइं   वहुछिद्दजज्जरइं कुहियाइं कुडिहरइं ।
संजणियतावेण जीवस्स पावेण[५]   दुक्खाइं पसरंति सुक्खाइं ण हुवंति[६] ।
घत्ता—इय जाणिवि तुहुं करि धम्मु तिह जिह जीववहणु ण वि संभवइ॥
तं णिसुणिवि मुणिवरिंदवयणु विहसिवि तलँवरु[७] पाडिलवइ ॥ २७ ॥

28

दुवई—जिम्मइ मासखंडु पसु हम्मइ गम्मइ सग्गवासहो ॥
एम भणंति देवगुरुवंभण णाणु ण जिणवरेसहो ॥ १ ॥
तं णिसुणिवि मुणिणाहिं[१] वुत्तउं   इंदियवज्जिउ णाणु णिरुत्तउ ।
जीवसहाउ ण अण्णायत्तउ   साहणकमपडिखलणिं चत्तउ ।
इंदियवुद्धिए काइं मि पिक्खइ   काइं मि पुणु जम्मि वि णो लक्खइ।
सुत्तहो मत्तहो मुच्छावण्णहो   सुणहुल्लउ मुहि सवइ विसण्णहो ।
तिं तिहुवणु तियालु संगायउ   भणु भणु वप्प केण विण्णायउ ।
घासिं भारहु सयलु वि दिट्ठउ   अणहोंतु जिं[२] किह लोयहं सिट्ठउ ।
ठविय केम महि संख पयासहि   परमाणुअउं गणिउं परिहासहि ।
गहगहगणुल्लउ केम पमाणिउ   गहणु केम गयणंगणि जाणिउ ।
घत्ता—सव्वण्हु अणिंदिउ णाणमउ जो मयमूढु[३] ण पत्तियइ ॥
सो णिंदिउ पंचिंदियणिरउ वइतरणिहि पाणिउं पियइ ॥ २८ ॥

29

दुवई—किं केण वि जयम्मि ण कयाउ[१] रियाउ भणंति णिद्दया ॥
ण हि सयमेव थंति पंतिए णहे मिलिऊण सद्दया ॥ १ ॥
अणुसंघट्टणि सद्दु विहावइ   उट्ठिउ खणि णहयलि परिधावइ ।
पसुहुं वि णिज्जीवहं वि अणक्खरु   सो संभवइ महुरु अवरु वि खरु ।
णरमुहवण्णठाणसंकेयहो   वुद्धिए णिज्जइ भासाभेयहो ।
वेउ सयंभु भणंतु ण लज्जइ   दियवरवरकइकित्तणि[२] पुज्जइ ।
विग्गहवंतु देउ णउ अक्खइ   पंडव सुरसुअ मुहियइ झंखइ ।

---

५ ST add after this पावेण टंडियइं धम्मेण छंडियइ ६. A लहति ७. AP णरवरु

28 १. T रिसिणाहें. २. A वि. ३. ST मइमूढ

29. १. AST कियाउ. २. ST कित्तिण; A कित्तणु

अंसु ण लब्भइ णिच्चणिरंसहो   वासुएउ किह किउ रिउ कंसहो ।
हिंसइ सग्गु मोक्खु सुयसंगमु   अण्णु पुराणु अण्णु वेयागमु ।
अण्णु देउ अण्णु जि पुज्जिज्जइ   किं बोल्लिज्जइ हो हो पुच्छइ ।
वयणु कुमारिलभट्टहो केरउ   अइअसुद्धधम्महो विवरेरउ ।
घत्ता—गेयइं वेयइं मइं जाणियइं हरिणहो मरणु पयासियउ ॥
पक्कि णिरु णिक्किउ समरउलु अवरें दियवउलु पोसियउ ॥ २९ ॥

30

दुवई—मीण गिलंतु ण्हंतु जइ सुज्झइ ता कंको महामुणी ॥
वद्दिज्जइ चरंतु णइतीरिं किं किज्जइ परो मुणी ॥ १ ॥
मिंढी हरिणी वि गाइ वि तणयरि   पावि हूई सूअरि वणयरि ।
जिणवरदिट्ठिहिं सव्व समाणी   देवि भणिवि सुरवसहिसमाणी ।
वंदइ गाइ पुणु वि जो मारइ   अप्पउ भवसंसारहो तारइ ।
गोसुअ जाणि धम्मि रइ माणइ   सोयामाणिहिं मच्छु वक्खाणइ ।
हो तहो विप्पहो तत्ति ण किज्जइ   रिसहिं दिट्ठउ धम्मु लइज्जइ ।
दुद्धरु होइ धम्मु अणगारउ   लइ परिपालहि तुहुं सागारउ ।
अणलियगिर जीवहु दय किज्जइ   परधणु परकलत्तु वंचिज्जइ ।
अणिसाभोयणु पमियपरिग्गहु   मणि ण णिहिप्पइ लोहमहागहु ।
महुमइरामिसु पंचुंबरिफलु   णउ चक्खिज्जइ कयदुक्कियमलु ।
किज्जइ दसदिसपच्चक्खाणु वि   भोउवभोयभुत्तिसंखाणु वि ।
मईरक्खणु अवरु वि सुदसवणु वि   पाउसकालि गमणवेरमणु वि ।
जीवाहारु जीउ ण धरिज्जइ   णियपहरणु ण वि कासु वि दिज्जइ ।
घत्ता—अट्ठमिदिणि अवरु चउदसिहिं छिवइ पुरंधि ण थण दुहाडि ॥
उववासु एक्कठाणु वि करहि एक्कभत्तु जिम णिव्वियडि ॥ ३० ॥

31

दुवई—जिम पुण कंजिएण भुंजेज्जसु झाइयधम्मझाणओ ॥
णिवसिज्जसु कहिं पि जिणमंदिरि जणियमलावसाणओ ॥ १ ॥

---

३ ST गेएं वेए ४ A दियवलु

30 १ ST वदइ पुणु वि गाय जो मारइ २. AST गोसव ३ ST लोहमहग्गहु ४. A मयरक्खणु ५ ST पाउसि कि पि ६ ST म च्छिव पुरंधिहिं थणदुहाडि.

पविव पवित्र तुहुं एम कारिज्जसु सयलु वि कम्मु सहिंसु चएज्जसु।
अहमु पत्तु दंसणि जाणेज्जसु जीवदयावरेण होएज्जसु।
मज्झिमु घरवइ उत्तमु संजमि संठिउ समदमवयणियमुज्जमि।
अभयाहारोसहसुयदाणइं तिविहपत्तविरइयसंमाणइं।
दिण्णइं गरुयपुण्णसंताणइं पुरिसहं दिंति पंचकल्लाणइं।
दंसणु णाणु चरिउ चिंतिज्जइ किरियापुव्वि जिणु वंदिज्जइ।
रोसु तोसु हासु वि वंचिज्जइ समभावण भावें भाविज्जइ।
इय सामाइउ भणिउ तियालइ घरपडिमग्गइ अहव जिणालइ।
अह पुणु उत्तरदिसि सवडंमुहु ठाइवि होइवि सुरवइदिसिमुहु।
मणिण णियच्छिउ जिणवरसिरिमुहुं कुगुरुकुदेवहं होवि परंमुहु।
अंतकालि सल्लेहणमरणिं अवसु मरेव्वउं णिज्जियकरणिं।

घत्ता—तं णिसुणिवि पभणइ पवरभडु अम्हहं कुलि मारणु पढमु॥
तं वज्जिवि सयलु परिग्गहिउ धम्महो केरउ कहिउ कमु॥ ३१॥

32

दुवई—हउं पुरवरतलारु पइ मारमि दारमि भारमंडणे॥
महु वउ णत्थि देवमुणिपुंगवदुद्धरचोरमारणे॥ १॥

पियरपियामहकमसंचारिं महु कुलधम्मु वहु णरमारिं।
तं णउ मुअमि इयरु वउ लइयउ तं णिसुणिवि रिसिणा पुणु कहियउ।
पउ णियच्छहि अच्छइ णियडउ जिह भवि भमियउ कुक्कुडजुयलउ।
तिह भमिहीसि तुहुं मि संसारइ लग्गउ कउलधम्मवित्थारइ।
भासइ णरवरु कहहि चिराणउं तंवचूलजुयलस्स कहाणउं।
कहइ मुणीसरु मायापुत्तहं इह होंताइं लच्छिसंजुत्तइं।

घत्ता—अच्चंतकुसंगें जायएण जायउ भाउ सकक्खडउ॥
मारिवि कुलदेविहि दिण्ण बलि पयहिं कित्तिमु कुक्कुडउ॥ ३२॥

31. १ S omits this line; T reads सयलु वि धम्मु अहिंस वरेज्जसु २ ST omit this line, ३ A चरणु. ४ AS अंतयालि

32. १. ST संढणे २ ST लवियउ ३. T तुहुं जि.

33

दुवई—णियतणु धणु विणासिवि भयतुंगइं मरिवि छुहावसं गइं ॥
संजायाइं बे वि सिहिसाणइं पुणु पसवइं भुयगइं ॥ १ ॥
पुणु झससुंसुमारभवयत्तणु पुणु अय आयय अयमहिसत्तणु ।
संपइ जायउ पुणु वि णवल्लउ पेच्छासि रत्तसिहरमिहुणल्लउ ।
ता णरेण कुलधम्मु मुएप्पिणु लइयउ सावयवउ पणवेप्पिणु ।
अम्हइं विण्णि वि णिसुणियजम्मइं मणि संगहियजीवदयधम्मइं ।
अइअउव्वलाहिं संतुट्ठइं लवियइं सुमहुरु कयउक्कंठइं[1] ।
णवरम्हारउ सद्दु सुणंति धणगुण मग्गणि झत्ति कुणंति ।
भणिय देवि जसवइणरणाहिं मेहुणसण्णारुद्दणुच्छाहिं ।
पेच्छि देवि धणुवेउ अभग्गउ सद्दवेहु दक्खालमि लग्गउ ।
घत्ता—इय भासिवि राएं मुक्कु सरु वम्मइं तेण विलुक्काइं ॥
अम्हइं विण्णि वि पंजरि ठियइं दहविहपाणि मुक्काइं ॥ ३३ ॥

34

दुवई—बे वि मुयाइं कंडणिब्भिण्णइं सोणियकिमिणिहेलणे ॥
सुयपणइणिहि गब्भि संकमियइं कुसुमावलिहिं तक्खणे ॥ १ ॥
पावपरंपराइ णिरु[1] वणियउ हउं सुण्हहे णियपुत्ति जणियउ ।
जा चिरु होंती माय महारी परमेसरि चंदमइ भडारी ।
सा णियकम्मि भववलि दिण्णी णत्तिहे णत्तिएण उप्पण्णी ।
गब्भट्ठिउ जुयलुल्लउ जइयहु मासाहारु ण रुच्चइ तइयहु ।
णवमासहि[2] सुव कुमरहं जुवलउं संजणियउं सुहजोइं विमलउं ।
जणणिए हउं जणणेण वियाक्किउ अभयरुइ त्ति कुमारु पकोक्किउ ।
अभयमइ त्ति सत्ति णं कामहो[3] सस परिवड्ढइ कंति व सोमहो ।
विण्णि वि सयलकलाणिउणियरइं जावइं णययाणंदियपियरइं ।
महु जुयरायपट्टु वज्झेसइ लोउ सभोउ भवणि भुंजेसइ ।
कज्जइं तेण मयामिसासिद्धिहिं जसवइपहु पत्थिउ पारद्धिहिं ।

33 १ T कयउक्किट्ठहि

34 १ ST अइ २ ST omit this line, AP add this in second hand. ३ ST धम्महो, A वम्महो

अग्गइ काहलसद्दहो मिलियइं पंचसयइं सोणहयहुं चलियइं।
उववणि तरुवरतलि आसीणउ उग्गतवतवतावें खीणउ।
ता दिट्ठउ कुसुमसरवियारउ झाणारूढु सुदत्तु भडारउ।

घत्ता—पहु चिंतइ सिद्धिविणासयरु अवसवणउ काहिं आइयउ॥
खलु खवणउ तइयइ याहिरउ काहिं महु जाइ अघाइयउ॥ ३४॥

35

दुवई—इय संचिंतिऊण मणि पिसुणिं णियसुणहउ विमुक्कओ॥
णं खलु विज्जुपुंजु मणपवणजवालउ णं पिसक्कओ॥ १॥

अणुमग्गें तहो पविणहरंकुर सोणइयाहिं मुक्क णियकुक्कुर।
भसणइं ताहं सुतिक्खइं दसणइं णं रायहो मयमारणवसणइं।
वंकइं उज्जुयत्तु णइ पत्तइं पुंछइं णं पाविट्ठहो चित्तइं।
जीहइं णं हिंसातरुपल्लव णक्खइं णं तहो अंकुर णव णव।
सुणहा पावपुंजाइं व दिट्ठा पारद्धिय ताइं वि णिकिट्ठा।
मयेउलु दंति डसिउ वणि दिट्ठउ खद्धउ जेहिं सुणहं उच्चिट्ठउ।
ते जि सुणहं दारियसारंगइं अण्णु किं सुणहहं मत्थइ सिंगइं।
ते गुणवंत हसंति भसंति व आकोसंति खंति मारंति व।
मुणिवरतवसामत्थि णिरत्था संयल वि थियें ओणावियमत्था।
सुणहें णिएवि लेवि सइं असिवरु राउ पधायउ मारहुं मुणिवरु।
ताँ तहिं केण वणिंदिं बोल्लिउ वणि कल्लाणमित्तु अंतरि ठिउ।

घत्ता—विरएविणु अंजलि वणिवरेण बोल्लिउ राउ जणाहिवरु॥
जइ मारहि जइवर वयसहिय तो किं करइ विज्झि समरु॥ ३५॥

36

दुवई—पणवसु पवणवरुणवइसवणथुयं विसए विरत्तयं॥
ता परिच्चवइ णिवइ कोवारुणु पइं किं हो पउत्तयं॥ १॥

---

35. १ T हरिणमसु दंतावलिदिट्ठउ. २ ST सयल वि संठिय पणवियमत्था ३. A ठिय ४. ST ता तहिं अवसरि णं दइवें णिउ

णग्गु अमंगलु कज्जविणासणु जो मई पाविव्वउ जमसासणु ।
तहो पयजुइ पडंतु किं बुच्चमि वेयवंत दियवरहं ण रुच्चमि ।
ता पभणइ वणि गंजोल्लियमणु णग्गउ रुद्दु धूलिधूसरतणु ।
णग्गउ खेत्तवालु कत्तियकरु रणझणंतपयगयणेउरसरु ।
लोहवलयकयकमखरवाहणि णग्गी जोइणि मुंडपसाहणि ।
भीमइं भक्खियमाणुसमासइं एयइं सव्वइं पिउवणवासइं ।
हत्थगहियकंकालकवालइं मंगलाइं किह भणु हिंसालइं ।
संतु जीवदयवंतु सुणिम्मलु साहु भडारउ केम अमंगलु ।
णग्गउ परमहंसु परु झायइ णग्गउ णग्गएहिं जणु जायइ ।
तिरयणभूसणु णग्गउ भावइ तो वि मुणिंदहु दोसु जणु लावइ ।
अण्णु वि पइं अण्हाणु किं दूसिउ णिंदावयणु मुणिंदहो भासिउ ।
जणि अण्हाणु पउत्तु कुणंतहं किं पुणु रिसिहिं महातववंतहं ।
अयमलसलिलिं सुज्झइ कप्पडु देहु कि सुज्झइ दुक्कियलंपडु ।
माणुसु पुणु थिप्पइ वसचोप्पडु लोहमोहमायामयसुक्कडु ।
घुप्पइ घुप्पइ पुणु वि अचोक्खउ णयरोग्गसरपसरसारिक्खउ ।
फुल्लमालचंदणघोयंबरु ताम सुद्धु जा दूरि कलेवरु ।

घत्ता—सव्वंगु पवित्तु महारिसिहिं पत्थिव दुद्धरतवधरहं ॥
लालारसु लग्गउ तणुमलु वि हरइ रोउ रोयाउरहं ॥ ३६ ॥

37

दुवई—जाणंउं पायधूलिलेवेण वि णासइ पावपंकओ ॥
ताणमिसीणमीसं पणविज्जसु छड्डइ मच्छरोकओ ॥ १ ॥

आमोसहि पविउलखेलोसहि जल्लोसहि विप्पोसहि णंसहि ।
अहयमहाणसद्धि सव्वोसहि एयहो णउ डसंति अंगइं अहि ।
एयहो हरि करि पुणु वि ण लग्गहिं भिल्लपुलिंदइं णहलवलग्गहिं ।

36 १ ST कज्जपणासणु २ A णग्गउ ३ ST सव्व ४ ST तिणयणु णियतणु णग्गउ भावइ. ५ ST दोसइं लावइ ६ AP अयमयसलिलि ७ ST omit this line ८ ST omit this line. ९ ST ता सुधुंय
37 १ ST जाणं; A जिणम २ सीसु ३ AST पविमल ४ ST omit this line.

जइ रूसइ तो पाडइ सक्कु वि मेरुमहीहरु सउं तिल्लोक्कु वि ।
तेयरिद्धिपज्जलियसिद्धिहि को किर थक्कइ पयहो दिट्ठिहि ।
पर किं वलि वि खलाहं ण रूसइ पणवंतहं सज्जणहं ण तूसइ ।
अइमज्झत्थु महत्थु महाजसु जीवियमरणि मुणिंदु समंजसु ।
पयहो अरिणरसत्थहिं चित्तइं लइ ताइं जि हवंति सयवत्तइं ।
इय एवड्डहो कित्तिणिहाणहो करु पसरिज्जइ केम किवाणहो ।
सीहहं सद्दूलह वि अणुग्गहु जेण कियउ जिणधम्मपरिग्गहु ।
अहवा हउं किर बोल्लमि सावउ पेक्खु पेक्खु मुणिवरहं पहावउ ।
परमारणसीलइं ललुकइं सुणहइं पंचसयइं पइं मुक्कइं ।
मुणिवरपायमूलि लोलंतइं चललंगूलदंडचालंतइं ।
पेक्खु पेक्खु मा मुज्झहि मोहिं वंदहि साहु म डज्झहि कोहिं ।

घत्ता—णामेण सुदत्तु गुणोहणिहि होंतउ राउ कलिंगवइ ॥
कुसुमालधरहु वंधहुं वहहु णिव्विण्णउ इहु हुवउ जइ ॥ ३७ ॥

38

दुवई—णियणायाहियारिथियदियवरणियरेण विणिउत्तओ ॥
तक्करपाणिपायसिरखंडणदंडणविहिविरत्तओ ॥ १ ॥

जीवघणासपास छंडेविणु जुण्णउ तणु व सरज्जु मुएविणु ।
थिउ गिरिगहणे महरिसि होइवि भो भो जसवइ रोसु पमाइवि ।
पणवहि चरणजुयलु पयहो तुहुं कर मउलेवि अवलोहि रिसिमुहुं ।
इय कल्लाणमित्तवयणुल्लउं लग्गउ कण्णि णरिंदहो भल्लउं ।
वंदिउ गुरु गुरुआरए भत्तिए तेण वि सव्वजीवकयमित्तिए ।
धम्मलाहु होउ त्ति पघोसिउ वच्छलें महुरक्खरु भासिउ ।
चिंतइ णियहियवइ णिवसुंदरु अचलत्तेण धीरु गिरि मंदरु ।
गंभीरत्तणेण रयणायरु तेएं सइं पुणु चंदु दिवायरु ।
णं पुंजेप्पिणु ठवियउ संजमु मुणिवेसिं णं संठिउ उवसमु ।
णं माहप्पसारु तवसत्तिहि आवासउ णं जिणवरभत्तिहि ।

५ ST चंदक्कु वि सक्कु वि तेलुक्कु वि ६. ST लग्गइ ताइ. ७ ST पच्चक्खु. ८ ST लोलतइं ९. ST वधणवहेण.
38 १ A पउत्तउ २. ST छिंदेप्पिणु.

णं दयवेल्लिहि कीलागिरिवरु   खंतिपवरपोमिणियहि सरवरु ।
पहउ साहु साहु सुए संतउ   मइं पावि मारण आढत्तउ ।

घत्ता—पच्छित्तु करमि दुव्विलसियहो सीसु लुणेप्पिणु अप्पणउ ॥
णिवचिंतिउ मुणिवि मुणीसरिण जंपिउ सवणसुहावणउ ॥ ३८ ॥

39

दुवई—हो हो हो णरिंद किं चिंतिउ अलिउलणीलकेसयं ॥
णिंदणगरहणाइ तसु णासइ मा खंडहि ससीसयं ॥ १ ॥

ता पहु चवइ गुज्झु किह लक्खिउ   मणु वि महारउ मुणिणा अक्खिउ ।
हियउ मुणेवउं किं किर साहसु   भणइ सेट्ठि परमेट्ठि समंजसु ।
लोयालोयउ जं जि समिच्छहि   तं जि कहइ जइवरु परिपुच्छहि ।
पुणरवि जगरवि रिसिहि णवेप्पिणु   भणइ राउ महु ताउ मरेप्पिणु ।
जसहरु सहुं जणणिए कहिं जायउ   कहिं जसोहु जसपसरियछायउ ।
कहइ सूरि सियपलिउ णियच्छिवि   तुह जणणहो कुललच्छि पयच्छिवि ।
दुद्धरु तउ चरेवि भयमयवहु   गउ सुरहरहो जसोहु पियामहु ।
परियणसयणाणंदजणेरइ   पट्टु बंधि णरणाह तुहारइ ।
कुलदेवयहि पुरउ परिवायवि   पिट्ठि विरइउ कुक्कुडु घाइवि ।
एत्थु जि णिहयइं मायापुत्तइं   गरलवसेण पत्त पंचत्तइं ।
णरवइ संजायइं सिहिसाणइं   एम जीउ पावइं फलु माणइ ।
सुणहिं मारिउ जो मोरुल्लउ   सो परियाणसु तुहुं जणणुल्लउ ।
पइं फलहइं हउ फोडियमच्छउ   सारमेउ जो महिपलहत्थउ ।
सो अज्जियहि जीउ जाणेज्जसु   एवहिं जीवहं जीविउ दिज्जसु ।

घत्ता—पुणु विसहरारि तुह पिउ हुवउ तहो मायरि भीयरु उरउ ॥
सो खद्धउ तेण भयंकरिण सइं पुणु मरिवि तरच्छहउ ॥ ३९ ॥

---

३ S दयदेविहि ४. ST परम ५ ST सत्तउ

39 १ ST जइ तुहुं २. A समप्पिवि. ३ A तवेवि. ४ T णयणाणंद. ५ S मारिवि ६. ST एत्थुज्जोणिहिं मायापुत्तइ. ७ ST भवसायरि जायइ. ८ ST भीसणु

40

दुवई—सुउ सिप्पाणईहि उप्पण्णउ सुजयणारिमारओ ॥
पइं मारियउ जणणजणणी चिरु दुद्धरु सुंसुमारओ ॥ १ ॥

मेयं भासिउ भट्टमरट्टह   रोहियमच्छु दिण्णु जो भट्टह ।
तेरउ बप्पु पइं जि संताविउ   सो कयपहरइं विहुरइं पाविउ ।
तहिं जणणीयहि अइयहि अइयउ   हूवउ पावपडलसंछइयउ ।
जूहिंदें सिंगग्गें भिण्णउ   मायारूढउ तहिं जि विवण्णउ ।
जीविउ वीयबिंदुसंमाइउ   अप्पउ अप्पयण मइं जाइउ ।
थिउ पुणु गब्भंतरि णियमायहि   भंगुरअंगो णामियकायहिं ।
मयमाराणि पारद्धिण सिद्धी   सा छाली पत्थिव पइं विद्धी ।
पियमायरिहि पोट्टु दोहाविउ   छावउ जीवमाणु अवलोइउ ।
अप्पिउ घाणियहिं तेण जि रक्खिउ   घरु आणिउं ता आमिसु भक्खिउ ।
पाउ लुणेवि दिण्णु णियमायहि   पुव्वजम्मि तहु तणियहि जायहि ।
अयहयमय णिव तुह चाणंगिं   कय पुणरवि सयत्त कयमंगिं ।
हूई सिंधुमहिसु सयरूवउ   जाणसि किण तुरयजमदूअउ ।
उअरहो हेट्ठि अग्गि जालाविउ   जो पइं विरसमाणु पउलाविउ ।
सो सेरिहु अज्जी य तुहारी   अवसु ण चुक्कइ वाय महारी ।

घत्ता—सो छेलउ महिसु वि संभरहि अवरपक्खि जहिं जइयहु ॥
पइं खंडिवि खंडिवि वंभणहं खाउ दिण्णु तहिं तइयहुं ॥ ४० ॥

41

दुवई—वे वि मुयाइं ताइं पुण कुक्कुडपक्खिभवे पवण्णइं ॥
तित्थु सुणेवि सद्दु णंदणवणि पइं वाणेण भिण्णइं ॥ १ ॥

तहिं मरेवि णिरुवमलायण्णइं   कुसुमावलिहि गब्भि उप्पण्णइं ।
पम बप्प विसहियसंसारइं   अभयमईअभयरुइकुमारइं ।
पवहिं पुण्णवंधपारंभइं   घरि अच्छंति तुज्झ पियडिंभइं

40 १ ST जूहेसें.

41 १. AST मयाइं. २. ST चद्दपुण्णपारभइं.

अमयमइ त्ति देवि तुह मायरि मंसाँसिणि णं भीमणिसायरि ।
गुणगणवंत महारिसि णिंदिवि कुगुरुकुदेवहं चरणइं वंदिवि ।
मीण जियंत जियंत तलेप्पिणु भोयणवेलइ विप्पहं देप्पिणु ।
सइं भक्खेप्पिणु मज्जु पिएप्पिणु जारहो कारणि पइ मारेप्पिणु ।
णिट्ठियट्ठि कुट्ठेण कुट्ठेप्पिणु अइरउद्दझाणेण मरेप्पिणु ।
पंचमणरयहो गय सा पाविणि जसहररायहो केरी भाँमिणि ।

घत्ता—दुक्कम्मि णिवडइ णरयविले सुहिउ कहिउ अवगण्णइ ॥
सिरिपुप्फयंतजिणवरवयणु मूढु लोउ णायण्णइ ॥ ४१ ॥

इय जसहरमहारायचरिए महामहल्लणण्णकण्णाहरणे महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे
जसहरमणुयजम्मलाहो णाम तइउ परिच्छेउ समत्तो ॥ ३ ॥

३. ST मासासिणि ४ ST भाविणि

IV

*अश्रान्तदानपरितोपितवन्दिवृन्दो
दारिद्र्यरौद्रकरिकुंभविभेददक्षः।
श्रीपुष्पदन्तकविकाव्यरसाभितृप्तः
श्रीमान्सदा जगति नन्दतु नन्ननामा॥ १ ॥

I

णिसुणिवि दुहभरियइं मह्दु भवचरियइं जसवइणिव[1]हियउं चलिउ ॥
सोयरहु पधाइउ अंगि ण माइउ णयणंसुय धारहिं गलिउ ॥ ध्रुवकम् ॥

दुवई—मुणिकमकमलजुयले लोलंतु पघोसइ ए[2]म पत्थिओ ॥
हा हा मज्झु जणणु जिं मारिउ सो भुवणयलि णिकिओ ॥ १ ॥

मज्झु जि संघारमि पाववेरि लइ ण करमि केण वि समउ खेरि।
पिट्ठमपं कुक्कुडपं हपण मणि मणिपण दुरिपं कपण।
गुरुयणु पत्तउ पवइ दुक्खु उज्झउ माणुसु जं च[3]म्मचक्खु।
बप्पु वि णो लक्खिउ जम्मि जम्मि मइं माराविउ णिद्धम्मि धम्मि।
जहिं रिसि गुरु जिणवरु णत्थि देउ तहिं कुलि कहिं जीवह दयविवेउ।
घाहिज्जइ जहिं पणयरहं सत्थु तहिं वंधु वि हम्मइ परभवत्थु।
जीवउलइं मइं णिहयाइं जाइं को लक्खिवि सक्कइ ता[4]इं ताइं।
जइचरणकमलसंणिहियचित्त भो भो वणिवर कल्लाणमित्त।

घत्ता—सी[6]हासणछत्तइं वरवाइत्तइं विविहइं चिंधइं चामरइं ॥
रहवर मायंगइं प[5]वरतुरंगइं भडसेण्णइं पंजलियरइं ॥ १ ॥

2

दुवई—लइ पत्थिवसुहाइं अणुहुंजउ अभयरुइ कुमारओ ॥
महु दिक्खहे पसाउ पडिवज्जउ भणु भणु तुहुं भडारओ ॥ १ ॥

---

*This verse is omitted in S and T

1 १. ST णिवहियवउं, A णिवहु हियउं. २ ST एव. ३. A चम्मरुक्खु. ४ ST एत्थु ताइ. ५. S चवल. ६. S सिंहासण.

कयलीकंदलसोमालगत्त अभयमइ कुमरि सिसुहरिणणेत्त ।
दिज्जउ कुमरहो रिउमद्दणासु अहिछत्ताहिवणिवणंदणासु ।
तहिं अवसरि पुरवरि वेत्त पत्त लइ चारुसिद्धपारद्धिजत्त ।
संजायउ रायहो धम्मलाहु तवचरणहो उवरि णिबद्धु गाहु ।
ता तहिं चवंति रायाणियाउ घणरसमपेम्मसावियाणियाउ ।
क वि [2]भणइ हुवउ पियतिलयछेउ हो हो किं किज्जइ पत्तछेउ ।
बहु का वि भणइ किं लिहहि चित्तु पहु वट्टइ कामविरत्तचित्तु ।
क वि पभणइ किं सुहुं[3]मंडणेण राणउ रंजिउ तवमंडणेण ।
बहु क वि पमेल्लइ पडहु पवरु विहिवायइं[4] लग्गउ किं पि अवरु ।
क वि कुरुल करंति करंति थक्क लइ केसुप्पाडणविहिपढुक्क ।
पिय का वि लिहंति कवोलवत्तु हा[5] दइव काइं विवरीउ पत्तु ।
उड्डिय क वि मुत्तियगुणि ण देंति मुणिगुणणिच्चलु णियमणु ठवंति ।
क वि पभणइ म करहि तिक्ख णक्ख वरइत्तु लएसइ परमदिक्ख ।
क वि णिसुणिवि पियवत्ताइं खीणं[6] देहइ कंचुलिय ण थाइ लीण ।
इय णाणाविह जंपंतियाउ पियविरहभएं कंपंतियाउ ।
पासेयबिंदुथिप्पंतियाउ कंचीकलाव गुप्पंतियाउ ।
[7]णयणंजणंसुमलमइलियाउ मणिरसणाकिंकिणिमुहलियाउ ।
णेउरझंकारमणोहराउ उण्णयघणपीणपयोहराउ ।
[8]सयल वि अंतेउररायाणियाउ जहिं राउ तहिं जि संपत्तियाउ ।

घत्ता—णहपहजियसुमणिहिं चलहारमणिहिं पत्थिउ रमाणिहिं पत्थियउ ॥
विणडिउ तवचरणिं सिरिसुहहरणिं तुहुं दइवेण गलच्छियउ ॥ २ ॥

3

दुवई—अम्हइं अच्छराउ तुहुं सुरवइ स[1]उहलयं विमाणयं ॥
पियसंजोग्गु सग्गु किं सग्गासिरे कुडिलं विसाणयं ॥ ६ ॥

2 १ ST पत्त वत्त २ ST पभणइ हुउ ३ ST महुं मंडणेण ४ A विहिवायणलग्गउ ५ ST हा दइ चउ कि पि विवरीउ पत्तु ६ ST झीण ७ ST णयणजण सुहुं मइलितियाउ ८ S and T omit this line and A and P give it in second hand

3 १, S सउहयलं

रइकरणालिंगणधुत्तियाउ　　　पणयंगणाउ[2] कुलउत्तियाउ ।
इय पलवंतियउ ण इच्छियाउ　　　सयलउ राएं णिब्भच्छियाउ ।
ढक्कारवचल्लियगयवरेहिं[3]　　　हिलिहिलिसरेहि सियहयवरेहि ।
णग्गुग्गखग्गकरकिंकरेहिं　　　मणचडुलतुरयणियरहवरेहिं ।
परिवाइयाइं सहयरणरेहिं　　　विज्जिज्जंतइं चलचामरेहिं ।
सिग्गिरिणंदणवणसहलाइं　　　छत्तावलिछाइयणहयलाइं ।
मरु[4]चलियधुलियणाणाधयाइं　　　सिवियाजाणिं विण्णि वि गयाइं ।

घत्ता—परिसेसियपरियरु सधउ[5] सचामरु चरियरयणउज्झियसयरु ॥
खोणियलि णिविट्ठउ दोहिं मि दिट्ठउ णरवइ णं सामण्णु णरु ॥ ३ ॥

4

दुवई—ता मुणिवयणकमलणिग्गंतझुणीकहियं कहंतरं ॥
अम्हइं तंमि विहिं मि तं चिय पुणुं[1] संभरियं भवंतरं ॥ १ ॥

भउ सुमरिवि विण्णि वि मुच्छियाइं　　　लंजियहिं करेण पडिच्छियाइं ।
अहिसिंचियाइं सीयलजलेण　　　आसासियाइं चमराणिलेण ।
परियाणियचिरभववेयणाइं　　　कह कह व समागयचेयणाइं ।
मलिणाणणाइं पुणु उट्ठियाइं　　　मुणिचरणजुयलि णिवडिवि ठियाइं ।
अम्हइं मुच्छइं मुच्छिय मयच्छि　　　कुसुमावलि णिवकुलकमललच्छि ।
कोमलकरयलताडियउरेण　　　सोहय सयलिं अंतेउरेण ।
वहु का वि भणइ सोहग्गथत्ति　　　उट्ठहु माइ मणहरणसत्ति ।
कं[2] वि भणइ ण तुंहु वि महु णिएइ　　　पइं भणिउ णाहु तंबोलु लेइ ।
उट्ठहु देवि करि साहिलासु　　　देवाविउ पइं महु ण्हाणवासु ।
दूहवियहि पइं महु किउ विलासु　　　भूसिवि पेसिय णिय[3]पइणिवासु ।
वहु का वि भणइ तुहुं ण वि सवत्ति　　　महु माय वहिणि अविहिण्णमित्ति ।
उट्ठहु भहि कारुण्णु करहि　　　वउ लिंतु जंतु णियकंतु धरहि ।

---

२. T पणियंगणाउ　३. ST चलियसुगयवरेहिं·　४ ST अम्हइ विलुलियणाणाधयाइं,　५ ST अणउध अचामरु·

4 १. ST पुणो भरियं, २. ST उट्ठहु देवि लहु बोलु देइ· ३ ST हउ पियहु पासु

घत्ता—ता मुच्छ पमाइवि अम्हइं जोइवि पयलियबाहजलोल्लियइं ॥
महएविहि णेत्तइं ओलासित्तइं णं सयवत्तइं ढोल्लियइं ॥ ४ ॥

5

दुवई—चिंतइ रायघरिणि मुणिवरवाणीरवदिण्णकण्णइं ॥
पयइं डिंभयाइं किं विण्णि वि मुच्छावसणिसण्णइं ॥ १ ॥

इय चिंतिवि करसंजोइयाइं आलिंगिवि अंकइं ढोइयाइं ।
मुणिणा णाणेण णियच्छियाइं तुम्हइं किं जाणह पुच्छियाइं ।
अम्हइं संभरइं पउत्तु सव्वु किं रिसि भासंति असच्चु कव्वु ।
अम्हइं चंदमइजणोहराइं अम्हइं सिहिसाणइं थलयराइं ।
अम्हइं पण्णयरिउउरयराइं अम्हइं सिप्पाणइजलयराइं ।
अम्हइं अयमयमहिसय हुआइं अम्हइं खगाइं पुणु तुह सुआइं ।
जाणहि णियणंदणणेहतण्हि इहजम्ममाइ चिरजम्मसुण्हि ।
ता मुणिपयपोमइं पुंजियाइं अम्हइं राएण विसज्जियाइं ।
णियणयरि गंपि मंदिरि ठियाइं कल्लाणमित्तु जंपइ पियाइं ।
तुह पिउ पावज्जइ चलिउ अज्जु तुहुं परिपालहि सत्तंगु रज्जु ।
तं णिसुणिवि मइं पहसंतएण बोल्लिउ भवभयसमसंतएण ।

घत्ता—सो मह्हु पियणंदणु णयणाणंदणु इह मइं रज्जि परिट्ठविउ ॥
एवहिं तहो तणुरुहु हउं ससहरमुहु दइवें चंगउ सिक्खविउ ॥ १५ ॥

6

दुवई—एवहिं दिण्णलइयपरिवाडि वि लंघिवि जामि गिरिगुहं ॥
फेडमि मोहजालघणमुहवडु पेच्छमि तवसिरीमुहं ॥ १ ॥

ता भणइ सेट्ठि गुणगणविसालु तवचरणहो अज्ज वि कवणु कालु ।
पहिलारीपहुणा अज्जणिज्ज जाणेव्वी सयल वियारविज्ज ।
जिणधम्माहम्मविही तइ त्ति वत्तावि अत्थाणत्थहं पवित्ति ।

5, १ S पसंगयं २ S अंके पढोइयाइ ३ ST अम्हहि पउत्त संभरहु सव्वु ४ S अम्हइं अयमहिसय भवि हुयाइं ५. AST पव्वज्जहे ६ S भवभवसमसंतएण
6 १ S जाणेवि. २ AST जण

जहिं भुवणि णयाणय ववहरंति सा दंडणीइ णिच्छउ कहंति ।
पयाहिं वट्टइ जगि जोउ खेमु संपज्जइ सुहुं धम्मत्थकामु ।
अणवरयभुत्तसंपुण्णभोउ पयासु परिट्ठिउ जियइं लोउ ।
राणउ परिरक्खइ दंडधारि विज्जउ चत्तारि वि दोसहारि ।
विणु राएं जगि को करइ दंडु विणु दंडिं जणवउ कम्मचंडु ।
परधणपररमणीहरणकामु लइ ण सहइ धम्महो तणउं णामु ।
घत्ता—खमदमसमसारिं विउलसउरिं जीवदयाइ पवाणियउ ॥
सामण्णपंवण्णहं लिंगिहिं चण्णहं एहु धम्मु मइं मंणियउ ॥ ६ ॥

7

दुवई—इंदफणिंदचंदविज्जाहरणरवरणियरपुज्जिओ ॥
णासइ एहु धम्मु जिणभासिउ णिवसासणविवज्जिओ ॥ १ ॥
ता मइं मायाभावेण रज्जु इच्छिउ पिउणा दिण्णउ अवज्जु ।
अहिसेयकलसजलखलहलंतु णाणारयणावलिपज्जलंतु ।
देवंगवत्थपल्लवललंतु कामिणिकरचामरचलवलंतु ।
पारद्धिय उप्परि परिघुलंतु उत्तुंग मत्त गय गुलुगुलंतु ।
मणगमण तुरंगम हिलिहिलंतु मयणाहिगंध महमहमहंतु ।
कप्पूरफार महुयर मिलंतु भूवालविंदसेविउ महंतु ।
महु रज्जु देवि जसवइणरिंदु गउ मइं पुच्छिवि वंदिवि मुणिंदु ।
लइयउ तेंउ सहुं अंतउरेण उत्तारियकंकणणेउरेण ।
णं किण्हणीललेसाविसेस उप्पाडिवि घल्लिय कुडिलकेस ।
णिवसणु वसणु वि परिहरिउ तुरिउ रिसिवेउ संखेविं तेण धरिउ ।
आढत्तु घोरु तवचरणु तेण जम्माहिउ वाहिउ जंति जेण ।
मिल्लेवणु विण्णि वि रायदोस माणावमाण हयकम्मपास ।
णिवसइ णिज्जणि काणणि मसाणि आहारु लेइ मासावसाणि ।

३. ST णयाणयवइ वहति. ४. ST जोयखेमु. ५. A सहुं धम्मत्थु कामु ST सुहुं धम्मत्थु केमु ६ S जियउ. ७. AP पसण्णहं. ८. T माणियउ.

7. १. ST खलहलंतु. २ ST चलचलतुं. ३ ST पालद्धिय. ४. ST अंबर. ५ ST करि. ६. ST ललियंग. ७. ST गिरु ८. AP omit कप्पूरफारमहुयरमिलंतु. ९. ST वंदिउ १०. A वउ. ११. ST जें परिहरिउ. १२. ST पडिवण्णउ तेण रिसिंदचरिउ. १३. ST जम्माइउ. १४. AT रोस.

घत्ता—घरमोहु णिसुंभिवि णियमणु रुंभिवि तिण्णि वि सल्लइं खंडियइं ॥
गुणमणिविच्चइयइं पिउपावइयइं पंच वि करणइं दंडियइं ॥ ७ ॥

8

दुवई—ताम मए सवत्तितणयस्स णयस्स तणु व्व छड्डियं ॥
दिण्णं जलहरस्स मणिभवणघणं कुललच्छिमंडियं ॥ १ ॥

उवसमहरि णं परलोयकुहिणि हउं एह अवर महु लहुयवहिणि ।
बिण्णि वि तें चिय उववणु गयाइं णवियाइं साहुणाहहो पयाइं ।
संसारमहाभरभग्गएहिं दोहिं मि गुरुचरणालग्गएहिं ।
भासिउ मुणि दिक्खइ करि पसाउ ता भणइ भडारउ वीयराउ ।
तुम्हइं बालइं अइपत्तलाइं अज्ज वि कुवलयदलकोमलाइं ।
तवचरणकरण परिणइदुसज्झ पुत्तय डिंभहं णउ होइ गिज्झ ।
होएप्पिणु उत्तमसावयाइं गुरुसेवए सिक्खहं सुयपयाइं ।
परसमयारूढसढत्तणाइं लोइयवेइयमूढत्तणाइं ।
आसंक कंख वि दिगिंछ हणहं मा कहिं मि कुलिंगिचरित्तु थुणहं ।
मा कुणहं दिहीहर दप्पसंगु रक्खहं सुविसुद्धउ अंतरंगु ।
सासणहं पहावण करिवि णवहं पहभट्ठु वि पुणु जिणमग्गि ठवहं ।
आउंचहं उट्ठिउ हरिसु रोसु मा गिण्हहं सम्माइट्ठिदोसु ।
चउभेयहु संघहो करहु पणउ वच्छल्लु सुविज्जावच्चु विणउ ।
सुविसुद्धउ दंसणु एम होइ इयरहो पुणु सहसा खयहु जाइ ।

घत्ता—परणयविद्धंसणु सम्मद्दंसणु पहिलारउ थिरु मणि धरहं ॥
पुणु वज्झब्भंतरु भवसयमलहरु पच्छइ दुद्धरु तउ धरहं ॥ ८ ॥

9

दुवई—सेणिं विणु णिवेण सुरदुब्भियधयवडपंडुराहणं ॥
विणु सद्दंसणेण किं कीरइ तवचरणं पि दारुणं ॥ १ ॥

---

8 १. AP जसहणस्स २ उवसमसुहरिणि ३ ST उववणु पुणु गयाइं ४ S अइबालइं पत्तलाइं. ५. S सुयवयाइं. ६ ST तप्पसगु ७ AT सुवेयावच्चु ८ ST णियमणि ९. भवकलिमल.

मा जंपइ कासु वि कण्णसूलु वउ धरइ अहिंसा सच्चमूलु।
सामाइउ पालइ जीवमित्ति गुरुदेवभत्ति उज्झायभत्ति।
सिद्धहं साहुहु वंदणविहत्ति पोसहु समेरभत्तहो णिवित्ति।
सचित्तु म घंसइ आउ वाउ महि जलणु वि अवरु वि हरियकाउ।
वज्जइ णिसिभोयणु जइ वि मिट्ठु मा जोयइ थी पुरिसु वि सुइट्ठु।
दिढु धरइ विसुद्धउ बंभचेरु आरंभु चयइं कयलोयवेरु।
अब्भसइ पयत्तिं अंगचाउ मिच्छइ अणु मणु मण्णेवि पाउ।
णिद्दिट्ठु मुएवि भिक्खाइ अडइ एयारहमइ गुणठाणि चडइ।
बंधणु ताडणु मारणु वि गणिउं पइरणधारणु वि रउद्दु भणिउं।
तणकट्ठाणिट्ठइं जायएण उप्पज्जइ इट्ठविओयणेण।
रुद्दट्ठु मुएविणु दुरियठाणु णिच्चं चिय झायइ धम्मझाणु।
घत्ता—इयधम्महताबउ कयसमभावउ दुग्गइगमणणिवारणिउ॥
चिंतइ अणुवेक्खउ जगगुरुसिक्खउ धम्मरुक्खजलसारणिउ॥ ९॥

10

दुवई—तणुलायण्णु वण्णु णवजोव्वणु रूवविलाससंपया॥
गुरुघणमेहजालजलवुब्बुयसारिसा कस्स सासया॥ १॥
सिसुत्तणु णासइ णवजोव्वणेण जोव्वणु णासइ वुड्ढत्तणेण।
वुड्ढत्तणु पाणि चलियएण पाणु वि संधोहिं गलियएण।
खंध वि सगुणोहिं परिणमंति वहुविह पज्जायइ परिणवंति।
परिगलइ राउ वइरायएण णीरोयत्तणु रोयत्तणेण।
जीविउ पावइ पाणावसाणु सिरिवंतु होइ दालिद्दठाणु।
गच्छंतु भाणु जीवंतु जीउ कालिं अत्थवणहो को ण णीउ।
जइ वज्झइ रायहो आउगंठि ता किं किउ सोहणु जणियतुट्ठि।
वरिसइं वरिसइं वरिसोणु ठाइ भयवद्धउ आउपमाणु जाइ।
वलियइं कुडिलत्तणउज्जुयाइं अइधीहइं तिट्ठइं रज्जुयाइं।
णारीरंगुंटइ पसु पुरिसु वद्धु कालिं सद्दूलें झत्ति खद्धु।

---

9. १. S उज्झायपत्ति २. S सारंभु ३. S मंगचाउ.

10. १. ST महग्घवु २. ST म चिय. ३ ST परिभमंति. ४ ST अइघलियए कुडिलाणुज्जयाइं. ५. ST णारीग्गाणुए.

घत्ता—णउ सुक्खु समीहइ मरणहु बीहइ देवहं सरणु पईसरइ ॥
विज्जहो घरु गच्छइ मंतु पपुच्छइ खयकालहो णउ उव्वरइ ॥ १० ॥

11

दुवई—परिवारेण लच्छि भुंजिज्जइ रक्खिज्जइ महारणे ॥
धावइ सव्वु को वि णरणाहहो[1] तंदुलपसइकारणे ॥ १ ॥

परियणु भुंजइ माहिविहउ रम्मु | एक्कु जि णरवइ अणुहवइ कम्मु ।
चउदसस्[2]सु भूयगामंतरेसु | जिउ णि[3]वसइ सयलकलेवरेसु ।
णियपुण्णपावसंवलइं[4] लेवि | पुणु अण्णभवहो पाहुणउ जाइ ।
एक्कु जि जगि[5] जीउ सुदुण्णिरिक्खु | हिंडइ चउरासीजोणिलक्खु ।
णयणइं अण्णण्णइं घाणु अण्णु | जीवहो संफासणु को[6] विभिण्णु ।
अण्णण्ण कण्ण भवि भवि हवंति | अण्णण्णउ जीहउ मुहि ललंति ।
अण्णण्णइं कम्मइं संगिलंति | अण्णण्णइं विविहंगइं मिलंति ।
जीवहं सयरायरु सव्वु अण्णु | जइ मोहमहा[7]दहि किं णिविण्णु ।
णारयतिरिक्खसुरणरभवेसु | परिभमइ भावतमविब्भमेसु ।
सयलामलकेवलणाणसयणि | वित्थिण्णि अणंताणंतगयणि ।

घत्ता—जगु ठियउ पहिल्लउ णावइ मल्लउ[8] पल्हत्थिवि केण वि ठविउ ॥
मज्झिमु पविमज्झु व उवरिल्लउ णिव मुणसु मुयंगु व मुणि चविउ ॥ ११ ॥

12

दुवई—ण किउ ण धरिउ बंभरुद्दाइहिं ण य कालिं विलीणउ ॥
ण हि ठिउ [1]एक्कखंभु तिल्लोक्कु वि चउदहरज्जुमाणउ ॥ १ ॥

जं तिहुयणु भासइ वड्ढमाणु | तं चउदहरज्जुपरिप्पमाणु ।
तं फासवंतु तं वण्णवंतु | तं गंधवंतु तं रूववंतु ।
तं सद्दवंतु भासइ अणंतु | तं रसविसेससब्भाववंतु ।

11 १. A णरणाहु वि २ ST चोद्दहसु ३ ST हिंडइ. ४ A संवलउ ५ S जणि. ३. S अण्णु. ७, ST महद्दहि. ८, S मइगु
12, १ ST एक्कखंधु

सो खंधु भणिज्जइ णिरवसेसु   तस्सद्धउ जिण पभणंति देसु।
अद्धस्स वि अद्धउ पुणु पएसु   परमाणू अविहायउ असेसु।
तं पुग्गलु पेक्खिवि परिणवंतु   सच्चेयणभावें सच्चवंतु।
अवयासु लहंतु अलद्धठाणु   तं पिच्छिवि णहयलि गच्छमाणु।
भणु कारणु तं मइं दिट्ठु कज्जु   तं भणइ महामुणि मह्नु मणोज्जु।
णिसुणहि सुअवट्टणलक्खणालु   परिणामहो कारणु होइ कालु।
चेयण जीवहं कारणु कहंति   अवयासहो आयासु जि भणंति।
ठाणहो अहम्मु गमणहो वि धम्मु   गुरु भणइ मज्झु परिगलियछम्मु।
भावहं सव्वहं संघाउ लोउ   एयाहिं विवज्जिउ धुउ अलोउ।
घत्ता—जगि छाहहि कारणु उण्हणिवारणु आयवत्तु अहिणाणियउं॥
इय पयडउ सीसइ ज णउ दीसइ तिं कज्जि परियाणियउं॥ १२॥

13

दुवई—पुग्गलु सावयासु परिणामिउं अवरु वि चेयणालउ॥
आलोयंतु जाइ णहि ठाइवि दीसइ कज्जमेलउ॥ १॥
इह कारणेण विणु कज्जु णत्थि   करिमिहुणिं विणु कहिं हवइ हत्थि।
विणु पुग्गलेण कहिं गुणरसाइं   विणु जीविं कहिं चेयण विहाइ।
आयासिं विणु अवयासु लहहिं   कहिं पुग्गल जीव मुणिंद कहहि।
विणु कालें कहिं परिणवइ वत्थु   विणु धम्माहम्में कहिं पयत्थु।
गइठाणु वि लहइ महाणुभाव   एए लोयहं किर छह सहाव।
परिणवइ खंधु कालाउ भिण्णु   सज्जीउ होइ जीवाउ छिण्णु।
लइ धम्माहम्मु ण होइ जइ वि   गच्छइ अच्छइ सो चएवि तइ वि।
अण्णु वि णहि धाउ लहंतु कमइं   तिजगब्भंतरि भुवणयलि भमइं।
तहिं ठाइ ण जाइ अलोयथत्ति   जा तिल्लोक्कहो आधारसत्ति।
चलथिरलक्खणलक्खियविमुत्ति   सा जाणसु धम्माहम्मजुत्ति।

२ ST णियद्धठाउ; P notes णियद्धठाणु इति वा पाठः and this reading is given in A ३. ST चेयणाइं जीउ. ४. AP भावहं छभाय.

13. १. S अण्णु वि २. S णाहे; P णहु ३. ST वि आइ. ४. S and T omit this line; P gives it in second hand ५. S णच्छइ. ६. S वयासु. ७. S तयलोयहो.

परमेट्ठि पियामहु सच्चसंधु   पणवहु जिणवरु भव्वयणबंधु ।
भावइं छिंदइ व्व सव्वायरेण   मा खज्जहु मोहणिसायरेण ।

घत्ता—हड्डावलिविहियउ चम्मिं पिहियउ पूयगंधभीसावणउं ॥
माणुसहो कलेवरु चंडालहु घरु जिह तिह णिरु चिलिसावणउं ॥ १३ ॥

14

दुवई—चोक्खयरत्तपित्तमत्थिक्कंतावलिसुक्कसगमं ॥
रयईणीरखीरसंमद्दसमुब्भवकद्दमोवमं ॥ १ ॥

इय सत्तधाउविट्टलु णरंगु   कामिं दुहंति अंतरंगु ।
मणि वसइ कामु मज्जायमुक्कु   कोहु वि परबंधणहणणढुक्कु ।
दप्पुब्भडु माणु अतुट्ठि लोहु   मइरा इव मोहणसीलु मोहु ।
परवंचणयरु मायाकसाउ   सोउ वि कयहाहारवणिणाउ ।
कुलवललच्छीमयफुट्टणेत्तु   ण वि पेक्खइ विणु मलेण मत्तु ।
णेहेण णिबद्धु सलज्जभाउ   णेहु वि अणत्थपत्थराणिहाउ ।
जहिं णिद ण याणइ सहियहेउ   तण्हइ मग्गइ पाणिउ अपेउ ।
णिहुहिवि लेइ णीसेस देहु   छुह पइसारइ चंडालगेहु ।
रमणीरूवेसु रमंति चक्खु   जीहा वि समीहइ मिट्ठु भक्खु ।
घाणु वि सुहगंधहो जाइ झत्ति   फासु वि मिउसयणहो करइ थत्ति ।
लहु धावइ गेयहो कण्णजुयलु   मणु पुणु वणमक्कडु जेम चवलु ।
अणुदिणु मुहि पइसइ अलियवाणि   हिंसाकम्महो उवगरणु पाणि ।
पयजुयलु वि पावपहाणुकूलु   कइ करइ कइत्तणु रायमूलु ।
पंडित्तु कुतक्कपलावभासि   सुहडत्तणु जाणहु दुरियरासि ।

घत्ता—अण्णाणु सिसुत्तणु णवजोव्वणु पुणु हिंडइ पियविरहिं सुसिउ ॥
वुड्ढत्तु करालहो णियडउ कालहो मरणब्भसणसमूससिउ ॥ १४ ॥

---

८. A छद व्व.

14. १ A विरइय २. A वंचण ३. ST जढ णिद ४ ST तत्ति.

15

दुवई—कंचुइ कामभोयमणिभूसणणिवसणमइविहूइया ॥
रोयकयंतभिच्च मउलियमुह मुच्छामरणदूइया ॥ १ ॥

मिच्छत्तकसायासंजमेण आसवइ कम्मु करणुब्भवेण ।
सम्मत्ति जीवदयागमेण इंदियरइसंगविणिग्गमेण ।
किज्जइ संवरु मुणिपुंगवेहिं दढवयभावणविरइयसमेहिं ।
णिज्जर पुणु वारहविहतवेण जायं णिव्वेयं णवणवेण ।
अइसमवहेण अइदुसहेण अइमद्दवेण अइअज्जवेण ।
अइसच्चएण सुसउच्चएण परिचत्तपरिग्गहसंगहेण ।
संभवइ धम्मु धंभव्वएण अजेव्वउ भावें भव्वएण ।
मग्गिज्जइ हयजरमरणवाहि जिणगुणसंपत्ति समाहि वोहि ।
मा णिग्गइ लहुं मुणिदिक्ख ताम अंगाइं समत्थइं होंति जाम ।
ता अम्हहिं लइयउ खुल्लयत्तु चत्तउ परिहणु आहरणु वित्तु ।
पंगुत्तउ पंडुरचीरखंडु मणु मुंडिवि पुणु मुंडियउ मुंडु ।
कोवीणु कमंडलु भिक्खपत्तु लइयउ वउ भवजलजाणवत्तु ।

घत्ता—जायउ संजइयउ णिज्जियमइयउ राणियाउ जसवइपियउ ॥
कयसुरणरसेविं गुरुणा देविं पुरकंतियहे समप्पियउ ॥ १५ ॥

16

दुवई—जिणतवचरणकरणपरिणयमणविणिहयमारमारिहिं ॥
तणुघुलियाहिरायजंहादलविलिहियवम्मवारिहिं ॥ १ ॥

परिदुस्सहणिद्दाणिट्टिएहिं कडयडियसंधिवंधट्ठिएहिं ।
उरपुट्ठिवंसहट्टब्भडेहिं सुविसमपासुलियापायडेहिं ।
कयघोरवीरतवतत्तएहिं जगजीवभयंकररूवएहिं ।

15. १. ST मय २. ST संचएण ३. ST लहु. ४. A पुरु कंतियहे.

16. १. ST उवरट्टि; A उरपिट्ठि.

हेमंतणिसांहयणेहएहिं हिमपडलपंडावियदेहएहिं ।
विसहियपाउसजलझलिरेहिं गिंभम्मि सहियरावियरझलेहिं ।
अट्ठविहफाससमभाविरेहिं सग्गापवग्गपहदाविरेहिं ।
हयसल्लिहिं णिज्जियवम्महेहिं तासियविद्धंसियमयगहेहिं ।
माणावमाणसमभावएहिं झाणासिएहिं तणुतावएहिं ।
धणुदंडमडयसिज्जासिएहिं कंदरमसाणगुहवासिएहिं ।
गोसुंडियगोदुहआसणेहिं दिणपक्खमासकयपारणेहिं ।
दीहररोमावलिभासुरेहिं मुतिमुंडधरेहिं जडाधरेहिं ।
जल्लमलविलित्तसरीरएहिं मेहणिमंदरागिरिधीरएहिं ।
रुद्दट्टझाणणिग्गयमईहिं सहुं महि भमंतु णिम्मलजईहिं ।
इत्थाइउ जइवइ अप्पमत्तु अम्हारउ गुरु णामिं सुदत्तु ।
अवहत्थियपत्थिवसंपयाइं तिं सत्थि अम्हि समागयाइं ।
वंदेप्पिणु गुरुपयपंकयाइं भिक्खाणिमित्तु छुडु णिग्गयाइं ।

घत्ता—ता पंथि चरंतइं जिणु सुमरंतइं किंकरेहिं संदाणियइं ॥
विण्णि वि खुहचरियइं करयलि धरियइं पउ देविघरु आणियइं ॥ १६ ॥

17

दुवई—आणिवि दंसियाइं तुह मेहिवइ पइं वइयरु पपुच्छिउ ॥
मइं तुह कहिउ एवं भवकद्दमि हउं हिंडंतु अच्छिउ ॥ १ ॥

इमं सव्वमायण्णिउं चंडमारी पहू मारिदत्तो वि जीवावहारी ।
विसण्णाइं चित्ते विरत्ताइं पावे विलग्गाइं धम्मे पराइण्णतावे ।
पबुद्धाइं दूरं वरं दोवि णाणं विचित्तं तिलोए पवित्तं पहाणं ।
सिसूणं जुयं णिम्मलं पुज्जणिज्जं ससीसच्छचूडामणीवंदणिज्जं ।
इमं चिंतिऊणं वसातुप्पगिल्लं रसोल्लं दिसाजंतकीलालरेल्लं ।

---

२ ST हेमंतणिसासु अणेहएहिं ३ ST पछाइय ४. ST पाउसजलझल झलेहि, A पाउसझलझलेहिं. ५ ST गहिय ६ ST गयसुडा, A गयसुंड. ७ ST णिम्ममजईहि.

17 १. A णरवइ. २. A एउ ३ ST कीलालरेज्जं

सहइं समुंडं सतुंडं सखंडं णिहित्तूण भूमीयले मज्झखंडं ।
घरं णिम्मियं णीलमाणिक्कबद्धं पखित्तं च मुत्ताहलोलीसणिद्धं ।
वणं विल्लिकंकेल्लिफुल्लुच्छलंतं दलारत्तसाहारसाहालललंतं ।
णहालग्गहिंतालतालीतमालं इलाजंतलीलामरालीमरालं ।
लयोमंडवोइण्णजक्खिंदडिंभं सिलासीणसीमंतिणीगीयसद्दं ।
सरुप्फुल्लकंदोट्टरुंटंतभिंगं मरुद्धूयतिंगिच्छविच्छिड्डपिंगं ।
णहुब्भंतपुंकोइलारावरम्मं छुहापंडुरुब्भूयदीसंतहम्मं ।
ससत्तीइ भत्तीइ णाणागुणाए सउज्जाणमज्झे सवेउव्वणाए ।
ठवेऊण णाऊण णेउं महंतं मईदासणे खुल्लयाणं जुयं तं ।
पणट्ठुग्गवेसं जणाणंदभूयं पुणो चक्खुगम्मं पघेत्तूण रूवं ।
महावच्छवण्णं पसण्णं रवण्णं सुवण्णग्घवंतं सपुप्फंभपुण्णं ।
घरा णिग्गया देवया सोमभावा सपायंतघोलंतकंचीकलावा ।
असामण्णलायण्णसोहग्गसारा विलंबंतहारावलीतेयतारा ।
सयारूढणिव्वूढसिंगारभारा तुलाकोडिझंकारणच्चंतमोरा ।
घणापीणतुंगत्थणी मज्झखीणा जिणुत्तस्स गंथस्स पंथम्मि लीणा ।
दयालोइयासेसचंदीमयाए खमेऊण सामीचयं देवयाए ।

घत्ता—खुड्डयगुरुपायहं णहसुच्छायहं णियसीसत्तु समिच्छियउ ॥
जलकमलकरंबिउ महुयरचुंबिउ अग्घवत्तु पल्हत्थियउ ॥ १७ ॥

18

दुवई—कारिमकुक्कुडेण णिहएण वि तुहुं भमिओ सि दुब्भवे ॥
कउलइं जीवरासि भक्खंति वि ण्हंति वि लोहियण्णवे ॥ १ ॥

अणुकंपइ भासइ सुरपुरंधि अयमेसमहिसहयकंठसंधि ।
हउं पावयम्म पावेण जाम ण वि खज्जमि तुहं परिताहि ताम ।
दे देहि देव तउ तिव्वु चरामि हिंसादुक्किउ णीसेसु हरामि ।

४ ST मुत्ताहलाली. ५. ST लयामंटवाइण्ण ६ AP रुंद. ७ AP णहुब्भंतयं कोइलारावरम्मं. ८. ST ससत्तीइ सत्तीइ ९. ST घणुत्तुंगपीणत्थणी; A घणातुंगपीणत्थणी.

ता भणइ अभयरुइ पिहुलरमणि पाडलपेल्लय गयमंदगमणि ।
सुरकामिणि सुणु उववायएसु कमवड्ढियकम्म[1]विवायएसु ।
णिम्मंसचम्मरोमट्ठिएसु णिप्पइयधाउतणुरुहरएसु ।
सहजायमउडकुंडलधरेसु मंदारकुसुमरयपरिमलेसु ।
वउ फासरूवरवकयरएसु मणपडियारप्पडियारएसु ।
बहुधणकारिक्कणरमाणएसु उवरुवरिपवड्ढियमा[2]रएसु ।
दससहसवरिसपल्लाउएसु सायरसमेसु चिर[3]जीविएसु ।
तुह एक्कहि णउ तउ णत्थि एसु वासट्ठिविहेसु वि सुरवरेसु ।

घत्ता—इलजलसिहिवायहं तणतरुकायहं संसारइ आहिंडियहं ॥
संठियचउपाणहं णिरु णिण्णाणहं णत्थि दिक्ख एइंदियहं ॥ १८ ॥

19

दुवई—खुम्भयसंखगोहिं[1]भमराइसु विमलेसु वि महावले ॥
णत्थि तओ [2]असण्णिसण्णीण तिरिक्खेसु वि सुकुंतले ॥ १ ॥

णरजम्मइ परवंचणपरेसु तुलकूडमाणकूडायरेसु ।
ववहारकूडसक्खीयरेसु पसुमारणेसु मायामएसु ।
जाएसु अम्मि बहुविहमएसु परियंचियरयणप्पहथलेसु ।
उर[3]चूरएसु माणियाविलेसु [4]अहिअजयरविसममहोरएसु ।
सरडुंदुरसेहाणउलएसु एक्कखुरवेक्खुरकुंजरेसु ।
मंडलचरणेसु चउप्पएसु ओलंघियणइजलणिहिजलेसु ।
कच्छवमच्छाइसु चंचलेसु तउ णत्थि संखदीवाइएसु ।
णाणाविहचंचूजीविएसु थीबालवुड्ढरिसिमारएसु ।
परललणालालसजारएसु महुमज्जमंसरसलंपडेसु ।
अणवरयकोवविहडप्फडेसु माणवभावि णिंदियजिणवरेसु ।

18. १ AST पुण्ण. २. S णाणएसु, A माणएसु ३. ST थिर.

19 १ A गोमि २ AST असण्णिपचक्खतिरिक्खेसु ३ ST उरभुययरेसु ४. ST अजयरविसाविसम
५ S मणमहियलतणुअसुरासुहेसु

माणियधम्माइवसुंधरेसु　　　मणतणयसुहासुहआयरेसु ।
अण्णुण्णघायसयजज्जरेसु　　　भयधणुतिरयणे छंगुलमिएसु ।
पुणु दूणदूणदेहुण्णएसु ।

घत्ता—संगहियाहारइ धरणिविहारइ पसरहो होंतु अणंतु दुहु ॥
परमाणुयमेलणु णयणणिमीलणु कालु वि जेत्थु ण अत्थि सुहु ॥ १९ ॥

20

दुवई—गत्तं खंडिऊण घित्तं पि हु लग्गइ पहरवेवियं ॥
असिछिण्णेसु सूलभिण्णेसु वि णिवसइ जासु जीवियं ॥ १ ॥

सत्ताहोभूमिकयायरेसु　　　चउरासीलक्खविलोयरेसु ।
परजम्मवइरयलवुज्झिरेसु　　　अंगरुहमहाउहजुज्झिरेसु ।
णिच्चंकमेक्कसंघारएसु　　　तउ णत्थि सत्तविहणारएसु ।
चिरभवफयसंजयभोयणेसु　　　ससहरमुहि सुहआलोयणेसु ।
जाणियसुरतरुफलसाइएसु　　　दुतिपल्लपक्कबद्धाउसेसु ।
तउ णत्थि भद्दि कीलाविसेसु　　　वरतीसभोयभूमाणुसेसु ।
उच्छालियपुण्णदवीकएसु　　　उव्वरियपुण्णदेवीरएसु ।
अण्णेसु वि मुणि मिच्छामएसु　　　पत्तेसु आसि तावसतवेसु ।
चिरइयकुपत्तदाणुब्भवेसु　　　विवरीयकण्णमुहपल्लवेसु ।
छण्णवइकुभोयधराणरेसु　　　वसुसमसयपण्णासुत्तरेसु ।
तउ णत्थि मेच्छखंडंतरेसु ।
जंबूदीवइ पुणु धाईदीवि　　　पुक्खरवरद्धिद्दीवंतजीवि ।
सत्तर सयगणियइं मुणि कहंति　　　इय अज्जमहिहि खंडाइं होंति ।

घत्ता—जो तेसु हवेप्पिणु गुरु पणवेप्पिणु लेइ धम्मु कवडेण विणु ॥
तउ करइ अगाविं अकुडिलभाविं पंचिंदियसुहु गणिवि तिणु ॥ २० ॥

५. S मणमहियलतणुअसुरासुहेसु

20. १. ST वइरि. २. S साउएसु. ३ S कीलालएसु ४. S भत्तेसु. ५. A धाइखंडि ६ A दीवतमंडि.

21

दुवई—दंसणणाणचरियरयणत्तयपरमाराहणाफलं ॥
सो दियहेहिं लहइ मणिपुंगउ केवलणाण[1] पविमलं ॥ १ ॥

सम्मत्तु होइ सुरणारयासु तवचरणु ण जम्मि वि ठाइ तेसु ।
अणुवयइं कहिं मि तिरियहं हवंति णर पंचमहव्वयभरु वहंति ।
तं णिसुणिवि णिहयणियावयाइ सम्मत्तु लइउ वणदेवयाइ ।
पुणु पुच्छिउ गुरु महुरइ गिराइ चरणारविंदपणवियसिराइ ।
चउगइ पायालगईरउद्दि दुत्तारघोरभवजलसमुद्दि ।
णिवडंतहि पइं महु दिण्णु हत्थु तुहुं देउ को वि पवयणसमत्थु ।
तुहुं मज्झु सामि हउं तुज्झु दासि भणु किं दिज्जइ गुणरयणरासि ।
ता मेहविजयदुंदुहिसरेण पडिबोल्लिउ देसजईसरेण ।
णिव्वणि मच्छियउ ण भिणिहिणंति णिम्मोहहदिण्णदाणइं ण लिंति ।
ता देविइ जंपिउ साहु साहु पुणु[2] पुणु पणविवि भावेण साहु ।
संभासिवि महिवइ पसुहुं घाउ मा दिज्जसु होज्जसु सोमभाउ ।
वणि उववणि चच्चरि एत्थु गेहि बहु छिंदिय भिंदिय पाणि देहि ।
सहजाइं बहुय[3] कित्तिमकियाइं परिहिमि पाणइं पाणप्पियाइं ।
महु उद्देसिवि जो देइ को वि सकुडुंबउ हउं खउ णेमि सो वि ।
इय भणिवि मणोहर तियसपत्ति अ[4]इंसणहूई गय सथत्ति ।

घत्ता—ता मउलियलोयणु णिंदियणियगुणु हियइ सुद्धबुद्धिहि चाडिउ ॥
दिग्गयवरगामिहि खुड्डयसामिहि मारिदत्तु पायहिं पडिउ ॥ २१ ॥

22

दुवई—भणइ महीमहंत परमेसर कित्तिमचूलिमारणं ॥
काउं तं भवेसु भमिऊण दुहं पत्तो सि दारुणं ॥ १ ॥

21. १. ST केवलणाणमविचलं. २. ST पुणु पणवेवि सब्भावेण साहु. ३ ST अहव कित्तिमइं जाइं. ४ ST णिइंसणहूई.

मइं पुणु जीवउलइं जाइं जाइं णिहयइं को लक्खइ ताइं ताइं।
हउं णिवडीसमि रउरवतमालि णारयगणहणहणरवबमालि।
दे देहि देव पावहो णिवित्ति अवलंबमि मणि णिग्गंथवित्ति।
भववासपासवेढणचुएण ता भासिउ कुसुमावलिसुएण।
आवेहु जाह जिणणाहसिक्ख गुरु देइ महारहु तुज्झु दिक्ख।
वयणेण तेण विंभियउ राउ आणंदु मणोहरु तासु जाउ।
हउं जणि महग्घु णरवंदणिज्जु सामंतमंतिमंडलियपुज्जु।
मज्झु वि सुपुज्ज कुलदेवि आसि सा संजाया खुल्लहहो दासि।
खुल्लयहो वि जइ गुरु अत्थि अवरु तववंतहं जागि माहप्पु पवरु।
जाणिवि संबोहिउ मारियत्तु एत्थंतरि आयउ गुरु सुदत्तु।
अवहीसरु सुरणरवंदणिज्जु णिज्जियमयारि तिल्लोकपुज्जु।
हयमोहु महामइ गुणसमिद्धु सत्तहिं मि पवररिद्धीहिं रिद्धु।
जज्जरिउ जेण वहुभेयकम्मु तवि संठिउ दसविहु णाइ धम्मु।
इल लाइवि जाणुयसिरभुएण गुरु वंदिउ कुसुमावलिसुएण।
राएण वि तहो पयपंकयाइं णंवियइं उम्मूलियभवसयाइं।

घत्ता—ता जगपरमेसरु संघाहउ गुरु धम्माविद्धि सुपयच्छिय॥
संतुट्ठमणेणं तेण णिवेणं णियसीसत्त समिच्छिय॥ २२॥

23

पुच्छइ मारियत्तु हरिसं गउ कहहि देव णियभवणमियं गउ।
गोवद्धणसिट्ठीहिं भवंतर महु भवाइं जं जेम णिरंतर।
जोईसहु भइरवहु चिराणउं चंडमारिदेविहि सुपहाणउं।

22. १. ST को लक्खिवि सक्कइ तित्तियाइ २. ST णिवडिहीमि ३ ST ताहि वि खुड्डउ गुणरयणरासि ४ S and T have after this line' वंदियइं सुरासुरपुज्जियाइं। तहु पायमूलि पणमियसिरेण पावज्ज लइय राएण तेण. ५. Portion beginning with this line and ending with कडवक 30 line 15 is omitted in S and T. ६. A तहिं अवसरि गुरुणा गुणगणगुरुणा धम्मविद्धि सुपयच्छिय

23. १. Both A and P omit the दुवई from this कडवक onwards, but P gives in second hand the following as दुवई:—आसियवाउ पडिच्छिय राएं तह मणि आणंदकित्ति णं (?)। गुरुएवउ मुणिवि को दीसइ मुहु मणसंसउहेडणं॥

णिवइजसोहहो जल[2]परिपुण्णहो चंदसिरीहि चंदमइ अण्णहो ।
जसहररायहो अवगुणभरियहि अभयमहापविहि अइचरियहि ।
जसवइणामहो [3]लच्छिसहायहो कुसुमावलिहि सुमंडियकायहो ।
माहिंदहो तुरयहो पुणु खुज्जहो [4]पयहं कह पयडेहि अणुज्जहो ।
अवहीसरु जंपइ सुपसिद्धउ अत्थि देसु गंधव्वु सुरिद्धउ ।
सालिछेत्तकणभरपूरियघरु पक्ककलमझंकारमहुरसरु ।
गंधजुत्तु गंधगिरि भणिज्जइ अइउत्तुंगु सिहरु तहो छज्जइ ।
गंधव्वायदणहिं परिसोहिउ गंधहरिणभसलेहिं णिरोहिउ ।
तहो सयासि घरसिरिअवरुंडिउ पुरु गंधव्वु धम्मधणमंडिउ ।
णिवसइ तहिं णिवमग्गसयाणिउ णिउ वइधव्वु णाम असमाणउ ।
चायभोयभोयंकियविग्गहु परदलवल[5]चट्टणु कयविग्गहु ।
तहो विंझसिरि भज्ज कलकोइल पइवय सच्चसील णावइ इल ।
आयए जणिउ थणद्धउ केहउ रूवें जो मयरद्धय जेहउ ।
मयरद्धयहो रूउ किं किज्जइ पयडु ण दीसइ उप्पम दिज्जइ ।
इहु गंधव्वसेणु जाणिज्जइ सयलहिं लोयहिं थुत्ति थुणिज्जइ ।
रायहो घरि कोमलतणुअंगी पुत्ति रूवलक्खण[6]रुइचंगी ।
ताहि णामु गंधव्वसिरी सिय अइलडहंग अंग विहिणा कय ।

घत्ता—णिय[7]पुत्तसमाणु पविहियमाणु सज्जणकमलदिणेसरु ॥
दुज्जणगयसीहु दीहरजीहु भुंजइ रज्जु णरेसरु ॥ २३ ॥

24

तहो रायहो मंतणइ महल्लउ मंति रामु मंतेण अभुल्लउ ।
चंदलेहभज्जाइ अलंकिउ दोसुज्झिउ गयदप्पु असंकिउ ।
पुत्तुप्पण्णु रूवगुणभायणु जिणियसत्तु जियसत्तु परायणु ।
हुयउ कणिट्ठउ भीमु सहोयरु भीसावणु भीमु व्व अहोयरु ।
णरवइणा किउ पुत्तिहि कारणि बद्धमंचदिप्पंतइ तोरणि ।

२ A गुणपरिपुण्णहो. ३ A लच्छिहसणाहो ४ A आयहं. ५ A अरिवलदलवट्टणु, P अरिदलदलवट्टणु. ६ A गुणचंगी ७ A पियपुत्त

जाउ सयंवरमंडवि मेलउ रायउत्त साहरण सचेलउ।
ताहिं गंधव्वलच्छि पइसारिय पुप्फमाल करि कयसंचारिय।
ताइ माल जियसत्तुहि उप्परि घल्लिय पुव्वसिणेहिं चप्परि।
उच्छउ संखतूरभेरीसर कयउ विवाहु तुट्ठणारीणर।
मंतिणिहेलणि कंत सइत्तिय थिय गंधव्वलच्छि जुइजुत्तिय।
एत्थंतरि पारद्धि महीवइ गउ वणि दिट्ठउ तेत्थु मिगीवई।
किउ संधाणु गहेवि सरासणु मुक्कु बाणु परपाणविणासणु।
अंतरि हुइय हरिणि मिगु णट्ठउ भज्जिवि गयउ दूरि भयतट्ठउ।
विद्ध कुरंगी तेण गुरुंकि पडिय धराणि लुअ पाणपिसंकि।
पारद्धियहिं खधि उच्चाइय वलिवि ताम हरिणेण पलोइय।
आरडंतु मिगु संमुहु धायउ भुल्लउ कंदइ कलुणु वरायउ।
दिसि दिसि भमइ सकंत णिहालइ मोहिं बद्धउ भज्ज ण भालइ।
मोहंधु वि ण किं पि चिंतइ मणि चिंतइ सा पिय खणि खणि पुणु मणि।
पम रडंतु दिट्ठु वइधव्वें करुणारसपूरेण अगव्वें।
हुयउ विसायघत्थु हउ लुद्धउ हउं इंदियरसलंपड मुद्धउ।
घत्तिउ कालु ण किं पि वियाणिउं कयउ अहम्मु विसयसुहुं माणिउं।
संवेयाउरु णियमणि झूरइ दिक्ख लेमि किं रज्जि पूरइ।
संसारासारत्तु मुणेविणु लइय दिक्ख वइराउ करेप्पिणु।
राय दोस विण्णि वि संदाणिय तिव्वतवेण काय अवमाणिय।
सो वइधव्वु दियंबरु जायउ पत्तहिं तासु पुत्तु गुणराइउ।
रज्जि वइट्ठु महारिउमद्दणु हुउ गंधव्वसेणु घणसंदणु।
रायरिद्धि पिउपट्टि णिसण्णउ हयगयरहवरपयपरिपुण्णउ।
विंझसिरी हुय भासोवासिणि भयवंतायमभावपयासिणि।

घत्ता—इक्कइया तेण गंधव्वेण णियखंधारहिं जुत्तउ ॥
कयजत्तपवित्ताणिम्मलाचित्तापिउरिसिपासि पहुत्तउ ॥ २४ ॥

24 १. A हुयउ. २. A तेण. ३. P omits this line ४. A इक्कइया सो वि गंधव्वो वि.

25

संणासि परिट्ठिउ दिट्ठु साहु पुत्तहो खंधारु णिएवि साहु ।
रिसिवयहो पहावें होइ सिद्धि ता होउ मज्झु परिसिय रिद्धि ।
तुसकंडखंडु संगहिउ तेण रयणोहु पमेल्लिउ णिग्गुणेण ।
मरिऊण तेत्थु उज्जेणि पत्तु जसबंधुररायहो हुयउ पुत्तु ।
णामें जसोहु जसपूरियासु णिवपट्टु णिबद्धउ भालि तासु ।
जा विज्झसिरी भयवंतपाय आराहिवि सोसिवि णिययकाय ।
कयण्हाण मरेविणु तत्थ आय अजियंगरायघरि पुत्ति जाय ।
चंदमइ णाम अइमंदमेह परिणिय जसोहुराएं सुणेह ।
तहो पुत्तुप्पण्णउ जसहरक्खु परिवारहो पोसणु कप्पविक्खु ।
जसहरहो रज्जु देविणु जसोहु किउ तउ बारसविहु चइवि मोहु ।
संणासु कियउ सुसमाहिजुत्तु बंभोत्तरसग्गि जसोहु पत्तु ।
जा णिवसुय थिय मंतीहि सुण्ह सा देवरत्तिय सुरयतण्ह ।
रइविमल चप्परि रयइ जाम णियदइएं दिट्ठिय दुट्ठ ताम ।
पिक्खेवि विरत्तउ णारिसंगि गउ णिज्जणवणि अइवरह संगि ।
जिणदिक्ख लेवि जायउ णिसंगु तवचरणु चरइ जियसत्तु चंगु ।
चारित्तु चरिवि चिरु छड्डि काउ चंदमइहि गब्भि जियारि जाउ ।
हुउ जसहरु राउ जसोहतणउ जणणिए जंपिउ जिं कियउ अणउ ।
णिवसुयविलसिउ सुणि रामु मंति वउ बंभचेरु किउ णिसुणि कंति ।
किं किउं[1] कुकम्मु सुण्हाइ केम ता चंदलेह वउ गहइ तेम ।
बंभव्वएण दिढ मरिवि ते वि विज्जाहरगिरिउप्पण्ण वे वि ।
गंधव्वलच्छि कुविसिट्ठकम्मु आयण्णिवि णिंदिवि तियहं जम्मु ।
गंधव्वसेणु गिण्हेवि दिक्ख जिणमग्गहो केरी परमसिक्ख ।
अणसणु णिव्वाहिवि किउ णियाणु तुहुं मारिदत्त सो अप्पु जाणु ।

घत्ता—णिसुणहि हो राय अण्णु कहंतरु जणं[2]भरिय ॥
मिहिलाउरि रम्म धणकणकणयसमावरिय ॥ २५ ॥

25. १. A किं कियउ कम्मु. २ A गुणभरिय.

26

तहिं सेट्ठि अत्थि जिणपायभत्तु सम्मत्तरयणवयसीलजुत्तु ।
वयदाणकज्जि सावउ सुदच्छु जिणयत्तु णाम वणि दीहरच्छु ।
जलु गाहंतउ सो अस्सरयणु महिसेण हयउ संपत्तु मरणु ।
तहो सेट्ठिहि सुरहीगब्भि जाउ हुउ वच्छउ दिट्ठु संपुण्णकाउ ।
अण्णहिं दिणि मरणावत्थपत्तु वणिणा तहो कण्णि जवेइ मंतु ।
अरुहक्खराइं भावेण तेण णिण्हिय भवभयसमसंतएण ।
तत्थाउ राय तुव कंत उअरि संभवियउ रुप्पिणिगब्भि पवरि ।
होसइ घरवँलइ पयावधारि रिउमद्दणु कुलसंतोसयारि ।
जो भीमु मंतिसुउ दुव्विणीउ सो खुज्जउ हुउ पाविट्ठु कीउ ।
गंधव्वसिरी अइकुडिलचित्त किसु कियउ काउ संखीणगत्त ।
होएविणु पेट्टु धरेवि सज्ज अमयमइ णाम सा खल अलज्ज ।
राएण विमलवाहणिण दिण्ण जसहरु परिणाविउ पावकण्ण ।
जसु वइयरु णिसुणिउ मारिदत्त अभयरुइमुहाहिंतो सुवत्त ।
खयरायलि जो गउ रामु मंति ससिलेहासमउ दिणिंदकंति ।
अणुवय परिपालिवि बंभचेरु केण वि सुहधम्मोदएण वीरु ।
सो जसवइ णियकुलकमलभाणु जसहरहो पुत्तु जससेयभाणु ।
जा चंदलेह चिरु खयरकुले सा हुय कुसुमावलि विज्जविउले ।
सहउयरि उवण्णी तुज्झु राय णउ चुक्कइ बुज्झहि मज्झु वाय ।
घत्ता—सुहडाहिं परिरक्खिउ जाम णिरिक्खिउ रायतुरउ खरखुरचवलु ॥
रोसाइद्धेणं माहिंदेणं मारिउ सो पीयंतु जलु ॥ २६ ॥

27

किं कारणु जंपहि गुणसायर महु मणसंसउ हरहि दयावर ।
कियउ कुपत्तदाणु अण्णहिं भवि खीणु करेवि काउ तावसतवि ।
मरिवि जसोहहो पत्ति गुणग्गल हुई चंदलच्छि चंदुज्जल ।

26. १. A गुणगणविसालु सम्मत्तरयणपालणु गुणालु. २. A वयदाण ३. A वणिवइ ४. A घरवलय. ५. A गुज्जण. ६. A पावकिण्ण. ७ A अभयमइसुहहो जा सुय सवत्त.

27. १. A महु मणसंसउहरणदिवायर.

चंदमईहि सवत्तिविरोहउ धरिवि चित्ति धा[2]इउ सो णिव हउ।
पुव्ववइरवसु जीवहं धावइ रोसाणलु हुइ तं जइ पावइ।
वच्छउ हुयउ सेट्ठिघरि हरिवइ काणिण जाउ लद्धउ कियसुहमइ।
संपइ तुह भज्जहि उरि अच्छइ रज्जु करेसइ घर तुं[3]ह पच्छइ।
चिरु रायउरि राउं[4] पयपालउ भयवइ पयजलेण पक्खालिउ।
चित्तंगउ णामेण महाबलु छड्डि रज्जु तुह दिण्णु महीयलु।
अप्पुणु भगव दिक्ख पडिगाहिय सरिसरवरातित्थइं अवगाहिय।
धराणि भमंतु भमंतु परायउ णियपुरवरि देविंहि मढि आयउ।
तहिं ठिउ तवइ सचित्तइ वंछइ होउ मज्झु इच्छेवयसंपइ।
वंछिउ लद्धु मरेवि गुरुक्कउ चंडमारि देवय हुइ थक्कउ।
पुल्लिंगाउ फिरिवि तियालिंगउ वप्पु तुम्हइ हुउ असुहवसंगउ।
जणणी तुज्झ सरूव सुलक्खण चित्तसेण णामेण वियक्खण।
उवसमगुणु परिपालिवि सुहरउ पाण चएवि जाउ सो भद्दरउ।
दंडपणामु जासु पइं विहियउ अच्छइ णेहिं जो माहिमाहियउ।
करुणारस पूरिवि णियविग्गहु कप्पणिवासी देउ होसइ इहु।
उज्जेणिहि णयरिहि जसवंधुरु राउ पसिद्धउ उण्णयकंधरु।
छद्दंसणभत्तउ मढ देउल अड दीहिय पोक्खरि पविउल[5]जल।
महियालहो आयदणु मणोहरु रयणजडिउ दिप्पंतउ सेहरु।
सरसाहारहिं पीणिवि तावस भयवजईसरबहुणिट्ठावस।
जिणचेईहर धयमंडियसिर उण्णइवंत सवित्थर अइथिर।
कारावेप्पिणु दाणु पयच्छिवि मिच्छभाउ भावेण समिच्छिवि।
वणकीलाबहुभोउ करेप्पिणु दीहु कालु णियर[6]उ भुंजेप्पिणु।
सुहभावणजुत्तीइ मरेप्पिणु इट्ठदेउ णिय[7]हियइ धरेप्पिणु।
मयगयपउरु कालिंगाहिउ णिउ सयदत्तहो रायहो हउं सुउ।
णा[8]म सुदत्तु रायसिरिमंडिउ करमि रज्जु रिउवलहिं अखंडिउ।
इक्कहिया कुसुमालु गहेप्पिणु तलवरेहिं दिढु दिउ वंधेप्पिणु।
महु जाणाविउ किं णिव किज्जइ कारागारिं तरसा णिज्जइ।

२. A धाइउ णिव हउ ३. A तुव. ४. A राय ५. A जलपविउल. ६ A णियपउ. ७ A णियमणि झाएप्पिणु. ८. A णासु.

तहिं दियवर जे दंड पउंजहिं ते व लेवि महु पुरउ पयंपहिं ।
आयहो कण्णणासकरछेयणु चलणच्छेउ किज्जइ सिरछेयणु ।
पहु सदोसउ पइ मारिज्जइ कस्स पाउ मइं वुत्तु ण किज्जइ ।
पाउ तुज्झ जइ इहु मारिज्जइ छड्डिज्जइ णिवयहु तुव जुज्जइ ।
एम सुणेविणु चित्तु विरत्तउ जुण्णतणु व्व रज्जु परिचत्तउ ।
जिणसिक्खा सीयरिवि भमंतउ पंचवार तुव पुरि संपत्तउ ।

घत्ता—एवहिं हउं एत्थु चउविहसंघसमावरिउ ॥
तउ तिव्वु तवंतु तणकंचणु सम मित्तु रिउ ॥ २७ ॥

28

उज्जेणिहि रायजसोहमंति गुणसिंधु जणविहियसंति ।
णियपइ ठवेवि सुउ णागदत्तु घरभारवहणु पिउपायभत्तु ।
अप्पुणु घरि संठिउ दंदचत्तु समभावणविरइयभावजुत्तु ।
सुहपरिणामिं तहिं चइवि काउ सिरिवइवणिवइघरि पुत्तु जाउ ।
णामिं गोवद्धणु गुणविसालु सम्मत्तवंतु दिप्पंतभालु ।
करुणायरु परमपरोपयारि जसवइरायहो संबोहयारि ।
अवलोयहि णिवइ णिसण्णु एहु महु संघाडइ तवलच्छिगेहु ।
णिसुणेवि भवाइं सयलइं णरिंदु आणंदसोयपूरियउ णंदु ।
ण तरामि हउं विणउ करेवि साहु संबोहिउ पहु किउ धम्मलाहु ।
सुपसण्णु होवि महु देहि दिक्ख तवचरणु चरामि पालेमि सिक्ख।
ता गुरुणा दिण्णु दियंवरत्तु थिउ मारिदत्तु णिवरिद्धिचत्तु ।
ता णरवइ णेयणिज्जियकसाय पणतीसणिवइ णिग्गंथ जाय ।
भूसिउ दिक्खाइ पलोइ राउ जोईसरासु वइराउ जाउ ।
भइरउ पभणइ भो सामिसाल दिक्खापसाउ करि गुणविसाल ।
मुणि जंपइ दिक्ख ण तुज्झु अत्थि छंगुलउ जेण तुहुं अत्थि हत्थि ।

28. १. A णिय २. P adds after this in second hand in the damagad margin: दहलक्खण-धम्मु चिंतजि ... .सचारु . ...यभाव .... य. Tho Hindi translation of this line, however, is not found. Seo page 300, lines 12-14 of the translation

कइं करमि देव तो भणइ साहु अणसण परिपालहि करिवि गाहु।
थोआउसु दीसइ तुज्झु देहि सिग्घउ उवाउ भल्लउ करेहि।
ता तेण कियउ संणासु भव्वु बावीस दिवस पालेवि सव्वु।
चउविहआहारहि चत्तु काउ सो मइरउ तीयइ सग्गि जाउ।
अभयण पमेल्लिउ खुल्लयत्तु ताहिं तक्खणि पडिवण्णउ रिसित्तु।
मयरद्धयझाणपहायरुद्धु णिवकण्णहि पुणु थणवट्ट बद्धु।
अभयमइ जाय विरत्तभाव कुसुमावलि अज्जिय सुद्धभाव।
तहि पायमूलि खुल्लियहि वित्तु छड्डेवि घित्तु अज्जियचरित्तु।
णिग्गंथमग्गु णिम्मलु सरेवि अभयरुइ जइहि गुणगणु सरेवि।
गय दोण्णि वि तहिं देवीवणम्मि चउविहआराहण धरि मणम्मि।
आराहिवि दंसणु णाणु चरिउ तउ बारहविहु अवहरियदुरिउ।
पंचदसदिणाइं संणासु करिवि सुसमाहिए दोण्णि वि पाण चइवि।
ईसाणसग्गि ते दोण्णि देव उप्पण्ण झत्ति सुरसयहिं सेव।
सम्मत्तवलिं तियलिंगु छिण्णि कीलहिं विमाणि सुर तेत्थु दोण्णि।
वंदहिं जिणभवण अकिट्टिमाइं पडिमामंडियइं जगुत्तमाइं।
सम्मत्ति लब्भइ सग्गु मोक्खु सम्मत्ति लब्भइ अचलु सोक्खु।

घत्ता—तत्थाउ मुणिंदु चउविहसंघें परियरिउ॥
सिद्धहरिहि णाम संपत्तउ जइवइ तुरिउ॥ २८॥

29

तहिं ठिउ चिंतइ भावण अणिच्च संसारहो गइ णउ होइ णिच्च।
आराहिवि आराहण सुसच्च अवहिए परियाणिवि सत्ततच्च।
संणासु कियउ सुसमाहिजुत्तु सत्तमइ सग्गि पत्तउ सुदत्तु।
सो जसवइ सो कल्लाणमित्तु सो मारिदत्तु जइवरु पवित्तु।
वणिकुलपंकयबोहणदिणेसु सो गोवद्धणु गुणगणविसेसु।

३. A किं ४ A गहिउ ५. This line and the following are given in S and T as part of कडवक 22, after राएण वि तहो पयपकयाइं ६ A णिग्गथु मग्गु ७ A जाइहि ८ A अचलसोक्खु.

29 १ A थिउ २. ST give णिव जसवइ सो कल्लाणमित्तु सो अभयणाउ सो मारिदत्तु as part of कडवक 22, after कवडक 28, line 21 of the present edition ३. ST omit वणिकुल .... विसेसु

सा कुसुमावलि पालियतिगुत्ति   अभियमइ णाणिय धम्मवित्ति ।
सव्वइं दुण्णयणिण्णासणेण   तउ चरिवि चारु संणासणेण ।
कालिं जंति संणासजुत्त   जिणधम्में ते सग्गग्ग पत्त ।

घत्ता—किउ उवरोहें जसस कइयइ एउं भवंतरु ॥
तहो भव्वहु णामु पायडमि पयडउ घरु ॥ २९ ॥

30

चिरु पट्टणेच्छंगे (?) साहुसाहु   तहो सुउ खेलागुणवंतु साहु ।
तहो तणुरुहु वीसलु णाम साहु   वीरो साहुणिगहि सुलहु णाहु ।
सोयारु सुणाणगुणगणसणाहु   एक्कइया चिंतइ चित्ति लाहु ।
हो पंडियठक्कुर कण्हपुत्त   उवयारिय वल्लहपरममित्त ।
कइ पुप्फयंति जसहरचरित्तु   किउ सुट्ठु सद्दलक्खणविचित्तु ।
पेसहि तहिं राउलु कउलु अज्जु   जसहरविवाहु तह जणियचोज्जु ।
सयलइं भवभमणभवंतराइं   महु वंछिउ करहि णिरंतराइं ।
ता साहुसमीहिउ कियउ सव्वु   राउलु विवाहु भवभमणु भव्वु ।
वक्खाणिउ पुरउ हवेइ जाम   संतुट्ठउ वीसलु साहु ताम ।
जोइणिपुरवरि णिवसंतु सिट्ठु   साहुहि घरे सुत्थियणहु घुट्ठु ।
पणसट्ठिसहियतेरहसयाइं   णिवविक्कमसंवच्छर गयाइं ।
वइसाहपाहिल्लइ पक्खि बीय   रविवारि समित्थिउ मिस्सतीय ।
चिरु वत्थुबंधि कइकियउ जं जि   पद्धडियबंधि मइं रइउ तं जि ।
गंधव्वें कण्हडणंदणेण   आयइं भवाइं किय थिरमणेण ।
महु दोसु ण दिज्जइ पुव्वि कइउ   कइवच्छराइं तं सुत्तु लइउ ।

घत्ता—जो जीवदयावरु णिप्पहरणकरु वंभयारि हयजरमरणु ॥
सो माणणिसुंभणु धम्मु णिरंजणु पुप्फयंतु जिणु महु सरणु ॥ ३० ॥

---

४. ST सा कुसुमावलि पालियतिगुत्ति सा अभयमइ त्ति णारिंदपुत्ति. ५ ST भव्वइं ६ ST कालिं जंति सव्वइं मयाइं जिणधम्में सग्गग्गहो गयाइं. ७. Portion beginning with this line and ending with कवडक 30, line 13 is omitted in PST and also not rendered in Hindi. ८. B. एय.

30, १. B. सज्जु. २. B. अहिय.

31

पावणिसुंभणि सुद्धारंभणि- उयरुप्पण्णें सामलवण्णें ।
कासवगोत्तिं केसवपुत्तिं जिणपयभत्तिं धम्मासत्तिं ।
वयसंजुत्तिं उत्तमसत्तिं वियलियसंकिं अहिमाणंकिं ।
पइसियतुंडें कइणा खंडें रंजियबुहसह कयजसहरकह ।
जो आयण्णइ चंगउ मण्णइ लिहइ लिहावइ पढइ पढावइ।
जो मणि भावइ सो णरु पावइ विहुणियघणरय सासयसंपय ।
जणणयणीरसि दुरियमलीमसि कइणिंदायरि दुसहे दुहयरि ।
पडियकवालइ णरकंकालइ बहुरंकालइ अइदुक्कालइ ।
पवरागारिं सरसाहारिं सण्हिं चेलिं वरतंबोलिं ।
महु उवयारिउ पुण्णिं पेरिउ गुणभत्तिल्लउ णण्णु महल्लउ ।
होउ चिराउसु वरिसउ पाउसु तिप्पउ मेइणि घणकणदाइणि ।
विलसउ गोमिणि णच्चउ कामिणि घुम्मउ मंदलु पसरउ मंगलु ।
संति वियंभउ दुक्खु णिसुंभउ धम्मुच्छाहिं सहुं णरणाहिं ।
सुहु णंदउ पय जय परमप्पय जय जय जिणवर जय भयमयहर ।
विमलु[1] सु केवलु णाणु समुज्जलु महु उप्पज्जउ पत्तिउ दिज्जउ ।
मइं अमुणंतिं[2] कव्वु करंतिं जं हीणाहिउ काइं मि साहिउ ।

घत्ता—तं माय[3] महासइ देवि सरासइ[4] णिहयसयल[5]संदेहदुह ॥
महु खमउ भडारी तिहुवणसारी पुप्फयंतजिणवयणरुह[6] ॥ ३१ ॥

इय जसहरमहारायचरिए महामहल्लणण्णकण्णाहरणे महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे चंडमारिदेवय-
मारिदत्तरायधम्मलाहो णाम चउत्थो परिच्छेऊ समत्तो[7] ॥ ४ ॥

31. १ ST पविमलु केवलु णाणु सुणिम्मलु. २ ST ण मुणंति. ३. AT माइ. ४. T सरस्सइ. ५. AP सय-
लसंदोह. ६. AP रुह. ७ S जसवइकल्लाणमित्तमारियत्तअभयमइसग्गगमणो णाम.

शब्दकोशः

[In the following glossary of words occurring in the Jasaharacariu, pronouns and their derivatives are ignored altoghther, while in the case of verbs only roots, primitive and causal, are included, dropping the different forms of finite verbs, infinitives and absolutives]

अअ-अज
अइ-अति
अइअट्ट-अतिविकट (अट्ट विकटार्थे देशी)
अइकूर-अतिक्रूर
अइकोमल-अतिकोमल
अइकमिअ-अतिक्रान्त
अइघण-अतिघन
अइदीह-अतिदीर्घ
अइदुम्माण-अतिदुर्मनस्
अइयक-अत्र (क-क)
अइविउल-अतिविपुल
अइसयवन्त-अतिशयवत्(ज्ञानादिमूलातिशय-चतुष्कसंयुतः। चतुस्त्रिंशदतिशयोपेतः। निःस्वेदत्वाद्यतिशयोपेत इति टिप्पणम्)
अइसुंदर-अतिसुन्दर
अउव्व-अपूर्व
अकज्ज-अकार्य
अकित्तिम-अकृत्रिम
अक्खर-अक्षर (वर्णावलि)
अक्खा-आ+ख्या (धातुः)
अघटिअ-अघटित
अगव्व-अगर्व
अगाव-अगर्व
अग्ग-अग्र
अग्गि-अग्नि
अग्गिजाला-अग्निज्वाला
अग्घवत्त-अर्घ्यपात्र
अचल-अचल
अचलत्तण-अचलत्व
अचेयण-अचेतन
अच्चण-अर्चन (पूजा)
अच्चंत-अत्यन्त
अचोक्खअ-अमृष्ट, अमार्जित (अशुचि)
अच्छ-आस् (धातुः)
अच्छरा-अप्सरस्
अच्छिअ-आसीन
अच्छि-अक्षि
अच्छिउड-अक्षिपुट
अच्छोडिय-आस्फोटित
अछम्म-अच्छद्म (कपटरहित)
अज-अज
अजयर-अजगर
अजर-अजर
अजरामर-अजरामर
अजिय-अजित (द्वितीयतीर्थंकरनाम)
अजियंग-अजिताङ्ग (राज्ञो नामविशेषः)
अजुत्त-अयुक्त
अज्ज-अद्य
अज्जमहि-आर्यमही
अज्जव-आर्जव (ऋजुता)
अज्जणिज्ज-अर्जनीय
अज्जिय-अर्जित

अज्जु–अद्य
अट्ट–आर्त
अट्टहास–अट्टहास (विकटहास)
अट्ठ–अष्टन्
अट्ठगुणी–अष्टगुण (अष्टमहाप्रातिहार्ययुक्त इत्यर्थः)
अट्ठम–अष्टम
अट्ठमि–अष्टमी
अट्ठविह–अष्टविध
अट्ठसिद्धगुण–अष्टसिद्धगुण
अट्ठंग–अष्टाङ्ग (अष्ट शरीरावयवा इत्यर्थः)
अट्ठि–अस्थि
अट्ठोत्तरसहास–अष्टोत्तरसहस्र
अड–भद् (धातुः)
अड–अवट (कूप इत्यर्थः)
अण–अनस् (शकट)
अणअ–अनय
अणउंछिअ–अवाञ्छित
अणक्खर–अनक्षर
अणगार–अनगार
अणत्थ–अनर्थ
अणलिय–अन्+अलीक (सत्य)
अणवरय–अनवरत
अणसण–अनशन
अणंग–अनङ्ग
अणंत–अनन्त (चतुर्दशतीर्थंकरनाम)
अणंत–अनन्त
अणंताणंत–अनन्त+अनन्त (अतिशयेन अनन्तमित्यर्थः)
अणाइ–अनादि
अणाह–अनाथ
अणिच्च–अनित्य
अणिट्ठ–अनिष्ट
अणिट्ठिअ–अनिष्ठित (असमाप्त)
अणिसाभोयण–अनिशाभोजन
अणिहण–अनिधन (अनन्त इत्यर्थः)
अणिंद–अनिन्द्य
अणिंदिअ–अनिन्दित
अणु–अणु (परमाणुरित्यर्थः)
अणुकंप–अणु+कम्प् (धातुः)
अणुकूल–अनुकूल
अणुगय–अनुगत
अणुगामिणि–अनुगामिनी
अणुज्ज–अनवद्य (निर्दोष इत्यर्थः)
अणुज्जय–अनुद्यत
अणुट्ठा–अनु+स्था (धातुः)
अणुट्ठाण–अनुष्ठान
अणुदिणु–अनुदिनम्
अणुबंध–अनुबन्ध (क्रमः संततिर्वा)
अणुमग्ग–अनु+मार्ग
अणुमग्गयर–अनुमार्गचर (अनुचर इत्यर्थः)
अणुमाण–अनुमान
अणुव्वय–अणुव्रत
अणुवेक्ख–अनु+प्रेक्ष् (धातुः)
अणुसंघट्टण–अनुसंघट्टन
अणुहव–अनु+भू (धातुः)
अणुहुंज–अनु+भुज् (धातुः)
अणेय–अनेक
अण्ण–अन्य
अण्णण्ण–अन्य+अन्य
अण्णत्त–अन्यत्व
अण्णभव–अन्यभव
अण्णव–अर्णव
अण्णाण–अज्ञानिन्
अण्णाण–अज्ञान
अण्णायत्त–अन्यायत्त
अण्णासत्त–अन्यासक्त
अण्णुण्ण–अन्योन्य
अण्णेक्क–अनेक
अण्णोण्ण–अन्योन्य
अण्हाण–अस्नान
अतुट्ठि–अतुष्टि

अतुल-अतुल
अतुलसत्ति-अतुलशक्ति
अत्तावण-आतापन
अत्थ-अर्थ
अत्थ-अस्त (अस्तपर्वत इत्यर्थः)
अत्थवण-अस्तमन
अत्थाण-आस्थान (सभामण्डपमित्यर्थः)
अत्थाणिअ-अस्त+आसीन
अदुम्मइ-अदुर्मति
अदम्सणीभूअ-अदर्शनीभूत
अद्ध-अर्ध
अद्धद्ध-अर्धार्ध
अपत्त-अपात्र (तृणादिमित्यर्थः.)
अपारद्ध-अप्रारब्ध
अपेच्छ-अप्रेक्ष (अन्ध इत्यर्थः)
अप्प-आत्मन्
अप्पमत्त-अप्रमत्त
अप्पवह-आत्मवध
अप्पिअ-अर्पित
अप्पुण्ण-आक्रान्त (व्याप्तमित्यर्थः.)
अब्भंगिअ-अभ्यक्त
अब्भंतर-अभ्यन्तर
अब्भस-अभि+अस् अभ्यसने (धातु.)
अब्भिड-अभ्यागमने देशी (धातु)
अब्भुय-अद्भुत
अभग्ग-अभग्न (यमादिति टिप्पणम्)
अभयमहाएवी-अभयमहादेवी (राज्ञीनाम विशेषः)
अभयरुइ-अभयरुचि (क्षुल्लकनाम)
अभंग-अभङ्ग
अभीअ-अभीत
अभुड-अभाग्ना इत्यर्थे देशी
अमणोज्ज-अमनोज्ञ
अमय-अमृत
अमयमइ-अमृतमति (राज्ञीनामविशेषः)
अमरणियर-अमरनिकर (देवसमूह)
अमरत्त-अमरत्व
अमल-अमल
अमलिय-अमलिन
अमंगल-अमङ्गल
अमाण-अमान (मानरहित इत्यर्थः)
अमित्त-अमित्र
अमुणंत-अजानत्
आमोसहि-आम+औषधि
अम्म-अम्ब (सम्बोधने)
अम्माएवि-अम्बादेवी (मातेत्यर्थः.)
अम्मि-अम्ब (संबोधने)
अय-अज
अयवइ-अजपति
अयसिर-अजशिरस् (अजो ब्रह्मेति टिप्पणम्)
अर-अर (अष्टादशतीर्थंकरनाम)
अरमाहर-अरमा (अलक्ष्मी) + हर (दारिद्र्य-नाशक इत्यर्थः)
अरविंद-अरविन्द (कमलमित्यर्थः)
अरहंत-अर्हत्
अरहंतावलि-अर्हदावलि (जिननामावलिरित्यर्थः)
अरुण-अरुण
अरुणयर-अरुणकर (सूर्य इत्यर्थः.)
अरुणायवत्त-अरुणातपत्र
अरुणिय-अरुणित
अरुहक्खर-अर्हत् (इति)+अक्षर
अरूअ-अरूप
अरूवि-अरूपिन् (अरूप इत्यर्थः)
अलक्खण-अलक्षण
अलज्ज-अलज्ज
अलंकिअ-अलंकृत
अलाउ-अलाबु
अलि-अलि (भ्रमर इत्यर्थः)
अलिउल-अलिकुल
अलिय-अलीक
अलिंग-अलिङ्ग

अलोय–अलोक
अवगण–अव+गण् (धातुः)
अवगण्ण–अव+गण् (धातुः)
अवगाहिय–अवगाहित
अवगुण–अवगुण
अवज्ज–अवद्य
अवत्थ–अवस्था
अवमाणिय–अवमानित
अवयपुण्ण–अवयवपूर्ण
अवयास–अवकाश
अवर–अपर
अवरअ–अपर(क)
अवरपक्ख–अपरपक्ष
अवरुंडण–आलिङ्गने देशी
अवरुंडिय–आलिङ्गिते देशी
अवरोप्पर–परस्पर
अवलंबमाण–अवलम्बमान
अवलित्त–अवलिप्त
अवलोय–अव+लोकय् (धातुः)
अवसर–अवसर
अवसवण–अपस्वप्न, अपशकुन
अवसाण–अवसान (अन्तः, समाप्तिः)
अवसिं–अवश्यम्
अवसु–अवश्यम्
अवहत्थिय–अपहस्तित
अवहरिय–अपहृत
अवहीसर–अवधीश्वर (अवधिज्ञानवानित्यर्थः)
अवंतिराअ-अवन्तिराज
अवंती–अवन्ति (जनपदनाम)
अविणीय–अविनीत
अवियड्ढ–अविदग्ध
अवियाणअ–अविजानत्
अविलासवंक–अ+विलास+वक्र
(स्वभावसुन्दर इत्यर्थः)
अविवंक–अ+वि+वक्र (अतिसरल इत्यर्थः)
अविहंग–स्वभावतः इत्यर्थे देशी
अविहाअ–अविभाग
अविहिण्ण–अविहीन
अस–अस् (धातुः) अत्थि, अस्ति इत्यादि
असइ–असकृत्
असइ–अ+सती
असच्च–असत्य
असज्झ–असाध्य
असण्णि–अ+संज्ञिन् (अचेतन इत्यर्थः)
असमाण–असमान
असमाहिल्ल–अ+समाधि+इल्ल (मत्वर्थीयः)
असामण्ण–असामान्य
असारत्त–असारत्व
असि–असि (खड्ग)
असिधेणुय–असि+धेनुका (छुरिकेत्यर्थः)
असुइरस–अशुचिरस
असुहरण–असु+हरण
असेस–अशेष
असोय–अशोक (वृक्षविशेषः)
असंक–अशङ्क
असंकिअ–अशङ्कित
असंग–असङ्ग
असुंदर–असुन्दर
अस्स–अश्व
अहचरिय–अधश्चरित (नीचवृत्त इत्यर्थः)
अहम–अधम
अहमं–अहमित्यर्थे
अहम्म–अधर्म
अहयर–अधश्चर
अहर–अधर
अहरुल्ल–अधर+उल्ल (स्वार्थे)
अहि–अहि (सर्प इत्यर्थः)
अहिछत्त–अहिच्छत्र (नगरनामविशेषः)
अहिणंदन–अभिनन्दन (चतुर्थतीर्थंकरनाम)
अहिणाण–अभिज्ञान
अहिणाणिय–अभिज्ञानिक (अभिज्ञान)

अहिमाण-अभिमान
अहिमाणमेरु-अभिमानमेरु (पुष्पदन्तकवेर्बिरुदेष्वन्यतमम्)
अहिमाणंक-अभिमानाङ्क (पुष्पदन्तकवेर्बिरुदम्)
अहिमाणिय-अभिमान+इक (अभिमानपर इत्यर्थः)
अहियारिय-आधिकारिक
अहिराय-अधिराज
अहिव-अधिप
अहिसिंचिय-अभिषिक्त
अहिसेय-अभिषेक
अहिहाण-अभिधान
अहिंस-अहिंसा
अहिंसाधम्म-अहिंसाधर्म
अहु-अध
अहोगइ-अधोगति
अहोगमण-अधोगमन (!)
अहोभूमि-अधोभूमि
अंकिअ-अङ्कित
अंकुस-अङ्कुश
अंग-अङ्ग
अंगअ-अङ्गज
अंगचाअ-अङ्गत्याग (गात्रोत्सर्ग इत्यर्थः)
अंगण-अङ्गण
अंगराअ-अङ्गराग
अंगहार-अङ्गहार
अंगारय-अङ्गारक (भौमनाम)
अंगुल-अङ्गुलि
अंगुलि-अङ्गुलि
अंगुलियअ-अङ्गुलि (+क)
अंचिय-अञ्चित
अंत-अन्त
अंतरंग-अन्तरङ्ग
अंतावलि-अन्त्र+आवलि
अंतेउर-अन्तःपुर
अंदोलण-आन्दोलन
अंध-अन्ध
अंधयार-अन्धकार
अंधार-अन्धकार
अंबर-अम्बर (वस्त्र)
अंभ-अम्भस्
अंसु-अंशु
अंसु-अश्रु
अंसुवाह-अश्रु+वाह (अश्रुप्रवाह इत्यर्थः)

आइ-आदि
आइअ-आगत
आइद्ध-आविद्ध
आउ-अप्
आउक्खय-आयुःक्षय
आउगंठि-आयुर्ग्रन्थि
आउपमाण-आयुःप्रमाण
आउस-आयुष्
आउंच-आ+कुञ्च् (धातुः)
आउंचिय-आकुञ्चित
आएस-आदेश (आज्ञेत्यर्थः)
आकोस-आ+क्रुश् (धातुः)
आगम-आगम (शास्त्रमित्यर्थः)
आघोस-आ+घुष् (धातुः)
आढत्त-आदृत, आरब्ध
आणण-आनन (मुख अथवा द्वार)
आणंद-आनन्द
आणंदिअ-आनन्दित
आणंदिय-आनन्दित
आणंदिर-आनन्द+इर (शीलार्थे प्रत्ययः)
आणा-आज्ञा
आणाकारिणी-आज्ञाकारिणी
आणाविअ-आज्ञापित
आणिय-आनीत
आणी-आ+नी (धातुः)
आपीण-आपीन
आमइसरिस-आमयसदृश

आमंतियअ–आमन्त्रित(क)
आमिस–आमिष
आमिसगसिर–आमिष+ग्रसनशील
आमोय–आमोद
आयअ–आगत
आयण्ण–आ+कर्णय् (धातुः)
आयण्णण–आकर्णन
आयदण–आयतन
आयम–आगम
आयर–आचार
आयर–आदर
आयवत्त–आतपत्र (छत्रमित्यर्थ.)
आयंब–आताम्र
आयार–आचार
आयावण–आतापन (व्रतविशेष)
आयास–आ+यस् (धातु.)
आयास–आकाश
आरडंत–आरटत्
आरडिय–आरटित
आरत्त–आरक्त
आरंभ–आरम्भ
आराम–आराम (उपवनमित्यर्थः)
आराहण–आराधन
आरुह–आ+रुह् (धातु)
आरुहण–आरोहण
आरूढ–आरूढ
आलग्ग–आलग्न
आलिद्ध–आश्लिष्ट
आलिंगण–आलिङ्गन
आलुंखिय–आरूक्षित (आस्वादित इत्यर्थः)
आलोइय–आलोचित
आलोयण–आलोचन
आलोयंत–आलोकयत्
आव–आ+इ आगमने (धातु.)
आवडिय–आपतित
आवज्ज–आ+पद् (धातुः)
आवडिअ–आपतित
आवत्त–आवर्त (अम्भसा भ्रम.)
आवया–आपद्
आवलि–आवलि (पङ्क्तिरित्यर्थः)
आविद्ध–आविद्ध (आबद्ध, खचित)
आस–आस् (धातुः)
आसण–आसन
आसण्णवय–आसन्नपद
आसत्त–आसक्त
आसत्ती–आसक्ति
आसव–आ+स्रु (धातु॰)
आसंका–आशङ्का
आसंघ–आ+श्रि इत्यर्थे देशी
आसाऊरिय–आशापूरित
आसाय–आस्वाद
आसायण–आस्वादन
आसासिय–आश्वासित
आसिअ–आश्रित
आसीण–आसीन
आसीवाअ–आशीर्वाद
आसीसिय–आशीपित ! (आशीर्दत्ता इत्यर्थ.)
आहय–आहत
आहरण–आभरण
आहव–आहव (युद्ध)
आहाकम्म–आधाकर्मन् (हिंसा)
आहार–आधार
आहार–आहार
आहास–आ+भास् (धातुः)
आहिंड–आ+हिण्ड् (धातुः)

इक्कइया–एकदा
इट्ठ–इष्ट
इच्छिय–इच्छित
इच्छेवय–एष्टव्य
इत्तिय–इत्वर (चपल इत्यर्थः)
इत्तिय–एतावत्

इत्थ-अत्र
इय-इति (वाक्यादावेव)
इयर-इतर
इयरहा-इतरथा (अन्यथा)
इल-इला (पृथ्वी)
इला-इला (पृथ्वी)
इसि-ऋषि
इह-इह
इहं-इह
इहलोय-इहलोक
इंगाल-अङ्गार
इंत-यत् (इणातेः शत्रन्तम्)
इंती-यन्ती
इंद-इन्द्र
इंदणील-इन्द्रनील (मणिविशेषः)
इंदिय-इन्द्रिय
इंदियबल-इन्द्रियबल
इंदियगुण-इन्द्रियगुण
इंदु-इन्दु (चन्द्र)
ईरिअ-ईरित (प्रेरित)
ईसर-ईश्वर
ईसाण-ईशान (स्वर्गनाम)
ईसानिहि-ईशान+निधिन (अग्नि)

उअर-उदर
उअलिय-उत्क्षिप्त (उत्पाटित इत्यर्थः)
उअंठ-उत्कण्ठ
उऊरु-उत्तरवस्त्रप्रायं देशी (मराठी-
उपरणा)
उक्खोडिय-उत्पाटित इत्यर्थे देशी
उग्गम-उद्गमन
उग्ग-उग्र
उग्गअ-उद्गत
उग्गमिअ-उद्गत
उग्गय-उद्गत
उक्किण्ण-उत्कीर्ण
उच्चाइय-उच्चीकृत
उच्चासण-उच्चासन
उच्छिट्ठ-उच्छिष्ट
उच्छिट्ठय-उच्छिष्टक
उच्चोलिय-उपानह्
उच्छअ-उत्सव
उच्छल-उद्+क्षिप्धात्वर्थे
उच्छलंत-उच्छलत्
उच्छह-उत्सुक (देशी)
उच्छव-उत्सव
उच्छाइय-उत्पादित
उच्छाह-उत्साह
उच्छुवण-इक्षुवन
उज्जल-उज्ज्वल
उज्जलिय-उज्ज्वलित
उज्जाण-उद्यान
उज्जुय-ऋजु(क)
उज्जुयत्त-ऋजुकत्व
उज्जुवा-ऋजुका
उज्जेणि-उज्जयिनी
उज्झा-अयोध्या
उज्झाअ-उपाध्याय
उज्झाय-उपाध्याय
उज्झाहिअ-अयोध्या+अधिप
उट्ठ-उत्तिष्ठ
उट्ठंत-उत्तिष्ठत्
उट्ठंतपडंत-उत्तिष्ठत्+पतत्
उट्ठा-उद्+स्था (धातु)
उट्ठावियअ-उत्थापित (क)
उट्ठिय-उत्थित
उडु-उडु (नक्षत्र)
उडुवइ-उडुपति (नक्षत्रराट्, चन्द्र इत्यर्थः)
उड्ड-उद+डी (धातुः)
उड्डणसील-उड्डनशील
उड्डाविय-उड्डित
उड्डिय-उड्डित (ऊर्ध्वीकृत इत्यर्थे)

उड्डिर–उड्डनशील
उण्णइवत–उन्नतिमत्
उण्णय–उन्नत
उण्णयकंधर–उन्नतकंधर
उण्ह–उष्ण
उत्त–उक्त
उत्तम–उत्तम
उत्तर–उद्+तॄ (धातुः)
उत्तार–उद्+तारय् (धातुः)
उत्तिय–उक्त
उत्तिम–उत्तम
उत्तुंग–उत्तुङ्ग
उदयायल–उदयाचल
उद्देस–उद्+देशय् (धातुः)
उद्देस–उद्देश
उद्ध–उर्ध्व
उद्धर–उद्+धृ (धातुः)
उद्धरिय–उद्धृत
उद्धहत्थ–उर्ध्वहस्त
उद्धूलिय–उद्धूलित
उप्पज्ज–उद्+पद् (धातुः)
उप्पण्ण–उत्पन्न
उप्पम–उपमा
उप्परि–उपरि
उप्पाड–उद्+पाटय् (धातुः)
उप्पाडण–उत्पाटन
उप्पाय–उत्पात
उप्पेल्लिय–उत्प्रेरित
उप्फाल–आ+स्फालय्, अथवा, उद्+पाटय् (धातुः)
उप्फुल–उत्फुल्ल
उब्भड–उद्भृत
उब्भमिय–उद्भ्रमित (उद्भ्रान्त)
उब्भव–उद्भव
उब्भंत–उद्भ्रान्त
उब्भि–उद्+भृ (धातुः)
उब्भिय–ऊर्ध्वीकृत
उब्भुब्भ–ऊर्ध्व+ऊर्ध्व
उब्भूय–उद्भूत
उम्मुच्छिअ–उन्मूर्छित
उम्मूलिय–उन्मूलित
उयर–उदर
उर–उरस्
उरअ–उरग
उरचूर–उरश्चर (उरगजातिः)
उरयर–उरश्चर
उरयल–उरस्तल
उल–कुल (उत्तरपदे एव)
उल्लल–उद्+लल् (शोभाया धातुः)
उल्ललण–उल्ललन
उल्ललिय–उल्ललित (विकीर्ण इत्यर्थः)
उल्लिय–आर्द्रित (आर्द्र इत्यर्थः)
उल्लोवय–उल्लोच(क) (वितानमित्यर्थः)
उवएस–उपदेश
उवगरण–उपकरण
उवमा–उपमा
उवयंठएस–उपकण्ठदेश (समीपप्रदेशः)
उवयार–उपकार
उवयार–उपचार
उवयारिअ–उपकारिन्
उवरि–उपरि
उवरिल्ल–उपरितन
उवरुवरि–उपर्युपरि
उवरोह–उपरोध
उवलक्खिय–उपलक्षित
उववण–उपवन
उववाय–उपपाद
उववास–उपवास
उवसम–उप+शम् (धातुः)
उवसम–उपशम
उवसंत–उपशान्त
उवाअ–उपाय

उविंद–उपेन्द्र (विष्णुः)
उव्वर–उर्वर् इत्यधिकार्थे (धातुः)
उव्वरिय–उर्वरित
उव्वेविर–उद्+वेपनशील
ऊंजिय–ऊर्जित
उंजु–ऋजु
उंदुर–उन्दुर (मूषक इत्यर्थः)

ऊसर–ऊषर

एइंदिय–एकेन्द्रिय
एक्क–एक
एक्कइया–एकदा
एक्कखंभ–एकस्तम्भ
एक्कखुर–एकखुर
एक्कठाण–एकस्थान
एक्कभत्त–एकभक्त
एक्कमेक्क–एकैक
एत्तहिं–एतावति (काले)
एत्थंतरि–अत्रान्तरे
एत्थु–अत्र
एत्तिअ–एतावत्
एम–एवम्
एयारह–एकादशन्
एयारहमअ–एकादशमय
एयारिस–एतादृश
एरिस–ईदृश
एवड–एतावत्
एवहिं–एवम्
एवं–एवम्
एहावत्थ–एषा+अवस्था

ओइण्ण–अवतीर्ण
ओट्ठ–ओष्ठ
ओणाविय–अवनामित
ओल–आर्द्र
ओली–आवलि
ओल्लंघिय–उल्लंघित
ओसह–औषध
ओसारिअ–अपसारित
ओसासित्त–अवश्याय+सिक्त
ओह–ओघ

क–क (उदक)
क–क (मस्तक) १-१४-६
कइ–कवि
कइत्तण–कवित्व
कइमइ–कविमति
कइयइ–कविपति
कइयण–कविजन
कइया–कदा
कइराअ–कविराज
कइवइ–कविपति
कइवय–कतिपय
कउल–कौल (कापालिकः कुलाचार्य इत्यर्थः)
कउलउल–कौलकुल (कापालिकादिदुष्टधार्मिक-समूह इत्यर्थः)
कक्कस–कर्कश
कक्खड–रूक्ष (लतावृक्षादिगुल्मः)
कक्ख–कर्कश
कच्चोल–पात्रविशेषे देशी (मराठी–कचोळें)
कच्छव–कच्छप
कज्ज–कार्य
कज्जाणुराअ–कार्यानुराग
कट्ठ–कष्ट, कष्टम्
कट्ठ–काष्ठ
कट्ठकम्म–काष्ठकर्मन्
कडक्ख–कटाक्ष
कडयडिय–कडकडित (विद्युच्छब्दानुकारः)
कडाह–कटाह
कडि–कटि
कडिल्ल–कटी+इल्ल (मत्वर्थीयः)

कडिसुत्तय–कटिसूत्रक (मेखला)
कडुयसर–कटुक+स्वर
कड्ढ–कृष्धात्वर्थे देशी
कड्ढिय–कृष्ट (आकृष्ट)
कड्ढिय–कृष्ट
कढ–कथ् (धातुः)
कढिण–कठिन
कण–क्कण् (धातुः)
कण–कण
कणभर–कणभर (धान्यभार)
कणय–कनक
कणयमय–कनकमय
कणिस–कणिश
कण्ण–कर्ण (श्रोत्रेन्द्रिय)
कण्ण–कर्ण (कुन्तीसुत)
कण्णसूल–कर्णशूल
कण्णत–कर्णान्त
कण्णा–कन्या
कण्हडणंदण–कृष्ण+नन्दन
कण्हपुत्त–कृष्णपुत्र
कत्तार–कर्तृ
कत्ति–कृत्ति (व्याघ्रादिचर्मेत्यर्थ.)
कत्तिय–कर्तित (भिन्न)
कथकेस–क्रयकैशिक (जनपदनाम)
कद्दम–कर्दम
कप्प–कल्प (युग)
कप्पड–कर्पट (वस्त्र)
कप्पधारि–कल्पधारिन्
कप्पविक्ख–कल्पवृक्ष
कप्पंघिव–कल्पाड्घ्रिप (कल्पवृक्ष)
कप्पूर–कर्पूर
कप्पूरफार–कर्पूरस्फार
कम–क्रम् (धातु.)
कम–क्रम (चरणमित्यर्थ)
कमंडलु–कमण्डलु
कम्म–कर्मन्
कम्मचंड–कर्मचण्ड
कम्मपास–कर्मपाश
कम्मबंध–कर्मबन्ध
कम्ममल–कर्ममल
कम्मविवाय–कर्मविपाक
कम्मायत्त–कर्मायत्त
कय–कृत
कयणिच्छय–कृतनिश्चय
कयपारण–कृतपारण
कयपुलय–कृतपुलक (कृतरोमाञ्चकञ्चुकं यथा स्यात्तथेति टिप्पणम्)
कयरअ–कतर (क)
कयली–कदली
कयसंचारिय–कृतसंचारिका
कयसंवर–कृतसंवर
कयंजलि–कृताञ्जलि
कयंत–कृतान्त
कयायर–कृतादर
कर–कृ (धातुः)
कर–कर (किरण)
कर–कर (हस्त)
करग्ग–कराग्र
करग्ग–कर ग्र (अङ्गुलि)
करड–कठिन इत्यर्थे देशी
करण–करण
करयरंत–करकरत् (शब्दानुकरणे देशी)
करयल–करतल
करवत्त–करपत्र (शस्त्रविशेषः)
करवंद–करमर्द (फलविशेषः)
करसंजोइअ–कर+संयोजित
करह–करभ
करहाड–करहाकट(कन्हाड)
करंड–करण्ड (क)
करंत–कुर्वत्
करंति–कुर्वती

करंविअ–कराम्रित
कराल–कडार (कपिल, चित्रवर्ण)
कराल–कराल (भीषण इत्यर्थे)
करावलि–करावलि (किरणजाल)
करि–करिन्
करिकर–करिकर (शुण्डा)
करिकरसमोरु–करिकरसम+ऊरु
करिणि–करिणी (हस्तिनी)
करितासण–करिन्+त्रासन
करिमिहुण–करिमिथुन
करिंद–करीन्द्र
करुण–करुणा
कलकंलाअ–कलाकलाप (कलासमूह)
कलकोइल–कलकोकिल
कलत्त–कलत्र
कलभ–कलभ
कलयल–कलकल
कलयल–कलकलं कृ (धातुः)
कलरव–कल+रव
कलस–कलश
कलहेक्कसील–कलहैकशील
कलाव–कलाप
कलि–कलि (युगविशेषः)
कलिया–कलिका
कलिंगवइ–कलिङ्गपति
कलिंगाहिअ–कलिङ्गाधिप
कलुण–करुण
कलुसभाव–कलुष+भाव
कलेवर–कलेवर
कलोह–कला+ओघ (कलासमूह)
कल्लाण–कल्याण
कल्लाल–मद्यविक्रयिन् इत्यर्थे देशी
कल्लोल–कल्लोल
कवण–कोऽपि (कः पुनः)
कवल–कवल (ग्रास)
कवलिय–कवलित
कवाड–कपाट
कवाल–कपाल (मृद्भाजनखण्डः)
कवि–कवि
कविल–कुक्कुर इति टिप्पणम्
कविल–कपिल
कवोल–कपोल
कवोलवत्त–कपोलपत्र
कव्व–काव्य
कव्वत्थ–काव्यार्थ
कसण–कृष्ण (वर्णे)
कससत्ति–कृश+शक्ति (दुर्बल इत्यर्थः)
कसाय–कषाय
कह–कथय् (धातुः)
कह–कथा
कहकहंत–शब्दानुकरणे देशी
कहा–कथा
कहाणअ–कथानक
कहिअ–कथित
कहिय–कथित
कहं–कथम्
कहंतर–कथान्तर
कंक–कङ्क (पक्षिविशेषः)
कंकण–कङ्कण
कंकाल–कङ्काल (शरीरास्थि)
कंकेल्लि–कङ्केल्लि (अशोकवृक्षः)
कंख–काङ्क्ष् (धातुः)
कंखा–काङ्क्षा
कंखिर–काङ्क्षा+इर (शीलार्थः)
कंचण–काञ्चन
कंचाइणि–कात्यायनी (चण्डमारिदेवता)
कंची–काञ्ची
कंचीकलाव–काञ्चीकलाप
कंचुइ–कञ्चुक (स्त्रीणामुत्तरीयम्)
कंचुइ–कञ्चुकिन् (अन्तःपुरवृद्ध इति टिप्पणम्)
कंचुलिय–कञ्चुकाविशेष (मराठी-काचोळी)
कंजिअ–काञ्जिक

कंटय–कण्टक
कंटयतरु–कण्टकतरु
कंड–काण्ड (बाण इत्यर्थः)
कंड–काण्ड (धनुर्दण्ड इत्यर्थः)
कंडू–कण्डू
कंडोहिय–मथित इत्यर्थे देशी (मराठी–काडलेलें)
कंत–कान्त (पतिः)
कंता–कान्ता
कंतार–कान्तार
कंति–कान्ति
कंती–कान्ति
कंद–कन्द् (धातुः)
कंदअ–कन्द (क)
कंदर–कन्दर
कंदल–कन्द+ल (स्वार्थे)
कंदुल्ल–कन्द+उल्ल (मत्वर्थीयः)
कंदोट्ट–नीलोत्पल इत्यर्थे देशी
कंप–कम्प् (धातु)
कंपंत–कम्पमान
कंपति–कम्पमाना
कंपिय–कम्पित
कंबल–कम्बल
कंस–कंस (नामविशेषः)
काउरिस–किम्+पुरुष (निन्द्य इत्यर्थः)
काउल–काक
काण–काण (अक्षिविकलः)
काणण–कानन
काणि–काणी (अक्षिविकला)
काणीण–कानीन (कन्यकाजातः)
काम–काम (मदन)
कामग्गह–काम+ग्रह
कामजर–कामज्वर
कामाउर–कामातुर
कामालस–काम+अलस
कामिणि–कामिनी
कामिणिया–कामिनि(का)
कामी–कामिन्
कामुअ–कामुक
काय–काय
कायउल–काककुल
कारण–कारण
कारंड–कारण्ड (चक्रवाक)
कारागार–कारा+अगार
कारावय–कारय् (धातुः)
कारिम–कृत्रिम
कारुण्ण–कारुण्य
काल–काल
कालगोयर–कालगोचर (यमगोचर इत्यर्थः)
कालाणल–कालानल
कालावेक्खा–कालापेक्षा (कालावेक्खइ समये समये इत्यर्थः)
कासवगोत्त–काश्यपगोत्र
कासायपड–काषायपट
काहल–काहल (वाद्यविशेषः)
काहलियवंस–काहिलो गोपः तेन वाद्यमानः वंशः इति टिप्पणम्
किअ–कृत
किज्ज–कृधातोः कर्मणि
किण्ह–कृष्ण
कित्तण–कीर्तन
कित्ति–कीर्ति
कित्तिम–कृत्रिम
किमं–किम्+इमं=किमिदम्
किमि–क्रिमि
किमिउल–क्रिमिकुल
किय–कृत
किर–किल
किरण–किरण
किरणोह–किरणौघ (किरणसमूह)
किरिया–क्रिया
किलिकिलि–किलि इति शब्दानुकरणम्

किलेस–क्लेश
किवाण–कृपाण (खड्ग)
किस–कृश
किसलय–किसलय
किह्–कुत्र
किंकर–किंकर
किंकिणि–किङ्किणी
किंणर–किन्नर
कीर–कीर (शुक)
कीर–कृधातोः कर्मणि
कील–क्रीड् (धातु)
कील–क्रीडा
कीलण–क्रीडन (क्रीडा)
कीलंत–क्रीडत्
कीला–क्रीडा
कीलाल–कीलाल (रक्त)
कुकइत्तण–कुकवित्व
कुकम्म–कुकर्मन्
कुकलत्त–कुकलत्र
कुक्क–कुक्क इति शब्दानुकरणे (धातुः)
कुक्कुर–कू इति शब्दं कृ (धातु.)
कुक्कुड–कुक्कुट
कुक्कुडअ–कुक्कुट(क)
कुक्कुडिया–कुक्कुटि(का)
कुक्कुरी–कुक्कुरी (शुनी)
कुगुरु–कुगुरु
कुच्छि–कुक्षि
कुजम्म–कुजन्मन्
कुट्टण–कुट्टन
कुट्ठ–कुष्ठ
कुडिल–कुटिल
कुडिलत्तण–कुटिलत्व
कुडिहर–कुटीगृह
कुडुंगण–लतागृहमित्यर्थे देशी
कुडुंब–कुटुम्ब
कुण–कृ (धातुः)
कुणंत–कुर्वत्
कुतक्क–कुतर्क
कुत्थिय–कुत्सित (दुष्ट)
कुदेव–कुदेव
कुपत्त–कुपात्र
कुप्पर–कूर्पर
कुमग्ग–कुमार्ग
कुमरी–कुमारी
कुमार–कुमार
कुमारिलभट्ट–कुमारिलभट्ट (नामविशेषः)
कुम्म–कूर्म
कुरंग–कुरङ्ग
कुरंगी–कुरङ्गी
कुरर–कुरर (पक्षिविशेषः)
कुरुल–अलक (रचनाविशेषः)
कुल–कुल
कुलउत्ती–कुलपुत्री
कुलउत्तिया–कुलपुत्रिका
कुलगुरु–कुलगुरु
कुलदेवय–कुलदेवता
कुलदेवी–कुलदेवी
कुलमग्ग–कुलमार्ग
कुलमग्गचारि–कुलमार्गचारिन्
कुलयर–कुलकर
कुलिंग–कुलिङ्ग (दुष्टतापसादिः)
कुलीर–कुलीर (जन्तुविशेषः)
कुवलय–कुवलय
कुवाइ–कुवादिन् (अन्यान्यदर्शनप्रवर्तक इत्यर्थः)
कुविवेय–कुविवेक
कुसल–कुशल
कुसलत्त–कुशलत्व (कुशलवृत्त)
कुसंग–कुसङ्ग
कुसुम–कुसुम
कुसुमसर–कुसुमशर (मदन)
कुसुमावलि–कुसुमावलि (राज्ञीनामविशेषः)

कुसुमिय–कुसुमित
कुसुमोह–कुसुम+ओघ (समूह)
कुह–कुथ् (धातुः)
कुहर–कुहर
कुहिणी–मार्ग इत्यर्थे देशी
कुहिय–क्रुद्ध
कुहिय–क्षुभित (व्याधिदूषित इत्यर्थः)
कुंकुम–कुङ्कुम
कुंकुमपिंड–कुङ्कुमपिण्ड
कुंचण–कुञ्चन (आकुञ्चन)
कुंजर–कुञ्जर
कुंट–कुब्ज
कुंठ–कुण्ठ
कुंड–कुण्ड
कुंडल–कुण्डल
कुंत–कुन्त (भल्ल)
कुंतल–कुन्तल (केश)
कुंथु–कुन्थु (सप्तदशतीर्थंकरनाम)
कुंथु–कुन्थु (अतिसूक्ष्मशरीरः प्राणिविशेषः)
कुंथुपहुअंगि–कुन्थुप्रभृत्यङ्गे(कुन्थुप्रभृतिप्राणेषु)
कूआरव–कू इति रव
कूडायर–कूट+आदर
कूर–क्रूर
कूर–ओदनार्थे देशी
कूल–कूल (तीर)
कूव–कूप
केउ–केतु (चिह्न ध्वजो वा)
केक्कार–केङ्कार (पक्षिणा शद्बविशेषः)
केयइ–केतकी
केयार–केदार
केर–तस्येदमित्यर्थे षष्ठ्यन्तात्प्रत्ययः
केरअ–तस्येदमित्यर्थे षष्ठ्यन्तात्प्रत्ययः
केरी–तस्येदमित्यर्थे षष्ठ्यन्तात्प्रत्ययः
केलिदण्ड–केलिदण्ड
केवट्ट–कैवर्त
केवल–केवल (ज्ञानविशेषः)
केवलणाण–केवलज्ञान
केस–केश
केसरि–केसरिन् (सिंह इत्यर्थः)
केसव–केशव
केसुब्भड–केश+उद्भट (भयकर इत्यर्थः)
कोअंड–कोदण्ड (धनुः)
कोऊहल–कौतूहल
कोक्कंत–को इतिशब्द कुर्वत्
कोडि–कोटि
कोडि–कुक्कट (मराठी–कोंबडी)
कोड्ड–कौतुक इत्यर्थे देशी
कोड्डावण–कौतुककरण इत्यर्थे देशी
कोड्डावणिय–कौतुककारक इत्यर्थे देशी
कोढि–कोटि
कोढिणि–कुष्ठवती (कुष्ठरोगदूषिता)
कोमल–कोमला
कोल–कोल (वराह)
कोलाहल–कोलाहल
कोव–कोप
कोवग्गि–कोपाग्नि
कोवारुण–कोपारुण
कोवीण–कौपीन
कोसियकिमि–कोशित (कोशस्थित) + क्रिमि
कोह–क्रोध
कोडिल्ल–कौण्डिण्य (गोत्रविशेषः)

खअ–क्षय
खगविज्जा–खगविद्या (आकाशसंचारसामर्थ्य-मित्यर्थः)
खगिंद–खगेंद्र (गरुड)
खग्ग–खड्ग
खच्चेल–प्राणिविशेष [!]
खज्ज–खाद्धातोः कर्मणि
खण–खन् (धातुः)
खण–क्षण (कालविशेषः)
खणद्ध–क्षणार्ध

खणंतर–क्षणान्तर
खण्णु–खननशील [!]
खत्तधम्म–क्षत्रधर्म
खत्तधर–क्षत्रधर (दोषेभ्यो निवर्तको राजा धर्मधरो वा क्षत्रजातिरिति टिप्पणम्)
खद्ध–खादित
खप्पर–कर्पर (कपालखण्ड)
खम–क्षम् (धातुः)
खम–क्षमा
खमवह–क्षमावह, क्षमापथ
खय–खग
खय–क्षय
खयकाल–क्षयकाल
खयर–खचर
खयरकुल–खचरकुल
खयरूव–क्षयरूप
खयंकर–क्षयंकर
खर–खर (तीक्ष्ण)
खर–क्षर
खरकिरण–खरकिरण (सूर्य)
खल–खल
खलहल–खलखल इति जलप्रवाहशब्दानुकरणे (धातुः)
खलि–खले (संबोधनेऽव्ययम्)
खलिअ–स्खलित
खवण–क्षपण
खविअ–क्षपित
खविय–क्षपित (पीडित इत्यर्थः)
खंचण–खंचन (खचित)
खंड–खण्ड् (धातुः)
खंड–खण्ड (पुष्पदन्तकवेर्नामान्तरम्)
खंडिअ–खण्डित
खंडिर–खण्डनशील
खंत–क्षान्त
खंति–क्षान्ति
खंध–स्कन्ध
खंधार–स्कन्धावार
खंधोह–स्कन्ध+ओघ
खंभ–स्तम्भ
खा–खाद् (धातुः)
खाअ–खाद् (धातुः)
खार–क्षार
खाणी–खनि
खित्त–क्षिप्त
खीण–क्षीण
खीर–क्षीर
खुड्डय–क्षुल्लक
खुज्ज–कुब्ज
खुज्जय–कुब्ज(क)
खुज्जिया–कुब्जिका (दासीत्यर्थः)
खुज्जुलिय–कुब्जा+उल्ल+क (स्वार्थे)
खुद्द–क्षुद्र
खुब्भ–क्षुब्ध
खुर–खुर
खुरुप्प–शस्त्रविशेष (मराठी–खुरपें)
खुल्ल–क्षुल्ल
खुल्लय–क्षुल्लक (मुनिजातिविशेषः)
खुंट–स्तम्भ इत्यर्थे देशी
खुंद–क्षुद् (धातुः)
खेत्त–क्षेत्र
खेत्तवाल–क्षेत्रपाल
खेम–क्षेम (लब्धस्य रक्षणम्)
खेयरत्त–खेचरत्व (आकाशगमनसामर्थ्यमित्यर्थः)
खेयरियसत्ति–खेचरिक+शक्ति
खेरि–वैरिन् इत्यर्थः [!]
खेला–खेला (पुरुषनामविशेषः)
खेलिर–क्रीडनशील
खेलोसहि–खेल (क्ष्वेड)+ओषधि
खोणियल–क्षोणीतल
खोणी–क्षोणी (भूमिरित्यर्थः)
खोल्ल–गम्भीर इत्यर्थे देशी (मराठी-खोल)

गअ–गत
गइ–गति
गइठाण–गतिस्थान
गउरविय–गौरवित
गग्गिरगिर–गद्गद+गिर्
गच्छ–गम् (गच्छ्)(धातुः)
गच्छमाण–गच्छत्
गच्छंत–गच्छत्
गण–गणय् (धातुः)
गण–गण (समूह)
गत्त–गात्र
गद्दभ–गर्दभ
गब्भ–गर्भ
गब्भासअ–गर्भाशय
गमण–गमन
गमिअ–गमित, गत
गय–गत
गय–गज
गयकाल–गतकाल
गयण–गगन
गयणयल–गगनतल
गयणयलवडिअ–गगनतलपतित
गयणंगण–गगनाङ्गण
गयदप्प–गतदर्प
गयमंदगमण–गजमन्दगमन
गयवर–गजवर
गरल–गरल
गरलुल्ल–गरल+उल्ल (स्वार्थे)
गरह–गर्ह् (धातुः)
गरुय–गुरु (क)
गरुयपवास–गुरुप्रवास (दीर्घप्रवास)
गरुहण–गर्हण
गल–गल
गलकंदल–गलकन्दल
गलच्छिय–पीडित इत्यर्थे देशी; (कदर्थित !)
गलय–गल(क) (कण्ठ)
गलिअ–गलित
गलियअ–गलित(क)
गव्व–गर्व
गह–ग्रह् (धातुः)
गह–ग्रह (ग्रहण, निरोध)
गहचक्का–ग्रहचक्का (प्रासादभूमिनामविशेषः)
गहवइ–गृहपति
गहण–गहन
गहण–ग्रहण
गहणुल्लअ–ग्रहण+उल्लअ (स्वार्थे)
गहिअ–गृहीत
गहिर–गभीर
गहीर–गभीर
गंजोल्लिय–क्षुब्ध इत्यर्थे देशी (मराठी-गाजलेले)
गंड–गण्ड (कपोलदेशः)
गंडय–गण्ड (जलमहिष, मराठी–गेंडा)
गंथ–ग्रन्थ
गंध–गन्ध
गंधजुत्त–गन्धयुक्त
गंधवंत–गन्धवत्
गंधव्व–गन्धर्व (कविनाम)
गंधव्वलच्छी–गन्धर्वलक्ष्मी
गंधव्वसेन–गन्धर्वसेन (नामविशेषः)
गंधविसय–गन्धविषय (त्वगिन्द्रिय) (गन्धो विषयो यस्येन्द्रियस्येति टिप्पणम्)
गंधहरिण–गन्धहरिण (कस्तूरिकामृग)
गंभीर–गम्भीर
गाइज्जंत–गीयमान
गाढ–गाढ
गाम–ग्राम
गामंतर–ग्रामान्तर
गाय–गै (धातुः)
गायण–गायन
गारव–गौरव
गास–ग्रास
गाह–गाह् (धातुः)

गाह–ग्राह
गाह–ग्राह (स्नेहार्थे)
गाहंत–गाहमान
गिण्ह–ग्रह् (धातुः)
गिज्ज–गैधातोः कर्मणि
गिज्ज–गेय
गिज्झ–ग्राह्य
गिरा–गिर्
गिरि–गिरि
गिल–गिल् (धातुः)
गिलण–गिलन (ग्रसन)
गिलंत–गिलन
गिल्लगंड–गिल्ल (शिबिकार्थे देशी) + गण्ड (शिबिकावाहक इत्यर्थः)
गिंभ–ग्रीष्म
गिंभारि–ग्रीष्म + अरि (वर्षर्तुरित्यर्थः)
गीअ–गीत
गीय–गीत
गीयसद्द–गीतशब्द
गुज्झ–गुह्य
गुण–गुण
गुणग्गल–गुणार्गला
गुणठाण–गुणस्थान
गुणमेलअ–गुणमेलन (गुणसमूह)
गुणमोयण–गुणमोचन
गुणवंत–गुणवत्
गुणसायर–गुणसागर
गुणसिंधु–गुणसिन्धु
गुणसेढि–गुणश्रेणि (अण० मिच्छ मीस इत्यादीनि क्षपकश्रेण्युक्तानि गुणस्थानानीत्यर्थः)
गुणहणणि–गुणहननी (गुणघातिकेत्यर्थः)
गुणिय–गुणित (अभ्यस्त)
गुत्तिय–सक्त इत्यर्थे देशी (मराठी–गुंतलेली)
गुप्प–गुप् (धातुः)
गुरु–गुरु
गुरुकमारूढ–गुरुक्रमारूढ (गुरुपरंपराप्राप्त इत्यर्थः)
गुरुक्क–गुरु(क), (महदित्यर्थे)
गुरुयण–गुरुजन
गुलगुल–गजशब्दानुकरणे (धातुः)
गुह–गुह्य
गुंछ–गुच्छ
गुंजा–गुञ्जा (फल)
गुंफ–गुल्फ
गूढ–गूढ
गेय–गेय (गीत)
गेह–गेह
गो–गो
गोउर–गोपुर
गोउल–गोकुल
गोत्त–गोत्र
गोदाण–गोदान
गोदुह–गोदोह
गोमिणि–गोमिनी
गोवइय–गोपति (क)
गोवड्ढण–गोवर्धन (श्रेष्ठिनाम)
गोवाल–गोपाल
गोवि–गोपी
गोविट्ठिणिविट्ठ–गोविष्टिनिविष्ट (गोष्ठीनिविष्ट ?)
गोसिंग–गोशृङ्ग
गोसुय–गोसुत
गोसुंड–गो+शुण्डा
गोह–पुरुष इत्यर्थे देशी
गोह–गोधा (प्राणिविशेषः)
गोहय–गोधा
गोहण–गोधन

घग्घरा–किङ्किणीशब्दार्थे देशी(मराठी-घागऱ्या)
घग्घरोली–घग्घर+ओली (किङ्किणीपङ्क्तिः)

घट्टण–घट्टन (सवर्ग)
घट्ठ–घृष्ट
घट–घटय् (धातुः)
घड–घट
घडिअ–घटित
घण–घन (निविड)
घण–घन–(मेघ)
घम्मवारि–घर्मवारि (स्वेदजलमित्यर्थः)
घय–घृत
घर–गृह
घरत्थ–गृहस्थ
घरदार–गृह+दार (कलत्र)
घरदासि–गृहदासी
घरभार–गृहभार
घरलंजिया–गृहदासीत्यर्थे देशी
घरवइ–गृहपति
घरिणी–गृहिणी
घल्ल–प्र+क्षिप् इत्यर्थे देशी (धातुः)
घल्लिअ–क्षिप्त इत्यर्थे देशी
घवघव–गन्धप्रसरणे देशी (धातुः)
घंघल–कलहार्थे देशी
घाअ–घात
घाइअ–घातित
घाण–घ्राण
घार–खगजातियः पक्षिविशेषः
घित्त–क्षित, गृहीत इत्यर्थे देशी
घित्तअ–क्षित (क)
घिप्प–ग्रहधात्वर्थे देशी
घिव–क्षिप् इत्यर्थे देशी (धातु·)
घुग्घुस–घू घू इति शब्दकरणशील
घुट्ट–घुट् इति पानशब्दानुकरणे (धातुः)
घुट्ठ–घुष्ट
घुम्म–घूनने देशी (धातुः) (मराठी घुमणें)
घुरुहुरंत–घुरघुरुशब्दं कुर्वत्
घुलिय–घुलित (चञ्चल इत्यर्थः)
घुसिण–घुसृण
घूय–घूक
घोड–घोट (अश्व इत्यर्थः । मराठी–घोडा)
घोणस–गोनस (सरीसृपविशेषः)
घोर–घोर
घोलंत–घोलत् (भ्रमन्नित्यर्थः)
घोलिर–घोलनशील (लुण्टनशील इत्यर्थः)
घोस–गुच्छार्थे देशी (मराठी–घोस)
घोस–घोष (शब्द)

चउ–चतुर्
चउकसाय–चतुष्कषाय
चउगइ–चतुर्गति
चउत्थी–चतुर्थी
चउदस–चतुर्दशन्
चउदार–चतुर्द्वार
चउप्पअ–चतुष्पद
चउप्पय–चतुष्पद
चउपास–चतुष्पार्श्व
चउभेय–चतुर्भेद
चउरय–चक्रप (चक्रवाक ?)
चउरासी–चतुरशीति
चउरि–लग्नमण्डप इत्यर्थे देशी (गुजराथी–चोरी)
चउविह–चतुर्विध
चउसण्णा–चतु संज्ञा
चक्क–चक्र
चक्कणाह–चक्रनाथ
चक्कवट्टि–चक्रवर्तिन्
चक्ख–आस्वादने देशी (धातुः)
चक्खु–चक्षुष्
चक्खुगम्म–चक्षुर्गम्य
चच्चंकिय–चर्चित
चच्चर–चत्वर (चतुष्पथ)
चच्चिअ–चर्चित
चच्चिकिय–चर्चित (लिप्त इत्यर्थः)
चच्चिय–चर्चित

चट्टण–नाशक (भक्षक) इत्यर्थे देशी
चट्टय–उत्पूत इत्यर्थे देशी (?)
चट्टुय–यष्टी इत्यर्थे देशी
चट्टुयफल–यष्टयग्रनिहितलोहमयाङ्कुश इत्यर्थः
चड–आ+रुह् इत्यर्थे देशी (धातुः)
चडाविय–आरोहित इत्यर्थे देशी
चडिर–आरोहणशील
चत्त–त्यक्त
चत्तअ–त्यक्त (क)
चत्तारि–चतुर्
चप्प–पीडने देशी (धातुः)
चप्पड–तैलाभ्यङ्गे देशी (धातुः)
चप्परि–सत्वरम्
चमक्क–चमत्कार
चमर–चमर (पुच्छ)
चमर–चामर
चमराणिल–चामरानिल
चम्म–चर्मन्
चम्मचक्खु–चर्मचक्षुष्
चम्मट्ठिसेस–चर्मास्थिशेष
चय–त्यज् (धातुः)
चयारि–चत्वारि
चर–चर् (धातुः)
चरण–चरण (पद)
चरण–चरण (व्रताद्यनुष्ठानम्)
चरणजुयल–चरणयुगल
चरंत–चरत्
चरित्त–चरित, चारित्र
चरिय–चारित्र, चरित
चरु–चरु
चरुअ–चरु(क) (नैवेद्य इत्यर्थः)
चल–चल् (धातुः)
चल–चल
चलचामर–चलच्चामर
चलण–चरण (पद)
चलवल–धूनने (धातुः)
चलिअ–चलित
चलिय–चलित
चलियअ–चलित (क)
चल्ल–चल् (धातुः)
चल्लिय–चलित
चव–वच्धात्वर्थे देशी
चवल–चपल
चविअ–उक्त, जल्पित
चंग–सुन्दरार्थे देशी
चंचल–चञ्चल
चंचु–चञ्चू
चंचूजीविअ–चञ्चूजीविक (पक्षीत्यर्थः)
चंड–चण्ड
चंडमारी–चण्डमारी (कात्यायनी)
चंडयम्म–चण्डकर्मन् (राजपुरुषनामविशेषः)
चंडाल–चाण्डाल
चंडियसमाण–चण्डीसमान (देवीतुल्य)
चंद–चन्द्र
चंदण–चन्दन
चंदप्पह–चन्द्रप्रभ (अष्टमतीर्थंकरनाम)
चंदमइ–चन्द्रवती, अथवा, चन्द्रमति (यशोधरजननीनाम)
चंदमुही–चन्द्रमुखी
चंदसिरि–चन्द्रश्री
चंदायण–चान्द्रायण (तपोविशेषः)
चंदावहत्त–चन्द्राभवक्त्र (पूर्णिमाचन्द्रसदृश-वदनयुक्तः। अथवा, चन्द्रः अधोवृत्तो यस्य; अष्टमतीर्थंकरस्य चन्द्रचिह्नत्वात्)
चंदुज्जल–चन्द्रोज्ज्वल
चंप–पीडने देशी (धातुः)
चंपय–चम्पक
चाअ–त्याग (औदार्य)
चामर–चामर
चामीयर–चामीकर
चामुंडचंड–चामुण्डचण्ड (भयंकर इत्यर्थः)

चाय–त्याग
चायय–चातक (पक्षिविशेषः)
चारण–चारण
चारित्त–चारित्र
चारु–चारु
चालुय–चालन्या शोधित इत्यर्थे देशी (मराठी-चाळलेलें)
चालण–चालन
चास–चाष (पक्षिविशेषः)
चि–चित् (अवधारणे एवार्थेऽव्ययम्)
चिक्कम–चंक्रम् (धातुः)
चिक्खिल्ल–कर्दमार्थे देशी
चिचि–अग्निशब्दार्थे देशी
चिण्ण–चीर्ण
चित्त–चित्र (आश्चर्येऽव्ययम्)
चित्त–चित्त
चित्तय–व्याघ्रजातिविशेषः (मराठी–चित्ता)
चित्तल–चित्रल (चित्रित इत्यर्थः)
चित्तसेण–चित्रसेन
चित्तंगअ–चित्रंगत
चित्तुवलक्ख–चित्त+उपलक्ष
चिया–चिता
चिर–चिरम्
चिरजीविन्–चिरजीविन्
चिरजीविअ–चिरजीवित
चिरणर–चिरनर (पुराणपुरुष इत्यर्थः)
चिराउस–चिरायुष्
चिराण–चिरतन
चिरु–चिरम्
चिलाय–किरात
चिलिसावण–जुगुप्साकर इत्यर्थे देशी (मराठी–चिळसवाणें)
चिहुर–चिकुर (केश)
चिहुरभार–चिकुरभार
चिंचइय–चर्चित (भूषित इत्यर्थः)
चिंत–चिन्तय् (धातुः)
चिंध–चिह्न (केतुः ध्वजादिकं वा)
चिंध–वस्त्रखण्डमित्यर्थे देशी (मराठी–चिंधी)
चीर–चीर (वस्त्र)
चीरखंड–चीरखण्ड
चीरिया–चीरिका (मराठी–चिरडी)
चीवर–चीवर
चुअ–च्युत
चुक्क–भ्रश् इत्यर्थे देशी (धातुः)
चुण–भक्षणे देशी (धातुः) (पक्षिणा भक्षणे एव युज्यते)
चुमुचुम–कीरशब्दानुकरणे (धातुः)
चुंब–चुम्ब् (धातुः)
चुंबण–चुम्बन
चुंबंत–चुम्बत्
चुंबिअ–चुम्बित
चूडामणि–चूडामणि
चूडारयण–चूडारत्न
चूय–चूत
चूरिय–चूर्ण
चूलि–कुक्कटी
चे–मृ इत्यर्थे देशी (धातुः) (चेइवि=मृत्वा)
चेईहर–चैत्यगृह
चेयण–चेतन
चेयणाल–चेतना+आल (मत्वर्थीयः)
चेल–चेल (वस्त्र)
चेलिय–चेटी
चेली–चीरी (वस्त्र)
चोज्ज–कौतूहलार्थे देशी
चोप्पड–म्रक्षणे देशी (धातुः)
चोर–चोर
चोरउल–चोरकुल

छ–षट्
छइय–छादित, शोभित
छज्ज–शोभाया देशी (धातुः)
छज्जीवणिकाय–षड्जीवनिकाय (पृथिव्यसे-

जीवायुत्रसवनस्पतिकायाः)
छट्ठ–षष्ठ
छडय–उपलेप इत्यर्थे देशी (गोमयादिभिः प्राङ्गणादिकस्योपलेपः । मराठी–सडा)
छडया–छटा
छड्ड–त्यज्धात्वर्थे देशी
छण–क्षण
छणयंद–क्षण+चन्द्र (पूर्णिमाचन्द्र इत्यर्थः)
छण्ण–छन्न (आच्छादित)
छत्त–छत्र
छत्तछाय–छत्र+छाया
छद्दंसण–षड्दर्शन (साङ्ख्ययोगन्यायवैशेषिक-पूर्वोत्तरमीमांसारूपाणि)
छप्पय–षट्पद (मधुकरो धूर्तश्चेति टिप्पणम्)
छम्म–छद्म
छल–छल (मिष)
छंगुलिमिअ–षडङ्गुलिमित
छंड–त्यज्धात्वर्थे देशी
छंद–छन्द (अभिप्रायविशेषः)
छंद–छन्दः (शास्त्र)
छाइअ–छादित
छाइय–छादित
छाय–छादय् (धातुः)
छार–क्षार (भस्मेत्यर्थः)
छाली–छागी (अजा)
छाव–शाव (वत्स)
छाहा–छाया
छाही–छाया
छिज्ज–छिद्धातोः कर्मणि
छिज्जंतर–छेद्यान्तर (कलास्वन्यतमा)
छिण्ण–छिन्न
छिण्णंगुलि–छिन्नाङ्गुलि
छित्त–क्षेत्र
छित्त–स्पृष्ट (छिव्धातोर्निष्ठान्तम्!)
छिद–छिद्र
छिप–स्पृश्धात्वर्थे देशी
छिव–स्पृश्धात्वर्थे देशी
छिंद–छिद् (धातुः)
छिंदण–छेदन
छुडु–क्षिप्रमित्यर्थेऽव्ययम् (देशी)
छुरिय–छुरित
छुह–क्षुध्
छुह–सुधा (चूर्ण)
छुहा–सुधा (चूर्ण)
छुहावस–क्षुद्वश
छूढ–क्षिप्त
छेअ–छेद
छेत्त–क्षेत्र
छेयण–छेदन
छेल–छाग (अज)
छेवि–छित्त्वा
छोक्करण–छूत्कार (उड्डापनशब्द इति टिप्पणम्)
छोहिय–क्षोभित

जइ–यदि
जइ–यति
जइयहु–यदा
जइवइ–यतिपति
जइवर–यतिवर
जक्ख–यक्ष
जक्खिंद–यक्षेन्द्र
जक्खी–यक्षी (यक्षिणी)
जग–जगत्
जगजीव–जगज्जीव
जगपरमेसर–जगत्परमेश्वर
जगमंडव–जगन्मण्डप
जगुत्तम–जगदुत्तम
जगरवि–जगद्रवि
जच्चंध–जात्यन्ध
जज्जर–जर्जर
जज्जरिय–जर्जरित
जड–जटा

जड–जड
जडत्तण–जडत्व
जडा–जटा
जडिय–जडित (युक्त इत्यर्थः)
जढराणल–जठर+अनल
जण–जन
जणण–जनन
जणणी–जननी
जणणुल्ल–जनन+उल्ल (स्वार्थे)
जणात्तिहर–जनार्तिहर
जणवअ–जनपद
जणवय–जनपद
जणु–इवार्थेऽव्ययम्
जण्ण–यज्ञ
जत्त–यात्रा
जत्ता–यात्रा
जत्थ–यत्र
जम–यम (नियम)
जम–यम (मृत्युदेव)
जमदूअ–यमदूत
जमसासण–यमशासन
जम्म–जन्मन्
जय–जगत्
जय–जयकारशब्द
जय–जि (धातुः)
जयकारिअ–जयकारित
जयलच्छि–जयलक्ष्मी
जयसिरी–जयश्री
जर–जरा
जरदासी–जरा (एव) दासी
जरमरण–जरामरण
जरसरि–जरा (एव) सरित्
जल–जल
जल–ज्वल् (धातुः)
जलण–ज्वलन
जलणिहि–जलनिधि
जलयर–जलचर
जलवइ–जलपति (मकर इत्यर्थः)
जलहर–जलधर
जलहि–जलधि
जालिय–ज्वलित
जलोह–जल+ओघ (जलसमूह)
जल्ल–मल इत्यर्थे देशी
जल्लोसहि–जल्ल (एव) ओषधि
जव–जप् (धातुः)
जवालअ–जव+आलअ (मत्वर्थीयः)
जस–यशस्
जसपूरियास–यशःपूरिताश (दिगन्तव्यापि-यशाः इत्यर्थः)
जसबंधुर–यशोबन्धुर (राज्ञो नामविशेषः)
जसमइ–यशोमति (यशोधरपुत्रस्य नाम)
जसवइ–यशोमति (यशोधरपुत्रस्य नामान्तरम्)
जससेस–यशःशेष (सकलमपि भुवनस्थं यश इत्यर्थः)
जसहर–यशोधर
जसहरक्ख–यशोधराख्य
जसोह–यशोर्ह, यशोर्घ, यशओघ इति वा (यशोधरपितुर्नाम)
जह–यथा
जहिं–यत्र
जंगल–जाङ्गल (मास)
जंगलय–जाङ्गल (क)
जंघा–जङ्घा
जंघाबल–जङ्घाबल
जंत–यात्
जंप–जल्प् (धातुः)
जंपति–जल्पन्ती
जंपाण–यानविशेषे देशी
जंबुदीव–जम्बूद्वीप
जंबूणय–जाम्बूनद (सुवर्ण)
जा–या (धातुः)
जाअ–जात

जाइ–जाति
जाण–ज्ञा (धातुः)
जाण–यान
जाणवत्त–यानपात्र
जाणिय–ज्ञात (प्रसिद्ध इत्यर्थः)
जाणु–जानु
जाणुय–जानु(क)
जाम–यावत्
जायअ–याचक
जार–जार (उपपति)
जारासत्त–जारासक्त
जाल–जाल
जाल–जाल (समूहार्थे समासान्ते एव)
जाल–ज्वालय् (धातुः)
जाल–ज्वाला
जालगवक्ख–जालगवाक्ष
जालंधर–जालंधर (धीवर इत्यर्थः)
जाव–यावत्
जि–चित् (अवधारणे एवार्थेऽव्ययम्)
जिअ–जीव
जिज्ज–याधातोः कर्मणि (यायते, याप्यते इत्यर्थे)
जिण–जिन
जिणदिक्खा–जिनदीक्षा
जिणधम्म–जिनधर्म
जिणमग्ग–जिनमार्ग
जिणमंदिर–जिनमन्दिर
जिणयत्त–जिनदत्त
जिणवयण–जिनवचन
जिणवर–जिनवर
जिणसुत्त–जिनसूक्त, जिनसूत्र (जिनभाषित-मित्यर्थः)
जिणियसत्तु–जितशत्रु
जिणुत्त–जिनोक्त
जिप्प–जिधातोः कर्मणि
जिमिअ–जेमित (भुक्त)
जिमिय–जेमित (भुक्त)
जिम्म–भुज्धात्वर्थे देशी
जिय–जित
जिय–जीव् (धातुः)
जियसत्तु–जितशत्रु
जियारि–जितारि
जिह–यत्र
जीअ–जीव
जीर–जीरक (मराठी–जिरें)
जीरवण–जीरण (पाचन इत्यर्थे)
जीव–जीव
जीवउल–जीवकुल
जीवकए–जीवकृते
जीवदया–जीवदया
जीवंत–जीवत्
जीवमित्ती–जीवमैत्री
जीवरासि–जीवराशि
जीवसहाअ–जीवस्वभाव
जीवहिंस–जीवहिंसा
जीवावहारी–जीवापहारिन्
जीवाहार–जीवाहार
जीविअ–जीवित
जीह–जिह्वा
जीहादल–जिह्वादल
जुअ–युत
जुइजुत्तिय–द्युतियुक्त
जुज्ज–युज्धातोः कर्मणि
जुज्झिर–योधनशील
जुत्त–युक्त
जुत्ति–युक्ति
जुण्ण–जीर्ण
जुय–युग
जुयल–युगल
जुयलुल्ल–युगल+उल्ल (स्वार्थे)
जुव–युग
जुवई–युवति

जुवरायपट्ट–युवराजपट्ट
जुवाण–युवन्
जुहिट्ठिल–युधिष्ठिर
जूरिअ–खेदित इत्यर्थे देशी
जूह–यूथ
जूहाहिअ–यूथाधिप
जूहिंद–यूथेन्द्र
जूहेस–यूथेश
जेत्तहिं–यत्र, यावति
जेत्थ–यत्र
जेत्थु–यत्र
जेम–यथा
जेवणवेल–जेमन (भोजन)+वेला
जोअ–योग (अलब्धस्य लाभ इत्यर्थः)
जोइ–योगिन्
जोइणि–योगिनी
जोइणिपुज्ज–योगिनीपूजा
जोइणिपुर–योगिनीपुर (नगरनाम)
जोइस–ज्यौतिष (शास्त्र)
जोईस–योगीश
जोईसर–योगीश्वर
जोगवट्ट–योगपट्ट
जोग्ग–योग्य
जोणी–योनि (प्रभव)
जोण्ह–ज्योत्स्ना
जोण्हा–ज्योत्स्ना
जोय–अवलोकने देशी (धातुः)
जोव्वण–यौवन
जोह–योध
जोहेयअ–यौधेय(क) (जनपदनामविशेषः)

झडत्ति–झटिति
झडप्पण–आक्रमणार्थे देशी (मराठी–झडप)
झड–विद्रावणे देशी (धातुः)
झत्ति–झटिति
झरंत–क्षरत

झल–उष्मा इत्यर्थे देशी (मराठी–झळ)
झल्लिर–धारायुक्त इत्यर्थे देशी
झस–झष (मत्स्य)
झस–झष (आयुधविशेष)
झळक्क–कथ्धात्वर्थे देशी
झंकार–झङ्कार
झंख–आच्छादने देशी (धातुः)
झंप–आच्छादने देशी (धातुः)
झंपडिय–मुक्तविरल इत्यर्थे देशी (मुक्तविरल इति टिप्पणम्)
झा–ध्यै (धातुः)
झाइय–ध्यात
झाण–ध्यान
झाणारूढ–ध्यानारूढ
झाय–ध्यै (धातुः)
झिल्लिरि–झिल्लिरी (प्राणिविशेष)
झीण–क्षीण
झुण–ध्वन् (धातु)
झुणि–ध्वनि
झुलंत–वेपमान इत्यर्थे देशी (मराठी–झुलणें)
झूर–खेदे देशी (धातुः) (मराठी–झुरणें)

टिविल–वाद्यविशेष
टोप्पी–शिरआच्छादने देशी (मराठी–टोपी)

ठक्कुर–ठक्कुर (वंशनाम)
ठव–स्थापय् (धातुः)
ठा–स्था (धातुः)
ठाण–स्थान
ठिअ–स्थित
ठिय–स्थित

डज्झ–दह् (धातुः)
डर–भये देशी (धातुः)
डस्–दश् (धातुः)
डसण–दशन

डह–दह् (धातुः)
डहर–दहर (बाल इत्यर्थः)
डंभ–दम्भ
डंभधारि–दम्भधारिन्
डंस–दश्(धातुः)
डाइणि–डाकिनी (प्रेतपिशाचादिस्त्रीविशेष.)
डिंडिम–डिण्डिम (वाद्यविशेष.)
डिंभ–डिम्भ (शिशु, बालक)
डिंभय–डिम्भ (क)
डुल्ल–धूनने देशी (धातुः)
डोर–सूत्र इत्यर्थे देशी (मराठी–दोर)
डोल्ल–धूनने देशी
डोंब–चाण्डालजातिविशेष

ढक्का–ढक्का (वाद्यविशेष)
ढड्डर–राक्षसप्रेतपिशाचादय इति टिप्पणम्
ढुंख–शुष्क इत्यर्थे देशी (पत्रपुष्पफलादि-रहित इत्यर्थे)
ढिड्डिस–पिष्ट (धान्यादीना पिष्टमिति टिप्पणम्)
ढुक्क–ढौकित (प्रसृत इत्यर्थे देशी)
ढेक्कार–वृषभशब्दानुकारशब्दः (मराठी–ढेकर)
ढोअ–ढौकय् (धातुः)
ढोइय–ढौकित

ण–न (निषेधेऽव्ययम्)
णअ–नय
णइ–नदी
णइतीर–नदीतीर
णइवाह–नदीप्रवाह
णउल–नकुल
णक्क–नासाशब्दार्थे देशी (मराठी–नाक)
णक्ख–नख
णग्ग–नग्न
णग्गी–नग्न
णग्गुडि–चारणादिवन्दिवर्ग इत्यर्थे देशी (भट्ट-भाट ! इति टिप्पणम्) १–२७–१.
णग्गोह–न्यग्रोध
णच्च–नृत् (धातुः)
णच्चण–नर्तन
णच्चंत–नृत्यत्
णच्चावय–नर्तय् (धातुः)
णच्चिय–नर्तित
णज्ज–ज्ञा (धातुः)
णट्ट–नाट्य
णट्ठ–नष्ट
णड–नट
णडिअ–वञ्चित इत्यर्थे देशी
णण्ण–नन्न (नन्द !) (भरतमहामन्त्रिणः पुत्रः)
णण्ण–न+अन्य
णत्ति–नप्त्री
णत्थि–न + अस्ति
णमि–नमि (एकविंशतीर्थंकरनाम)
णमिय–नमित
णय–नत
णय–नय (नीतिशास्त्र)
णय–नय (राजपुत्रनामाविशेषः)
णयण–नयन
णयणंजण–नयनाञ्जन
णयणंसु–नयन + अश्रु
णयणिट्ठ–नयन + इष्ट
णयणुल्ल–नयन + उल्ल (स्वार्थे)
णयर–नगर
णयरी–नगरी
णयरोह–नय + रोध (दुर्नय इत्यर्थः)
णयाणय–नय + अनय
णर–नर
णरअ–नरक
णरजम्म–नरजन्मन्
णरणाह–नरनाथ
णरत्थ–नर + अर्थ

णरय–नरक
णरयविल–नरकविल (छिद्र)
णरवइ–नरपति
णरवर–नरवर
णरवरिंद–नरवरेन्द्र
णरिंद–नरेन्द्र
णल–नल
णरंग–नराङ्ग
णव–नम् (धातुः)
णव–नव
णवकमल–नव + कमल
णवखंड–नव + खण्ड
णवपल्लव–नवपल्लव
णवयारिवि–नमस्कृत्य, १-२७-१०.
णवल्ल–नव + ल्ल (स्वार्थे)
णवविह–नवविध
णविअ–नत
णविय–नत
णह–नख
णह–नभस्
णहयर–नभश्चर
णहंत–नभस् + अन्त
णहयल–नभस्तल
णहर–नखर (नख)
णहसिरि–नभःश्री
णहुस–नहुष
णहोयरंत–नभस् + अवतरत्
णं–ननु
णंद–नन्द् (धातुः)
णंद–नन्द (आनन्द)
णंदण–नन्दन
णंदणवण–नन्दनवन
णंदंत–नन्दत्
णंदिणि–नन्दिनी (धेनुः)
णंदिय–नन्दित
णा–ज्ञा (धातुः)
णाअ–न्याय
णाइ–ननु इत्यर्थे (उत्प्रेक्षायाम् अव्ययम्)
णाइणि–नागिनी
णाइंद–नागेन्द्र
णागदत्त–नागदत्त (नामविशेषः)
णागय–न + आगत
णाडिवह–नाडीपथ
णाण–ज्ञान
णाणमअ–ज्ञानमय
णाणा–नाना
णाणागुण–नानागुण
णाणाविह–नानाविध
णाम–नामन्
णारय–नारक (नरकोद्भव इत्यर्थः)
णारिसंग–नारीसंग
णारी–नारी
णारीरूव–नारीरूप
णावइ–उपमार्थे उत्प्रेक्षार्थे चाव्ययम्
णावइ–न + आगच्छति
णाव–न + आप् (धातुः)
णास–नश् (धातुः)
णास–नाश
णास–नाशय् (धातुः)
णासा–नासा
णासउडि–नासापुटी
णाह–नाथ
णाहल–अरण्यचाण्डाल इत्यर्थे देशी
णाहि–नाभि
णिउत्त–नियुक्त
णिउणयर–निपुणतर
णिउंजिय–नियुक्त
णिए–अवलोकने देशी (धातुः)
णिकाय–निकाय (समूह)
णिकेय–निकेत (गृह)
णिक्कल–निष्कल (निःशरीर इति टिप्पणम्)
णिक्कलुण–निष्करुण

णिक्काम–निष्काम
णिक्किअ–निष्कृप
णिक्किट्ठ–निकृष्ट (नीच)
णिक्किट्ठअ–निकृष्ट(क)
णिक्खिय–निखात
णिक्खिय–निक्षिप्त
णिग्गम–निर्गम
णिग्गमण–निर्गमन
णिग्गयमइ–निर्गतमति
णिग्गह–निग्रह
णिग्गह्–नि + ग्रह् (धातुः)
णिग्गंत–निर्गच्छत्
णिग्गंथवित्ति–निर्ग्रन्थवृत्ति
णिग्गुण–निर्गुण
णिग्घिण–निर्घृण
णिच्च–नित्य
णिच्चं–नित्यम् (अव्ययम्)
निच्चल–निश्चल
णिच्चलमइ–निश्चलमति
णिच्चिट्ठ–निश्चेष्ट
णिच्चेयण–निश्चेतन
णिच्चोरमारि–निस्+चोर+मारी (जनपदोद्ध्वंसनो रोगादिः)
णिच्छअ–निश्चय
णिच्छवि–निश्छवि (निस्तेजस्)
णिज्ज–नीधातोः कर्मणि
णिज्जण–निर्जन
णिज्जर–निर्जर
णिज्जिय–निर्जित
णिज्जियमइय–निर्जितमति(क)
णिज्जीव–निर्जीव
णिज्झर–निर्झर
णिट्ठा–निष्ठा
णिट्ठावस–निष्ठावश
णिट्ठिय–निष्ठित (समाप्त, मृत)
णिट्ठुर–निष्ठुर
णिड्डह्–निर्दह् (धातुः)
णिणह–निनाद
णिणाअ–निनाद
णिणाइय–निनादित
णिण्णाण–निर्ज्ञान (अज्ञान)
णिण्णाम–निर्नाम (अज्ञातनामा)
णिण्णासण–निर्नाशन
णिण्णेह–निःस्नेह
णित्त–नीत, (प्राप्त) (नीधातोर्निष्ठान्तम्)
णित्तेय–निस्तेजस्
णित्थाम–निःस्थामन्
णिद्द–निद्रा
णिद्दय–निर्दय
णिद्दलिय–निर्दलित
णिद्दिट्ठ–निर्दिष्ट
णिद्ध–स्निग्ध
णिद्धण–निर्धन
णिद्धम्म–निर्धर्म
णिद्धाड–प्रेरणे देशी (धातुः)
णिद्धाम–निर्धामन्
णिप्पहरण–निष्प्रहरण
णिप्पाण–निष्प्राण
णिप्पेय–निष्पेय
णिप्फल–निष्फल
णिबद्ध–निबद्ध
णिबद्धी–निबद्धा (विरचितेत्यर्थः)
णिबंध–निबन्ध (निबन्धन)
णिब्बंधु–निर्बन्धु
णिब्बुड–निस्+मस्ज्धात्वर्थे देशी
णिब्भच्छिय–निर्भर्त्सित
णिब्भिण्ण–निर्भिन्न
णिब्भोइल्ल–निर्+भोग+इल्ल (मत्वर्थीयः)
णिमीलण–निमीलन
णिमेस–निमेष
णिम्मल–निर्मल
णिम्मलय–निर्मल (क)

णिम्मंस–निर्मांस
णिम्महण–निमथन
णिम्मा–निर्+मा (धातुः)
णिम्मुक्क–निर्मुक्त
णिम्मुक्तताण–निर्मुक्तत्राण
णिम्मोह–निर्मोह
णिय–अवलोकने देशी (धातुः)
णिय–निज
णिय–नीत
णियघर–निजगृह
णियच्छ–दृश्धात्वर्थे देशी
णियच्छिय–निरीक्षित
णियडअ–निकट(क)
णियड्डिय–निकर्षित
णियम–नियम
णियमण–निजमनस्
णियय–निज(क)
णिययसिरि–निजक+श्री
णियर–निकर
णियाण–निदान
णिरअ–निरत
णिरलंकार–निरलकार
णिरवसेस–निरवशेष
णिरस–नीरस
णिरसिय–निरसित (परित्यक्त)
णिरत्थ–निरर्थ (व्यर्थ)
णिरत्थ–निरस्त
णिरंजण–निरञ्जन
णिरंतर–निरन्तर
णिरंस–निरंश (अखण्ड इत्यर्थः)
णिरिक्खिअ–निरीक्षित
णिरु–नितराम्
णिरुत्त–निरुक्त
णिरुवम–निरुपम
णिरूविय–निरूपित
णिरोहिअ–निरुद्ध
णिलअ–निलय (गृह)
णिलाड–ललाट
णिलीण–निलीन
णिल्लुणण–निर्लवन (छेद इत्यर्थः)
णिल्लुत्त–निर्लुप्त
णिव–नृप
णिवइ–नृपति
णिवड–नि+पत् (धातुः)
णिवडिय–निपतित
णिवस–नि+वस् (धातुः)
णिवसण–निवसन
णिवसुया–नृपसुता
णिवह–निवह
णिवारण–निवारण
णिवारणिअ–निवारणीय
णिवास–निवास
णिविट्ठ–निविष्ट
णिविड–निबिड
णिविडत्थवंत–निविड+अर्थवत्
णिवित्ति–निवृत्ति
णिव्वट्टिअ–निर्वर्तित
णिव्वण–निर्वन
णिव्वाइअ–प्रसारित इति टिप्पणम्
णिव्वाण–निर्वाण
णिव्वियड–निर्विकट
णिव्वियप्प–निर्विकल्प
णिव्वूढ–निर्व्यूढ
णिव्वेअ–निर्वेद
णिस–निशा
णिसण्ण–निषण्ण
णिसंग–निःसंग
णिसा–निशा
णिसायर–निशाचर
णिसायरि–निशाचरी
णिसिचार–निशिचार (निशि वृत्तमित्यर्थे)
णिसिद्ध–निषिद्ध

णिसिभोयण–निशाभोजन
णिसियग्ग–निशिताग्र
णिसियर–निशिचर (भूतप्रेतपिशाचादि)
णिसुण–नि+श्रु (धातुः)
णिसुंभ–नि+शृम्भ् (धातुः)
णिसुभ–निश्चय (निःस्तब्ध इत्यर्थः)
णिस्संक–निःशङ्क
णिहअ–निभ(क) (सदृशार्थे)
णिहण–निधन
णिहय–निहत
णिहाण–निधान
णिहाल–नि+भालय् दर्शने (धातुः)
णिहालण–निभालन (प्रेक्षण)
णिहालिय–निभालित (दृष्ट)
णिहि–निधि
णिहित्त–निहित
णिहिप्प–नि+धा (धातुः)
णिहुय–निभृत (शान्त इत्यर्थः)
णिहेलण–निहेलन (गृहमित्यर्थे)
णिंद–निन्द् (धातुः)
णिंदा–निन्दा
णिंदण–निन्दन
णिंदमग्ग–निन्द्य+मार्ग
णी–नी (धातुः)
णीअ–नीत
णीणिय–निर्गीत
णीयरय–नीच+रत
णीर–नीर
णीरस–नीरस
णीरोयत्तण–नीरोगत्व
णील–नील
णीलय–नीलक
णीसण–निःस्वन
णीसरिअ–निःसृत
णीसेस–निःशेष
णेउर–नूपुर

णेत्त–नेत्र
णेमि–नेमि (द्वाविंशतीर्थंकरनाम)
णेमि–नेमि (रथचक्रधारेति टिप्पणम्)
णेयार–नेतृ
णेवाविअ–नायित (नीधातोर्णिजन्तान्निष्ठान्तम्)
णेह–स्नेह
ण्हविअ–स्नापित
ण्हा–स्ना (धातुः)
ण्हाअ–स्नात
ण्हाण–स्नान

तइ–तदा
तइ–त्रयी
तइय–तदा
तइय–तृतीय
तइयच्छि–तृतीय+अक्षि
तइयहु–तदा
तउ–तपस्
तक्कर–तस्कर
तक्खण–तत्क्षण
तज्जिय–तर्जित
तट्ठ–त्रस्त
तट्ठअ–धृष्टशब्दार्थे देशी (मराठी–ताठ)
तड–तट
तड–तड् (आरुह इत्यर्थे देशी, धातुः)
तडतड–शब्दानुकरणे
तण–तृण
तणअ–तस्येदमित्यर्थे देशी प्रत्ययः
तणअ–तनय
तणय–तनय
तणयर–तृणचर
तणयरी–तृणचरी
तणियड–तद्+निकट
तणु–तनु (शरीर)
तणुअंगि–तन्वङ्गी

तणुतावअ–तनुतापक
तणुफंस–तनुस्पर्श
तणुरुह–तनुरुह
तणुल्लय–तनुलता
तण्हा–तृष्णा
तत्त–तप्त
तत्तिय–तृप्त
तत्थ–तत्र
तप्प–तप्धातोः कर्मणि
तम–तमस्
तमतमपह–तमस्तमःप्रभ (सप्तमनरकनाम)
तमपह–तमःप्रभ (षष्ठनरकनाम)
तमाल–तमाल
तमोह–तमस्+ओघ
तर–शक्धात्वर्थे देशी
तर–तृ (धातुः)
तरच्छ–तरक्षु (प्राणिविशेषः) (मराठी–तरस)
तरणि–तरणि (सूर्य)
तरसा–तरसा (वेगेनेत्यर्थः)
तरंग–तरङ्ग
तरंगिणि–तरङ्गिणी
तरु–तरु
तरुकाय–तरुकाय (वनस्पतिकाय इत्यर्थः)
तरुण–तरुण
तरुणी–तरुणी (युवति)
तरुणीवस–तरुणी+वश
तरुवेल्लीहल–तरु+वल्ली+फल
तरुसाहागय–तरु+शाखा+गत
तरुसाहार–तरु+सहकार
तल–तैलादिमर्जने (धातुः)
तलण–तलन
तलवर–ग्रामरक्षको राजपुरुष इत्यर्थे देशी
तलारअ–तलवर (क)
तलिय–तलित
तव–तप् (धातुः)
तव–तपस्
तवपहाअ–तपःप्रभाव
तवमंडण–तपोमण्डन
तवयरण–तपश्चरण
तवलच्छी–तपोलक्ष्मी
तववंत–तपस्+वत् (मत्वर्थीयः)
तवसत्ति–तपःशक्ति
तवसित्तण–तपस्वित्व
तवंग–उपरितनो भागः (उच्चप्रदेश इति टिप्पणम्। मराठी–तवंग ?)
तवंत–तप्यमान
तविअ–तप्त
तस–त्रस् (धातुः)
तहिं–तत्र
तहु–तदा, तत्र, तस्य
तंणयर–तद्+नगर
तंत–तन्त्र
तंति–तन्त्री
तंतु–तन्तु
तंदुल–तण्डुल
तंब–ताम्र
तंबचूल–ताम्रचूड (कुक्कुट)
तंबोल–ताम्बूल
तंबोललग्ग–ताम्बूल+लग्न
तंवार–तवार (नरकनाम)
ता–तावत्
ताडण–ताडन
ताडिय–ताडित
ताम–तदा
तामस–तामस (पापमित्यर्थः)
तार–तार (शुभ्र)
ताराणियर–तारानिकर
तारावलि–तारा+आवलि
ताल–ताल
तालिअ–ताडित
ताव–ताप

तावस–तापस
तासिय–त्रासित
ति–त्रि
तिक्ख–तीक्ष्ण
तित्त–तिक्त
तिगिच्छ–मकरन्द इत्यर्थ देशी
तिगुत्ति–त्रिगुप्ति (कायवाङ्मनोगुप्ति)
तिजगब्भंतर–त्रिजगदभ्यन्तर
तिण्हा–तृष्णा
तिण–तृण
तित्थ–तीर्थ
तित्थयर–तीर्थंकर (शास्त्रप्रवर्तक इत्यर्थः)
तित्तु–तप्त
तिदंड–त्रिदण्ड
तिप्प–तृप् (धातु.)
तिम्मण–तेमन (मर्दन)
तिमिर–तिमिर
तिमुंड–त्रिमुण्ड
तिय–स्त्री
तियचित्त–स्त्रीचित्त
तियडुय–त्रिकटुक (शुण्ठी मरिच पिप्पलीति त्रयाणां चूर्णम्)
तियमइ–स्त्रीमति
तियसपत्ति–त्रिदशपत्नी (देवीत्यर्थः)
तियाल–त्रिकाल
तिरयण–त्रिरत्न (ज्ञानदर्शनचारित्राणि)
तिरिय–तिर्यञ्च्
तिरिक्ख–तिर्यञ्च्
तिरियलोअ–तिर्यग्लोक (मनुष्यलोक इति टिप्पणम्)
तिलअ–तिलक
तिलपिंट–तिल+पिण्ड (पिण्याक) (मराठी–पेंड)
तिलयछेअ–तिल(क)+छेद (शोभाभाव इति टिप्पणम्)
तिलिंग–स्त्रीलिङ्ग
तिल्लोअ–त्रैलोक्य
तिल्लोक–त्रैलोक्य
तिल्लोय–त्रैलोक्य
तिव्व–तीव्र
तिविह–त्रिविध
तिसल्ल–त्रिशल्य
तिसूल–त्रिशूल
तिसूलिणि–त्रिशूलिनी (कात्यायनी)
तिह–तत्र
तिहुयण–त्रिभुवन
तिहुवण–त्रिभुवन
तीय–तृतीया
तीस–त्रिंशत्
तुच्छोअरिल्ल–तुच्छ+उदर+इल्ल (मत्वर्थीयः)
तुट्ठ–तुष्ट
तुट्ठि–तुष्टि
तुडिय–त्रुटित
तुप्प–घृतशब्दार्थ देशी
तुम्हारिस–युष्मादृश
तुरअ–तुरग
तुरयणिहणयारि–तुरगनिधनकारिन्
तुरंग–तुरङ्ग
तुरंत–त्वरमाण
तुरिउ–त्वरितम् (अव्ययम्)
तुलकूड–तुलाकूट (वञ्चनार्थं प्रयुक्तानि न्यूनातिरिक्तानि मानोन्मानानीत्यर्थः)
तुलाकोडि–तुलाकोटि (पादाङ्गुदम्)
तुस–तुष् (धातुः)
तुस–तुष (धान्यादीना तुषम्)
तुसार–तुषार
तुहार–त्वदीय
तुंग–तुङ्ग (उच्च)
तुंगत्थणि–तुङ्गस्तनी
तुंड–मुखशब्दार्थे देशी
तूर–तूर्य (वाद्यविशेषः)
तेअ–तेजस्

तेत्तहिं–तत्र
तेत्थ–तत्र
तेत्थु–तत्र
तेय–तेजस्
तेयाविद्धी–तेजस्+आविद्धा
तेरह–त्रयोदश
तेरहसय–त्रयोदशशत
तेल्ल–तैल
तोडिअ–त्रुटित
तोमर–तोमर (आयुधविशेषः)
तोरण–तोरण
तोस–तोष
तोसिअ–तोषित

थक्क–स्था (धातुः)
थक्क–स्तब्ध, स्थित इत्यर्थे देशी
थत्ति–स्थान इत्यर्थे देशी
थण–स्तन
थणवट्ट–स्तनपट्ट, स्तनवर्त (वर्तुल)
थणाल–स्तन+आल (मत्वर्थीयः)
थरहर–कम्पने देशी (धातुः)
थल–स्थल
थलयर–स्थलचर
थंभ–स्तम्भय् (धातुः)
था–स्था (धातुः)
थाणु–स्थाणु
थाल–स्थाली
थिअ–स्थित
थिप्प–गलने देशी (धातुः)
थिय–स्थित
थिर–स्थिर
थिरमण–स्थिरमनस्
थी–स्त्री
थीयण–स्त्रीजन
थुइवयण–स्तुतिवचन
थुण–स्तु (धातुः)
थुत्ति–स्तुति
थुय–स्तुत
थूण–अश्वशब्दार्थे देशी
थूल–स्थूल
थेरि–स्थविरा
थोअ–स्तोक
थोट्ट–छिन्नहस्त इत्यर्थे देशी (मराठी–थोटा)
थोर–स्थूल
थोरंसुय–स्थूल+अश्रु (क)
थोव–स्तोक

दइच्च–दैत्य
दइय–दयित
दइव–दैव
दक्खविय–दर्शित
दक्खालय–दर्शय् (धातुः)
दट्ठ–दष्ठ
दड्ढ–दग्ध
दढयर–दृढतर
दप्प–दर्प
दप्पसंग–दर्पसंग
दप्पिट्ठ–दर्पिष्ठ
दप्पुब्भड–दर्पोद्भट
दब्भ–दर्भ
दम–दम् (धातुः)
दम–दम
दमण–दमन
दमिय–दमित
दय–दया
दयविवेअ–दयाविवेक (दयायाः विवेकः भावः, दयाबुद्धिरित्यर्थः)
दयवेल्लि–दयावल्ली
दया–दया
दयावर–दयापर
दल–दल (पत्रमित्यर्थः)
दलण–दलन

दव-दव (दवानल इत्यर्थः)
दविण-द्रविण
दविणवइ-द्रविणपति (कुबेर)
दव्व-द्रव्य
दस-दशन्
दससहस्स-दशसहस्र
दह-दशन्
दह-ह्रद
दहंत-दहन्त (दहमान इत्यर्थः)
दहि-दधि
दंड-दण्ड
दंडणीइ-दण्डनीति
दंडधारि-दण्डधारिन्
दंडपणाम-दण्ड(वत्)+प्रणाम
दंडय-दण्ड (क)
दंडिय-दण्डित
दंडी-दण्डिन् (यम इत्यर्थः)
दंत-दन्त
दंत-दान्त
दंतग्ग-दन्ताग्र
दंतपंति-दन्तपङ्क्ति
दंति-दन्तिन्
दंतुर-दन्तुर
दंद-द्वन्द्व
दंसण-दर्शन
दंसिय-दर्शित
दंसिर-दृश्+इर (शीलार्थ प्रत्यय)
(दर्शनशील इत्यर्थः)
दा-दा (धातु)
दाइणी-दायिनी (उत्तरपदे प्र.)
दाढा-दंष्ट्रार्थे देशी
दाढाकराल-दंष्ट्राकराल
दाढाल-दंष्ट्रा+आल (मत्वर्थीयः)
दाण-दान
दाणोल्लिय-दान+आर्द्र (मदजलार्द्र इत्यर्थः)
दाम-दामन्
दार-दार (स्त्री)
दार-द्वार
दारिअ-दारित
दारिद्द-दारिद्र्य
दारिय-दारित
दारुण-दारुण
दालि-दालि (शिम्बीधान्यादिदलमित्यर्थ
देशी)
दालिद्दठाण-दारिद्र्यस्थान
दालिद्दिअ-दरिद्रित
दाविअ-दर्शित
दाविर-दर्शनशील
दासिसुअ-दासीसुत
दासी-दासी
दाह-दाह
दाहिण-दक्षिण
दाहिणुल्लिय-दक्षिण+उल्लिय (स्वार्थे)
दिक्ख-दीक्षा
दिक्खा-दीक्षा
दिक्खिअ-दीक्षित
दिक्खपत्त-दीक्षाप्राप्त (दीक्षित)
दिगिंछा-जुगुप्सा
दिग्गय-दिग्गज
दिज्ज-दाधातोः कर्मणि
दिट्ठ-दृष्ट
दिट्ठपरपर-दृष्ट+परपरा
दिट्ठि-दृष्टि
दिढ-दृढ
दिण-दिन
दिणयर-दिनकर (सूर्य)
दिणिंद-दिनेन्द्र (सूर्य)
दिणेसर-दिनेश्वर (सूर्य)
दिण्ण-दत्त
दित्त-दीप्त
दिप्पत-दीप्यमान
दिय-दत्त

दियउल–द्विजकुल
दियगुरु–द्विजगुरु
दियवर–द्विजवर
दियह–दिवस
दियंवर–दिगम्बर
दिवस–दिवस
दिवायर–दिवाकर
दिव्व–दिव्य
दिसा–दिश्
दिसि–दिश्
दिसिणारि–दिश्+नारी
दिहि–धृति
दिहियर–धृतिकर
दिहीहर–धृतिहर
दीव–द्वीप
दीवय–द्वीप(क)
दीवयजुइल्ल–दीपकद्युति + इल्ल (मत्वर्थीयः)
दीवंत–दीप्यमान
दीस–दृश्धातोः कर्मणि
दीह–दीर्घ
दीहर–दीर्घ
दीहरच्छ–दीहर (दीर्घ) + अक्षि (दीर्घाक्ष इत्यर्थः)
दीहिय–दीर्घिका
दु–द्वि
दुक्काल–दुष्काल
दुक्किय–दुष्कृत
दुक्कियणिवह–दुष्कृतनिवह
दुक्ख–दुःख
दुक्खावण–दुःख + आपण (प्रापण) (दुःखदायीत्यर्थः)
दुक्खिय–दुःखित
दुगुंछ–गुप् (जुगुप्सार्थे धातुः)
दुग्ग–दुर्ग (दुर्गम)
दुग्गअ–दुर्गत (दुर्ग्राह्य इत्यर्थे)
दुग्गइ–दुर्गति
दुग्गंध–दुर्गन्ध
दुग्घर–दुर्गृह
दुच्चित्त–दुश्चित्त (दुष्टाभिप्राय इत्यर्थः)
दुच्चार–दुश्चार (दुराचार)
दुज्जण–दुर्जन
दुज्जोहण–दुर्योधन
दुट्ठ–दुष्ट
दुण्णय–दुर्नय
दुण्णयगारी–दुर्नयकारिन्
दुण्णिरिक्ख–दुर्निरीक्ष्य
दुतीस–द्वात्रिंशत्
दुत्तर–दुस्तर
दुत्तार–दुस्तार
दुत्थिय–दुःस्थित
दुद्दम–दुर्दम
दुद्दरिसण–दुर्दर्शिन्
दुद्दंत–दुर्दान्त
दुद्ध–दुग्ध
दुद्धर–दुर्धर
दुप्पेच्छ–दुष्प्रेक्ष्य
दुब्बल–दुर्बल
दुब्भ–द्रुह् (धातुः)
दुब्भव–दुर्भव (कुजन्म)
दुम–द्रुम
दुमणि–द्युमणि (सूर्य)
दुमसाहा–द्रुमशाखा
दुम्मण–दुर्मनस्
दुम्मह–दुर्मथ (अभङ्ग इति टिप्पणम्)
दुरग्गह–दुराग्रह
दुरिअ–दुरित (पाप)
दुरिय–दुरित (पाप)
दुरियठाण–दुरितस्थान
दुरियरासि–दुरितराशि
दुरुत्त–दुरुक्त
दुवार–द्वार
दुविह–द्विविध

दुव्वार–दुर्वार
दुव्वासा–दूर्वा+आशा
दुव्विणीअ–दुर्विनीत
दुव्विलसिय–दुर्विलसित
दुसह–दुःसह
दुसज्झ–दुःसाध्य
दुस्सह–दुःसह
दुह–दुःख
दुहट्टि–द्वि+घटी (कालमात्रा)
दुहणिहाअ–दुःख+निपात (मुद्गर)
दुहपोट्टलअ–दुःख+पोट्टल
दुहयर–दुःखकर
दुहसीण–दुःख+क्षीण (निष्फले देशी)
दुहिअ–दुःखित
दुहोहग्गि–दुःख+ओघ+अग्नि
दुंदुभि–दुन्दुभि (नामविशेष)
दुंदुहि–दुन्दुभि
दूइआ–दूतिका
दूण–दून
दूमिअ–दून
दूरं–दूरम् (अव्ययम्)
दूरंतरिय–दूरान्तरित
दूयावंड–दूतावण्ड (दूतान्तनिलयं)
दूसह–दुःसह
दूसिअ–दूषित
दूसिय–दूषित
दूसियअ–दूषित(क)
दूहवअ–दुर्भग(क)
दूहविय–दुःखित
देअ–देव
देउल–देवकुल
देव–देव
देवउल–देवकुल
देवया–देवता
देवर–देवर
देवरइ–देवरति (नामविशेषः)

देवंगअ–देव+अङ्ग (क)
देवायरिअ–देव+आचार्य
देवालअ–देवालय
देवाविअ–दापित
देवि–देवी
देविघर–देवीगृह
देविया–देवी
देवी–देवी (विमलवाहनराज्ञीनाम)
देस–देश
देसिअ–देशिक (वैदेशिक)
देह–देह
देहि–देहिन्
देहुणअ–देह+ऊन(क)
दोआसा–द्वि+पार्श्व, अथवा, द्वि+आशा
दोखंडीभूय–द्विखण्डीभूत
दोफालिय–द्वि+पाटित
दोर–तन्तुशब्दार्थे देशी (मराठी–दोर)
दोवास–द्विपार्श्व
दोसहारी–दोषहारिन्
दोसायर–दोष+आकर
दोसुज्झिअ–दोषोज्झित (उज्झितदोष इत्यर्थ.)
दोहाविअ–द्विधाकृत
दोहीयरण–द्वैधीकरण (संशय इत्यर्थ.)

धगत्ति–अग्निज्वलनशब्दानुकरणे
धगधग–अग्निज्वलनशब्दानुकरणे (धातुः)
धण–धन
धणधण्ण–धन+धान्य
धणहीण–धनहीन
धणिय–धनिक
धणु–धनुष्
धणुवेअ–धनुर्वेद
धम्म–धर्म
धम्म–धर्म (पञ्चदशतीर्थकरनाम)
धम्मचक्कि–धर्मचक्रिन्
धम्मझाण–धर्मध्यान (ध्यानप्रकारः

धम्मत्थकाम–धर्मार्थकाम
धम्मलाह–धर्मलाभ
धम्मवाइ–धर्मवादिन्
धम्मविज्ज–धर्मविद्या
धम्मंघिव–धर्माङ्घ्रिप (धर्मवृक्ष इत्यर्थः)
धम्मक्खाण–धर्माख्यान
धम्मासत्त–धर्मासक्त
धम्माहम्म–धर्माधर्म
धम्मिल्ल–धम्मिल्ल (केशपाशः)
धम्मुच्छाह–धर्मोत्साह
धय–ध्वज
धर–धृ (धातुः)
धर–धरा (पृथ्वी)
धरणि–धरणि
धरणिणाह–धरणीनाथ
धरणियल–धरणीतल
धरपडिय–धरापतित
धरवीढ–धरापीठ
धरायल–धरातल
धरिअ–धृत
धरिय–धृत
धरिसमाणि–धरासमाना
धवल–धवल
धवल–धवल (शुक्लवर्ण, सुधावर्ण)
धवलच्छि–धवलाक्षी
धंस–ध्वस् (धातुः)
धा–तृप्तौ (धातुः)
धाइदीव–धातकीद्वीप
धाउ–धातु
धाउ–धातु (गैरिकादि)
धाम–धामन्
धायअ–धावित
धार–धारा
धारिणी–धारिणी (उत्तरपदे एव)
धारिय–धारित
धाव–धाव् (धातुः)
धावंत–धावत् (सृधातोः शत्रन्तम्)
धाविय–धावित
धाहावंत–धा, हा इति शोकशब्दं कुर्वन्
धाहाविअ–शोकयुक्त इत्यर्थे
धिट्ठ–धृष्ट
धीवर–धीवर
धुअ–धुत (कम्पित)
धुउ–ध्रुवम् (अव्ययम्)
धुत्त–धूर्त
धुत्तिय–धूर्तित
धुप–धूप् (धातुः)
धुरंधर–धुरंधर
धुव–ध्रुव
धूमकेउ–धूमकेतु
धूमगंध–धूमगन्ध
धूमप्पह–धूमप्रभ (पञ्चमनरकनाम)
धूया–दुहितृ
धूली–धूली
धूलिर–धूलियुक्त
धूसर–धूसर
धूसरिय–धूसरित
धोय–धौत
धोयअ–धौत(क)
धोरणिकिअ–धोरणिकृत

पअ–पद
पइज्ज–पच्धातोः कर्मणि
पइट्ठ–प्रविष्ट
पइपत्त–पति+पात्र
पइवय–पतिव्रता
पइसर–प्रति+सृ (धातुः)
पइहर–प्रतिगृह (अन्तर्गृहमित्यर्थे)
पईसर–प्रति+सृ (धातुः)
पउ–पयस्
पउत्त–प्रवृत्त, प्रोक्त
पउत्त–पौत्र

पउत्थ–प्र+उषित
पउमा–पद्मा (लक्ष्मी)
पउमप्पह–पद्मप्रभ (पद्मतीर्थंकरनाम)
पउमराय–पद्मराग (मणिविशेषः)
पउमिणी–पद्मिनी
पउर–पौर (पौरजन, पुरसबन्धि)
पउर–प्रचुर
पउलण–प्रेरण
पउलाविय–पाचित
पउंज–प्र+युज् (धातुः)
पएस–प्रदेश
पओय–प्रजौघ (?) (प्रजासमूह इति हिन्दी भाषानुवादः)
पओहर–पयोधर (स्तन)
पकोक्किअ–आहूत इत्यर्थे देशी
पक्क–पक्व
पकल–समर्थ इत्यर्थे देशी (समर्थ इति टिप्पणम्)
पक्ख–पक्ष
पक्खालिय–प्रक्षालित
पक्खवाअ–पक्षपात
पक्खि–पक्षिन्
पखित्त–प्रक्षिप्त
पघे–प्र+ग्रह् (धातुः)
पघोस–प्र+घुष् (धातुः)
पच्चक्ख–प्रत्यक्ष
पच्चंत–प्रत्यन्त (सीमा)
पच्चुत्तर–प्रत्युत्तर
पच्छइ–पश्चात्
पच्छाहोंत–पश्चाद्भवत् (पश्चात्स्थित इत्यर्थः)
पच्छिअ–पथ्ययुक्त
पच्छित्त–प्रायश्चित्त
पच्छिम–पश्चिम
पजल–प्र+ज्वल् (धातुः)
पजत्त–पर्याप्त (पजत्तउ इत्यलमर्थऽव्ययम्)
पजल–प्र+ज्वल् (धातुः)
पज्जलिय–प्रज्वलित
पज्जाअ–पर्याय
पट्ट–पट्ट (चिह्न)
पट्टण–पत्तन
पट्टबंध–पट्टबन्ध
पट्ठविय–प्रस्थापित
पड–पत् (धातुः)
पडपिहियासण–पट+पिहित+आसन
पडरइअ–पटरचित
पडल–पटल
पडह–पटह (वाद्यविशेषः)
पडाविय–पटित, पटयुक्त (आच्छादित)
पडिअ–पतित
पडिआवंत–प्रत्यावर्तमान
पडिकूल–प्रतिकूल
पडिक्खणं–प्रतिक्षणम्
पडिखलण–परि+स्खलन
पडिखलिय–परिस्खलित
पडिगह–प्रति+ग्रह् (धातुः)
पडिच्छ–प्रति+इष् (धातुः)
पडिजंपिय–प्रतिजल्पित
पडिबिंब–प्रतिबिम्ब
पडिबिंबिअ–प्रतिबिम्बित
पडिबुद्ध–प्रतिबुद्ध
पडिवोल्लिअ–प्रत्युक्त
पडिम–प्रतिमा
पडिय–पतित
पडियार–प्रतिकार
पडियावय–प्रतियापक (?) प्रत्याख्यात
पडिलव–प्रति+लप् (धातुः)
पडिवज्ज–प्रति+पद् (धातुः)
पडिवण्ण–प्रतिपन्न (प्रतिपादन कथनमित्यर्थः)
पडिवण्णी–प्रतिपन्ना
पडिवयण–प्रतिवचन
पडिवहु–प्रतिवधू (सपत्नीत्यर्थः)
पडिसवण–प्रति+स्वप्न

पडिसिविण–प्रतिस्वप्न
पडिहार–प्रतिहार
पडिहारिय–प्रतिहारी
पडिंद–प्रति+इन्द्र
पडु–पटु
पढ–पठ् (धातुः)
पढम–प्रथम
पढमिल्ल–प्रथम+इल्ल (स्वार्थे)
पढमुज्जल–प्रथम+उज्ज्वल
पढंत–पठत्
पढाव–पाठय् (धातुः)
पढुक्क–प्रवृत्त इत्यर्थे देशी
पणइणी–प्रणयिनी
पणच्चिर–प्र+नृत्+इर (शीलार्थे)
पणविज्ज–प्र+नम् धातो. कर्मणि
पणट्ठ–प्रनष्ट
पणयभंग–प्रणयभङ्ग
पणयंगणा–पण्याङ्गना (वेश्येत्यर्थः)
पणव–प्र+नम् (धातुः)
पणविय–प्रणत
पणसट्ठि–पञ्चषष्टि
पणालिया–प्रणालिका
पण्णयरिउ–पन्नगरिपु
पणिवाअ–प्रणिपात
पत्त–पत्र (अश्वादिवाहनम्)
पत्त–पात्र
पत्त–प्राप्त
पत्तछेअ–पत्रच्छेद (अगुरुकुङ्कुमादिभिर्विरचितः शरीरे शोभाविशेषः)
पत्तल–कृश इत्यर्थे देशी
पत्तल–यवीयस् इत्यर्थे देशी
पत्तालिया–कृशा इत्यर्थे देशी
पत्तवडिय–पात्रपतित
पत्तिय–प्रति+इ (धातुः)
पत्ति–पत्नी
पत्थ–प्रस्थ (धान्यादिपरिमाणविशेषः)
पत्थर–प्रस्तर
पत्थिअ–प्रार्थित
पत्थियअ–प्रार्थित(क)
पत्थिव–पार्थिव
पथिप्पिर–प्र+गलत् इत्यर्थे देशी
पद्धडिय–पद्धटिका, पज्झटिका (वृत्तनाम)
पधाइअ–प्रधावित (प्रसृत इत्यर्थः)
पपुच्छ–प्र+प्रच्छ् (धातुः)
पप्फुल्लवयण–प्रफुल्लवदन
पबुद्ध–प्रबुद्ध
पबोल्ल–प्र+वद् धात्वर्थे देशी
पभट्ठ–प्रभ्रष्ट
पभण–प्र+भण् (धातुः)
पभाल–प्रभा+आल (मत्वर्थीयः)
पमाण–प्रमाण
पमाणिअ–प्रमाणित (प्रमाणीकृत)
पमियपडिग्गह–प्रमितपरिग्रह
पमुच्–प्र+मुच् (धातुः)
पमेल्ल–प्र+मुच् इत्यर्थे देशी (धातुः)
पय–पद
पय–पद (पदातिरित्यर्थः)
पयच्छ–प्र+दा (धातुः)
पयक्ख–प्रत्यक्ष
पयजुअ–पदयुग
पयजुयल–पदयुगल
पयट्ट–प्र+वृत् (धातुः)
पयड–प्रकटय् (धातुः)
पयड–प्रकट
पयत्त–प्रयत्न
पयत्थ–पदार्थ
पयपंकय–पदपङ्कज
पयपालण–प्रजापालन
पयलिय–प्रचलित
पयवडिय–पदपतित
पयंड–प्रचण्ड
पयंप–प्र+जल्प् (धातुः)

पया–प्रजा
पयाव–प्रताप
पयाविअ–पाचित
पयास–प्रकाशय् (धातुः)
पयास–प्रकाश
पयासिअ–प्रकाशित
पयासिर–प्रकाश् + इर (शीलार्थे)
पयोहर–पयोधर
पर–पर (अतीतानागत)
परड–वनकुक्कुट
परत्त–परत्र
परभवत्थ–परभवस्थ
परमत्थ–परमार्थ
परमधम्म–परमधर्म
परमपर–परमपर (परमा गणधरदेवादयस्तेभ्योऽपि पर उत्कृष्ट इति टिप्पणम्)
परमप्प–परमात्मन्
परमप्पअ–परमपद
परममित्त–परममित्र
परमहंस–परमहंस
परमागम–परम + आगम (जिनशासनमित्यर्थः)
परमाणु–परमाणु
परमेट्ठि–परमेष्ठिन्
परमेसर–परमेश्वर
परमेसरि–परमेश्वरी
परमोवएस–परमोपदेश
परमंडलिय–पर + माण्डलिक
परयार–परकार
परलोय–परलोक
परवञ्चणयर–परवञ्चनकर
परव्वस–परवश
परसप्पर–परस्परम्
परहिय–परहित
परंपर–परपरा
परंमुह–पराङ्मुख

पराइण्ण–परा + दा (निष्ठान्तम्)
परायण–परायण
परिअंच–परि + अञ्च् (भ्रमणे धातुः)
परिकरिय–परिकरित
परिक्खा–परीक्षा
परिक्खिअ–परीक्षित
परिगण–परि + गण् (धातुः)
परिगल–परि + गल् (धातुः)
परिग्गहिअ–परि + गृहीत
परिघुल–परि + घुल् (धातुः)
परिघोलिर–परिघोलनशील
परिचत्त–परित्यक्त
परिचुक्किअ–परिभ्रष्ट इत्यर्थे देशी
परिट्ठविअ–प्रतिष्ठापित
परिट्ठा–प्रति + स्था (धातुः)
परिट्ठिअ–प्रतिष्ठित
परिणइ–परिणति
परिणम–परि + नम् (धातुः)
परिणय–परिणत
परिणाव–परि + नायय् (नीधातोर्णिजन्तम्)
परिणिय–परिणीत, परिणायित
परितत्त–परितप्त
परिता–परि + त्रै (धातुः)
परिपक्क–परिपक्व
परिपुण्ण–परिपूर्ण
परिपोस–परि + पुष् (धातुः)
परिभम–परि + भ्रम् (धातुः)
परिभामिअ–परिभ्रान्त
परिमट्ठ–परिमृष्ट
परिमल–परिमल
परिमाण–परिमाण
परियत्त–परित्यक्त
परियत्तण–परिवर्तन
परियण–परिजन
परियर–परिचर
परियरिअ–परिचरित

परियल–परितल (भाजनमित्यर्थे)
परियलिअ–परिगलित
परियंच–परि + अञ्च् (धातुः)
परियंचिअ–पर्यञ्चित
परियाण–परि + ज्ञा (धातुः)
पणियाणिय–परिज्ञात
परियाणियअ–परिज्ञात(क)
परिरक्ख–परि + रक्षा
परिरक्खिअ–परिरक्षित
परिवारअ–परि + उक्त (!)
परिवाइय–प्रतिपादित
परिवाडी–परिपाटी
परिवार–परिवार
परिवारे–परि + वारय् (धातुः)
परिवेढिय–परिवेष्टित
परिसेस–परि+क्षिप् (धातुः)
परिसेसिय–परिशेषित (त्यक्त इत्यर्थः)
परिसोहिय–परिशोधित
परिहण–परिधान
परिहर–परि+हृ (धातुः)
परिहा–परिखा
परिहाण–परिधान
परिहास–प्रति+भाष् (धातुः)
परोवयारि–परोपकारिन्
पल–पल (मास)
पलट्ठिय–प्र+श्लक्ष्णित
पलवंति–प्र+लपन्ती
पलंब–प्रलम्ब
पलाव–प्रलाप
पलिअ–पलित
पलित्त–प्रलाप (इति टिप्पणम्)
पलोइय–प्रलोकित
पलोट्ट–प्रलोटित (प्रक्षिप्त)
पल्ल–पल्य (सख्याशब्दः आयुःप्रमाणवाची)
पल्लव–पल्लव (वस्त्रादीनामञ्चल इत्यर्थे)
पल्लवोह–पल्लव+ओघ (पल्लवसमूह इत्यर्थः)

पल्हत्थ–पर्यस्त
पल्हत्थिअ–पर्यस्तित (आवर्जित इत्यर्थः)
पवण–पवन
पवणवस–पवनवश
पवणुद्धय–पवनोद्धत (पवनप्रकम्पित इत्यर्थः)
पवड्ढिय–प्रवर्धित
पवण्ण–प्रपन्न (प्राप्त इत्यर्थः)
पवण्णिय–प्रवर्णित
पवपालिया–प्रपापालिका
पवयण–प्रवचन
पवर–प्रवर
पवसिय–प्रोषित
पवसियपिय–प्रोषितप्रिय (प्रोषितभर्तृकेत्यर्थः)
पवसियपियाली–प्रोषितप्रियालि (प्रोषितभर्तृकापङ्क्तिरित्यर्थः)
पवास–प्रवास
पवासिअ–प्रवासिन्
पवाह–प्रवाह
पवि–पवि (वज्रमित्यर्थः)
पविउल–प्रविपुल
पवित्त–पवित्र
पवित्ति–प्रवृत्ति
पविमल–प्रविमल
पविहिय–प्रविहित
पव्व–पर्वन् (अमावास्यादि)
पव्वइअ–प्रव्राजित
पसइ–प्रसृति
पसण्ण–प्रसन्न
पसत्थ–प्रशस्त
पसाप्पिय–प्रसृत, प्रसारित
पसम–प्र+शम् (धातुः)
पसमंत–प्र+शाम्यत्
पसर–प्र+सृ (धातुः)
पसर–प्रसर
पसरिय–प्रसृत
पसंगय–प्रसक्त(क)

पसविअ–नकुल इत्यर्थे देशी
पसवी–नकुलस्त्री
पसगय–प्रसक्त
पसंस–प्र+शस् (धातुः)
पसाअ–प्रसाद
पसार–प्र+सारय् (धातुः)
पसाह–प्र+श्रावय् (कथनार्थे धातुः)
पसाहिय–प्रसाधित, प्रकथित
पसिद्ध–प्रसिद्ध
पसु–पशु
पसुय–पशु (क)
पसुमारण–पशुमारण
पह–पथिन्
पहट्ठ–प्रभ्रष्ट
पहत्थ–प्रहस्त
पहभट्ठ–पथिन्+भ्रष्ट (भ्रष्टपथ इत्यर्थः)
पहर–प्र+हृ (धातुः)
पहर–प्रहार
पहरण–प्रहरण
पहरवेविय–प्रहारवेपित
पहराल–प्रहारशील
पहरिअ–प्रहृत
पहस–प्र+हस् (धातुः)
पहसिय–प्रहसित
पहंतर–पथान्तर
पहा–प्रभा
पहाण–प्रधान
पहाय–प्रभाव
पहार–प्रहार
पहाव–प्रभाव
पहावण–प्रभावना
पहिअ–पथिक
पहियविंद–पथिकवृन्द
पहिलार–प्रथम+आर (स्वार्थे)
पहिल्ल–प्रथम
पहिल्लिय–प्रथम+इय (स्वार्थे)
पहिसियतुंड–प्रहसिततुण्ड
पहु–प्र+भू (धातुः)
पहु–प्रभु
पहुत्त–प्राप्त
पंक–पङ्क
पंकय–पङ्कज
पंकप्पह–पङ्कप्रभ (चतुर्थनरकनाम)
पंकिय–पङ्कित (पङ्कयुक्त इत्यर्थः)
पंगण–प्राङ्गण
पंगु–पङ्गु
पंगुत्त–प्रावृत इत्यर्थे देशी
पंगुरुण–प्रावरण इत्यर्थे देशी
(मराठी–पाघरूण)
पंगुल–पङ्गु+ल (स्वार्थे)
पंगुलणिमित्त–पङ्गु+निमित्त
पंच–पञ्चन्
पंचकल्लाण–पञ्चकल्याण
पंचत्त–पञ्चत्व
पंचदश–पञ्चदशन्
पंचम–पञ्चम
पंचमगइ–पञ्चमगति (मोक्ष इत्यर्थः)
पंचमहव्वय–पञ्चमहाव्रत
पंचवण्ण–पञ्चवर्ण
पंचवार–पञ्चवारम्
पंचसमिति–पञ्चसमिति (ईर्या भाषा-एषणा-दान–उत्सर्गाः)
पंचाचार–पञ्चाचार
पंचास–पञ्चास्य (सिंह इत्यर्थः)
पंचासव–पञ्चासव
पंचिंदिय–पञ्चेन्द्रिय
पंचुंबरि–पञ्च+उदुम्बर
पंजर–पञ्जर
पंजलियर–प्राञ्जलि+कर
पंजली–प्राञ्जलि
पंडव–पाण्डव
पंडिअ–पण्डित

पंडिय–पण्डित
पंडुर–पाण्डुर
पंथ–पथिन्
पंथिय–पान्थ, पथिक
पाअ–पाद (किरण इत्यर्थे)
पाअ–पाद (चरण इत्यर्थे)
पाअ–पाप
पाइक्क–पादिक, पादचारिन् (सेवक इत्यर्थे)
पाउडियजुम्म–(पादयोरलकारयुग्मामित्यर्थे। हिन्दी–पावडी)
पाउय–खनित्रविशेषे देशी (मराठी पावडें)
पाउस–प्रावृष्
पाउसकाल–प्रावृट्काल
पाढीण–पाठीन (मत्स्यविशेषः)
पाडल–पाडल
पाण–प्राण (स च दशप्रकार इति टिप्पणे)
पाणक्खअ–प्राणक्षय
पाणचंडाल–अरण्यचाण्डाल इति टिप्पणम्
पाणप्पिय–प्राणप्रिय
पाणविणासण–प्राणविनाशन
पाणावसाण–प्राण+अवसान (अन्त)
पाणि–प्राणिन्
पाणियल–पाणितल
पाणिवह–प्राणिवध
पाय–पाद
पायग्ग–पादाग्र
पायड–प्रकट
पायडिय–प्रकटित
पायपोम–पादपद्म
पायंत–पादान्त
पायार–प्राकार
पायाल–पाताल
पारद्ध–प्रारब्ध
पारद्धिय–व्याध इत्यर्थे देशी (मराठी-पारधी)
पारंभ–प्रारम्भ
पारावअ–पारावत
पारोह–प्ररोह
पाल–पाधातोर्णिजन्तम्
पालण–पालन (पालक–उत्तरपदे एव)
पालिय–पालित
पाव–प्र+आप् (धातुः)
पाव–पाद
पाव–पाप
पावइय–प्रापित, प्रव्रज्या
पावग्गह–पापग्रह
पावज्ज–प्रव्रज्या
पावपर–पापपर
पावफल–पापफल
पावमल–पापमल
पावयम्म–पापकर्मन्
पाववेरि–पापवैरिन्
पाविअ–प्रापित
पाविट्ठ–पापिष्ठ
पास–पाश (पाश इव पाशः, कर्मबन्ध इति टिप्पणम्)
पास–पार्श्व (त्रयोविंशतीर्थंकरनाम)
पासगाम–पार्श्वग्राम
पासत्थ–पार्श्वस्थ (समीपस्थ इत्यर्थः)
पासय–प्रास (क) (कुन्तविशेषः)
पासिय–पाशित (पाशबद्ध)
पासुलिय–पाशुल
पासेय–प्रस्वेद
पाहुड–प्राभृत (उपायन)
पाहुणअ–प्राघूर्णक
पिआ–पितृ
पिउपट्ट–पितृपट्ट (पितृसिंहासन)
पिउवण–पितृवन (श्मशान)
पिक्क–पक्व
पिक्ख–प्र+ईक्ष् (धातुः)
पिच्छ–प्र+ईक्ष् (धातुः)
पिज्ज–पाधातोः कर्मणि
पिट्ठ–पिष्ट (चूर्ण)

पिट्ठमअ–पिष्टमय
पित्त–पित्त
पिम्म–प्रेमन्
पिय–प्रिय
पिय–प्रिया
पियपत्ती–प्रिय+पत्नी
पिययम–प्रियतम
पियर–पितृ
पियरवग्ग–पितृवर्ग
पियविरह्–प्रियाविरह
पियसंजोग्ग–प्रियासयोग
पिया–प्रिया
पियामह्–पितामह
पिल्ल–डिम्भ इत्यर्थे देशी (मराठी पिल्लू)
पिसक्क–पिशाच इत्यर्थे देशी
पिसक्क–पृषत्क (बाण इत्यर्थ.)
पिसुण–पिशुन
पिसुणिय–पिशुनित (सूचित)
पिहिय–पिहित
पिहुल–पृथुल
पिंग–पिङ्ग
पिंगल–पिङ्गल
पिंछ–पिच्छ
पिंछाल–पिच्छ+आल (मत्वर्थीयः)
पिंछोह–पिच्छ+ओघ (समूह)
पिंजर–पिञ्जर
पिंड–पिण्ड
पिडदाण–पिण्डदान
पीडकर–पीडाकर
पीढ–पीठ
पीण–प्री (धातुः)
पीण–पीन
पीणभुअ–पीनभुज
पीणिय–प्रीत
पित्तल–पित्तल (धातुविशेषः, मराठी-पितळ)
पीय–पीत
पीयंत–पिबत्
पीययंगणंभय–पीत+अङ्गण+अम्भस्
पील–पीड् (धातुः)
पीलण–पीडन
पुक्खर–पुष्कर
पुग्गल–पुद्गल
पुच्छ–प्रच्छ् (धातुः)
पुच्छ–पुच्छ
पुच्छिय–पृष्ट
पुज्ज–पूज्य
पुज्ज–पृधातोः कर्मणि
पुज्जणिज्ज–पूजनीय
पुज्जाणुपुज्ज–पूज्याना पूज्यः (पूज्याना गणधर-देवादीनामपि पूज्यः आराध्य इति टिप्पणम्)
पुज्जिअ–पूजित
पुट्ठि–पुष्टि
पुट्ठि–पृष्ठ
पुट्ठिपलट्ठियंग–पुष्टि + पल + अस्थि + अङ्ग (पुष्टया उपचितं पलं मास अस्थीनि अङ्गानि च यस्य)
पुट्ठिवंस–पृष्ठवंश
पुणु–पुनर्
पुणो–पुनर्
पुण्ण–पुण्य
पुण्ण–पूर्ण
पुण्णपुंज–पुण्यपुञ्ज
पुण्णालि–पुंश्चलीत्यर्थे देशी
पुण्णाहिलास–पूर्णाभिलाष
पुत्त–पुत्र
पुत्ति–पुत्री
पुप्फ+पुष्प
पुप्फमाल–पुष्पमाला
पुप्फयंत–पुष्पदन्त (चन्द्रसूर्यौ, कवेर्नाम)
पुप्फयत–पुष्पदन्त (नवमतीर्थंकरनाम)
पुर–पुर
पुरवर–पुरवर

पुरउ–पुरतः
पुरवहि–पुरावधि (पुरमुद्दिश्येत्यर्थः)
पुरंदर–पुरदर
पुरारि–पुरारि (शिवः)
पुरिस–पुरुष
पुरुएअ–पुरुदेव (इन्द्रादयो देवा इति टिप्पणम्
पुरुहुंत–पुरोभवत्
पुलिंद–पुलिन्द
पुलि–शबरजातिविशेषे देशी
पुलिंग–पुलिङ्ग
पुव्वयाल–पूर्वकाल
पुव्वसिणेह–पूर्वस्नेह
पुहवि–पृथ्वी
पुंकोइल–पुस्कोकिल
पुंछ–पुच्छ
पुंज–पुञ्ज
पुंजिअ–पुञ्जित
पुंजिय–पूजित
पुंजीकय–पुञ्जीकृत
पुंड–पुण्ड्र (इक्षुजातिविशेषः)
पूइवाअ–पूतिवात
पूय–पूत
पूरय–पूरय (धातुः)
पूरिय–पूरित
पूस–प्रच्छधात्वर्थे देशी
पूसकोइल–पुस्कोकिल
पेच्छ–प्र+ईक्ष् (धातुः)
पेट्ट–उदर इत्यर्थे देशी (हिन्दी–पेट)
पेम्म–प्रेमन्
पेय–प्रेत
पेयंतावलि–प्रेत+अन्त्र+आवलि
पेरिअ–प्रेरित
पेरिय–प्रेरित
पेल्लण–प्रेरण
पेल्लय–पेलव
पेल्लिय–प्रेरित
पेस–प्रेषय् (धातु.)
पेसण–प्रेषण
पेसल–पेशल
पेसिय–प्रेषित
पेहुणय–पिच्छशब्दार्थे देशी
पोक्खर–पुष्कर
पोट्ट–उदर इत्यर्थे देशी (मराठी–पोट)
पोट्टलअ–ग्रन्थिशब्दार्थे देशी (मराठी-पोटळी)
पोट्टुट्टुड–पोट्ट+उट्ट (स्वार्थे)
पोढ–प्रौढ
पोढत्तण–प्रौढत्व
पोत्थयवायण–पुस्तकवाचन
पोम–पद्म
पोमराय–पद्मराग
पोमाइय–अवलोकित इत्यर्थ
पोमिणि–पद्मिनी
पोमिणिय–पद्मिनी
पोसण–पोषण
पोसह–उपवासदिन इत्यर्थे
पोसिअ–पोषित
पोसिय–पोषित

फट्ट–विदीर्ण इत्यर्थे देशी (मराठी-फाटणें)
फडा–फटा
फणि–फणिन् (सर्प)
फणिंद–फणीन्द्र (शेषः)
फरुस–परुष
फरुसभासिणि–परुषभाषिणी
फल–फल
फलभोयण–फलभोजन
फलिय–फलित
फलिह–स्फटिक
फलोह–फल+ओघ (समूह)
फंफावय–बन्दिचारणादय इत्यर्थे देशी
फंफावयसर–बन्दिन्+स्वर

फंस–स्पर्श
फस–स्पृश (धातुः)
फंसण–स्पर्शन
फाडिअ–पाटित
फार–प्रचुर इत्यर्थ देशी (मराठी—फार)
फार–स्फार, स्फीत (अतिशयार्थे)
फाल–पाटय् (धातुः)
फालिय–पाटित
फास–स्पर्श
फासवंत–स्पर्शवत्
फासाइय–स्पर्शादिक (विषयः)
फासुअ–प्राशुक (प्रशस्त इत्यर्थ)
फिर–परावर्तने देशी (धातुः) (मराठी–फिरणें)
फुट्ट–स्फुटित
फुट्ट–भिन्न इत्यर्थे देशी (मराठी-फुटणें)
फुट्टपाय–स्फुटित+पाद्
फुडवत्ति–स्फुट+वृत्ति
फुफुव–फूत्कृ (धातुः)
फुर–स्फुर् (धातुः)
फुरिअ–स्फुरित (दीप्त)
फुरिय–स्फुरित
फुलिंग–स्फुलिङ्ग
फुल्ल–पुष्प (मराठी–फूल)
फुल्ल–फुल्ल
फुल्लोह–पुष्प+ओघ (समूह)
फेड–मुच्धात्वर्थे देशी
फेण–फेन
फेणरासि–फेनराशि
फोडिय–स्फोटित

बइट्ठ–उपविष्ट इत्यर्थे देशी
बइसावय–उपवेशय् इत्यर्थे देशी (धातुः)
बज्झ–बन्ध्धातोः कर्मणि
बज्झावयास–बाह्य + अवकाश (बाह्यप्रदेश इत्यर्थः)
बज्झ–बाह्य
बद्ध–बद्ध
बद्धाउस–बद्धायुष्
बप्प–पितृशब्दार्थे देशी
बप्प–चातक
बरिहण–बर्हिन् (मयूर)
बल–बल
बलखीण–बलक्षीण
बलवंत–बलवत्
बलसणाह–बलसनाथ
बलि–बलि
बलिय–बलिन्
बलिविहाण–बलिविधान (पूजाविधिः)
बहल–बहल
बहिणी–भगिनी
बहिणुल्ली–भगिनिका (यवीयसी भगिनीत्यर्थः)
बहिर–बधिर
बहिरअ–बधिर (क)
बहिरंध–बधिर+अन्ध
बहु–बहु
बहुदुक्खाउर–बहुदुःखातुर
बहुभेय–बहुभेद
बहुरोयहर–बहुरोगहर
बहुवण्णभेय–बहुवर्णभेद
बहुविह–बहुविध
बंदियण–बन्दीजन
बंदी–बन्दी
बंध–बन्ध
बंधण–बन्धन
बंधु–बन्धु
बंबुल–बब्बुल (वृक्षनाम । मराठी–बाभूळ)
बंभ–ब्रह्मन् (ब्रह्मदेव)
बंभण–ब्राह्मण
बंभणव्वअ–ब्राह्मणव्रत
बंभणी–ब्राह्मणी
बंभयारि–ब्रह्मचारिन्
बंभव्वअ–ब्रह्मव्रत (ब्रह्मचर्यमित्यर्थः)

वंभोत्तर–ब्रह्मोत्तर (स्वर्गनाम)
वायर–बादर (बदरप्रमाण इत्यर्थः)
वार–द्वार
बारह–द्वादश
बारहविह–द्वादशविध
वाल–बाल
वालय–बालक
वावीस–द्वाविंशति
वाहा–बाहु
बाहु–बाहु
बि–द्वि
बिण्णि–द्वौ, द्वे
विल–बिल
विंदु–बिन्दु
बिवाहर–विद्याधर
बिंबीहलाह–बिम्बीफलाभ
बीय–द्वितीय
बीय–बीज
बीयंद–द्वितीयाचन्द्र
बीह–भी (धातुः)
बुज्झ–बुध् (धातुः)
बुज्झिर–बोधनशील
बुद्ध–बुद्ध
बुद्ध–बुद्ध(तथागत)
बुद्धि–बुद्धि
बुब्बुअ–बुद्बुद
बुब्बुय–बुद्बुद
बुह–बुध
बुहयण–बुधजन
बे–द्वि
वेक्खुर–द्विखुर
वोक्कड–अज इत्यर्थे देशी (मराठी-बोकड)
वोल्लिअ–कथित इत्यर्थे देशी
बोहि–बोधि

भअ–भय
भअ–भव
भइरअ–भैरव
भइरव–भैरव
भइरवाणंद–भैरवानन्द (कापालिकनामविशेष)
भउहा–भ्रूकुटि
भक्ख–भक्ष् (धातु)
भक्ख–भक्ष्य
भग्ग–भग्न (वशीकृत इति टिप्पणम्)
भज्ज–भर्ज् (धातुः)
भज्ज–भार्या
भज्ज–भञ्ज्धातोः कर्मणि
भट्ट–भट्ट
भट्ठ–भ्रष्ट
भड–भट
भडारअ–भट्टारक, भगवत्
भडारिआ–भट्टारिका, भगवती
भडारी–भट्टारिका
भडिय–पक्व इति टिप्पणम् (मराठी-भरित)
भण–भण् (धातुः)
भणिअ–भणित
भणिज्ज–भण्धातोः कर्मणि
भत्ति–भक्ति
भत्तिभर–भक्तिभर
भत्तिल्ल–भक्तियुक्त
भद्द–भद्र
भद्दी–भद्रा
भप्पर–भस्म इत्यर्थे देशी
भम–भ्रम् (धातुः)
भमर–भ्रमर
भमरोह–भ्रमर+ओघ (समूह)
भमंत–भ्रमत्
भमाड–भ्रम् (धातुः)
भमाडिअ–भ्रामित
भमिअ–भ्रमित
भमिय–भ्रमित
भमिर–भ्रमणशील

भय–भय
भयउल–भयाकुल
भयगारी–भयकारिन्
भयदाइणि–भयदायिनी
भयधातु–स्तधनुर्भित इति टिप्पणम्
भयवइ–भगवती
भयवंत–भगवत्
भयंकर–भयकर
भयाउर–भयातुर
भयाउल–भयाकुल (भयावह इत्यर्थे ?)
भर–भर (भार)
भरह–भरत (वर्षनाम)
भरह–भृत (आच्छादित इति टिप्पणम्)
भरिअ–भृत, भरित
भरिय–भरित
भल्ल–भद्र
भल्ल–शुनक इति टिप्पणम्
भल्लुय–भल्लूक (प्राणिविशेषः)
भल्लू–भल्लूक
भव–भव (संसारगति)
भवकद्दम–भवकर्दम
भवचरिय–भवचरित
भवण–भवन
भवबद्ध–भवबद्ध
भवंतर–भवान्तर
भव्व–भव्य
भव्वयण–भव्यजन
भस–भष् (धातुः)
भसण–भषक (मनसा दुष्ट इति टिप्पणम्)
भसण–भषक (शुनक इत्यर्थः)
भसल–भृङ्गशब्दार्थे देशी
भसलउल–भ्रमरकुल
भंगाल–भृङ्ग+आल (मत्वर्थीयः) (सभृङ्ग इत्यर्थः)
भगुर–भङ्गुर
भंड–भाण्ड
भडण–भण्डन (कलह इत्यर्थ.)
भंति–भ्रान्ति
भंतिअ–भ्रान्त
भंभा–भम्भा (वाद्यविशेषः)
भाण–भाजन
भाणिअ–भाणित (कथित)
भाणु–भानु
भायण–भाजन
भार–भार
भारह–भारत (महाभारत इति टिप्पणम्)
भाल–भाल्य् अवलोकने (धातु)
भाल–भाल (ललाट)
भाव–भाव
भाव–भावय् (धातुः)
भावण–भावना
भाविप्फुरंत–भा+विस्फुरत्
भाविर–भाव+इर (मत्वर्थीयः)
भास–भाष् (धातुः)
भास–भास (पक्षिविशेषः)
भासा–भाषा
भासिय–भाषित
भासुर–भासुर
भिउडि–भ्रुकुटि
भिक्ख–भिक्षा
भिक्खयर–भिक्षाचर
भिक्खपत्त–भिक्षापात्र
भिक्खा–भिक्षा
भिक्खाणिमित्त–भिक्षानिमित्त
भिच्च–भृत्य
भिच्चउल–भृत्यकुल
भिज्ज–भिद्धातोः कर्मणि
भिड–अभिगमने देशी (धातुः)
भिण्ण–भिन्न
भिणिहिण–भ्रमरादिशब्दानुकरणे धातुः (मराठी–भिणभिण)
भिण्णी–भिन्ना

भित्ति–भित्ति
भिल्ल–भिल्ल (शबरजातिविशेषे देशी)
भिस–बिस
भिंग–भृङ्ग
भिंगार–भृङ्गार (पात्रविशेषः)
भिंद्–भिद् (धातुः)
भीअ–भीत
भीम–भीम
भीयर–भीकर (भीजनकमित्यर्थः)
भीस–भीष्म (भीषण)
भीसण–भीषण
भीसावण–भेषण
भुअ–भुज
भुक्खा–बुभुक्षा
भुक्खिया–बुभुक्षिता
भुत्त–भुक्त
भुत्तुव्वरिअ–भुक्त+उर्वरित(भुक्तशेष इत्यर्थः)
भुय–भुज
भुयग्ग–भुजाग्र
भुयंग–भुजङ्ग (सर्पो विटश्चेति टिप्पणम्)
भुल्लअ–भ्रान्त इत्यर्थे देशी
भुवण–भुवन
भुवणयल–भुवनतल
भुंज–भुज् (धातुः)
भुंजाविय–भोजित
भू–भ्रू
भूदाण–भू+दान
भूमी–भूमि
भूमीयल–भूमितल
भूमीस–भूमीश (नृप इत्यर्थः)
भूय–भूत
भूरि–भूरि
भूवाल–भूपाल
भूसण–भूषण
भूस–भूष् (धातुः)
भूसिय–भूषित
भेय–भेद
भेरी–भेरी (वाद्यविशेष.)
भो–भो (सम्बोधनेऽव्ययम्)
भोअ–भोग
भोउवभोय–भोग+उपभोग
भोज्ज–भोज्य
भोम–भौम (भूमिसम्बन्धि)
भोयण–भोजन
भोयणवेल–भोजनवेला

म–मा (निषेधेऽव्ययम्)
मअ–मद
मअ–मृग
मअ–मृत
मइ–मति
मइभंस–मतिभ्रंश
मइरक्खण–मतिरक्षण
मइरंग–मदिर+अङ्ग (मदजललिप्तशरीर इत्यर्थः)
मइरा–मदिरा
मइल–मलिन
मइलणिय–मलिनित
मइलिय–मलिनित
मइंदासण–मृगेन्द्र+आसन (सिंहासन)
मई–मति
मउ–मृदु
मउअ–मृदुक (प्रियवदः कोमलश्चेति टिप्पणम)
मउड–मुकुट
मउडग्गकोडि–मुकुट+अग्र+कोटि
मउल–मुकुल
मउल–मौल (मौलिः=शिरस्) १ २३-६
मउलिय–मुकुलित
मऊरी–मयूरी
मओयर–मृतोदर
मग्ग–मार्गय् (याच्) (धातुः)
मग्ग–मार्ग

मग्गण–मार्गण (बाण)
मग्गिज्ज–मार्गय्धातोः कर्मणि
मच्छ–मत्स्य
मच्छर–मत्स्य
मच्छर–मत्सर
मच्छंधि–मत्स्यधर
मच्छंधिणीवाल–मत्स्यधरबाल
मच्छियअ–मत्स्य(क)
मज्झ–मध्य
मज्झत्थ–मध्यस्थ
मज्झखीणा–मध्येक्षीणा
मज्झिम–मध्यम
मज्ज–मद्य
मज्ज–मस्ज् (धातुः)
मज्ज–मज्जा (शरीरधातुविशेषः)
मज्जखंड–मज्जाखण्ड
मज्जमाण–मज्जत्
मज्जाय–मर्यादा
मडय–मृत (क)
मढ–मठ
मण–मन् (धातुः)
मण–मनस्
मणगमण–मनोगमन (मनोजव इत्यर्थः)
मणचडुल–मनश्चटुल (मनोवचटुल)
मणतणय–मानासिक
मणरावअ–मनोरञ्जक
मणहर–मनोहर
मणहरण–मनोहरण
मण्ण–मन् (धातुः)
मणिअ–मणित (रतिकूजितमित्यर्थः)
मणिजासवणहेउ–मणि+जपा+हेतु (मणि-जपादृष्टान्तः । स्फटिकमणिर्यथा जपापुष्प-सानिध्यादतिरक्तो दृश्यते तथा शुद्धोऽप्यात्मा संसारिणा योगे तादृशो भवति, अरूपित्वात् इति टिप्पणम्)
मणिमय–मणिमय
मणिमुद्दी–मणिमुद्रिका
मणुअ–मनुज
मणुय–मनुज
मणुस–मनुष्य
मणोज्ज–मनोज्ञ
मणोरह–मनोरथ
मणोहर–मनोहर
मण्णिअ–मानित
मत्त–मत्त
मत्थअ–मस्तक
मत्थिक्क–मस्तिष्क
मद्द–मृद् (धातुः)
मद्दण–मर्दन
मद्दल–मर्दल (वाद्यविशेषः)
मद्दव–मार्दव
मम्मण–मम्मण (कामोद्रेककारिवचनम्)
मय–मद
मय–मृग
मय–मृत
मयउल–मृगकुल
मयगह–मदग्रह
मयचक्क–मदचक्र (अष्टविधमदसमूह इत्यर्थः)
मयच्छि–मृगाक्षी
मयण–मदन
मयणाहि–मृगनाभि
मयणुम्मायअ–मदनोन्मादक
मयर–मकर
मयरद्धय–मकरध्वज
मयलंछण–मृगलाञ्छन
मयवह–मृगवध
मयवंत–मदवत्
मयंक–मृगाङ्क
मयारि–मद+अरि
मर–मृ (धातुः)
मरगय–मरकत
मरट्ट–गर्व इत्यर्थे देशी

मरण–मरण
मराल–हंस
मरालिया–मरालिका (हंसवधूः)
मरिय–मरिच (मराठी–मिरें)
मरु–मरुत्
मरुद्धय–मरुदुद्धत्
मरुहय–मरुद्+हत
मल–मल
मलण–मलन
मलहेउ–मलहेतु
मल्ल–मल्ल
मलिण–मलिन
मलीमस–मलीमस
मल्लि–मल्ली (एकोनविंशतीर्थंकरनाम)
मल्लिया–मल्लिका (कुसुमविशेषः)
मसाण–श्मशान
मसि–मषी
मसिण–मसृण
महएवी–महादेवी
महएविणिकेय–महादेवी+निकेत
महग्घ–महार्घ, अथवा, महार्ह
महण्णव–महार्णव
महत्थ–महार्थ
महमह–गन्धोद्दाने देशी (धातुः)
महयर–महत्तर
महयाल–महाकाल (उज्जयिनीस्थशिवनाम)
महरिसि–महर्षि
महल्ल–महत् (वृद्ध इत्यर्थ.)
महव्वय–महाव्रत
महंत–महत्
महाउह–महायुध
महाएवी–महादेवी
महागह–महाग्रह
महाजइ–महायति
महाजस–महायशस्
महाणुभाव–महानुभाव
महापयत्थ–महापदार्थ
महापसाअ–महाप्रसाद
महापह–महापथ
महाबल–महाबल
महामइ–महामति
महामुणि–महामुनि
महारह–महारथ
महारुंद–पूर्ण इत्यर्थे देशी, अथवा, महस् (तेजः) + रुंद (विस्तीर्ण) १·१८ १ (तेजसा विस्तीर्ण इत्यर्थ.)
महावच्छ–महावक्ष
महासइ–महासती
महि–मही (पृथ्वी)
महिअ–महित (पूजित)
महिच्छिया–मही+इच्छा (मही+ईप्सा इति टिप्पणम)
महिणाह–महीनाथ
महिमहिय–मही+महित
महिमहिल–मही+महिला (स्त्री)
महियाल–महीपाल
महिल–महिला (स्त्री)
महिला–महिला (स्त्री)
महिवइ–महीपति
महिवल–मही+तल
महिवलअ–मही + वलय (भूमण्डल-मित्यर्थ.)
महिवहु–मही+वधू
महिस–महिष
महिसासुर–महिषासुर
महिसी–महिषी (महिषपत्नी)
मही–मही
महीमहंत–मही+महत् (पूज्य)
महीयल–महीतल
महीहर–महीधर
महु–मधु
महुमह–मधुमथ(न), (विष्णुरित्यर्थः)

महुयर–मधुकर
महुयल—मधुकर
महुयला–मधुलता
महुर–मधुर
महुरक्खर–मधुराक्षर
महेली–महिला
महोरअ–महोरग
मंगल–मङ्गल
मंच–मञ्च
मंजर–मार्जार
मंजरिया–मञ्जरी
मंजीरय–मञ्जीर (पादभूषणविशेषः)
मंठ–मन्द (मराठी–मट्ठ)
मंठ–मृष्ट
मंठुवयंठ–मृष्ट+उपकण्ठ (समीप-स्थप्रदेशः)
मंडअ–मण्डप
मंडण–मण्डन
मंडय–मण्डक (खाद्यविशेषः । मराठी–माडा)
मंडलचरण–मण्डलचरण (सरीसृप-विशेषः)
मंडलिय–मण्डलित (वर्तुल)
मंडलिय–माण्डलिक (मण्डलवर्तिनृपसमूहः)
मंडलिल्ल–मण्डल+इल्ल (मत्वर्थीयः)
मंडव–मण्डप
मंडिअ–मण्डित
मंडिय–मण्डित
मंत–मन्त्र
मंतगुंफ–मन्त्र+गुम्फ, अथवा, मन्त्र गुप्त (गुप्तमन्त्र इत्यर्थः)
मंतण–मन्त्रण
मंति–मन्त्रिन्
मंतिअ–मन्त्रित
मंतिमहल्ल–मन्त्रिन्+महत्
मंतिसुअ–मन्त्रिसुत
मंथर–मन्थर (मन्द)
मंद–मन्द
मंदरगिरि–मन्दरगिरि
मंदल–मर्दल (वाद्यविशेषः)
मंदार–मन्दार (वृक्षविशेषः)
मंदिर–मन्दिर
मंधाय–माधातृ (नृपविशेषः)
मंस–मांस
मंसासिण–मांसाशिन्
मा–मा (प्रतिषेधेऽव्ययम्)
माइ–मातृ
माइअ–मात (माधातोर्निष्ठान्तम्)
माउच्छिआ–मातृष्वसृ
माउपण्णअ–मातृ+पन्नग
माऊर–मायूर (मयूरसबन्धि)
माण–मान
माणअ–मानव
माणवभव–मानवभव
माणावमाण–मानापमान
माणिक्क–माणिक्य
माणिणि–मानिनी
माणुस–मनुष्य
माय–मातृ
मायरि–मातृ
मायंग–मातङ्ग (हस्ती)
मायंगणर–मातङ्गनर (चाण्डाल)
मायाकसाअ–मायाकषाय
मायापियरुल्लअ–मातापितृ+उल्लअ (स्वार्थे)
मायाभाव–मातृभाव
मायामअ–मायामय
मायार–माया+आचार
मायासुअ–मातृ+सुत
मार–मार (मदन)
मारण–मारण
मारणसील–मारणशील
मारय–मारय् (धातुः)

माराव–मारय् (धातु)
माराविअ–मारित
मारि–मारी (हननशीलदेवताविशेषः)
मारिअ–मारित
मारिदत्त–मारिदत्त (राज्ञो नामविशेषः)
मारियत्त–मारिदत्त (राज्ञोनामविशेषः)
मारी–मारी (कात्यायनी)
माल–माला
मालइ–मालती (लताविशेषः)
माला–माला
मास–मास
मासावसाण–मास+अवसान
मासाहार–मासाहार
माहप्प–माहात्म्य
माहिंद–माहेन्द्र
मि–अपि (अनुस्वारानुनासिकयोः परे एव)
मिउ–मृदु
मिग–मृग
मिगीवइ–मृगीपति
मिच्छत्त–मिथ्यात्व
मिच्छभाअ–मिथ्याभाव
मिच्छमअ–मिथ्यामद, मिथ्यामत
मिच्छ–मा+इच्छ
मिच्छामअ– मिथ्यामद
मिट्ठ–मिष्ट
मिट्ठ–मृष्ट
मिट्ठ–मेण्ठ (हस्तिपाल)
मित्त–मित्र (सुहृद्)
मित्त–मित्र (सूर्य)
मिल–मिल् (धातुः)
मिलिय–मिलित
मिस–आमिष
मिहिलाउर–मिथिलापुर
मिहुण–मिथुन
मिहुणल्ल–मिथुन+अल्ल (स्वार्थे)
मिहुणुल्ल–मिथुन+उल्ल (स्वार्थे)
मिंढय–मेषशब्दार्थे देशी (मराठी–मेंढा)
मिंढी–मेषस्त्री इत्यर्थे देशी (मराठी–मेंढी)
मीणधर–मीनधर (धीवर)
मीणी–मीनी (मत्स्यस्त्री)
मुअ–मुच् (धातुः)
मुअ–मृत
मुक्क–मुक्त
मुक्ख–मूर्ख
मुग्गस–नकुल इत्यर्थे देशी (मराठी–मुगुस)
मुच्छ–मूर्च्छ् (धातुः)
मुच्छ–मुर्च्छा
मुच्छा–मूर्च्छा (यमदूतीति टिप्पणम्)
मुच्छावण्ण–मूर्च्छा + आपन्न
मुच्छावस–मूर्च्छावश
मुच्छिज्ज–मूर्छधातोः कर्मणि
मुच्छिय–मूर्छित
मुज्झ–मुह् (धातुः)
मुट्ठिगाहिअ–मुष्टिगृहीत
मुडियट्ठि–मोटित (भग्न)+अस्थि
मुण–मन् चिन्तायाम् (धातुः)
मुण–ज्ञा इत्यर्थे (धातुः)
मुणि–मुनि
मुणिज्ज– ज्ञाधातोः कर्मणि
मुणिदिक्ख–मुनिदीक्षा
मुणिपुंगव–मुनिपुगव
मुणिंद–मुनीन्द्र
मुणी–मुनि
मुणीसर–मुनीश्वर
मुत्ताहल–मुक्ताफल
मुत्ति–मुक्ति
मुत्ति–मूर्ति (शरीर)
मुत्तिय–मौक्तिक
मुद्दा–मुद्रा (अङ्गविक्षेपप्रकारः)
मुद्ध–मुग्ध
मुद्ध–मुग्धा
मुय–मृत

मुयंग–मृताङ्ग
मुररिउ–मुररिपु (विष्णुः)
मुरारि–मुरारि (विष्णुः)
मुसावाय–मृषावाद
मुह–मुह् (धातुः)
मुह–मुख
मुहर–मुखर
मुहरत्त–मुखरक्त (शुको विटश्च)
मुहल–मुखर
मुहलिय–मुखरित
मुहवड–मुखपट
मुहामुक्क–मुखामुक्त
मुहावट्टिय–मुखावर्तित
मुंड–मुण्ड् (धातुः)
मुंड–मुण्ड (मूर्धन्)
मुंडपसाहणि—मुण्ड + प्रसाधना
(मुण्डालङ्कृतेत्यर्थः)
मुंडिय–मुण्डित
मूअ–मूक
मूढ–मूढ
मूढत्तण–मूढत्व
मूढमइ–मूढमति
मूल–मूल
मेइणी–मेदिनी (भूमिः)
मेकरंत–मे इति मेषशब्द कुर्वत्
मेच्छ–म्लेच्छ
मेमण—मेइतिशब्दाविशेषः
मेम्मायंत–मेमे इतिशब्द कुर्वत्
मेर–मर्यादा इत्यर्थे देशी
मेरु–मेरु (पर्वतनाम)
मेलअ–मेलन
मेलण–मीलन
मेल्ल–मुच् इत्यर्थे देशी (धातुः)
मेल्लाविअ–(मेलित)
मेल्लिअ–मुक्त इत्यर्थे देशी
मेस–मेष
मेसउल–मेषकुल
मेसय–मेष (क)
मेह–मेघ
मेहजाल–मेघजाल
मेहा–मेधा
मेहुण–मैथुन
मोक्ख–मोक्ष
मोडिय–मोटित (भग्न)
मोण–मौन
मोत्तिय–मौक्तिक
मोयय–मोदक
मोर–मयूर
मोरुल्ल–मयूर+उल्ल (स्वार्थे)
मोरय–मयूर
मोल्ल–मूल्य
मोसिअ–मोषित, मुषित
मोह–मोह
मोहणसील–मोहनशील
मोहरयंध–मोहरजस्+अन्ध
मोहंध–मोहान्ध
मोहिअ–मोहित

य–च (स्वरात्परे एव)
या–ज्ञा (धातुः)
याण–ज्ञा (धातुः)
युत्त–युक्त

रइ–रति
रइअ–रचित
रइय–रचित
रइरमण–रतिरमण (मदन)
रइलासस–रतिलालस
रइविंभल–रतिविह्वल
रउद्द–रौद्र
रउरव–रौरव
रक्ख–रक्ष् (धातुः)

रक्खस–राक्षस
रक्खसी–राक्षसी
रक्खिअ–रक्षित
रज्ज–राज्य
रज्ज–रज्धातोः कर्मणि
रज्जंग–राज्याङ्ग
रज्जु–रज्जू (प्रमाणविशेषः)
रज्जुया–रज्जुका
रड–रट् (धातुः) (रोदनेऽपि दृश्यते)
रडंत–रटत्, रुदत्
रण–रण
रणझणत–रणझणशब्द कुर्वत्
रण्ण–अरण्य
रत्त–रक्त (रक्तवर्ण)
रत्त–रक्त (आसक्त)
रत्तच्छ–रक्ताक्ष
रत्तत्त–रक्त+अक्त (रक्तरञ्जित इत्यर्थः)
रत्तपत्तंचिअ–रक्तपत्राञ्चित
रत्तसिहर–रक्तशिखर (कुक्कुट)
रत्तिदिवसु–रात्रिंदिवसम्
रत्तुप्पल–रक्तोत्पल
रम–रम् (धातुः)
रमण–रमण (वल्लभ)
रमण–रमण (रति', क्रीडा)
रमणिज्ज–रमणीय
रमणी–रमणी
रमंत–रममाण
रम्म–रम्य
रमिअ–रत
रय–रजस्
रयई–रजकी
रयण–रत्न
रयणत्त–रत्नत्व
रयणत्तय–रत्नत्रय (ज्ञानदर्शनचारित्राणि)
रयणप्पह–रत्नप्रभ (प्रथमनरकनाम)
रयणायर–रत्नाकर
रयणि–रजनि
रयणी–रजनी
रयणीयर–रजनीकर (चन्द्र)
रयणुज्जल–रत्नोज्ज्वल
रयणोह–रत्नौघ
रव–रव
रवण्ण–रमणीय इत्यर्थे देशी
रवि–रवि
रवियर–रविकर (रविकिरण)
रविवार–रविवासर
रस–रस
रस–रस (रक्तादिधातवः) १·१६·९.
रसणा–रशना
रसय–रस (क)
रसयारी–रसकारिन् (सुखजनक इति टिप्पणम्)
रसवस–रसवश
रसविण्णास—रस + विजिज्ञासा
रसत–रसत्
रसिय–रसित (शब्द इत्यर्थः)
रसोई–रस + इल्ल (मत्वर्थीयः) (पाकइत्यर्थः)
रसिल्ल–रसवती (ओदनादिपाक इत्यर्थः)
रसोल्ल–रस + उल्ल (मत्वर्थीयः)
रह–रथ
रहवर–रथवर
रहस–रभस
रहसजुत्त–रभसयुक्त
रहसिर–रभस + इर (शीलार्थे प्रत्ययः)
रहसिल्ल–रभस + इल्ल (मत्वर्थीयः)
रहिअ–रहित
रहुवइ–रघुपति
रंग–रङ्ग
रंगंत–रङ्गत् (मराठी–रांगणें)
रंगावलि–रङ्गावलि (प्राङ्गणादिषु विविधवर्णचूर्णैः क्रियमाणो विच्छित्तिविशेषः। मराठी–रांगोळी)

रंगिर–रङ्ग + इर (रङ्गयुक्त)
रंजिअ–रञ्जित
रंजिय–रञ्जित
रंध–रन्ध्र
राअ–राग
राअ–राजन्
राई–राजि (धान्यविशेष । मराठी–मोहरी)
राउ–राजन्
राउल–राजकुल
राणअ–राजन्
राणासण–राजासन
राणिया–राज्ञी
राम–राम (रामचन्द्र)
राम–राम (मन्त्रिनाम)
राय–राग
राय–राजन्
रायउत्त–राजपुत्र
रायउर–राजपुर
रायघरिणि–राजगृहिणी
रायगेह–राजगेह
रायट्ठाण–राजस्थान (राजसभेत्यर्थः)
रायतुरअ–राजतुरग
रायपुरिस–राजपुरुष
रायमग्ग–राजमार्ग
रायराएस–राजराजेश
रायसिरी–राजश्री
रायसोवाण–राजसोपान
रायाणिया–राज्ञी
रायाहिराय–राजाधिराज
राव–रव (शब्द)
रावण–रावण
रासह–रासभ
रासि–राशि
राहा–शोभा इति टिप्पणम्
रिउ–रिपु
रिउपहरण–रिपुप्रहरण
रिच्छ–ऋक्ष
रिण–ऋण
रिद्ध–ऋद्ध
रिद्धि–ऋद्धि
रिया–ऋच् (वेदपद्क्तयः)
रिसह–ऋषभ (प्रथमतीर्थंकरनाम)
रिसि–ऋषि
रिसित्त–ऋषित्व
रिसिवअ–ऋषिव्रत
रिसीसर–ऋषीश्वर
रिंछोलि–श्रेणिशब्दार्थे देशी
रीण–दीन, श्रान्त इत्यर्थे देशी
रुइ–रुचि
रुइरहियक्क–रुचिरहितार्क (रुच्या दीप्त्या प्रच्छादितादित्य इति टिप्पणम्)
रुक्ख–वृक्ष
रुक्खिअ–रूक्षित
रुज्झ–रुध्धातोः कर्मणि
रुट्ठ–रुष्ट
रुण्ण–रुदित
रुद्द–रुद्र
रुद्द–रौद्र
रुद्ध–रुद्ध
रुप्प–रौप्य
रुप्पिणी–रुक्मिणी
रुवत–रुदत्
रुसा–रोषेण
रुह–रुह् (धातुः)
रुहिर–रुधिर
रूढत्थल–रूढ+स्थल
रुहिरंचाइणि–रुधिर+अर्चिता
रुहिरावलि–रुधिरावलि
रुहिरोलवोल–रुधिर+ओल + वोल (रुधिरेण आर्द्रार्द्र इत्यर्थः)
रुंजिय–रुञ्जित
रुंट–गुञ्ज्इत्यर्थे देशी (धातुः)

रुंड–रुण्ड (कबन्ध)
रुंद्–विस्तीर्ण इत्यर्थे देशी
रुंधण–रोधन
रुंभ–रुध् (धातुः)
रूव–रूप
रूववत–रूपवत्
रूस–रुष् (धातुः)
रेणु–रेणु
रेल्ल–शुभ् धात्वर्थे देशी
रेल्लिय–भाष् धात्वर्थे देशी
रेहा–रेखा
रेहातियंक–रेखा+त्रिक+अङ्क
रोअ–रुद् (धातुः)
रोझ–रोझ (प्राणिविशेषः)
रोमंचिय–रोमाञ्चित
रोमंथण–रोमन्थ
रोमावलि–रोमावलि
रोयत्तण–रोगित्व
रोयाउर–रोगातुर
रोर–दरिद्र इत्यर्थे देशी
रोरत्तण–दारिद्र्य
रोस–रोष (क्रोध)
रोसह–? रोषेणान्योन्य घ्नन्तीति टिप्पणम्।
रोसिर–रोषशील
रोहय–रोहित (मत्स्याविशेषः)
रोहिय–रोहित (मत्स्याविशेषः)

लइ–अतिशयार्थेऽव्ययम् (देशी), लोकोक्ताविति तु हेमचन्द्रः।
लइ–शीघ्रम्
लइअ–गृहीत
लइय–गृहीत (व्याप्त इत्यर्थः)
लक्ख- लक्षय् (धातुः)
लक्ख–लक्ष (संख्या)
लक्खण–लक्षण
लक्खणालु–लक्षण+आलु (मत्वर्थीयः)
लग्ग–लग् (धातुः)
लग्ग–लग्न
लग्ग–लग्न (योगविशेषः)
लच्छि–लक्ष्मी
लच्छिसहि–लक्ष्मी+सखी
लच्छीपियल्ल–लक्ष्मीप्रिय+ल्ल (स्वार्थे)
लज्ज–लज्जा
लज्जा–लज्जा
लडह–सुन्दर इत्यर्थे देशी
लट्ठि–यष्टि
लड्डुय–लड्डुक (मोदकादि)
लण्ह–श्लक्ष्ण
लद्ध–लब्ध
लद्धी–लब्धि (प्राप्ति)
लब्भ–लभ्धातोः कर्मणि
लयामंडव–लतामण्डप
लयाहर–लतागृह
लल–लल् (धातुः)
ललणा–ललना
लललिय–चञ्चल इत्यर्थे देशी
ललंत–ललत्
लल्ल–अस्पष्टमापीत्यर्थे देशी
लल्लक–रौद्र इत्यर्थे देशी
ललिय–ललिता
ललिया–ललिता
लवण–लवण
लविय–लपित (उक्त)
लह–लभ् (धातुः)
लहंत–लभमान
लहु–लघु
लहुय–लघुक
लंगूल–लाङ्गूल
लंघ–लङ्घ् (धातुः)
लंघिय–लङ्घित
लंछण–लाञ्छन
लंजिया–दासीशब्दार्थे देशी

लंपड–लम्पट
लंब–लम्ब् (धातुः)
लंबत–लम्बत्
लंबिय–लम्बित
लंबिर–लम्बनशील
लाइअ–लात (गृहीत इत्यर्थः)
लायण्ण–लावण्य
लाल–लाला
लालस–लालस
लालारस–लाला+रस
लावण्ण–लावण्य
लाह–लाभ
लाहालाह–लाभालाभ
लित्त–लिप्त
लियअ–लात (गृहीत)
लिह–लिख् (धातुः)
लिहाव–लेखय् (धातुः)
लिहिय–लीढ, लिखित
लिंग–लिङ्ग (चिह्न)
लिंगि–लिङ्गिन् (ब्रह्मचारीत्यर्थः)
लिंत–लात् (लाधातोः शत्रन्तम्)
लीण–लीन
लीला–लीला
लुअ–लून
लुट्टण–लुट्टन
लुण–लू (धातुः)
लुद्ध–लुब्ध
लुद्धअ–लुब्धक (व्याध इत्यर्थः)
लुद्धक्ख–यमदूत इत्यर्थे (?)
लुंचण–लुञ्चन
ले–ला (धातुः)
लेप–लेप (कलास्वन्यतमा)
लेप्प–लेप (वर्णादिः)
लेव–लेप
लेसा–लेश्या
लोअ–लोक
लोइय–लोचित
लोण–लावण्य
लोय–लोक
लोयण–लोचन
लोयत्तय–लोकत्रय
लोयालोय–लोकालोक
लोल–लोल
लोलंत–लोलत्
लोलिर–लोलनशील
लोहवलय–लोहवलय
लोहिय–लोहित
लोहियलुद्ध–लोहितलुब्ध

वइतरणि–वैतरणी (नरकनदीनाम)
वइधव्व–वैधव्य
वइयर–व्यतिकर
वइर–वैर
वइराअ–वैराग्य
वइराड–वैराट
वइरि–वैरिन्
वइरिमारि–वैरिमारिणी
वइसवण–वैश्रवण (कुबेर)
वइसाह–वैशाख
वउ–व्रत
वउत्थ–व्रतस्थ
वक्खाण–व्याख्यान
वग्ग–वर्ग (समूह)
वग्गुरिया–वागुरा (मृगबन्धनी रज्जुः)
वग्घ–व्याघ्र
वच्छ–वत्स
वच्छ–वक्षस्
वच्छराअ–वत्सराज (पूर्वकवेर्नाम)
वच्छल–वत्सल
वच्छल्ल–वात्सल्य
वज्ज–वज्र
वज्ज–वर्जय् (धातुः)

वज्ज–वाद्य
वज्जअ–वाद्य(क)
वज्जणिहाअ–वज्रनिघात
वज्जमाण–वाद्यमान
वज्जर–कथ् इत्यर्थे देशी (धातुः)
वज्जावय–वादय् (धातुः)
वट्ट–वृत् (धातुः)
वट्टण–वर्तन
वज्झावयास–बाह्य+अवकाश (नगरबाह्यप्रदेश इति टिप्पणम्)
वट्टिय–वर्तित (आवर्तित, अभ्यस्त इत्यर्थः) १. १७. १०
वड्ढ–वृध् (धातुः)
वड्ढमाण–वर्धमान (चतुर्विंशतीर्थंकरनाम)
वड्ढमाण–वर्धमान
वड्ढिअ–वर्धित
वड्ढिय–वर्धित
वण–वन
वण–व्रण
वणदेवया–वनदेवता
वणमक्कड–वनमर्कट
वणयर–वनचर
वणयरि–वनचरी
वणलच्छी–वनलक्ष्मी
वणवाल–वनपाल
वणि–वणिक्
वणिअ–कदर्थित इति टिप्पणम्
वणिय–व्रणित (जर्जरित इत्यर्थः)
वणिवइ–वणिक्पति
वणिवर–वणिग्वर
वण्ण–वर्णय् (धातुः)
वण्ण–वर्ण
वण्णण–वर्णन
वण्णवंत–वर्णवत्
वण्णुक्कड–वर्णोत्कट
वत्त–वृत्त
वत्त–वक्त्र
वत्त–वार्ता
वत्त–वार्ता (कृषिवाणिज्यपशुपालनं वार्ता इति टिप्पणम्)
वत्थ–वस्त्र
वत्थु–वस्तु
वत्थुबंध–वस्तुबन्ध
वम्म–वर्मन्, मर्मन्
वम्मह–मन्मथ
वम्मीसर–मदन इत्यर्थे देशी
वम्मुल्लूरिय–वर्मोल्लूरित (मर्मणि विद्ध इत्यर्थः)
वयण–वचन
वयण–वदन
वयणभंग–वचनभङ्ग (स्यादस्ति स्यान्नास्ती-त्यादिसप्तभङ्गीप्रतिपादकवचनप्रकार इति टिप्पणम्)
वयणुल्ल–वदन + उल्ल (स्वार्थे)
वर–वर (श्रेष्ठ)
वरइत्त–वरीता (पतिरित्यर्थः)
वरचेल–वर + चेल (वस्त्र)
वराई–वराकी
वराय–वराक
वरिट्ठ–वरिष्ठ
वरिस–वर्ष् (धातुः)
वरिस–वर्ष (संवत्सर इत्यर्थे)
वरिसोण–वर्ष + ऊन
वल–वल् चलने (धातुः)
वल–युक्त इत्यर्थे २-२-११.
वलय–वलाका
वल्लह–वल्लभ
वल्लह–वल्लभ (राष्ट्रकूटनरेन्द्राणां विरुदेष्वन्यतमम् । कृष्णमहाराजस्य नामान्तरमिति टिप्पणम्)
वल्ली–वल्ली
ववहर–वि + अव + हृ (धातुः)

ववहारकूड–व्यवहारकूड (कूटव्यवहार इत्यर्थः)
ववियं–उप्त
वस–वश
वस–वश् (धातुः)
वस–वसा (रसादिशरीरधातूनामन्यतमा १-१६-९.)
वसकद्दम–वशा + कर्दम
वसचोप्पड–वसावलिप्त इत्यर्थे देशी
वसण–व्यसन
वसह–वृषभ
वसहि–वसति
वसा–वसा
वसातुप्पगिद्ध–वसाघृतभक्षक
वसुह–वसुधा
वसुहाहिअ–वसुधा + अधिप
वसुंधर–वसुंधरा (पृथ्वी)
वह–वध् (धातुः)
वह–वह् (धातुः)
वहु–वधू
वंक–वक्र
वंच–वञ्च् (धातुः)
वंचण–वञ्चन
वंचणपर–वञ्चनपर
वंछ–वाञ्छ् (धातुः)
वंछिअ–वाञ्छित
वंझ–वन्ध्या
वंठ–शुष्कवृक्ष इत्यर्थे देशी (मराठी वटलेला)
वंदण–वन्दन
वंदणिज्ज–वन्दनीय
वंदिय–वन्दित
वंभचेर–ब्रह्मचर्य
वंस–वंश (कुल)
वा–वा (धातुः)
वा–इवार्थेऽव्ययम्
वाअ–वात
वाइत्त–वादित
वाउ–वायु
वाएसरि–वागीश्वरी
वाड–वाट (वसतिस्थानम् । मराठी-वाडा)
वाणर–वानर
वाणी–वाणी
वाय–वात
वायडउल–शुककुल इत्यर्थे देशी
वायरण–व्याकरण
वाय–वाचय् (धातुः)
वाया–वाच्
वारण–वारण
वारवार–वारवारम्
वारिअ–वारित
वारीयर–वारिचर (जलचर)
वाल–वाल (केश)
वाल–व्याल
वालपूलोलि–वालपूलाः केशपुञ्जास्तेषामोलिः पङ्क्तिरिति टिप्पणम्
वालुयपह–वालुकाप्रभ (तृतीयनरकनाम)
वावग–वामन
वावर–वि+आ+पृ (धातुः)
वावरिअ–व्यापार
वावार–व्यापार
वावी–वापी
वास–व्यास
वास–वास (वसतिः)
वासअ–वर्षर्तुसम्बन्धि (दूर्वादिकम्)
वासट्ठिविह–द्विषष्टिविध
वासणा–वासना
वासर–वासर (दिनम्)
वासवसेण–वासवसेन (कविनामविशेषः)
वासिअ–वासित
वासुएअ–वासुदेव
वासुपुज्ज–वासुपूज्य (द्वादशतीर्थंकरनाम)
वाह–बाष्प
वाह–वाहय् (धातुः)

वाह–व्याध
वाहण–वाहन
वाहायर–बाधाकर
वाहि–व्याधि
वाहिज्ज–वध्धातोर्णिजन्तात् कर्मणि
वाहिय–वाहित
वाहियालि–वाह्यालि (वाह्यमार्गः, वाहनाना मश्वगजादीना शिक्षार्थे परिकल्पितः प्रदेश विशेषः । बाप्पधारेत्यर्थान्तरम्)
वाहिल्ल–व्याधि+इल्ल (मत्वर्थीयः)
वि–अपि (स्वरात्परे एव)
विइण्ण–वितीर्ण
विउल–विपुल
विउस–विद्वस्
विउससह–विद्वत्सभा
विओय–वियोग
विओयण–वियोजन (वियोग)
विक्कमसंवच्छर–विक्रमसवत्सर
विकिर–वि+कृ (क्षरणे धातुः)
विक्खित्त–विक्षिप्त (विहित)
विगव्व–विगर्व
विग्गह–विग्रह
विग्गहवंत–विग्रहवत्
विग्घमहाणइ–विघ्नमहानदी
विचित्त–विचित्र
विच्च–वर्त्मनित्यर्थे देशी
विच्छड्ड–विच्छर्द
विच्छाय–विच्छाय (निस्तेजा इत्यर्थः)
विच्छिण्ण–वि+छिन्न
विच्छुल–विच्छुर
विच्छुलिय–विच्छुरित
विच्छोह–विक्षोभ
विजय–विजय
विज्ज–विद्या
विज्ज–वैद्य
विज्जविउल–विद्याविपुल
विज्जावच्च–वैयापृत्य (व्यापारः सेवादिक वेत्यर्थः)
विज्जाहर–विद्याधर
विज्जिज्जंत–वीज्यमान
विज्जु–विद्युत्
विज्जुपुंज–विद्युत्पुञ्ज
विज्जुलिय–विद्युत्
विज्जुविराइय–विद्युद्विराजित
विट्टल–अपवित्रार्थे, अस्पृश्यसंसर्गे वा देशी
विट्टलअ–अपवित्रार्थे देशी
विट्टर–विष्टर (आसन)
विड–विट
विणअ–विनत
विणअ–विनय
विणाडिअ–वञ्चित इत्यर्थे देशी
विणविय–विज्ञप्त
विणास–विनाश
विणासयर–विनाशकर
विणिउत्त–विनियुक्त
विणिग्गम–वि+निर्गम
विणिग्गय–विनिर्गत
विणिवारिय–विनिवारित
विणिवेइय–विनिवेदित
विणिहय–विनिहत
विणु–विना
विण्णाण–विज्ञान
विण्हु–विष्णु
विणोअ–विनोद
विणोय–विनोद
वित्त–वित्त
वित्त–वृत्त
वित्थर–वि+स्तृ (धातुः)
वित्थरिअ–विस्तृत
वित्थार–विस्तार
वित्थरिअ–विस्तारित
वित्थिण्ण–विस्तीर्ण

विद्रुम–विद्रुम
विद्ध–विद्ध
विद्धंसण–विध्वसन
विद्धंसिय–विध्वस्त
विद्धि–वृद्धि
विद्धी–विद्धा
विप्प–विप्र
विप्पागम–विप्र+आगम (वेद इत्यर्थः)
विप्पिअ–वि+प्रिय (हिंसादिकर्म)
विप्पिय–विप्रिय
विप्पोसहि–विप्रौषधि (!) योगिना प्रभाव–विशेषेण मूत्रविष्ठादिभ्यो निष्पाद्यमाना–न्यौषधानि)
विप्फुर–वि+स्फुर् (धातु.)
विब्भम–विभ्रम
विब्भयंत–विभावयत्
विभिण्ण–विभिन्न
विमद्द–विमर्द
विमल–विमल (त्रयोदशतीर्थकरनाम)
विमल–विमल
विमलवाहण–विमलवाहन (राजो नामविशेषः)
विमाण–विमान (रथादिकम)
विमाणय–विमानक (गृह प्रासादो वा)
विमीस–वि+मिश्र
विमुक्क–विमुक्त
वियक्किअ–वितर्कित
वियक्खण–विचक्षण
वियड्ड–विकट
वियर–वि+चर् (धातुः)
वियर+वि+तृ दाने (धातुः)
वियराल–विकराल
वियल–वि+गल् (धातुः)
वियलिय–विगलित
वियलियसंक–विगलितशङ्क
वियस–वि+कस् विकसने (धातुः)
वियंभ–वि+जृम्भ् (धातुः)
वियार–विकार
वियारणक्खम–विदारणक्षम
वियारभग्ग–विकारभग्न (व्याधित इत्यर्थः)
वियारविज्ज–विचारविद्या (आन्वीक्षिका)
वियारिअ–विचारित
वियारिअ–विदारित
विरइय–विरचित
विरइयकण्णिय–विरचित + कर्णिका (कुन्तादीनामग्रभागः)
विरत्त–विरक्त
विरत्त–विशेषेण रक्त १-१४-२
विरञ्जइअ–विरञ्जित
विरम–विराम
विराहिअ–विरहित
विरल–विरल
विरस–वि+रस् शब्दे (धातुः)
विरस–विरस
विरह–विरह
विराम–विराम (नाग)
विलअ–विलय (विनाश)
विलआ–वनिता इत्यर्थे देशी १-१४-१०
विलग्ग–विलग्न
विलस–वि+लस् (धातुः)
विलसिअ–विलसित
विलंबंत–विलम्बमान
विलास–विलास
विलित्त–विलिप्त
विलिहिय–विलिखित
विलिहिय–विलीढ
विल्लि–वल्ली
विलीण–विलीन
विलुक्क–विलुप्त (!)
विलुलिय–विलुलित
विलुंच–वि+लुञ्च् (धातुः)
विलोल–विलोल (चञ्चल)
विलोहिय–विलोभित

विव–इवार्थेऽव्ययम्
विवज्जिअ–विवर्जित
विवणम्मण–विमनस्क (?)
विवण्ण–विपन्न
विवरीअ–विपरीत
विवरीय–विपरीत
विवरेर–विपरीत
विवरेर–विवरणकार
विवंच–वि+मुच् धात्वर्थे
विवाय–विपाक
विवाह–विवाह
विविह–विविध
विविहासण–विविध + आसन
विस–विष
विसअ–विषय (देशः भोगादिर्वा)
विसज्जिय–विसर्जित
विसण्ण–विषण्ण
विसदंस–विषदश (सर्प इत्यर्थः)
विसमी–विषमा
विसय–विषय
विसयम्म–विश्वकर्मन्
विसयासत्त–विषयासक्त
विसरिस–विसदृश
विसवेअ–विषवेग
विससत्ति–विषशक्ति
विसहर–विषधर (सर्प)
विसहरारि–विषधरारि (नकुल इत्यर्थः)
विसहिय–विषह्य, विसोढ
विसाणय–विषाण (क)
विसायघत्थ–विश्वासघातिन्
विसाल–विशाल
विसुद्धि–विशुद्धि
विसेस–विशेष
विसेसिय–विशेषित
विहअ–विभव
विहट्टिय–विघट्टित
विहडप्फड–विस्फुरित इत्यर्थे देशी
विहत्ति–विभक्ति
विहत्तिय–विभक्ति (क)
विहलंघल–विह्वल इत्यर्थे देशी (अचेतन इति तु टिप्पणम्)
विहव–विभव
विहवत्तण–विभव
विहंग–विहङ्ग
विहज–वि + भञ्ज् (धातुः)
विहंडण–विखण्डन
विहंडिर–विभण्ड+इर (शीलार्थे) (कलहशील इत्यर्थः)
विहा–वि + भा (धातुः)
विहाण–विधान
विहार–विहार
विहाव–वि + भावय् (धातुः)
विहावरि–विभावरी
विहाविअ–विभावित (कथित इति टिप्पणम्)
विहि–विधि
विहिअ–विहित
विहिय–विहित
विहियच्छाय–विहितच्छाय (विहितप्रसाद इत्यर्थः)
विहिवसभग्ग–विधिवशभग्न (कर्मवशात्प्रेरित-मिति टिप्पणम्)
विहीण–विहीन
विहुणिय–विधूत, विधूनित
विहुर–विधुर (विकल इत्यर्थे)
विहुर–विधुर (दुःख इत्यर्थे)
विहुरवडण–विधुरपतन (दुःखपतन)
विहूई–विभूति
विहूसण–विभूषण
विहूसिय–विभूषित
विंझ–विन्ध्य
विंझसिरि–विन्ध्यश्री
विंद–वृन्द

विंभल–विह्वल
विंभिय–विस्मित
वीणंत–वीणयत् (वादयन् इत्यर्थे)
वीणा–वीणा
वीणारव–वीणारव
वीयराअ–वीतराग
वीर–वीर
वीरवइ–वीरवती (स्त्रीनामविशेषः)
वीसरिय–विस्मृत
वीसल–वीसल (पुरुषनामविशेषः)
वीसास–विश्वास
वुक्करंत–भू भू इति श्वशब्दं कुर्वत्
वुड्ढ–वृद्ध
वुड्ढत्तण–वृद्धत्व
वुड्ढहूव–वृद्ध + भूत
वुत्त–उक्त
वूह–व्यूह
वेअ–वेद
वेइय–वेदित (निवेदित)
वेउव्वणा–विकुर्वणा (विकार)
वेढण–वेष्टन
वेढिअ–वेष्टित
वेण–वेन (नृपविशेषः)
वेणु–वेणु (वंश)
वेयण–वेदना
वेयमूढ–वेदमूढ
वेयवंत–वेदवत्
वेयागम–वेद + आगम
वेयालअ–वेताल (क)
वेयालकाल–विकाल + काल (संध्यासमयः । वेतालादिभ्रमणकाल इति तु टिप्पणम्)
वेयालिय–वैतालिक
वेर–वैर
वेरमण–विरमण (विराम)
वेल–वेला
वेलपडिच्छिअ–वेला + प्रतीष्ट
वेल्लि–वल्ली
वेल्ली–वल्ली
वेव–वेप् (धातुः)
वेविर–वेपनशील
वेस–वेष
वेहविअ–विह्वलित (रोपितोऽनुरञ्जितो वेति टिप्पणम्)
वेहाविय–वि + भावित
वोक्कय–वृक्क (शरीरभागः)
वोल–आर्द्र इत्यर्थे देशी
वोलीण–व्यतिक्रान्त इत्यर्थे देशी
वोल्लिअ–आर्द्रीकृत (अभ्यक्त)
व्व–इवार्थेऽव्ययम् (ह्रस्वात्स्वरादुत्तरमेव प्रयुज्यते)

सइ–सती
सइं–स्वयम्
सइरिणि–स्वैरिणी
सउच्च–शौच
सउण–शकुन
सउण्ण–सपुण्य, १-२५-१०
सउहयल–सौधतल
सउहलय–सौधतल
सकलत्त–स्व + कलत्र
सकहंतर–स्व + कथान्तर
सकंत–स्व + कान्ता
सक्क–शक् (धातुः)
सक्क–शक्र
सक्कर–शर्करा
सक्करपह–शर्कराप्रभ (द्वितीयनरकनाम)
सकुंतलिय–स + कुन्तल (सुकेशीत्यर्थः)
सकोह–सक्रोध
सखंड–स + खण्ड
सक्खीयर–साक्षिचर
सग्ग–स्वर्ग
सग्गत्थ–स्वर्गस्थ

सग्गसिर–स्वर्गशिरस्
सग्गापवग्ग–स्वर्गापवर्ग
सगुण–स + गुण
सगुण–स्व + गुण
सगुणोह–सद्गुणौघ
सच्च–सत्य
सच्चमूल–सत्यमूल
सच्चवंत–सत्यवत्
सच्चविअ–साक्षात्कृत, दृष्ट
सच्चसंध–सत्यसंघ
सच्चित्त–सचित्त (सचेतन इत्यर्थः)
सचेयण–सचेतन
सचेलअ–सचेल (क)
सच्चेयण–सचेतन
सच्छ–स्वच्छ
सच्छाय–सच्छाय
सच्छिकर–साक्षीकृ दर्शने (धातुः)
सज्ज–सज्ज (सद्यः ?)
सज्जण–सज्जन
सज्जिअ–सज्जित
सज्जीअ–सजीव
सजोह–सयोध
सझाण–स्व+ध्यान
सड–शातय् (धातुः)
सडंग–षडङ्ग
सडिय–शातित
सढ–शठ
सढत्तण–शठत्व
सणाह–सनाथ
सणिउं–शनैः
सणिद्ध–स्निग्ध
सण्ण–सञ्ज्ञा
सण्णा–सञ्ज्ञा
सण्णि–सञ्ज्ञिन् (सचेतन इत्यर्थः)
सण्ह–श्लक्ष्ण
सत्त–सत्तन्
सत्ततच्च–सत्य+तथ्य
सत्तभेय–सप्तभेद
सत्तभोम–सप्तभौम (सप्तभूमिबद्ध)
सत्तम–सप्तम
सत्तमअ–सप्तम (क)
सत्तर–सप्तति
सत्तविह–सप्तविध
सच्चसील–सत्यशील
सत्तंग सप्ताङ्ग(स्वाम्यमात्यादिराज्याङ्गानीत्यर्थः)
सत्थ–शास्त्र
सत्थ–सार्थ
सतामस–सतामस (अज्ञान इति टिप्पणम्)
सत्ति–शक्ति
सत्तितय–शक्तित्रय (प्रभावोत्साहमन्त्ररूपा राज्ञस्तिस्रः शक्तयः)
सतुंड–सतुण्ड
सत्तु–शत्रु
सथत्ति–स्व+स्थान
सदय–सदय
सदल–सदल (सपत्र)
सद्द–शब्द
सद्दय–शब्द (क)
सद्दल–सदल (नीलपत्रयुक्त इति टिप्पणम)
सद्दवंत–शब्दवत्
सद्दवेह–शब्दवेध
सद्दहिय–शब्दित
सद्दसण–सद्दर्शन
सद्दूल–शार्दूल
सधअ–सध्वज
सपरिग्गह–सपरिग्रह
सप्प–सर्प
सब्भाव–सद्भाव
सब्भावपयासण–सद्भावप्रकाशन
सम–शम
सम–सम
समअ–समिमत्यर्थेऽव्ययम्

समक्खयं–समक्ष (कं)
समग्ग–समग्र (सपूर्ण)
समच्चिय–सम् + अर्चित
समज्जिय–सम् + अर्जित
समतणकंचण–समतृणकाञ्चन
समत्त–समस्त
समत्थ–समर्थ
समप्पिय–समर्पित
समब्भासिअ–सम् + अभ्यस्त
समभावण–समभावना
समय–समय (व्यवस्थेत्यर्थः)
समर–शबर २ २९ ६.
समरउल–शबरकुल
समरट्ट–स+मरट्ट (सगर्व इत्यर्थे देशी)
समल–स + मल (पापयुक्त)
समवयस–समवयस्
समसरिस–सम + सदृश
समंजस–समञ्जस
समाइट्ठ–समादिष्ट
समागय–समागत
समागयचेयण–समागतचेतन (लब्धचेतन इत्यर्थः)
समाण–समान (सममित्यर्थे)
समाणत्त–सम्+आज्ञप्त
समाया–सम्+आगता
समाया–स+माया (मायायुक्ता)
समावरिय–समावृत
समाहि–समाधि
समिउ–सम
समियमअ–शमितमद
समिच्छ–सम्+इष् (धातुः)
समिच्छिय–सम्+इष्
समिद्ध–समृद्ध
समिय–शमित
समीर–समीर
समीरण–समीरण
समीह–सम्+ईह् (धातुः)
समीहिअ–समीहित
समुग्घायंत–सम्+उद्+जिघ्रत्
समुज्जल–सम्+उज्ज्वल
समुद्द–समुद्र
समुद्द–स+मुद्रा (लक्षणवर इत्यर्थः)
समुद्धरिअ–सम्+उद्+धृत
समुब्भव–समुद्भव
समुड–समुण्ड
समूससिअ–समुच्छ्वसित
समूह–सम्'
समोड–सम् + मोटय् (धातु)
सम्मत्त–सम्यक्त्व
सम्मद्दंसण–सम्यग्दर्शन
सम्मय–साम्य, सम्यक्त्व
सय–शत
सयगुणिय–शतगुणित
सयज्ज–स्व + कार्य
सयड–शकट
सयण–शयन (गृहमिति टिप्पणम्)
सयण–स्वजन
सयणु–स्वतनु
सयणोअर–शयन + उदर (शय्यामध्य इत्यर्थे)
सयदल–शतदल (पद्म इत्यर्थ.)
सयमह–शतमख (इन्द्र)
सयर–स्वकर
सयरायर–सचराचर
सयल–सकल
सयवत्त–शतपत्र
सयासि–सकाशे
सयंभु–स्वयंभू
सयंभुअ–स्व + भुज
सयंवरमंडव–स्वयंवरमण्डप
सया–सदा
सर–सृ (धातुः)

सर–स्वर
सर–शर
सर–सरस्
सरज्ज–स्व + राज्य
सरढ–सरठ (सरीसृपविशेष. (मराठी सरडा)
सरण–शरण
सरण–शरण (रक्षितृ इत्यर्थे)
सरणि–सरणि (मार्ग)
सरय–सरजस्
सरल–सरल
सरलामल–सरल + अमल
सरवर–सरोवर
सरस–सरस (रसयुक्त)
सरस–सरस (स्निग्ध इति टिप्पणम्)
सरसइणिलय–सरस्वतीनिलय (पुष्पदन्त-कवेर्विरुदेष्वन्यतमम्)
सरह–शरभ (अष्टापद. प्राणिविशेषः)
सरहंस–सरोहंस
सरंतगव्व–सरद्गर्व (?) (गर्वयुक्त इत्यर्थ.)
सरास–कथ् इत्यर्थे देशी
सरासइ–सरस्वती
सरासण–शरासन (धनुः)
सरि–सरित्
सरिगमपधणी–गीतस्यस्वरश्रेणि
सरिविवर–सरिद्विवर
सरीर–शरीर
सरूअ–स्वरूप
सलह–श्लाघ् (धातु)
सलहण–श्लाघन, श्लाघा
सलिल–सलिल
सलीलगइ–सलीलगति
सल्ल–शल्य
सल्लेहण–सल्लेखन (तपोविशेषः)
सल्लेहणय–सल्लेखन(क) (तपोविशेष)
सव–स्रु (धातु)
सवडंमुह–समुख इत्यर्थे देशी
सवण–श्रवण (कर्ण)
सवत्ति–सपत्नी
सवत्तिविरोह–सपत्नीविरोध
सविणय–सविनय
सवित्तोपउत्त–स्व+वृत्त+उपयुक्त (स्ववृत्तान्त सहितमित्यर्थ.)
सवित्थर–सविस्तर
सविब्भम–सविभ्रम (सावर्तानि, अथवा, सह वीना पक्षिणा भ्रमैः भ्रमणैः वर्तमानानि इति टिप्पणम्)
सविब्भम–सविभ्रम (कामोद्रेकजनितभ्रूयुगादिभ्रमणमिति टिप्पणम)
सवियाणिया–स+विजानती (विज्ञानवतीत्यर्थः)
सवियार–सविचार (विकृत इत्यर्थः)
सविस–सविष
सविसाण–स्वविषाण
सविसेस–सविशेष
सव्व–सर्व
सव्वगासि–सर्वग्रासिन्
सव्वण्ण–सर्वज्ञ
सव्वंग–सर्वाङ्ग
सव्वोसहि–सर्वौषधि
सस–स्वसृ
ससय–शशक
ससहर–शशधर (चन्द्र)
ससहरमुही–शशधरमुखी (चन्द्रमुखी)
ससंघ–ससंघ (संघसहित)
ससि–शशिन्
ससिमुह–शशिमुख
ससिर–स्वशिरस्
ससिलग्ग–शशिलग्न
ससी–शशिन्
सह–शोभाया देशी (धातु)
सह–सह् (धातु.)
सह–सभा

सह–सह (अव्ययम्)
सहउयरी–सहोदरी
सहज–सहज
सहड्ड–स+अस्थि
सहमज्झ–सभामध्य
सहमंडव–सभामण्डप
सहयर–सहचर
सहंत–सहमान
सहाय–सहाय
सहाव–स्वभाव
सहास–सहस्र
सहास–सहास, स + भास् (सशोभ इत्यर्थः)
सहिअ–सहित
सहिय–सह्य
सहिय–सहित
सही–सखी
सहुं–सह (अव्ययम्)
संक–शङ्क (धातुः)
संकड–संकट
संकडिल्ल–संकट + इल्ल (स्वार्थे) (व्याप्त इत्यर्थे)
संकमिय–संक्रान्त
संका–शङ्का
संकाराविय–संस्कारित
संकास–संकाश
संकुल–संकुल
संकेयत्थ–संकेतस्थ
संख–शंख
संखदीव–शंखद्वीप
संखल–शृंखला
संखला–शृंखला
संखाण–संख्यान
संखीणगत्त–संक्षीणगात्र
संखेव–संक्षेप
संखोहिय–संक्षोभित
संग–संग
संगम–संगम
संगर–संगर (युद्ध)
संगह–सम् + ग्रह् (धातुः)
संगहण–संग्रहण
संगहिय–सम् + गृहीत
संगामरंग–संग्रामरङ्ग
संगिल–सम् + गॄ (धातुः)
संघ–संघ (जैनधर्मानुयायिना वर्गः)
संघट्ट–संघट्ट
संघट्टण–संघट्टन
संघाअ–संघात
संघाय–संघात (गात्रमित्यर्थः)
संघार–सम् + हृधातोर्णिजन्तम्
संघारअ–संहारक
संघारिअ–संहारित (मारित इत्यर्थः)
संचलिअ–संचलित
संचार–संचार
संचि–सम् + चि (धातुः)
संचिय–संचित
संचितिय–संचिन्तित
संछइअ–संछन्न
संजइअ–संयतिक
संजम–संयम
संजाय–संजात
संजायअ–संजात (क)
संजुअ–संयुत
संजुत्त–संयुक्त
संजोइय–संयोजित
संजोयभेअ–संयोगभेद
संझ–संध्या
संझा–संध्या
संठव–सम् + स्थापय् (धातुः)
संठिय–संस्थित
संड षण्ड (वृन्द)
संढ–षण्ढ

सणास–सन्यास
सणिसण्ण–सनिषण्ण
सणिह–सनिभ
सणिहिय–सनिहित
सत–शान्त
सत–सत् (असधातो. शत्रन्तम्)
सतअ–सतत
संतत्त–सतप्त
सताण–सतान
सताव–सताप
संताविअ–सतापित
संति–शान्ति (षोडशतीर्थंकरनाम)
संति–शान्ति
संतियरि–शान्तिकरी
सतुट्ठमण–सतुष्टमनस
संतोस–सतोष
सथुअ–सस्तुत
सदाणिअ–सदानित (बद्ध इत्यर्थ.)
सदाणिय–सदानित
सदेह–सदेह
संधाण–सधान
सधि–सधि
सपइ–सपद्
सपइ–सप्रति
सपज्ज–सम् + पद् (धातु)
सपत्त–सप्राप्त
संपत्तिअ–सप्राप्त
सपया–सपद्
सपासिअ–सप्राशित
संपिच्छ–सम् + प्र + ईक्ष् (धातु.)
सपुण्ण–सपूर्ण
सपुण्णकाअ–सपूर्णकाय
संफास–सस्पर्श
संबोहयारी–सबोधकारी
संबोहिअ–सबोधित
संभरिय–सस्मृत
संभव–सभव (तृतीयतीर्थंकरनाम)
सभव–सभव (ससार इति टिप्पणम्)
संभव–सम्+भू (धातु.)
संभाल–सम् + भाल्य् निरीक्षणे (धातु).
संभविअ–सभूत
सभासण–सभाषण
सभु–शभु
संस–श्रम
संमद्द–समर्द
संमद्दण–समर्दन
समुह–समुख
संवर–सवर
सवर–शबर (पशुविशेष.)
संवरवेउल्ल–सवरवेगवत्
संवेयायर–सवेगकर
संसअ–सशय
ससयार–सस्कार
ससर–सम् + सृ (धातु.)
संसार–ससार
संसारसरणि–ससार + सरणि (मार्ग.)
ससिद्धी–ससिद्धि
संसिंचिय–ससिञ्चित
ससेविय–ससेवित
सा–सा (लक्ष्मी)
साअ–स्वाद ३ ३६.९
साइअ–स्वादित
साइणि–शाकिनी (प्रेतपिशाचादिस्त्रीविशेष.)
सागार–स + अगार
साडी–शाटी (मराठी साडी)
साण–श्वन्
साणंदभाअ–सानन्दभाज् (सानन्द इत्यर्थ.)
साम–श्याम (वर्ण)
सामण्ण–सामान्य
सामत्थ–सामर्थ्य
सामरि–शाल्मली (वृक्षनाम)
सामल–श्यामल

सामलिया–श्यामला
सामन्त–सामन्त
सामाइय–सामयिक (आचारविशेषः)
सामि–स्वामिन्
सामिणी–स्वामिनी
सामी–स्वामिन्
सामीवय–सामीप्य
सामुद्द–सामुद्रिक (लक्षणशास्त्र)
सायर–सागर
सायरसम–सागरोपम(आयु प्रमाणम्)
सार–सार (स्थिरांश)
सार- सार (श्रेष्ठ)
सारणि–(सरणि) (प्रवाह इत्यर्थे)
सारमेअ–सारमेय
सारस–सारस (जलचारिपक्षिविशेषः)
सारंग–सारङ्ग
सारिच्छ–सदृक्ष
सारिच्छचक्खु–सदृक्षचक्षुष्
सारिस–सदृश
साल–श्याल
सालंकारवह–स+अलकार+पथिन् (सालकारेत्यर्थः)
सालि–स+अलि (सभृङ्गमित्यर्थः)
सालि–शालि (धान्यविशेषः)
सालिछेत्त–शालिक्षेत्र
सालूर–शालूर (भेक)
सावअ–श्रावक
सावय–श्रावक
सावयवअ–श्रावकव्रत
सावयवइ–श्रावकपति (साधुरित्यर्थः)
सावयास–सावकाश
सास–श्वास
सासण–शासन
सासय–शाश्वत
साह–श्रावय् (कथ्धात्वर्थे देशी धातुः)
साहण–साधन
साहस–साहस
साहरण–स + आभरण
साहसिअ–साहसिक
साहा–शाखा
साहामय–शाखामृग (वानर इत्यर्थः)
साहार–स+आधार
साहार–सहकार (आम्रवृक्ष)
साहिअ–श्रावित (कथित)
साहिणाण–स+अभिज्ञान
साहिलास–साभिलाष
साहु–साधु
सिक्ख–शिक्ष् (धातुः)
सिक्ख–शिक्षा (उपदेशः)
सिक्खा–शिक्षा (दीक्षा)
सिक्खिअ–शिक्षित
सिग्गिरि–नीलवर्ण इत्यर्थे देशी (?)
सिग्घ–शीघ्र
सिज्जमाण–पच्यमान इत्यर्थे देशी (मराठी–शिजणारा)
सिज्जंत–पच्यमान
सिट्ठ–शिष्ट
सिट्ठि–श्रेष्ठिन्
सिट्ठि–सृष्टि
सिट्ठिसंहारकारि–सृष्टिसंहारकारिन्
सिढिल–शिथिल
सिणिद्ध–स्निग्ध
सिण्ह–पक्व
सित्त–सिक्त
सिद्ध–सिद्ध
सिद्धइरि–सिद्धगिरि (क्षेत्रनाम)
सिद्धंत–सिद्धान्त
सिद्धि–सिद्धि
सिप्पा–शिप्रा (नदीनाम)
सिप्पिउड–शुक्तिपुट
सिप्पिसंपुड–शुक्तिसंपुट

सिप्पीर–धान्यादीनां तुषमित्यर्थे देशी (पलाल इति टिप्पणम्)
सिमिसिम–कथनध्वन्यनुकरणे देशी (गद्य)
सिय–सित (शुक्लवर्ण)
सियछत्त–सितच्छत्र
सियसेविआ–श्रीसेविता(सश्रीका, सुन्दरेत्यर्थ)
सियाल–शृगाल
सिर–शिरस्
सिरि–श्री
सिरिकलस–श्रीकलश
सिरिपोमिणी–श्रीपद्मिनी (शोभायुक्तं कमलसर इत्यर्थ)
सिरिमंत–श्रीमत्
सिरिवइ श्रीपति (वणिजो नामविशेष)
सिरिवंत–श्रीमत्
सिल–शिला
सिलणाव–शिला+नौ
सिला–शिला
सिलायल–शिलातल
सिलोह–शिला+ओघ (समूह)
सिव–शिव
सिव–शिवा (शृगालस्त्री)
सिवसत्थवस–शिवशास्त्रवश
सिविणअ–स्वप्न (क)
सिविणयसमान–स्वप्नसमान
सिविया–शिबिका (यानविशेष)
सिसु–शिशु
सिसुत्तण–शिशुत्व
सिसुससि–शिशुशशिन् (प्रतिपच्चन्द्र.)
सिह–शिखा
सिहर–शिखर
सिहि–शिखिन् (अग्नि)
सिहि–शिखिन् (मयूर)
सिहिधूमालि–शिखिधूमावलि
सिहिसाण–शिखिन्+श्वन्
सिहिसिह–शिखिशिखा (अग्निज्वाला)

सिंग–शृङ्ग
सिंगग्ग–शृङ्गाग्र (नरकपालदेश.)
सिंगार–शृङ्गार
सिंगि–शृङ्गिन्
सिंचिअ–सिक्त
सिंदूर–सिन्दूर
सिंधु–सिन्धु (देशनाम)
सिंधुविसय–सिन्धुविषय (देश)
सिंभ–श्लेष्मन्
सीमंतिणी–सीमन्तिनी
सीमावड–सीमा+वट
सीय–सीता
सीयर–सी+कृ (धातु)
सीयल–शीतल
सीयल–शीतल (दशमतीर्थङ्करनाम)
सीयल–शीतल
सीयलिय–शीतलित (संशान्तु स्वस्त्रोदनकर इति टिप्पणम्)
सीयार–सीत्कार
सील–शील
सीस–शास्धातो. कर्मणि
सीस–शिष्य
सीसत्त–शिष्यत्व
सीह–सिंह
सीहसद्दल–सिंह+शार्दूल
सीहासण–सिंहासन
सु–श्रु (धातु)
सु–सु (सुष्ठु इत्यर्थे)
सुअ–श्रुत
सुअ–सुत
सुअ–सूप
सुअवट्टण–श्रुतवर्तन
सुअव्वत्त–सु+अव्यक्त (गूढ इत्यर्थ)
सुइ–शुचि
सुइ–श्रुति

सुइट्ठ–सु+इष्ट
सुइरु–सु+चिरम्
सुकइकह–सुकवि + कथा
सुकय–सुकृत
सुकुंतल–सु+कुन्तल (केश)
सुकियहल–सुकृत।ल
सुक्क–शुक्र
सुक्क–शुक्ल
सुक्कड–शुष्क इत्यर्थे देशी
सुक्कलेस–शुक्ललेश्यायुक्त
सुक्ख–शुष्क
सुक्ख–सौख्य
सुक्खणिहि–सौख्यनिधि
सुखंचिय–सु+खचित
सुगय–सुगत
सुच्छाय–सुच्छाय
सुज्ज–सूर्य
सुज्झ–शुध् (धातुः)
सुट्ठु–सुष्ठु
सुढिय–दुःखित इत्यर्थे देशी
सुण–श्रु (धातुः)
सुण–श्वन्
सुणह–शुनक
सुणहुल्लअ–शुनक+उल्लअ (स्वार्थे)
सुणिय–श्रुत
सुणेह–सुस्नेह
सुण्ण–शून्य
सुण्ह–स्नुषा
सुण्हा–स्नुषा
सुत्त–सुप्त
सुत्त–सूत्र
सुत्थिय–सुस्थित
सुद–श्रुत
सुदच्छ–सुदक्ष
सुदत्त–सुदत्त (मुनिनाम)
सुदलिल्ल–सुदल+इल्ल (मत्वर्थीयः)
सुदीण–सु+दीन
सुदुण्णिरिक्ख–सुदुर्निरीक्ष्य
सुद्ध–शुद्ध
सुद्धोयण–शुद्धोदन
सुद्धभाअ–शुद्धभाव
सुद्धमइ–शुद्धमति
सुद्धसई–शुद्धसती
सुपसण्ण–सुप्रसन्न
सुपसत्थ–सुप्रशस्त
सुपासिद्ध–सुप्रसिद्ध
सुपहाण–सुप्रधान
सुपहाय–सुप्रभात
सुपास–सुपार्श्व (सप्तमतीर्थंकरनाम)
सुपासगत्त–सुपार्श्वगात्र (शोभने पार्श्वे गात्र च यस्येति विग्रहम्)
सुपुज्ज–सुपूज्य
सुपुसिय–सु+पुसिय (मार्जित इत्यर्थे देशी। मराठी–पुसणे)
सुप्पहाअ–सुप्रभात
सुमइ–सुमति (पञ्चमतीर्थंकरनाम)
सुमइ–सुमति
सुमण–सुमनस्
सुमर–स्मृ (धातुः)
सुमरण–स्मरण
सुय–शुक
सुय–श्रुत
सुय–सुत
सुयण–सुजन
सुयपय–श्रुतपद
सुया–सुता
सुर–सुर
सुरकामिणी–सुरकामिनी
सुरगणिया–सुर+गणिका (अप्सरेत्यर्थः)
सुरधणु–सुरधनुष्
सुरपुरंधि–सुरपुरन्ध्री

सुरय–सुरत
सुरवइ–सुरपति
सुरवइदिसि–सुरपतिदिश् (प्राचीत्यर्थं)
सुरसरि–सुरसरित् (गङ्गा)
सुरसुअ–सुरसुत
सुरहर–सुरगृह (देवालय)
सुरहि–सुरभि
सुरहिय–सुरभित
सुरही–सुरभि (धेनुरित्यर्थ.)
सुरहुब्भिय–सुरथ+ऊर्ध्वीकृत
सुरावलि–सुरावलि (देवसमूह)
सुरिंद–सुरेन्द्र
सुरेसर–सुरेश्वर
सुरेसरि–सुरेश्वरी (देवी)
सुलक्खण–सुलक्षण
सुललिय–सुललित
सुवण्ण–सुवर्ण
सुवत्त–सुवृत्त
सुवाय–सुवाच्
सुविउल–सुविपुल
सुविरत्त–सुविरक्त
सुविसम–सुविषम
सुविसुद्ध–सुविशुद्ध
सुविहाण–सु+वि+भान (सुप्रभात इत्यर्थ)
सुवेल–सुवेल (पर्वतविशेष.)
सुव्वय–सुव्रत (विंशतीर्थंकरनाम)
सुव्वय–सुव्रत
सुसउच्च–सु+शौच
सुसच्च–सुसत्य
सुसमत्थ–सुसमर्थ
सुसाल–सु+शाला
सुसिअ–शोषित
सुसेव–सुसेव्य
सुसीम–सुसीमन् (द्युतियुक्तमित्यर्थ)
सुह–सुख
सुह–श्वन्
सुहकम्म–शुभकर्मन्
सुहचरिय–शुभचरित
सुहजोअ–शुभयोग (काल विशेष)
सुहजोइ–शुभज्योतिष्
सुहड–सुभट
सुहद्द–सुभद्र
सुहधम्मोदअ–शुभधर्मोदय
सुहम–सूक्ष्म
सुहयत्तण–सुभगत्व
सुहयर–सुखकर
सुहरअ–शुभरत
सुहकर–सुखकर
सुहाइ–सु+भाति १ २० १२
सुहावअ–सुखावह
सुहावण–सुख+आपण (प्रापण)
सुहासुह–शुभ+अशुभ
सुहि–सुहृद्
सुहिअ–सुखित
सुंघिअ–आघ्रात इत्यर्थ देशी
सुंड–शुण्डा
सुंडीर–शौण्डीर
सुंदर–सुन्दर
सुंसुयार–शिशुमार (मकर इत्यर्थ)
सुंसुवार–शिशुमार (मकर इत्यर्थ)
सुंसुवारिआ–शिशुमारिका
सूअर–सूकर
सूअरि–सूकरी
सूआर–सूपकार
सूणार–सूना (वध्यस्थान वधो वा)+कर्तृ
सूयर–सूकर
सूयारय–सूपकार (क)
सूर–सूर्य
सूल–शूल
सूलच्छ–शूलाक्ष
सूलभिण्ण–शूलभिन्न
सूलारूढ–शूलारूढ

सूवार–सूपकार
सेट्ठि–श्रेष्ठिन्
सेट्ठी–श्रेष्ठिन्
सेढि–श्रेणि
सेणी–श्रेणि
सेण्ण–सैन्य
सेय–श्रेयस् (एकादशतीर्थंकरनाम)
सेय–श्वेत
सेय–स्वेद
सेयभाणु–श्वेतभानु (चन्द्रः)
सेयवह–स्वेद+पथिन्
सेरिह–सैरिभ (महिष)
सेल्ल–शैल
सेव–सेव् (धातुः)
सेवय–सेवक
सेविअ–सेवित
सेविज्जंत–सेव्यमान
सेस–शेष
सेहा–सेधा (प्राणिविशेषः)
सोअ–शुच् (धातुः)
सोअ–शोक
सोइय–सोचित
सोक्ख–सौख्य
सोणइय–श्वपालक, सौनिक
सोणिय–शोणित
सोत्तिय–श्रोत्रिय
सोत्तियवाअ–श्रोत्रियवाद
सोदामणि–सौदामिनी
सोम–सौम्य
सोमभाअ—सौम्यभाव
सोमभावा–सौम्यभावा
सोमाल–सुकुमार
सोयण–शोचन
सोयरस–शोकरस
सोयामणि–सौत्रामणि (यज्ञविशेषः)
सोयार–श्रोतृ
सोयारवयण–सूपकार+वचन
सोवहि–स+उपधि
सोसिय–शोषित
सोह–शुभ् (धातुः)
सोह–शोभा
सोहग्ग–सौभाग्य
सोहग्गथत्ति–सौभाग्यस्थान
सोहण–शोभन
सोहा–शोभा
सोहिय–शोभित

ह–अहम् (इ इत्यस्य स्थाने)
हअ–हत
हडाविय–दूरोत्सारित इत्यर्थे देशी (मराठी–हटविलेलें)
हडि–अभ्यस्त इत्यर्थे देशी
हड्ड–अस्थिशब्दार्थे देशी
हड्डाल–अस्थियुक्त इत्यर्थे देशी
हड्डावलि–हड्ड+आवलि
हण–हन् (धातुः)
हणण–हनन
हणहण–हणहण इतिशब्दः
हत्थ–हस्त
हत्थगिज्झ–हस्तग्राह्य
हत्थि–हस्तिन्
हम्म–हर्म्य
हम्म–हन्धातोः कर्मणि
हय–हत
हय–हय (अश्व)
हयदइव–हत+दैव
हयमोह–हतमोह
हयसल्ल–हतशल्य
हयारि–हय+अरि (महिषं इति टिप्पणम्)
हर–हृ (धातुः)
हरण–हरण
हरि–हरि (सिंह)

हरि–हरि
हरि–हरि (विष्णोर्नामविशेषः)
हरिकिडि–हरि+किटि (वराह)
हरिण–हरिण
हरिणणेत्त–हरिणनेत्रा (स्त्री)
हरियकाअ–हरितकाय
हरिवइ–हरिपति
हरिस–हर्ष
हरिहुल्लि–हरि+हुल्लि (बालकार्थे देशी, सिंह-बालक इत्यर्थ.)
हलहर–हलधर (बलदेव)
हलि–हले (संबोधने)
हल्ल–नृत् इत्यर्थ देशी (धातुः)
हलिणि–हालिनी (कर्षकस्त्री)
हव्वकव्व–हव्य+कव्य
हस्–हस् (धातु.)
हसिअ–हसित
हंस–हंस
हंसगइ–हंसगति
हंसी–हंसी
हा–हा (खेदेऽव्ययम्)
हाणि–हानि
हाणी–हानि
हार–हार
हारावलि–हारावलि
हावभाव–हावभाव
हास–हास
हासअ–हास्य
हाहाकार–हाहाकार
हाहारव–हाहारव
हिमपडल–हिमपटल
हिय–हित (निहित, दत्त)
हियअ–हृदय
हियउल्ल–हृदय+उल्ल (स्वार्थे)
हियय–हृदय
हिययहर–हृदयहर
हियव–हृदय
हिरी–ह्री
हिलिहिलि–अश्वशब्दानुकरणे (धातुः)
हिलिहिलिसर–हिलिहिलि इत्यश्वशब्दानुकारी स्वरः
हिंड–हिण्ड् (धातुः)
हिंडोल–हिन्दोल् (धातुः)
हिंस–हिंस् (धातुः)
हिंस–हिंसा
हिंसहियय–हिंसाहृदय
हिंसा–हिंसा
हिंसाकम्म–हिंसाकर्मन्
हिंसाजीव–हिंसा+आजीव
हिंसायार–हिंसाचार
हिंसारंभ–हिंसारम्भ
हिंसावासर–हिंसावासर
हिंसाहिणंद–हिंसाभिनन्द
हिंसाहिवत्तार–हिंसा+अभिवक्तृ
हीणाहिअ–हीनाधिक
हू–भू (धातु.)
हु–हु होमे (धातुः)
हुआसण–हुताशन
हुण–हु (धातुः)
हुयवह–हुतवह
हुयासण–हुताशन
हुंकारकारि–हुंकारकारिन्
हू–भू (धातुः)
हूलण–शूलाद्यारोपणे देशी
हेउ–हेतु (दृष्टान्त)
हेट्ठि–अधस्
हेमंत–हेमन्त
हो–भू (धातुः)
हो–हो (संबोधनेऽव्ययम्)
होंती–भवन्ती

NOTES

-

[*N B—The Notes supplement the glossary Knowledge of technical terms of Jain philosophy is presumed in the Reader. The first figure indicates the kaḍavaka and the second the line.*]

I

1 The poet, after saluting the Jina, says that he was staying in the house of his patron Nanna, the favourite of the Vallabha king, Kṛṣṇarāja III, and thought of writing upon a pious theme rather than a theme relating to wealth and women

1 7-8 It is only in the fifteen bhūmis, five Bharatas, five Airāvatas and five Vidarbhas that Dharma is born or proclaimed, and out of these fifteen bhūmis, it is constant or perpetual in five Vidarbhas only, while it has a fluctuating existence in the remaining ten bhūmis This Dharma was first proclaimed by Ṛṣabha in this Jambudvīpa, while the remaining Tīrthaṃkaras repeated the same when occasion arose

3. Description of the Yaudheya country 3 17 The poet fancies that the flags and banners on the lofty palaces of the city of Rājapura were scratching the sky as if by their arms

4. Description of the city of Rājapura 4 6 The city was surrounded by a wall on which the weapons such as tomara, jhasa etc of the enemies were baffled, *padikkhaliya*

5 Description of king Māridatta 5 10 The poet says wherever there is pride of youth and pride of wealth, there is naturally all darkness How can in such a place be found the right path (*suhamagga*), so long as there are no rays of light from wise men? 5 19 The king performed his duties according to his own whim (*chanda*), and could not find the right path in the absence of wise men

6 Description of Bhairavānanda 6 8 Bhairavānanda himself proclaimed his own greatness and even though nobody asked him (*anaumchiu*) he praised his own self 6 23 *Āsīsiu* seems to be used in the sense of "was blessed", "was given blessings".

8 1 The word *camakku* is used in the sense of camatkāra, āścarya 8 14 The poet says that those who live on hiṃsā fall into the saṃsāra, while abstinence from it forms the solid base of śubha karman 8 15. For this line see Introduction

9 Description of Caṇḍamārī, goddess Kālī of the town 9 1 *Taṃnayaru* stands for tat + nagara, and means 'of that town' 9 9 *Viyārabhagga* are the decrepits by diseases, vikāra

10. List of pairs of different animals 10 9-10 The poet says that it is only a fool who desires to live by killing the lives of others

11 6-9 When Māridatta found that his servants did not procure a human pair, he got angry and asked Caṇḍakarman, one of his officers, to procure a good human pair

which he would kill first His servants accordingly searched the region in the neighbeurhood of the city (*nayarabajjhāvayāsa*)

12 A fine description of the pleasure garden of the king 12. 16 The Kolhapur MS reads "*aham inīe*" which is superior to the one in the text as *ahamam* in the sense of *aham* does not seem to be a recognised form of asmad

13 Description of the burning ground 13. 12-13 The pupils of Sudatta asked permission of their teacher in the usual terms if they could go out for begging alms, and then the teacher allowed them to do so.

14 4 *Gurunā mukka* means permitted by their teacher, Sudatta 14 5. *Puravahi dhukka*, proceeded towards the city 14 6 *Laviyam samalam*, they talked a wicked talk that this pair of Ksullakas is a good one to be offered as victims 14 11 *Sayanukiranamālāphuriu*, bright in the cluster of rays of their own body

15 9 *Jai na munī* etc The meaning of the passage seems to be that though the ksuallakas may not reach a higher stage of asceticism in this life if they are killed, they will at least be born as gods possessing eight gunas 15 20 *Jamalullakka*, frightening like the god of death

16 Description of the temple of goddess Candamārī

17. 16 The pair had on their persons auspicious signs, *samudda*, Sk Sāmudra as mentioned in the Sāmudrikaśāstra, which indicated that they were fit to enjoy the kingdom of the whole earth

19 9 *Matthai sūlaho*, to one who bears on his forehead the mark of trident indicating his faith in the Kāpālika tenets

20 7 *Leppi vihiu*, as if made of plaster 20 12 *Suhāi*, su+bhāti

21 Description of the Avanti country 21 12-14 The idea is that the elephant mistook the dark green rays of the emerald-pavements for green dūrvā grass and therefore was reluctant to leave it The conductor of the elephant drove it away with great difficulty The reading *duvvāsae* Sk. dūrvāsayā, of ST is to be preferred to the one in the text

22 3 The young woman of dark complexion was detected by her sparkling smiles in the Indranīla houses of the city

23 2 Prince Jasoha is here described as ksatradharma in a human garb

24. 8 Abhayaruci says that in his former life as prince Jasahara he had his body in youth well-developed in flesh, bones, and limbs by good nourishment, *putthipalatthiyamga*

25 This kadavaka describes how the princess of Krathakaisika was offered to Jasahara in marriage A minister of Krathakaisika came to the court of Jasahara's father and said that his master proposed to offer his daughter Amayamahādevi, i e, Amrtamati to prince Jasahara The king agreed and the marriage was celebrated as described in the following Kadavakas Note roughness of language of the passage.

28 Description of the effects of old age on the body 28 10 The ten constituent parts of the Jain dharma are ksamā mārdava etc

29 4 *Mai mumu etc* I controlled myself by the first lore (ānviksikī) which is capable of conquering the senses *vijalliya* of SF is a better reading 29 5 *Cauvannu*, the four castes 29 6 The seven dangers of kingship are gambling etc 29 7 The king enjoyed pleasures of senses, not out of attachment, but only as a diversion, vinodamātra

II

1 King Jasahara describes his attachment to Amrtamati 1 18 There is a pun on the word *attha* which means the setting mountain as well as money

2 Description of the evening 7, 3 *Ahogamam*, under the dome of the sky, i e, set 2 11-12 The sky is compared to a threshing ground of the field with twelve heaps of corn There is a dark spot on the moon which is kept there as a sign that prevents bad omens spoiling the harvest

3 The king proceeds to the palace of queen Amrtamati on a moon-light night

4 Description of the eight quadrangles of the queen's palace

6 1-5 The king enjoys pleasures of the company of the queen 6 9 The queen went to a hump-back who never attempted, *anujjiya*, any good deeds of the human life, i e, he was low 6 17 *Siyasene*, the queen who was adorned by beauty, *siya*, Sk. Srī

7 12-13 Amrtamati says to her paramour "If Jasahara dies (goes to the house of Yama, I shall dance (with delight), and shall myself worship the goddess Kātyāyanī in the month of Caitra with an offering of cooked rice (*carugāsa*, Sk carūgrāsa)" An offering in the month of Caitra to the goddess is considered as specially auspicious

8 9-10 The king is pained to see that his queen in dallying with the hump-back did not pay any regard to her family, her status or even her royal husband 8 11-12 A creeper (*valli*) climbs up and then stands suspended from a mango tree which is a (fitting) supporting tree for it, but the same creeper (sometimes) kisses a wretched (*vihīna*) and harsh thorny plant.

9 5 *Sihudhūmeli* is a heap of soot from the burning fire which gives a dark tinge to the whitewash of the house. 9 6 The king compares the crooked mind of a woman (*tiyamai*) to the course of the river which is always nīcarata (attached to a low-born person with the river,-flowing on the slope) 9 8-19 This passage tells us two stories of wicked women, of these the first was named Gopavatī, whose husband being disgusted with her want of chastity, married another lady Now one day Gopavatī cut off the head of her rival and kept it at some secret place The husband returned home after having attended to the funeral of the headless trunk of his young wife, and while he sat for meals, Gopavatī placed on his plate the head of her rival saying 'eat it' Horrified at this conduct of his wife, the husband began to run away when Gopavatī stabbed him to death The second story tells us the wicked conduct of Vīravatī who was the wife of

Sudatta or Datta, but was in criminal intimacy with a thief called Angāraka Now this Angāraka was one day found to be guilty by the king of the place and was ordered to be impaled in the burning ground On learning this news Vīravatī left her husband's bed at night and went to meet Angāraka who, before dying, kissed her and while kissing, cut off her lower lip Now Vīravatī returned home covering her face, and raised a cry that her husband cut off her lip The king thereupon ordered him to be killed, but a traveller who had watched the conduct of Vīravatī the previous night, saved him by revealing to the king and the people the wicked conduct of the woman, and convincing the people by showing to them the piece of the lower lip of the lady inside the mouth of the impaled thief 9 17 *Sāhinnāna*, Sk Sābhijñāna

9 18 19 It appears that the thief cut off with his sword the fingers of the lady which were lying under the tree, while the lower lip remained in his mouth

10 1-2 These two lines refer to the story of queen Raktā who, for the sake of her lame lover, threw her husband Devarati, king of Ayodhyā, into the stream of the river This queen Raktā, as the story goes, was attached to a lame gardener Finding the king a nuisance, she got a garland woven by means of a fine iron thread, put this garland on the neck of Devarati, strangled him and threw him into the river 10 3 17 Abhayaruci lectures on the worthlessness of the pleasures of senses. 10 13 The *Īsāsihi* is the fire of jealousy

11 A lecture on the nature of human body which is here said to be a bundle of misery and impurities and diseases 11 11 *Pacchu* Sk pathya means wholesome food and drink The line means that human body is subject to the attack of leprosy even if man takes wholesome food and drink

12 Jasahara was disgusted with the conduct of his queeen and also with the worldly life, and thinks he should become an ascetic, but in the morning he felt he should not do so immediately as his resolve to become an ascetic would be regarded by people as due to some disagreeable things in the harem, so he took to normal life for the time being.

13 The king declared his intention in the court to his mother to place his son Jasamai or Jasavai on the throne in order to respect, as he said, a bad dream which he saw the previous night

14 Jasahara's mother proposes to him that the effects of an evil dream can be nullified by offering living beings as victims to the goddess, but he shows his disapproval of killing a living being

17 10-11 The king says to his mother -"If by killing animals as victims merit is obtained, then one should salute a hunter or a butcher in preference to a monk"

19 4 The king dragged his sword in order to cut off his own head, as the thought he was not able to persuade his mother, but the mother, immediately came round and suggested that an inanimate victim should be offered to the goddess to which Jasahara gave his consent by silence The mother thereupon asked the statue-maker to bring a cock made of flour

22 9-10 Queen Amrtamati says to Jasahara that in case she does not accompany him to the forest, people will ridicule her by pointing their fingers to her youth and therefore she would like even death in his company

24 The king describes several articles of food prepared by the queen as suggesting an approaching death

25 and 26 These kadavakas describe the wailings of Jasahara's son and wives In the latter part of 26, it is mentioned that several obsequious rites were performed by his son in order that Jasahara might get good life ofter death But, as the fate would have it, Jasahara was born as a peacock in the forest

28 4 *Pakkhini-pakkhaiau* is an uncertain expression, the line may mean that the young peacock could not at first walk and therefore sought the support of the wings of its mother (The marginal note in one of the MSS is 'pādacāritvāt paksapāte dhrtah) 28 10 Note the word *lai* which means 'much' and is still preserved in the Marathi language of the lower class people of Mahārāstra in this sense, while Hemacandra explains it as '*lai iti lokoktau*'

29 The hunter brought the young peacock and its mother home, but offered the hen to the police-officer and kept only the young one for himself At this the hunter's wife got angry The hunter thereupon sold the young peacock to the police officer who brought it up in a cage.

30 The police-officer offers the peacock, when grown up, to Jasavai. Candramati, Jasahara's mother, who was also poisoned by Amrtamati, was born in Ujjayini as a bitch and was presented to Jasavai

32 10-11 A fine fancy that the row of clouds is likened to a young maid, linghtnirg as her kañcukI and the rainbow as her cloak, *upparnyana*, Sk uparitana, upper garment

33 The peacock saw here Amrtamati dallying with the hump-back and out of jealousy of the pervious life attacked them both Amrtamati struck it with her girdle and thus broke its leg 33 9-10 The peacock remarks —When I was king, I did not strike the hump-back and the woman who were not my equal, but now as a young and low peacock, I caught the hand of the woman as this time it was not objectionable

34 Maids of Amrtamati soon arrived on the scene and attacked the peacock with whatever weapon they could catch hold of On hearing this din and cry of the maids, the bitch, the peacock's mother in the previous life, came there, and caught it in the neck.

35 Jasavai held the bitch fast with the chain, but when it could not let go the peacock, he struck the bitch with the iron end of the sped, so that both the peacock and the bitch died Jasavai bewailed the loss of both

36 In his next birth Jasahara was born as a mangoose, and as its mother could not sfficiently feed it on her milk, the young mangoose began its career by devouring snakes Candramati also was born in her next life as a snake in the same forest One

day while the snake was entering into its hole, the mangoose caught its tail 36 9. *Lahi sāu* Sk, svādam labdhvā, forming taste (for the blood of the snake)

37 When the mangoose was eating the snake, it was itself caught from behind by a wild animal *taracchu*, Sk taraksu 37 11-12 Abhayaruci winds up the second pariccheda by appealing to Māridatta that if he understood the significance of the narrative, he should give up doing injury to creatures and should resort to the doctrine of Puspadanta, the ninth Tīrthamkara (or the words of the poet Puspadanta)

III

1 The first six kadavakas of this pariccheda describe the next birth of Candramati who was born as a crocodile and of Jasahara who was born as a big fish in the river Śiprā near Ujjayini The first kadavaka gives a fine description of the river in Duvaī metre rounded off by the usual Ghattā In fact the kadavakas in this pariccheda open with a Duvaī and close with a Ghattā 1 13 *manthuvayantua* is a clean bank adjoining the river which was resorted to by ascetics

2 12 *Daiyaviyambhiyau* Sk daivavijrmbhita, the wonderful working of destiny

3 3 Gomini etc, are the names of maids

4 The great fish was caught and was shown to king Jasavai who got it examined by Brahmins They said the fish belonged to that species from which the Matsyāvatāra of Visnu came, 4 6 *Thotta* is either sthūla or samartha according to marginal notes, 4-9. *dhammaniddhādai*, from which dharma has disappeared

5 Jasavai took the fish to his mother Amrtamati who cooked, fried and seasoned it

6 7-12 In the next birth Candramati was born a she-goat Jasahara became her child, while in youth he began to enjoy sexual pleasures with the mother-she-goat when he was killed by his father-goat

7. Jasahara was again born into the womb of his mother she-goat King Jasavai caught the pregnant she-goat one day as he did not get any other chase, and when he cut the she-goat into two, he found the child alive and handed it over to the shepherd 7 10 Kusumâvali, the name of Jasavai's queen

8 One day Jasavai made a promise to the goddess that he would offer as victim a buffalo if he would find good chase in the forest 8 14 *Paruāevi* after having offered the flesh of the buffalo to the goddess in a particular way This act of parivārana is usually expressed by uttārana and consists of raising the offering from the ground, showing it to the deity and then again placing it on the ground

9 One day Jasavai performed the annual śrāddha of his father For this various articles of food were prepared, and were offered to Brahmins, friends and relatives Amrtamati did not figure amongst these as she was suffering from leprosy and maids were openly talking of this 9 13 *Angu vāi*, the body of Amrtamati is giving out this bad smell

10. Condition of the body of Amrtamati is described here 10 12-14 Amrtamati did not like the flesh of buffalo and asked for some other kind of meat

11. Amrtamati asked the cook to have the meat of a deer or of a pork, but king Jasavai said that the meat of the goat would do well He therefore asked the cook to cut the hinder leg of the goat for the queen-mother 11 10 *Veyadhammavehāviya-mānasu*, one whose mind is deluded (*vehāviya*) by the law proclaimed in the Veda. The soul of Candramati in the mean while was born as a buffalo in Sind,

12 This buffalo was used to carry goods for a merchant, and once came to Ujjayini There the buffalo met, while enjoying the bath in the river Śiprā, the royal horse attended by its keepers The buffalo attacked the horse and killed it Immediately the keepers caught hold of the buffalo and brought it before the king The king ordered it to be killed with all possible cruelty The goat also was killed on the same day

13. 11 Candramati and Jasahara in their next birth were born as young ones of a hen and from this line onwards right upto the end of kadavaka 33, we get the happenings in their life as young ones of hen.

15 These young ones of hen were in due course presented to the king who wanted to see a cock-fight and asked the keeper to bring them up well

16-17 The next morning they were taken to a specially erected tent and were placed under the Aśoka tree The king's officer saw a Jain monk seated under the tree in a meditating posture

18-33. Then follows a long conversation between the monk and the officer on the religious views of Jains and Cārvākas, and when the monk mentioned that the young ones of hen by his side were formerly king Jasahara and his mother Candramati, the officer accepted the vows of a Srāvaka The young ones of the hen also recollected their previous births, in mind decided to observe the vows, and in delight cried aloud. But Jasavai, who was in the company of his queen Kusumāvali, wanted to show his skill in archery by sound to his queen, discharged an arrow at them, and both the young ones were killed They were born as twins into the womb of the queen

34 17 The king on seeing monk Sudatta thought it to be a bad omen and says.—" How can this monk (*khavanau*) if he is other than the three gods, Brahmā Visnu and Maheśa (*taiya*, Sk trika) go away (from here) without being killed by me?

35. 15 *Jaivaia vayasahiya*, a great monk observing the (five great) vows

36 The king gets angry when asked by the merchant to fall at the feet of the monk, and says that he would not do so as the monk was very dirty 36 17 *Nayaroghasarapasara*, like tha stream of the dirty guttar-water of the town

37 2 The merchant says Even the dirt of these monks is capable of curing diseases and therefore, O king (*īśa*), bow down to such monks Why this hatred ? 37 4 *Ahayamahānasaddhi* is a doubtful expression The marginal note gives its equivalent as aksInamahānasa, in the light of this we can say that the monks possess the power of making the kitchen inexhaustible and prosperous. To me it appears that the correct reading might be *ahayamānasaddhi*, Sk ahatamānasardhi, inexhaustible or

full possession of mental powers 37 17-18 The merchant tells Jasavai that the monk is no other than the king of the Kalinga Country and that he took to the life of an ascetic because, by having wrongly punished a person charged with theft, he got disgusted with his kingship

40 17 *Avarapakkha* is the second and dark half of Bhādrapada during which a mahālaya srāddha is offered to the manes 40. 18 *Khāu*, Sk khāditum

IV

1 5 *Kheri* is a deśī word meaning vaira or vairin, here it is used in the former sense

2 The king says to Sudatta that he would place his son Abhayaruci on the throne and like to be a monk

3 Ladies of the king's harem try to persuade him by saying that he would not get anything better in heaven by practising penance For, they say, they are as good as nymphs, the king Indra and the palaces heavenly abodes, thus the possession of (union with) what is good constitutes Svarga Is there on the head of Svarga (conceived as a being) a crooked horn ? *Kim saggasu e kudilam visānayam* has a corresponding phrase in the current Marathi language 3 8 *Siggiri* is a word of uncertain meaning, does it mean nilavarna ?

4 Both Abhayaruci and Abhayamati recollected their previous births on hearing this narrative from Sudatta and fainted Kusumāvali also fainted on seeing her children in that condition Other ladies of the harem came to her help and she and the children soon recovered 4 16. *Mahaevī* of course is queen Kusumāvali.

5 14-15 Abhayaruci, on recollecting that he was in one of his former life the father of Jasavai, says —' He was formely my dear son, so delightful to my eyes, and I myself placed him on the throne, but now I am (born) as his son with a moonlike face, destiny has taught me a fine (*cangau*) lesson ! "

6 1 *Dinnalaiyai avvādi*, one, who by turn has given and taken the same position, one who was the father of Jasavai and placed him on the throne has become the son of the same Jasavai, who now thinks of placing him on the throne 6 2 *Muhavadu*, mukhapatah, cover for the face

7 17 *Gunamaniincaiya*, decked (*cincaiya*) by the gems of guna, the vows of Jain ascetics, *Pāvaiya* is pravrajyā, taking to the life of an ascetic

8. 1 Abhayaruci handed over the kingdom to his step-brother, Naya 8 2 *Kuhini* the path

9 1 *Suvahubbhiya*, erected on a good chariot The sense of the passage is that mere penance without right faith is like a banner on the top of the chariot, without soldiers 9 10 *Angacāu*, Sk angatyāga, i e, kāyotsarga posture 9 15 *Anuvekkhau*, the twelve anupreksās, impermanence (adhrura) etc

15 12 *Khullayattu*, the stage of ksullaka consists of complete renunciation of worldly things, wearing only one white garment and a loin-cloth, the gourd, the beg-

ging boul and tonsuring the head 15 16 *Purakantiyā* is the nun Kusumāvali who alongwith Jasavai, became a Ganini

17 15 *Saieuvvanñe*, by the supernatural power of creation (*vikurivaṇa*).

18 Candamāri requests the ksullaka to initiate her and teach her the rules of penance The ksullaka thereupon says that there is no penance for gods of sixty-two types

19-20 These two kadavakas give the list of persons who cannot practise penance

23 King Māridatta asks Sudatta to tell him the various previous births of the Govardhana Merchant, Goddess Candamārī, Bhairavānanda and of himself. It has been explained in the Introduction that the portion beginning with this kadavaka down to kadavaka 30, line 15 is added by Gandharva

28 3 *Dandcatta*, free from pairs (of pleasant and unpleasant things) 28 33 *Siddhairi* Sk Siddhagiri, name of a holy place.

29 9-10 For the interpretation of these lines and the following kadavaka see Introduction

31. 4 *Kainā Khandem*, Puspadanta was also known by this name Khanda as could be seen from some of the verses at the opening of samdhis in the Mahāpurāna MSS

मुग्धे श्रीमदनिन्द्यखण्डसुकवेर्बन्धुर्गुणैरुन्नतः
स्वप्नेऽप्येष पराङ्गना न भरतः शौचाम्बुधिर्वाञ्छति ॥

ADDENDA ET CORRIGENDA

Page,	Kadavaka,	Line	For	Read
२	१	१०	पुरुएउ सामि	पुरुदेवसामि
४	२	१३	परिहवि	परिहि वि
५	४	४	चि क्कमंति	चिक्कमति
५	४	१२	कहिमि	कहिं मि
६	५	८	तरुणसरत	तरुण सरत
६	५	१४	पउहर	पओहर
६	६	१	तीह	तहि
६	६	६	पाउडियजम्मु	पाउडियजुम्मु
७	६	९	जुयचयारि	जुय चयारि
८	८	४	पुरेहु	पूरेहु
१०	१०	७	गो या	गोह्या
१०	११	९	णयरि वहावयासि	णयरिव्रज्झावयासि
११	१२	२	कहिमि	कहिं मि
११	१२	१६	अहमं तीए	अहमिंतीए
१२	१४	६	लवियंसमल	लविय समलं
१२	१४	११	सयणु किरण	सयणुकिरण
१३	१५	१	णिल्लणण	णिल्लुणण
१३	१५	९	जइण	जइ ण
१५	१८	७	कहिमि	कहिं मि
१५	१८	९	तिणाण	तिणा ण
१५	१८	११	सरज्जाय भट्ठो	सरज्जा पभट्ठो
१७	२१	१४	विणडिउ वासइ	विणडिउ दुव्वासए
१७	२१	note	कासिण	काणिस
१८	२३	९	चंदमइदेवितह	चंदमइ देवि तहु
२०	२५	२१	पइमि	पइं मि
२१	२६	१८	दोहिमि	दोहिं मि
२१	२७	६	ता सुपत्ति	तासु पत्ति

२१	२७	१०	णवयारि वि	णवयारिवि
२२	२८	६	चि क्कमंति	चिक्कमंति
२४	१	७	पुत्त	युत्तं
२५	२	४	संझावेल्लि वणीसरिय	संझा वेल्लि व णीसरिय
२८	७	९	अवरइमि	अवरइ मि
२९	८	१२	वेल्लिणिहीणु	वेल्लि णिहीणु
३०	१०	१७	सवइ	सेवइ
३१	१२	१८	विसुहिउ	वि सुहिउ
३४	१७	३	णिच्छाम	णित्थाम
३४	१७	८	दणलाइ	दलणाइं
३४	१७	१०	हिसइ	हिंसइ
४४	३३	४	पटिउ	पडिउ
४९	३	७	भीसावेण	भीसावणे
४९	४	९	धम्म णिद्धाडइ	धम्मणिद्धाडइ
५१	७	३	णिवसणेचली	णिवसण चेली
५१	७	१०	लहंतिं	लहंति
५३	९	१२	त्राइ	वाइ
५३	९	१३	अंगुवाइ	अंगु वाइ
५४	१२	१	वणि मंडमारु	वणिमंडमारु
५५	१२	१७	पच्छिमहारिं	पच्छिमदारिं
६१	२२	५	अण्णुमाणि	अणुमाणिं
७०	३७	२	मच्छरोकओ	मच्छरो कओ
७४	४१	१४	णायणइ	णायण्णइ
८२	११	७	विभिण्णु	वि भिण्णु
८५	१६	४	हहुम्भडेहिं	हहुम्भडेहिं
८९	२०	१५	सयगणियइं	सयगुणियइं
९९	३०	१	पट्टणेच्छगे (!)	पट्टणे छगे
९९	३०	१	खेलागुणवतु	खेला गुणवतु
१००	३१	१३	णिसूभउ	णिसुंभउ
१००	३१	१६	सयॅल	सवॅल